काले बादल

हिरोशिमा और नागासाकी और अणुबम के बारे में दो रचनाएँ



रोमन किम, हिंदी: नरोत्तम नगर

काले बादल

हिरोशिमा और नागासाकी से लेकर कोरिया और समूचे एशिया के
साहित्य और संस्कृति तथा राष्ट्रीय आज़ादी को आतंकित
करने वाले अणुपंथी साहित्य और राजनीति का यथा-
तथ्य चित्रण करने वाली दो महत्त्वपूर्ण रचनाएँ।

अनुवादक
नरोत्तम नागर

सम्पादक
यज्ञदत्त शर्मा

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक
साहित्य प्रकाशन,
दिल्ली

मूल्य : चार रुपया

मुद्रक
रामा कृष्णा प्रेस,
कटरा नील, दिल्ली ।

लेखक और पुस्तक

रोमन किम एक सोवियत लेखक हैं। लेकिन, जैसा कि आपके नाम के साथ जुड़े शब्द 'किम' से साफ प्रकट है, मूलतः कोरियाई हैं,—कोरिया की वीर जनता का रक्त आप की रगों में प्रवाहित है।

आपकी पहली रचना 'दो घर सामने और तीन बराबर में' १९३२ में प्रकाशित हुई थी। इसमें लेखक ने जापान के पतनोन्मुखी लेखकों का चित्रण किया था और दिखाया था कि पूंजीवादी साहित्य किस प्रकार ह्रास के चंगुल में फंसता जा रहा है। मैक्सिम गोर्की का ध्यान इस रचना की ओर गया और उन्होंने नये लेखकों के अपने संकलन में इसे स्थान दिया। इसके बाद किम ने गृहयुद्ध और सुदूरपूर्व में जापानियों की दस्तंदाजी पर अनेक कहानियां लिखीं। इन कहानियों को भी मैक्सिम गोर्की ने नये लेखकों के अपने संकलनों में स्थान दिया।

'जैसी रूह वैसे फरिश्ते' (ए जर्नी टू अमरीकन परनासस) १९४८ में लिखी गई थी। विश्व की अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। इसे पढ़ कर लेखक की पहली रचना का ध्यान हो आता है जिसमें पूंजीवादी साहित्य के पतन और ह्रास का चित्रण किया गया था। लेकिन पहली रचना १९३२ में लिखी गई थी और दूसरी १९४८ में जबकि पूंजीवाद का ह्रास अपनी चरम सीमा पर पहुँचा हुआ था,—ऐटम पंथी साम्राज्यवादियों से जब कि उसका तांता जुड़ गया था। पूंजीवादी साहित्य और संस्कृति का यह एक ऐसा जनघाती रूप है जो खुद डूबने से पहले समूचे विश्व की सांस्कृतिक निधियों पर पानी फेरना चाहता है।

लेकिन यह तो चित्र का एक ही पहलू है। इसका दूसरा पहलू यह है कि इस काल में सांस्कृतिक निधियों की रक्षा तथा उन्हें आगे बढ़ाने वाली

ताकतों का,—जनता के लेखकों और कलाकारों का,—भी उदय हुआ है और एक अद्वैय शक्ति का रूप वे धारण करते जा रहे हैं।

'जैसी रूह वैसे फरिश्ते' में चित्र के इन दोनों पहलुओं का यथा तथा चित्रण किया गया है।

दूसरी रचना 'नागासाकी से कोरिया तक' (डायरी फाउण्ड इन सुनचोंग) लेखक की श्रेष्ठतम रचना है। आज से तीन साल पहले, १९५१ के प्रारम्भ में, यह प्रकाशित हुई थी। ऐटमपंथी रण-नीति के चेहरे को, जो विभिन्न काट-छाँट और रंग-रूप के जनघाती फौजी-गठबन्धनों को जन्म देती है, यह पूरी तरह से बेनकाब करती है।

'काले बादल' रोमन किम की इन दोनों रचनाओं का स्वतंत्र और संक्षिप्त अनुवाद है।

—प्रकाशक

जैसी रूह वैसे फरिश्ते

[विश्व की जन-संस्कृति और मानव-चेतना को आतंकित करने वाले ऐटम-पंथी साहित्य और कला का चलचित्र]

[१]

दूर से वह जगह कुमकुमों के बन्दनवार की भाँति दिखाई देती थी। चौड़ी और दूर तक, बहुत दूर तक, चली गई सड़क के उस छोर पर वह स्थित थी। लगता था जैसे अन्तिम मंजिल वही हो, उसके बाद और कुछ नहीं होता।

एकाएक मैं समझ नहीं सका कि यह क्या है। इस तरह की चीज पहले कभी नहीं देखी थी। कौतुक में बढ़ती के साथ-साथ मेरे कदम भी बढ़ते गये। मैंने निश्चय किया कि इसका पता लगाये बिना पाँव पीछे नहीं हटाना चाहिए।

कह नहीं सकता, कितनी देर और कितनी दूर मुझे चलना पड़ा। मेरी घड़ी ने टिक-टिक करना बन्द कर दिया था। उसमें चाबी तक देने का मुझे ध्यान नहीं रहा था। जैसे-जैसे मैं बन्दनवार के निकट पहुँचता गया, वैसे-वैसे उसका आकार भी बढ़ता गया। मेरा अनुमान है, उसकी ऊँचाई 'आजादी की प्रतिमा' जितनी अवश्य रही होगी। उसका ऊपरी भाग सबसे अधिक चमक रहा था। निकट पहुँचने पर तीन अक्षर उभर कर आँखों के सामने आ गये,—यु. एस. पी.।

पास ही बेंच पर एक आदमी बैठा था। उसके पास जाकर बड़ी मुलायियत से मैंने पूछा,—"यह क्या है?"

"यह बन्दनवार है," उसने बड़ी तत्परता से समझाते हुए कहा,—"एक निराली दुनिया का प्रवेश-द्वार। इस दुनिया में किसी की हकूमत नहीं है,—यानी इसमें रहने वालों के सभी खून माफ हैं। ये जो तुम तीन अक्षर देख रहे हो, इनका अर्थ है,—यु से युनाइटेड, एस से स्टेट्स और पी से परनासस!"

"ओह," मैंने सोचा, "तो यह संयुक्त राज्य अमरीका का परनासस है,—वह जगह जहाँ अमरीकी साहित्य, संस्कृति और कला के देवी-देवता निवास करते हैं।"

लेकिन मुझे निराश होना पड़ा। साहित्य और संस्कृति के देवी-देवताओं में से एक भी प्रतिमा मुझे वहाँ नहीं दिखाई पड़ी। फिर इसकी बनावट ने भी मुझे स्तब्ध कर दिया। मैं निश्चय नहीं कर सका कि किस शैली की बनावट इसे कहा जाये,—डोरिक, आयोनिक, कोरिन्थियन अथवा इन तीनों की मिलावट से बना एक निराला अजूबा!

इसकी बनावट का, इसकी वास्तविक रूप-रेखा का, पता लगाने में एक और भी कठिनाई थी। ऊपर-से-नीचे तक विज्ञापनों ने इसे तोप रखा था,—बैंकों के विज्ञापन; उद्योग-धंधों और बीमा-कम्पनियों के विज्ञापन; थोक और फुटकर दुकानदारों के विज्ञापन; किताबें छापने वालों, अखबार और मासिक पत्रों, समाचार भेजनेवाली एजेंसियों, रेडियो और फिल्मों के विज्ञापन; मार्लबारो की सिगरेटों, कोलीनूज दन्त-मंजन, नाखूनों के पालिश, राजारानी साबुन, रबड़ की चोली, केनटकी की प्राचीन ह्विस्की और इसी तरह न जाने कितनी चीजों के विज्ञापनों ने इसे ढक रखा था।

परनासस की, संस्कृति के उस केन्द्र की जहाँ साहित्य और कला के देवी-देवता निवास करते हैं, मेरी कल्पना दूसरी ही थी। यहाँ वह कुछ नहीं था। मेरी चकित आँखों के सामने साहित्य के देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ और उनके निवास-स्थान नहीं, आकाश से होड़ करने वाली ऊँची इमारतें खड़ी थीं। सिगरेट की खाली डिब्बियों को एक के ऊपर एक रखकर खड़ी करने से जो ढाँचा तैयार होता है, दूर से देखने पर ये इमारतें ठीक वैसी ही मालूम होती थीं।

यहाँ जो कुछ देखा और सुना, उसी को शब्द-बद्ध करने के लिए आज मैं बैठा हूँ। हर बात के प्रमाण दिये जा सकते हैं। अमरीकी पत्रों और किताबों में जो कुछ छपता है, वह इसका सबूत है। बिना कैमरा के ही मैंने एक चलचित्र का निर्माण कर लिया है। इस चलचित्र का हर दृश्य असलियत से भरा

है। कथानक के सूत्रों और दृश्यों को एक सिलसिले में बाँधने के लिए जरूर कहीं-कहीं कुछ कल्पना की शरण लेनी पड़ी है, बाकी सब जैसा-का-तैसा है। वास्तविकता में जरा भी कमी नहीं आने दी गई है।

साहित्य और संस्कृति के देवी-देवताओं के इस केन्द्र का अमरीका के किसी भी नक्शे में अता-पता नहीं मिलेगा। जितने भी रंगे-चुने नक्शे और बड़ी से बड़ी गाइड-बुकें अब तक निकली हैं, उनमें बाइस पंसेरी के भाव से बिकने वाले धानों और घास-फूस तक का तो जिक्र मिल जायगा, पर इस केन्द्र का नहीं। फिर भी यह केन्द्र उतना ही वास्तविक है जितना कि निआग्रा का जलप्रपात, चेज नेशनल बैंक, या ट्रूमन की योजना।

भौगोलिक रूप में इस केन्द्र का कहीं कोई अस्तित्व नहीं है, लेकिन फिर भी आज के अमरीका का यह एक अंग है। इसकी एक सीमा पर वाल-स्ट्रीट, शेयर मार्केट और दूसरी बड़ी-बड़ी संस्थाएँ हैं; और इसके दूसरी ओर लास एंजेल्स का सुप्रसिद्ध हालीवुड है। अमरीका के तैंतीस बड़े उद्योग-केन्द्र भी, किसी-न-किसी रूप में, इसके दामन से लिपटे हुए हैं।

[२]

एक होटल में जाकर मैंने पड़ाव डाला, और निश्चय किया कि सबसे पहले वहाँ के प्रमुख प्रशासक से मिलना चाहिए। उनसे मिलने का समय तय करने के लिए टेलीफोन उठाने जा ही रहा था कि प्रशासकीय दफ्तर के एक अधिकारी ने,—बौस ने,—मेरे कमरे में प्रवेश किया। उम्र पचास के लगभग, देखने में बहुत ही भला आदमी, लाल चेहरा और सफेद बाल,—किसी नाटक के सूत्रधार और अमरीकी सीनेट के सदस्य बीच की नसल का जीव मालूम होता था।

उसने बताया कि प्रमुख किसी काम से वाशिंगटन चले गए हैं। लेकिन कोई बात नहीं। वह खुद भी, जन-सम्पर्क-अधिकारी होने के कारण, साहित्य और संस्कृति के इस केन्द्र के कोने-कोने से मुझे परिचित करा सकता है।

"और मैं एक साहित्यिक पत्र का संपादक भी हूँ," बौस ने कहा—

"मेरा अखबार बहुत बड़ी तादाद में छपता और बिकता है। मेरा ख्याल है, मुझ से अच्छा पथ-प्रदर्शक दूसरा नहीं मिलेगा। आप जो कुछ भी देखना चाहते हैं, सब दिखा दूँगा।"

"अच्छी बात है," मैंने कहा,—"सबसे पहले मुझे यहाँ के सबसे अधिक प्रसिद्ध लेखकों से मिला दीजिये।"

बौस ने अपना निचला होंठ बाहर को निकाल लिया।

"नहीं, यह सब कुछ नहीं," बौस ने कहा,—"आखिर तुम्हारा यहाँ आने का उद्देश्य क्या है,—हमारे सांस्कृतिक केन्द्र का सही चित्र देखना चाहते हो या कुछ नामी लोगों के दस्तखतों के नमूने जमा करने के लिए तुम यहाँ आये हो!"

"निश्चय ही मेरा उद्देश्य साहित्य और संस्कृति के इस केन्द्र का सही चित्र पाना है," अपने कंधे सिकोड़ते हुए मैंने कहा,—"लेकिन फिर भी...."

"मैं सब समझता हूँ," बौस ने बीच में ही बात काटकर कहा,—"हमारी सांस्कृतिक दुनियाँ का अध्ययन करने के लिए जितने भी लोग बाहर से आते हैं, वे सब उन्हीं लेखकों में अधिक दिलचस्पी रखते हैं जिनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली है। बाहरी दुनियाँ का जहाँ तक सम्बन्ध है, ये बड़े लेखक ही उसकी नजर में अमरीका का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये लेखक उन बड़े होटलों की तरह हैं जिनमें विदेशी यात्रियों को बहुधा ठहराया जाता है। लेकिन इन होटलों के जीवन से अमरीकी जीवन का अन्दाज नहीं लगाया जा सकता। अगर तुम वास्तव में कुछ देखना चाहते हो तो तुम्हें उन छोटे चायघरों में जाना होगा जहाँ अमरीका के साधारण निवासी जाते हैं,—या जा सकते हैं।"

"मैं आपके उस साहित्य से परिचित होना चाहता हूँ जिसे अमरीका के अधिकांश लेखक लिखते हैं, अधिकांश प्रकाशक छापते हैं, अधिकांश पाठक पढ़ते हैं।"

"बहुत ठीक," बौस ने कहा,—"मैं तुम्हें उँगली पर गिने जाने वाले दो-चार चोटी के लेखकों के पास नहीं, बल्कि ऐसी जगहों में ले चलूँगा जहाँ

अमरीका की लाखों-लाख जनता के लिए, सामूहिक रूप में, साहित्य और संस्कृति का उत्पादन होता है।"

"हमारा यह केन्द्र," खिड़की के पास जाकर बाहर की ओर संकेत करते हुए उसने कहा,—"आध्यात्मिक भोजन के उत्पादन का कारखाना है। अमरीका के असली साहित्य का,—उस साहित्य का जो अमरीका की अधिकांश जनता पढ़ती है,—यहीं निर्माण होता है। दुनियाँ में इस तरह का केन्द्र और कहीं नहीं मिलेगा। साहित्य और संस्कृति का हमारा यह केन्द्र अमरीका का गौरव है।"

"और वे कहाँ रहते हैं,—मेरा मतलब उन लेखकों से है जिनकी तुम बड़े होटलों से तुलना करते हो ?"

अपनी ठोड़ी को झटका देकर दूर दिखाई पड़ने वाले पेड़ों के झुरमुट की ओर बौस ने संकेत किया। पेड़ों के बीच से कुछ झोंपड़ियों की खपरैलें दिखाई पड़ रही थीं।

"उन्हें हमने नगर से बाहर खुली हवा में पहुंचा दिया है," बौस ने कहा,—"वहाँ वे बहुत आराम से हैं। शान्ति के साथ साहित्य साधना करते हैं, और बाहर से जब कोई आता है तो वे आराम के साथ उसे अपना आटोग्राफ (दस्तखत) दे सकते हैं।"

नीचे, होटल के दरवाजे के सामने, कार खड़ी थी। हम दोनों उसमें जाकर बैठ गये। बड़े बाजार में से होकर हमारी कार गुजरी। दोनों ओर बड़े-प्रकाशन-घर और अखबारों के दफ्तर थे। छोटे-बड़े, सभी कद और उम्र के, स्त्री और पुरुषों के समूह बड़ी-बड़ी इमारतों के बाहर जहाँ-तहाँ खड़े दिखाई दे रहे थे।

"देखते हो इन्हें," उनकी ओर संकेत करते हुए बौस ने कहा,—"ये सब लेखक हैं। जानते हो, इनकी कुल संख्या कितनी है,— एक लाख से अधिक। इनमें से पैंतीस हजार केवल लिखने पर गुजर करते हैं, बीस हजार लिखने के साथ-साथ दूसरा धंधा भी करते हैं, और बाकी के लिए लिखना एक शौक है। सब मिलकर जब किताबें लिखते हैं तो......"

मेरे चेहरे पर विनम्र अविश्वास से पूर्ण मुस्कराहट देखकर बौस ने कहा, "इन आँकड़ों को लेखकों के एक पत्र ने १९४१ में प्रकाशित किया था। लेकिन ये आँकड़े काफी पुराने हैं। सैनिकों के युद्ध से लौटने और युद्ध का माल तैयार करने वाले कारखानों के बन्द हो जाने के कारण इनकी संख्या अब असंदिग्ध रूप में अधिक है। पाँच लाख से ऊपर! क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं कि अमरीका में साहित्य फूल-फल रहा है?"

मैंने लेखकों से भरे फुटपाथ पर एक नजर डाली। उनमें से कुछ एक जगह बैठे सैण्डविचें चबा रहे थे, कुछ उनकी सैण्डविचों को ईर्ष्या की नजर से देख रहे थे। मुझे ऐसा लगा मानो फुटपाथ पर सरस्वती के उपासकों की नहीं, बल्कि बेकारों की एक भीड़ जमा थी। उनका कोई क्यू नहीं लगा था, बल्कि जो जरा तगड़ा होता था दूसरों को धक्का देकर वह आगे निकल जाता था। एक युवती फुटपाथ पर बिखरे अपनी पाण्डुलिपि के पन्नों को बटोर रही थी। वह सुबकियाँ भर रही थी।

[३]

कार तेजी के साथ गुजर रही थी। चमकीली और रंगी-चुनी किताबों और अखबारों से लदी दूकानों की बस एक झाँकी ही मिल पाती थी। कार की गति को धीमा कर एक दूकान की ओर बौस ने मेरा ध्यान आकर्षित किया।

"देखते हो इन अखबारों को, ये साधारण पाठकों के लिए निकलते हैं। जितने अधिक ये छपते हैं उतने दुनियाँ में और कोई नहीं छपता। 'कोलियर' नामक पत्र को ही लीजिये। यह पचीस लाख छपता है। 'सैटर्डे ईवनिंग पोस्ट' पत्र तीस लाख छपता है। गाँव में रहनेवालों के लिए अलग पत्र निकलते हैं। ये भी लाखों में छपते हैं। औरतों का पत्र 'होम जरनल' बहुत चलता है; लगभग पचास लाख छपता है। ढेर सारे जन-प्रिय मासिक, साप्ताहिक पत्र निकलते हैं। इनमें सभी तरह का साहित्य छपता है। सस्ते अखबार अलग निकलते हैं जिन्हें 'पल्प मैगज़ीन' कहते हैं। इन सब के पन्नों को भरने के लिए लेखकों की एक अच्छी-खासी फौज की जरूरत होती है। चोटी के दो-चार लेखकों का

तो इस भीड़ में खोजने पर भी कहीं पता नहीं चले । लेखकों की इतनी बड़ी सेना को तैयार करने में अमरीका दुनियाँ में सब से आगे है।"

बौस ने गर्व के साथ मेरी ओर देखा और एक ऐसी दुकान के सामने जाकर सहसा कार को रोक दिया जिसका अग्र-भाग जेबी किताबों की बन्दनवार से सजा हुआ था।

"इन्हें हम जेबी किताब कहते हैं," बौस ने कहा,—"जेबी किताबें दुनिया की संस्कृति को अमरीका की बहुत बड़ी देन हैं। जेबी किताबों को छोड़ कर हमारे साहित्य का अध्ययन करना ऐसा ही होगा जैसा कि किसी देश की पैदल सेना को छोड़कर उसकी सैनिक शक्ति का अध्ययन करना। अमरीकी साहित्य में जेबी किताबें पैदल सैनिकों का स्थान रखती हैं। अमरीका जेबी किताबों का जन्म-स्थान है,—सस्ती-की-सस्ती, इतनी हलकी और इतनी छोटी कि जेब में रख कर चाहे जहाँ चले जाइये।"

"मुझे ऐसा लगता है," बीच में ही मैंने मुलामियत से कहा,—"ऐसी किताबें यूरोप और एशिया के लिए एकदम नयी नहीं है। चीनी शब्द-कोषों में, जो कि अमरीका का पता लगने से भी बहुत प्राचीन हैं, 'सुइजेन' शब्द मिलता है। इस शब्द का अर्थ है 'आस्तीनी पुस्तक',—ऐसी पुस्तक जिसे आस्तीन में रखा जा सके।"

हाथ के झटके से बात के प्रभाव को हवा में उड़ाते हुए बौस ने कहा,—"निरी बकवास! इन चीनियों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। जेबी किताबों का इतिहास केवल १६३६ से शुरू होता है। इससे पहले उनका कहीं अस्तित्व तक नहीं था। मैं तुम्हें थोड़े में सब बता दूँगा।"

जेबी किताब के इतिहास के बारे में बौस ने जो कुछ बताया, उसका सार निम्न शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है:

"युद्ध के कई साल पहले से ही प्रकाशक यह अनुभव करने लगे थे कि औसत अमरीकी पाठक की खरीदने की शक्ति बराबर गिरती जा रही है। किताबों के दाम, आममौर से, दो या तीन डालर होते थे, जो कि बहुत अधिक थे। किताबें बिकती नहीं थीं, और प्रकाशक अपनी लागत तक नहीं

वसूल कर पाते थे। खरीदारों की स्थिति की जाँच करने के लिए कुछ पत्रों ने 'गैलप पोल' शुरू की। तब पता चला कि अमरीका की आबादी के एक प्रतिशत का दो बटा दसवाँ भाग किताबें खरीदता है। फलतः प्रकाशक केवल ऐसी किताबें छापने लगे जिनकी बिक्री निश्चित हो,—जैसे बेसबाल टीम की सूची, स्त्रियों के लिए नुस्खे, भोजन बनाने के तरीके। लेकिन एक प्रकाशक, रोबर्ट-डि-ग्राफ उसका नाम था, सूझ-बूझ का आदमी था। सोचते-सोचते उसने रात बिता दी, और सुबह के प्रकाश के साथ जेबी किताबों का विचार उसके दिमाग में उदय हुआ। इस प्रकार १६३६ में औसत पाठक को विजय करने के अभियान का अमरीका में श्रीगणेश हुआ। पन्द्रह से पच्चीस तक के सैंटों में सस्ती पुस्तकों के सामूहिक उत्पादन की योजनाएँ चालू की गईं। पुस्तकें, दाम की दृष्टि से ही नहीं, आकार-प्रकार की दृष्टि से भी जेब के अनुकूल होती थीं।"

इन जेबी किताबों से बाजार पट गया। किताबों और अखबार वालों के यहाँ ही नहीं, अन्य दुकानों पर भी ये दिखाई पड़ने लगीं। खुजली की दवा लेने आप किसी दवाफरोश के यहाँ जाइए और वहाँ से, दवा की शीशी के साथ-साथ, जेबी किताब भी ले आइए। देहातों में प्रचार करने के लिए सबसे अधिक उत्साही और वाचाल ट्रैवलिंग एजेन्टों की एक लम्बी सेना खड़ी हो गई। बड़े नगरों की रंगी चुनी सुन्दर स्त्रियों के हृदयग्राहक फोटो बेचने के अपने समृद्ध अनुभव से उन्होंने पूरा लाभ उठाया। आखिर जेबी किताबों का अभियान सफल हुआ। युद्ध के दौरान में, कागज की तंगी के कारण, जेबी किताबों की दिग्विजय और भी पूर्ण हो गई। जेबी किताबों ने बाजार पर कब्जा कर लिया।

"दूसरे महायुद्ध के तीन नतीजे निकले," बौस ने अपने लैक्चर का अन्त करते हुए कहा,—"पहला,—धुरी राष्ट्रों का पतन; दूसरा,—अणु-बम का निर्माण और तीसरा,—जेबी किताबों की विजय!"

अमरीकी संस्कृति की वाहक इन जेबी किताबों के नामों पर मेरी नजर घूम गई,—"पान का चौका, कैनेरी हत्याकाण्ड, जहर की पुड़िया और गोटे की किनारी, तीन मिनट में युद्ध, नरक के कीड़े.... !"

"इन किताबों पर रंग-बिरंगे हाशियों को देखकर तुम्हें आश्चर्य होता होगा," बौस ने उत्सुकता से कहा,—"यह सब खरीदारों की सुविधा के लिए है। हाशिये का रंग देख कर एक सेकेण्ड में पता चल जाता है कि यह किस विषय की पुस्तक है। हरा रंग, हमारे आलोचकों की राय में, जनता का रंग है क्योंकि इस रंगवाली किताबें जनता सब से अधिक खरीदती है। हरा रंग जासूसी उपन्यासों का रंग है। इन्हें पढ़कर पाठकों की बुद्धि तेज होती है, बड़ी-बड़ी पेचीदा बातों का रहस्य खोलने की उन्हें आदत पड़ जाती है। औसत पाठक जासूसी उपन्यास बहुत पसंद करता है। औसत पाठक ही क्यों, यह सभी जानते हैं कि अमरीकी सीनेट के सदस्य वाण्डनबर्ग और जेनरल मैकार्थर भी अधिकतर जासूसी उपन्यास ही पढ़ते हैं।"

"उन्हें गम्भीर साहित्य पढ़ने का समय भी नहीं मिलता होगा," मैंने कहा।

"हाँ, वे बहुत ही व्यस्त आदमी हैं," बौस ने कहा,—"जो भी हो, जासूसी साहित्य का प्रभाव बहुत व्यापक है। रोचक तो वह होता ही है, साथ ही पाठक को उससे लाभ भी बहुत होता है। इसलिए जासूसी साहित्य के उत्पादन पर हम अधिक ध्यान देते हैं। अभी तक तो हमने जेबी किताबें निकाली हैं। अब ऐसी किताबें निकालने का भी इरादा है जिन्हें चाहें तो पतलून की जेब में भी रख सकते हैं। औरतों के लिए खास तौर से छोटी किताबें निकालेंगे जिन्हें वे, लिपस्टिक और पाउडर के साथ, अपने बटुओं में रख सकें। पुस्तकें हर दृष्टि से पोर्टेबिल,—हलकी-फुलकी और उठाऊ,—होनी चाहिएँ, यही हमारा सिद्धान्त है।"

"लेकिन पाठक की जेब का ही नहीं, उसके दिमाग का भी तो ध्यान रखना चाहिए," मैंने कहा।

"सो तो है ही," बौस ने कहा,—"न दिमाग पर बोझ पड़े, न जेब पर, यही हमारी सफलता का मूल मंत्र है। लोगों पर वैसे ही बहुत बोझ लदा है। किताबों का बोझ और क्यों बढ़ाया जाय ?"

कार की गति को बौस ने फिर तेज कर दिया। जेबी किताबों को छोड़ कार आगे बढ़ चली।

[४]

एक बहुत बड़े सिनेमा-घर के सामने हम पहुँचे । सिनेमा में 'सदर्नर' नामक पुस्तक पर बना फिल्म चल रहा था। शीघ्र ही आनेवाले फिल्मों में एक समरसेट मौम की किताव पर बने फिल्म 'तलवार की धार' का पोस्टर लगा था। इस फिल्म में हिमालय के दृश्य दिखाये गये थे। पोस्टर में लिखा था कि चालीस लाख डालर खर्च करके ये दृश्य लिए गए हैं, और इस फिल्म को हिन्दुस्तान में भी बनाया गया है।

"सिनेमा साहित्य का सबसे बड़ा साथी है," बौस ने कहा,—"सिनेमा के जरिये लाखों अमरीकी सभी युगों और देशों के साहित्य से परिचित हो चुके हैं। देखो, मेरी बात का तुम्हें अभी सबूत मिल जायगा।"

बौस ने एक लड़के को जो हाथ में बेसबाल का दस्ताना और बगल में एक 'चेहरा' दबाये था, रोक कर पूछा,–"जरा यह तो बताओ कि तुम किन बड़ी किताबों के नाम जानते हो ?"

"तीन तिलंगे, काउण्ट आफ मायटे क्रिस्टो, ईवान हो, डायरी आफ ए हाउस मा........"

"बस-बस, अब यह बताओ कि इन किताबों से तुम्हारा परिचय कैसे हुआ ?"

सिनेमा के पर्दे पर "मैंने इन सबकी फिल्में देखी हैं।"

"धन्यवाद !" बौस ने कहा,—"देखा तुमनें, सिनेमा किस प्रकार साहित्य की उत्कृष्ट कृतियों का जन-साधारण में प्रचार करता है। लेकिन अभी ठहरो। किसी दूसरे से भी पूछना चाहिए।"

बौस ने इस बार यह सवाल पूछना निश्चय किया,—"आधुनिक लेखकों में तुम्हें कौन सबसे अच्छा लगता है ?" फिर मुझसे कहा कि भीड़ में से किसी एक को चुनकर मैं उससे यह सवाल पूछूँ। मैंने एक बुजुर्ग मगर चुस्त कपड़े पहने स्त्री को चुना, जो अभी बालों का शृङ्गार करनेवाली एक दूकान से बाहर निकली थी। मेरा सवाल सुन वह कुछ लजाकर मुस्करा दी।

"समझ में नहीं आता कि पहले किसका नाम लूँ। मैंने बहुत कुछ पढ़ा है। जान स्ट्रदर की लिखी हुई, 'श्रीमती मिनीवर की प्रेम लीला,' अगाथा क्रिस्टी लिखित 'लिंक्स में हत्या काण्ड', जेम्स हिल्टन की 'विलुप्त क्षितिज'...."

बौस ने बीच में ही उसे रोक दिया।

"बस, एक सवाल और है। इन पुस्तकों को तुमने अपने-आप चुना था या किसी दूसरे ने इन्हें पढ़ने की तुमसे सिफारिश की थी।"

"मैंने पहले इनके फिल्म देखे। जब दिलचस्पी बढ़ी तो किताबों को भी पढ़ना शुरू किया।"

बौस ने उसे धन्यवाद देकर विदा कर दिया, और हम आगे बढ़ गये।

"क्यों, तुम्हें कुछ यकीन हुआ?" बौस ने कहा,—"यह स्त्री औसत पाठक का प्रतिनिधित्व करती है। सिनेमा न होता तो क्या वह इन सब किताबों को जान पाती?"

बौस ने अपनी घड़ी पर नजर डाली और कार में लगे रेडियो को चालू कर दिया। रेडियो पर किसी स्त्री की आवाज आ रही थी। प्रसिद्ध किताबों के नामों पर बनी चोलियों, जाकेटों, गार्टरों आदि की प्रशंसा की जा रही थी,—'नाना' चोली, 'पिकविक' जाकेट, 'रोमियो' सैण्ट और 'जुलियट' पाउडर का परिचय दिया जा रहा था। इसके बाद सामयिक साहित्य की आलोचना का प्रोग्राम शुरू हुआ।

"अमरीका में जितनी भी रेडियो कम्पनियाँ हैं," बौस ने कहा,—"सभी साहित्यिक प्रोग्राम सुनाती हैं। कभी कोई उपन्यास, कभी कहानी, कभी आलोचना। अतिशयोक्ति न होगी अगर यह कहा जाय कि अमरीका का वायु-मण्डल साहित्य से सराबोर रहता है..."

रेडियो पर इस समय एक कहानी सुनाई जा रही थी :

"मेरी प्यारी बिली, धीमे स्वरों में अब कोई दूसरा गीत गाओ। मेरा सिर बुरी तरह दर्द कर रहा है।"

"इतना कहकर जब बिली के पति ने दूसरी ओर करवट बदली

तो उसने काफी के प्याले में चुपके से जहर की पुड़िया छोड़ दी। पलक झपकने में यह काम हो गया और बिली का हृदय खुशी से उछलने लगा। होंठों को भींच कर उसने अपनी मुसकराहट को बाहर आने से रोक दिया। आखिर इस बार उसने अपनी इच्छा पूरी कर ली......"

बौस ने रेडियो बन्द कर दिया और एक प्रतिमा की ओर उसने संकेत किया, जिसके पास से हमारी कार गुजर रही थी।

"यह कंगारू है,—साहित्यिक श्रेष्ठता का प्रतीक!" बौस ने बताया।

मेरी भौंहें चढ़ गईं—"साहित्यिक श्रेष्ठता का प्रतीक! क्या तुम्हारे लेखकों को यह अच्छा लगता है कि उनकी श्रेष्ठता का प्रतीक एक ऐसी चीज को बनाया जाय?"

"क्यों, इसमें बुरा लगने की क्या बात है?" बौस ने कहा,—"बल्कि यह कंगारू उन्हें प्रेरणा देता है। यह उनकी आकांक्षा का प्रतीक है। जब किसी लेखक की किताब का संस्करण दस लाख से ऊपर पहुँच जाता है तो जेबी किताब के प्रकाशक उसे चाँदी का कंगारू भेंट करते हैं। यह कंगारू जेबी किताबों के कवर पर भी छपता है। किसी लेखक को वह मिले, इससे बढ़कर सौभाग्य की बात और क्या हो सकती है। जो भी हो, इस प्रकार हम अपने लेखकों को प्रोत्साहित करते हैं।"

[५]

बौस ने लेखकों को प्रोत्साहित करने के अनेक रूपों का वर्णन शुरू कर दिया। किताबों और अखबारों के प्रकाशक प्रतियोगिताएँ चालू करते हैं। फिल्म कम्पनियाँ और बुक-क्लब भी इसमें बहुत बढ़े-चढ़े हैं। साहित्यिक पुरस्कारों में पुलिटजर पुरस्कार बहुत प्रसिद्ध है। मूल्य की दृष्टि से तो वह अधिक नहीं होता, लेकिन ख्याति उसकी बेहिसाब मानी जाती है।

बुक-क्लब पाठकों को अपने लिए किताबें चुनने की जहमत से बचा लेते हैं। अपने सदस्यों के सामने कभी इस और कभी उस किताब को वे उछालते रहते हैं। अमरीका में ये बहुत जनप्रिय सिद्ध हुए हैं। पाँच बड़े

बुक-क्लबों के सदस्यों की संख्या पेंतालीस लाख से कम न होगी।

बौस ने मेरे हाथ में एक अखबार थमा दिया जिसमें बुक-क्लब के सदस्य बनने का विज्ञापन छपा हुआ था। विज्ञापन में लिखा था :

"अब तुम्हें किसी भी ऐसी सभा सोसाइटी जहाँ साहित्य के विषय में चर्चा हो रही हो, मूर्ख बनने की जरूरत नहीं।"

"साहित्य और संस्कृति के बारे में सारी जानकारी प्राप्त कर अब तुम अपनी प्रेमिका की नजरों में ऊँचे उठ सकते हो।

"६ डालर भेजकर हमारे बुक-क्लब का सदस्य बनने पर तुम एक वर्ष तक ऊँची-से-ऊँची साहित्य-गोष्ठी पर अपना सिक्का जमा सकते हो।"

जेबी जासूसी साहित्य को उछालने वाले बुक-क्लबों की फीस और भी कम थी,—एक डालर में जासूसी की सबसे बढ़िया सात नई किताबें।

"मैं तुमसे दो सवाल पूछना चाहता हूँ," बौस से मैंने कहा,—"तुम्हारे बुक-क्लब क्या कभी ड्राइजर, सिन्क्लेयर, काल्डवेल या हावर्ड फास्ट की पुस्तकों के पढ़ने की भी सिफारिश करते हैं?,—और तुम्हारी 'अण्डा और मैं' नामक किताब क्या बला है जिसकी ढाई लाख प्रतियाँ बिक चुकी हैं?"

बौस ने मेरे पहले सवाल का जवाब गोल कर दिया। दूसरे सवाल के बारे में कहा,—'अण्डा और मैं' एक उपन्यास है। यह एक गरीब औरत की सच्ची कहानी है जिसने ईश्वर पर भरोसा रखते हुए अपनी सूझ-बूझ के सहारे जीवन-भर गरीबी से संघर्ष किया। अन्त में उसका भाग चमका और अन्डों का उसका व्यापार खूब फूला-फला। कुछ हजार मुर्गियों की सेना जमा करके उसने अपना भाग्य पलट लिया। अपने संघर्ष की इसी कहानी को उसने लिखा है। हर अमरीकन को इसे पढ़ना चाहिए। बुक-क्लबों ने इसकी सिफारिश की, पत्रों ने इसकी प्रशंसा के पुल बाँधे, फिल्म कम्पनी ने इसका फिल्म बनाया, जिसमें हमारी सुप्रसिद्ध अभिनेत्री क्लाडेट कोलबर्ट ने मुख्य भूमिका का निर्वाह किया है। नतीजा इसका यह कि एक गुमनाम पहाड़ी इलाके में रहने वाली यह औरत, जिसका नाम बैटी मैकडोनल्ड है, मुर्गियाँ

पालते-पालते एक लेखिका बन गई ।"

किताबों की एक दुकान के सामने कुछ लड़के इश्तहार बाँट रहे थे। हमारी कार में भी उन्होंने कुछ इश्तार फेंक दिये। उनमें से कई मेरी गोदी में आगिरे। उनमें लिखा था :

"आधुनिकतम 'अण्डा और मैं' विद्युत इन्क्यूबेटर खरीदिए।"

"मेरी मुलायम चमड़ी देखकर सभी को ईर्ष्या होती है। 'अण्डा और मैं' साबुन इस्तेमाल करने का यह नतीजा है।"

"बैटी टाई लगाकर पहली ही नजर में अपनी प्रेमिका को अपना बना लीजिए।"

मैंने बौस के सामने ये इश्तार रख दिए। उन्हें देखकर उसने अपनी गरदन को झटका दिया।

"इनसे पता चलता है कि कहानी और उपन्यास लिखकर ही नहीं, दूसरी चीजें लिखकर भी जनप्रिय बना जा सकता है। ललित साहित्य के अलावा साहित्य के अन्य जितने भी रूप हैं, उन सब को हम गैर-ललित नाम से पुकारते हैं। उदाहरण के लिए जीवनियों को लीजिए। हमारे बुक-क्लब जीवनियों की ओर खास ध्यान देते हैं। आखिर सभी को मालूम होना चाहिए कि हमारे सुप्रसिद्ध देशवासियों के जीवन का रहस्य क्या है? करेन्ट हिस्ट्री नामक मैगजीन साल में गैर-ललित साहित्य की सबसे अच्छी दस पुस्तकों की सूची प्रकाशित करता है। इनमें से एक राकफैलर की जीवनी भी है। फिर तुम्हें यह तो मालूम होगा ही कि पुलिटजर पुरस्कार कहानी-उपन्यासों पर ही नहीं, गैर-ललित साहित्य पर भी दिया जाता है। १९४६ में यह पुरस्कार कहानी-कविता लिखने वालों में से एक को भी नहीं मिला, वरन् न्यूहैरल्ड ट्रिब्यून के संवाददाता होमर बिगर्ट को दिया गया। जिसने अमरीका की नीति को शान्ति और निस्वार्थ की चादर में लपेट कर अपने संवादों में उजागर किया था। इसी तरह न्यूयार्क टाइम्स के एक संवाददाता विलियम लारेन्स ने भी यह पुरस्कार प्राप्त किया।"

"उसे किस लिए पुरस्कृत किया गया?" मैंने पूछा।

"लारेंस ने नौ अगस्त १६४५ को नागासाकी पर अणु-बम गिरते हुए देखा था। इसका उसने रोंगटे खड़े कर देने वाला विवरण भेजा। कहने का मतलब यह कि राजनीतिक विवरणों की हमारे देश में बहुत माँग है। कुछ देशों के बारे में हम बहुत दिलचस्पी रखते हैं। सोवियत संघ के बारे में ढेर सारी किताबें निकली हैं,—युजीन लियोन, बुलिट, लुई फिशर, ब्रूस ऐट-किन्सन,—कहाँ तक नाम गिनाऊँ। इस मास की पुस्तक नामक बुक-कलब ने, जिसके सदस्य दस लाख से ऊपर हैं, वाल्टिन की लिखी हुई गैर-ललित साहित्य की किताब को बहुत ऊँचा स्थान दिया है।"

"वाल्टिन को किताब,— वह तो जर्मन खुफिया विभाग गेस्टापो का एजेण्ट था न?"

"हाँ, यह सही है कि १६४१ में वाल्टिन को जर्मनी का जासूस होने के कारण गिरफ्तार किया गया था। अदालत में भी उसका जुर्म साबित हुआ। इसके अलावा उसने अपने एक आसामी की हत्या करने की भी कोशिश की थी। लेकिन इस से क्या, सोवियत संघ के बारे में उसने जो किताब लिखी है, वह वाकई दिवचस्प है। फिर जब खुद उसने अपना अपराध स्वीकार करके पश्चाताप प्रकट किया तो उसके विरुद्ध मुकदमा नहीं चलाया गया, और उसे अमरीकी सेना में भर्ती कर मोर्चे पर भेज दिया गया। वहाँ उसने खुफिया विभाग में बहुत काम किया। उसने एक किताब और भी लिखी थी। वह भी खूब बिकी।"

"वह अपनी पुस्तकें जर्मन-भाषा में ही लिखता होगा?" मैंने पूछा।

बौस ने सिर हिलाते हुए कहा,—"तुम भी अजब आदमी हो। गेस्टापो ऐसे आदमी को अमरीका क्यों भेजेगा जो अंग्रेजी न जानता हो। अपने मैगजीन के गैरललित साहित्य से सम्बंधित विभाग का काम मैंने उसे और बुलिट को सौंपा था। और हाँ, एक बात और ऐसे ही याद आ गई। हमारा जो ताजा अंक प्रेस में है, उसमें एक बहुत ही सनसनीखेज खबर छप रही है। वह एव ऐसे देश के बारे में है जो पोर्टचर्चिल के निकट कैनाडा में एकाएक अपनी सेनाएँ उतार देता है।

"तो क्या इस तरह के संवाद भी गैर-ललित साहित्य की श्रेणी में गिने जाते हैं ?"

"काल्पनिक इस में अगर कोई चीज है तो वह केवल शत्रु की सेना के कमाण्डर का नाम फीवाप्रोलोजेम्को है। मेरी राय में अखबारों में असली नामों का छापना असभ्यता है। तुम्हारे देश के अखबार जब अमरीका के बारे में लिखते हैं तो वे ऐसा ही करते हैं !"

"बहुत अच्छा", मैंने कहा—"मैं भी सभ्यता का दामन नहीं छोड़ूँगा। तुम्हारे इस केन्द्र के बारे में जब मैं लिखूँगा तो तुम्हारा नाम नहीं दूँगा जिससे हर कोई यह समझे कि मैंने केवल तुम्हारे बारे में ही नहीं, बल्कि तुम्हारी समूची बिरादरी के बारे में लिखा है !"

[६]

एक बड़ी इमारत के सामने जाकर कार रुक गई। यह बौस का आफिस था। एक लिफ्ट पर सवार होकर हम ऊपर चढ़े। कई बड़े कमरों में से होते हुए हम आगे बढ़े। लम्बी, पालिश से चमकती, मेजों पर लोग बैठे काम कर रहे थे। बिजली से चलने वाले टाइप राइटर खटखटा रहे थे। कुछ अपने हाथ से लिख रहे थे; कुछ मुँह से बोल रहे थे और स्टेनोग्राफर लिखते जाते थे; कुछ कैंची, कतरन और गोंददानी लिए बैठे थे। ये लोग कतरनों को सिलसिले से चिपकाते थे, और फिर तैयार चीज टाइप राइटरों की खटाखट के बीच मेजों को पार करती हुई उप-संपादकों के पास पहुँच जाती थी।

आफिस के कमरों में बैठे लोगों के बारे में एक चीज देखकर मैं चकित रह गया। ऐसी चीज मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। लेकिन हो सकता है, मैं खुद अच्छी तरह न देख पाया हूं। उनके पास से इतनी तेजी से गुजरना पड़ा था कि धुंधली झाँकी के सिवा और कुछ नहीं देख सका था।

बौस के दफ्तर में मैंने प्रवेश किया, और एक भारी-भरकम डैस्क के पास रखे काउच पर बैठ गया। पास की एक मेज पर दरजनों टेलीफोन रखे थे,—जेबी किताबों की तरह इनके रंग भी अलग-अलग थे। बौस एक साथ

कई-कई लोगों से टेलीफोन पर बात करता था। जब कभी कोई 'टकसाली' जवाब देना होता था तो बौस बटन दबा कर डिक्टाफोन को चालू कर देता था जिसमें से बौस की रिकार्ड की हुई आवाज अपने-आप निकलने लगती थी—"ठीक नहीं....कारण नहीं बता सकते....स्वीकृत है, केवल कुछ फेरफार करना होगा...स्वीकृत है, अपना पारिश्रमिक आकर ले जाओ...बहुत अच्छी रचना है। अगली किताब का भी कन्ट्राक्ट करलें... हमने केवल तुम्हारे कथानक का उपयोग किया है। शनिवार को अपना पैसा ले जाना। इस तरह की सामग्री और हो तो उसे भी लेते आना।"

एक डिक्टाफोन काले रंग का था और उस पर पीली पट्टियाँ बनी हुई थीं। यह डिक्टाफोन एक ही जवाब देता था,—"जहन्नुम में जाओ तुम !"

बौस ने इस तरह के अनेक टकसाली जवाबों के रिकार्ड बनवा लिए थे। बटन दबाते ही रिकार्ड बजने लगते थे, और बौस एक साथ कितनों को ही निबटा देता था।

बौस की कुर्सी के बांई ओर जैतून की छोटी-सी मेज पर एक सफेद रंग का टेलीफोन रक्खा था। इसकी घंटी बजते ही बौस के कान खड़े हो जाते थे, और फिर बड़े ही अनुनय भरे स्वर में वह कहता था,—"बहुत अच्छा सरकार, यह काम अभी तुरंत हो जायगा।"

इसके बाद वह अनेक रंगों के अनगिनती बटनों को दबाना शुरू करता और डिक्टाफोन से आफिस के कर्मचारियों के लिए आदेश निकलने शुरू हो जाते।

सफेद टेलीफोन की घंटी बजने के बाद एक बार मैंने बौस को कुछ इस तरह के आदेश देते सुना,—

"तैमूर रबर वाली उस कहानी के बारे में जल्दी करो। मंगल से विद्रोह और उत्पात शुरू हो जायँगे। बामन के डगों से काम करो। क्या कहा? नहीं। मोनसान्टो रसायन। अधिवेशन शुरू होने से पहले बेलजियम, कांगो और कोरिया के दक्षिणी द्वीपों और अफगानिस्तान की ओर खास ध्यान देना है। अपने संवाद दताओं को तुरन्त भेजो। जेबी संस्करणों के लिए उनके रोमांचकारी यात्रा-वर्णन बहुत उपयुक्त होंगे। आदेश आये हैं कि जहरीले कीटाणु-

बमों को इन संवादों में विशेष महत्व मिलना चाहिए। विस्तृत निर्देश मिलने की हर घड़ी इन्तजार है।"

फिर भौंहे सिकोड़ कर मुझे सम्बोधित करते हुए बौस ने कहा,—"पाठकों के पास समय की बहुधा तंगी रहती है। यह देखकर हमने थोड़े में उपन्यासों और कहानियों का 'निचोड़' देने का निश्चय किया है। इससे साल में कम-से-कम डेढ़ हजार घंटों की बचत होगी। दृश्यों के लम्बे वर्णनों, परिस्थियों और हृदय की हलचलों के विश्लेषणों,—इन सब को संक्षिप्त कर देने से काम चल जाता है। इस तरह केवल पाँच डॉलर में आप साल में पचास उपन्यासों की इतनी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं कि किसी भी साहित्य-गोष्ठी में तत्सम्बन्धी बहसों में हिस्सा ले सकें।"

"एक ऐसे देश से जहाँ अमरीका की अधिकांश सेनाएं तैनात हैं 'वैदरकाल' नामक मैगजीन प्रकाशित होता है जिसमें मुख्यतः अमरीकी समाचार ऐजन्सियों के संवाद तथा कहानियाँ आदि छपते हैं," मैंने कहा,—"इसमें एक सुप्रसिद्ध लेखक के उपन्यास का 'निचोड़' मैंने देखा था। चित्रों को मिलाकर कुल दस पृष्ठों में ही सारा उपन्यास खत्म कर दिया गया था।"

"इसका मतलब यह कि", बौस ने कहा,—"इस उपन्यास की जानकारी प्राप्त करने में पन्द्रह मिनट से अधिक नहीं लगेंगे। राह चलते आप-हम इसे पढ़ सकते हैं। पाठकों के लिए इससे अधिक सुविधाजनक और क्या होगा? वैद्य लोग जिस तरह 'सत' निकालते हैं, उसी तरह..."

मेरे सामने एक मैगजीन पड़ा था। इसका नाम था "साहित्य, कला और जन-जीवन"। इसके कवर पर लिखा था कि एक मिनट के भीतर साहित्य और जीवन की प्रत्येक दिलचस्प गति-विधि का परिचय प्राप्त कीजिये। एक पृष्ठ पर किताबों के नाम छपे थे, और इन नामों के आगे नम्बर दिये हुए थे। नम्बर तीन का अर्थ था बेहद अच्छी किताब, नम्बर दो का अच्छी किताब, और नम्बर एक का ऐसी किताब जिससे दूर रहना चाहिए। नम्बर एक वाली किताबों में सिनक्लेयर ल्युविस और एडगरस्नो का नाम था। एडगरस्नो ने एक किताब लिखी थी जिसमें अमरीका की विदेश नीति की आलोचना की गई थी।

"और उधर क्या है ?" सहसा मेरा ध्यान कमरे के उस छोर पर चला गया जहाँ एक दरवाजा था जिसके ऊपरी भाग में काँच जड़ा हुआ था।

बौस मुझे उस दरवाजे की ओर ले गया। जिस कमरे में अब हमने प्रवेश किया उसमें एक बड़ी मेज पर बैठे कई आदमी काम कर रहे थे। हालांकि वे सब भिन्न-भिन्न प्रकार के कपड़े पहने हुए थे, फिर भी उन सबकी आकृतियों में एक जैसी अनहोनी विचित्रता देखकर मैं स्तब्ध रह गया। लेकिन यह विचित्रता ऐसी थी कि उसपर विश्वास नहीं हुआ। मैंने सोचा कि हो सकता है, मेरी ही नजर में कोई दोष पैदा हो गया हो।

"इन कमरों में जिनसे होकर हम यहाँ अभी आये हैं", बौस ने कहा,—"दो श्रेणी के लेखक काम करते हैं। पहली या निम्नतम श्रेणी के लेखक 'कापी' (पाण्डुलिपि) तैयार करने का प्रारम्भिक कार्य करते हैं,—उन्हें बने-बनाये कथानक दे दिये जाते हैं, इन कथानकों के आधार पर वे कहानी का खाका तैयार करते हैं या चित्रों की सीरीज़ का शब्द-परिचय लिखते हैं। चित्रों के मुकाबले में अगर उनका शब्द-वर्णन अच्छा बन जाता है तो उन चित्रों को उस वर्णन की शोभा बढ़ाने के लिए इस्तेमाल कर लिया जाता है। इस श्रेणी के लेखकों में केवल इतनी प्रारम्भिक योग्यता होनी चाहिए कि वे चीजों का वर्णन कर सकें, कथोपकथनों और ऐक्शन को आगे बढ़ा सकें। ये लेखक इस तरह जो अनगढ़ चीज तैयार करते हैं वह फिर दूसरी श्रेणी के लेखकों के पास जाती है जिनका काम कथानकों की रचना कर अनगढ़ चीजों को एक शक्ल देना होता है। कुछ कथानकों को तो ये दूसरी श्रेणी के लेखक खुद ही विकसित करते हैं, और कुछ को पहली श्रेणी के लेखकों के पास फिर से लौटा देते हैं। इन सभी लेखकों को, कहना नहीं होगा। अपनी कल्पना को काम में लाने की पूरी आजादी है।

"और इस कमरे में," बौस ने काँच लगे दरवाजे की ओर संकेत करते हुए कहा,—"चोटी के लेखक बैठते हैं। ये अपने प्लाटों की खुद ही रचना करते हैं, खुद ही उन्हें लिखते हैं। ये लेखक पूरी तरह आजाद हैं, और चाहे जो लिख सकते हैं। इन पर कोई बन्धन नहीं होता। निश्चित पारिश्रमिक पर

एक सप्ताह में शब्दों की निश्चित संख्या लिखकर देने के लिए हमने इनसे कन्ट्राक्ट कर लिए हैं।"

[७]

साहित्य के इन निर्माताओं की ओर बरबस मेरी नजर घूम गई, और मन-ही-मन मैंने फिर अपने से यही कहा कि हो-न-हो कोई दृष्टि-दोष है जो मुझे ये ऐसे दिखाई देते हैं।

"जैसा कि तुम्हारी आँखों के सामने है," बौस ने कहा,—"लिखने की कला को अधिक कारगर बनाने के लिए हमने आधुनिक पद्धति को अपनाया है। राडर, स्ट्रैप्टो माईसीन, आर्गन-एलेक्ट्रोनिक जैसे आविष्कारों के इस युग में आप प्रस्तर युग के तरीकों का इस्तेमाल नहीं कर सकते। उन दिनों तो एक ही व्यक्ति लेखक भी होता था, पुजारी भी होता था और ओझा-गिरी के भी बहुत से काम करता था। अपनी गुफा में बैठकर अकेले में शुरू से अन्त तक वह अपनी रचना को पूरा कर लेता था। हमने लिखने के काम को 'रेशनलाइज' कर लिया है,—आधुनिकतम टैकनीक के आधार पर हमने एक ऐसी पद्धति अपनाई है कि जिसमें उत्पादन मशीनरी के सभी हिस्से सुसंगत और सुचारू रूप में काम करते हैं।

उत्पादन के परिमाणों को बढ़ाकर हम बराबर अधिक-से-अधिक पुस्तकों का निर्माण कर रहे हैं। लेकिन इस दिशा में फिल्म-कम्पनियाँ हमसे बहुत आगे बढ़ गई हैं...।"

बौस ने सड़क के दूसरी ओर स्थित एक लम्बी, एक मंजिला इमारत की ओर गरदन से संकेत किया। खुली खिड़कियों में से मैंने देखा कि इमारत के बड़े कमरे को लकड़ी के तख्तों की दीवारें खड़ी करके अनेक भागों में बाँट दिया गया है।

"यह सिनेरियो-विभाग है। जिस तरह मोटर के पुर्जे अलग-अलग बनते हैं और बाद में उन्हें जोड़कर मोटर तैयार की जाती है, उसी तरह सिनेरियो,—फिल्म की मूल कथा,—लिखने के काम को भी अनेक टेकनीकल विभागों में

बाँट कर आधुनिकतम रूप दे दिया गया है। कुल मिलाकर ये टेकनीकल विभाग बिना किसी बाधा के काम करते हैं। इस तरीके से उत्पादन अत्यधिक बढ़ जाता है और इस कारखाने के जो लेखक बुनियादी वे पुर्जे हैं, वे अपनी पूरी ताकत से उत्पादन करते हैं। यह सही है कि इस तरह खराब रचनाओं की संख्या कुछ बढ़ गई है; लेकिन वह कुछ नहीं। सब से महत्वपूर्ण बात तो यह है कि इस तरह हमने उत्पादन में वृद्धि करने में सफलता प्राप्त की है। किताबों के बाजार में अब किताबों का अकाल नहीं रहेगा।"

पास वाले कमरे से दो आदमियों ने प्रवेश किया। एक क्षण के लिए मेरी दृष्टि फिर उनके चेहरों की ओर गई, और मुझे फिर अपनी नजर पर धोखा होने का शक हुआ। मेरे लिए यह विश्वास करना कठिन था कि ऐसा भी हो सकता है।

उन्होंने बौस के हाथ में टाइप किये हुए कुछ कागज थमा दिये। बौस ने उन्हें सारसरी नजर से देखकर वापिस कर दिया।

'बिल्कुल नीरस!" बौस ने निर्णय दिया,—"दसवीं पंक्ति तक पहुँचते पहुँचते पाठक को नींद आने लगेगी। घटनाएँ घिसी-पिटी और बेजान हैं। कोई नवीनता नहीं। जम कर गहरे कौतुक की रचना करो,—ठीक वैसे ही जैसे हिचकौक करता है। 'हुहैनिट' न होकर यह तो बच्चों को सुलाने वाली कहानी बन गई है। इसका अन्त चुस्त होना चाहिए,—एक दम चुस्त!"

"यह 'हुहैनिट' क्या चीज है?" लेखक के चले जाने के बाद मैंने पूछा।

"अर-र...अरे, यह एक टेकनीकल शब्द है', बौस की इच्छा स्पष्ट ही अपने किसी भी व्यापारिक भेद को प्रकट करने की नहीं थी,—"हाँ तो मैं कह क्या रहा था...हाँ, याद आया...तुम लोग अभी तक बाबा आदम के युग में फँसे हो। हमारा तरीका तुमसे भिन्न है। यह हमारी अपनी, खास अमरीका की, ईजाद है। तुम भी जब हमारे जितने गल्प-मैगज़ीन और जेबी किताबें बाजार में फेंकना शुरू करोगे तो पुराने तरीके साथ नहीं देंगे।"

"लेकिन तुम्हारे यहाँ भी ऐसे लेखक काफी होंगे जो अपने घर पर बैठ

कर साहित्य की रचना करते हैं ?" मैंने पूछा।

"हाँ," बौस ने जवाब दिया,—"हमारे यहाँ भी पाण्डुलिपियों के उत्पादन में बाबा आदम के युग की पद्धति से काम लेना अभी पूरी तरह से खत्म नहीं हो सका है। लेकिन जैसे-जैसे लेखकों की रचनाओं की माँग बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे लेखक भी अपने दफ्तर रखने लगे हैं। इनमें अनेक छोटे लेखक काम काम करते हैं। यह ठीक दिशा में शुरुआत है। बड़ी फिल्म-कम्पनियों के सिनेरियो-विभागों ने इस दिशा में बहुत काम किया है।"

मैंने बौस से अनुरोध किया कि इन दफ्तरों के बारे में कुछ और बतायें। बौस ने जवाब दिया कि किसी का भेद खोलना अच्छा नहीं होता। वे लेखक जो इस तरह के दफ्तर रखते हैं, इसे छिपाने की कोशिश करते हैं। उन्हें शायद इसे प्रकट करने में संकोच मालूम होता है। लेकिन यह लज्जा की नहीं, गर्व की बात है कि हम लेखन-कला को भी आज के युग के मुताबिक आधुनिकतम साँचे में ढाल रहे हैं। अमरीका को इस बात पर गर्व है कि उसने इस दिशा में आगे बढ़कर एक मिसाल पेश की है।

उन जीवित अमरीकी लेखकों में जो अपने दफ्तरों को छिपाकर नहीं रखते, जोसेफ हिल्टन और एलेरी क्वीन हैं। हिल्टन कई साल तक विभिन्न पत्रों को प्रतिवर्ष बराबर पाँच लाख शब्द सप्लाई करता रहा, और अन्त में खुद एक प्रकाशक बन गया। क्वीन का दफ्तर न्यूयार्क के पंच-एवेन्यू में है। फ्रेडरिक डैनी और मैनफ्रेड ली इस दफ्तर को चलाते हैं। इस दफ्तर से ही उन किताबों का 'उत्पादन' होता है जिन पर एलेरी क्वीन का नाम लिखा रहता है। एलेरी क्वीन के नाम से, जासूसी लेखिका के रूप में, अमरीका की समूची जनता परिचित है। इस दफ्तर से निकली एक किताब की दस लाख से अधिक प्रतियाँ बिकीं और डैनी तथा ली ने गर्टरूड पुरस्कार प्राप्त किया। हाल ही में इस दफ्तर ने बच्चों के लिए भी, एलेरी क्वीन का ट्रेडमार्क लगाकर, किताबें निकालना शुरू किया है। इसी प्रकार रोबर्ट लारेन्स का दफ्तर भी अमरीका में प्रसिद्ध है। किताबों की दुनियाँ में यह आधुनिकतम चीज है जिसे अमरिका के लेखकों ने अपनाया है। इस तरह के बहुत से दफ्तर हैं,

लेकिन इन दफ्तरों के मालिकों की रजामन्दी के बिना उनके नामों का जिक्र करना 'ज्यादती' होगी।

इसी बीच बौस की युवती सेक्रेटरी ने मिलने के लिए आये लोगों की एक सूची पेश की और धीमे से कहा कि पहले मिस्टर बूलरिच मिलना चाहते हैं। वह अपने साथ दस हजार शब्दों की एक बहुत ही रोचक रचना लाये हैं जो वास्तव में 'हूहैनिट' है।

बौस की भलमनसाहत पर अधिक बोझ न पड़े, इसलिए मैंने चलने की इजाजत चाही।

"माफ कीजिएगा," बौस ने कहा,—"मैं विस्तार के साथ आपको कुछ नहीं बता सका। मेरी संक्षिप्त और सरसरी बातों से आपको सन्तोष तो न होगा, लेकिन फिर भी कुछ झाँकी तो मिल ही गई होगी। अमरीका की सांस्कृतिक गति-विधि में तुम्हारी दिलचस्पी सहज स्वाभाविक है। युद्ध ने दुनियाँ की संस्कृति को गहरा आघात पहुँचाया है,—एक तरह से उसे नष्ट कर दिया है। इसलिए, स्वभावतः अन्य औद्योगिक माल के साथ-साथ सांस्कृतिक 'माल' सप्लाई करने का बोझ भी अमरीका के ही कंधों पर आपड़ा है। कितना बड़ा काम है यह। एक-दो नहीं, सभी देशों की संस्कृतिक आवश्यकताओं को हमें पूरा करना है। इस काम को हमारा यह साहित्य और संस्कृति केन्द्र ही पूरा कर सकता है। इसने 'घरेलू पाठकों' को जीतने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

"अमरीकी पाठकों को जीतने में जिन तरीकों और उत्पादन-पद्धति का इस्तेमाल किया गया है, उन सब का अब दूसरे देशों के पाठकों को जीतने में भी प्रयोग किया जा रहा है। जिस प्रकार सिनेमा ने साहित्य को अमरीका में जन-प्रिय बनाया उसी प्रकार वह अब दुनिया-व्यापी पैमाने पर साहित्य को सर्वप्रिय बना रहा है। पाठकों को विजय करने की इस मुहीम में सिनेमा अग्रिम दस्ते का काम देगा। सभी देशों में अमरीकी फिल्मों का वितरण और उनका स्थानिक प्रदर्शन करने वाली संस्थाएँ काम कर रही हैं। ये संस्थाएँ उन देशों में विशेष रूप से सक्रिय हैं जहाँ अमरीकी सेनाएँ भी अपना पड़ाव डाले हुए हैं,—जैसे एथेन्स में, रंगून में, पटागोनिया में, शंघाई में......!"

"शंघाई का नाम सुनकर मुझे एक बात याद आगई ?" मैंने बीच में ही टोककर कहा,—"ताइहुआ से शुरू करके शंघाई में जितने भी अमरीकी सिनेमा हैं, वे सब टारजन कीउछलकूद और चोर-डाकुओं तथा नकाबपोशों की मारकाट के फिल्म दिखाते हैं। दक्षिणी कोरिया और जापान में 'भुतहा घर' और 'प्रेत तथा श्रीमती' जैसे डरावने फिल्मों का प्रदर्शन किया जाता है। इसमें एक विधवा स्त्री की कहानी है जो एक प्रेत से प्रेम करती है, और अन्त में उस के आलिंगन में फँस कर रह जाती है। एक और फिल्म वहाँ दिखाया जाता है जिसका नाम है 'स्त्रियाँ जब खाली होती हैं।' इस फिल्म में एक औरत अपनी दो पागल बहनों के साथ रहती है, और अन्त में पागल हो जाती है। वह अपनी मकान-मलिकन की हत्या भी करती है। मैट्रो का बनाया हुआ एक और फिल्म है जिसका नाम 'गैसलाइट' है। इसमें एक ऐसे पति की कहानी है जो अपनी पत्नी की चाची की हत्या करता है, और अपनी पत्नी की मन-स्थति को पागलपन की हद तक पहुँचा देता है। यह इसलिए कि वह उसके हारों पर कब्जा करना चाहता है। एक अन्य फिल्म है जिसका नाम है 'गुलाबी प्रेत'। इसमें एक आदमी है जो एक के बाद एक कई लड़कियों की हत्या करता है। इसी तरह एक दूसरे फिल्म में अपनी प्रेमिकाओं की हत्या करने वाले कलाकार की कहानी चित्र-बद्ध की गई है। बीसवीं सदी कम्पनी के एक फिल्म 'किरायेदार' में भी इसी प्रकार हत्याओं का बाजार गर्म है और······"

बौस की भौंहों में बल पड़ते जा रहे थे।

"फिल्मी कथानकों को लेकर इस तरह टांग खींचने से कोई लाभ नहीं। एशियाई जनता की रुचि और जीवन के अनुसार हमें चलचित्र दिखाने होते हैं। हम अपनी 'रुचि' उन पर नहीं लादते, न ही हम उन्हें किसी 'वाद' के प्रचार का शिकार बनाना चाहते हैं। हमारा काम तो, जैसा जनेरल मैकार्थर ने कहा था, देशी लोगों में जनतंत्र की भावनाओं का प्रसार करना है, और खत-रनाक विचारों और प्रेरणाओं से उनके दिल व दिमाग को दूर रखना है। इन देशों में हम अन्य फिल्म भी भेजते हैं, जैसे कोलम्बिया कृत 'बहुत दिन पहले

की बात।' इस फिल्म में एक ऐसे आदमी की कहानी है जो तितली बन जाता है, या फिर एक दूसरा फिल्म जिसका नायक अपने को शैतान के हाथों बेच देता है। इस फिल्म का नाम है 'धन क्या नहीं खरीद सकता।' लेकिन स्थानिक सिनेमाओं ने इसका नाम बदल कर 'शैतान की दौलत' रख दिया।"

"नाम का यह परिवर्तन काफी सार्थक मालूम होता है?" मैंने कहा।

"नाम तो नाम ही होते हैं। उनमें अर्थ खोजना गलत है। महत्व की बात यह है कि हमारे फिल्म हमारी संस्कृति के अग्रदूत हैं। उन्हें देखकर दूसरे देशों में हमारे लेखकों की पुस्तकें पढ़ने के प्रति रुचि उत्पन्न होगी। यह फिल्मों का ही नतीजा है जो विदेशों में हमारी किताबों की खपत बराबर बढ़ रही है। हमारी फिल्म कम्पनियाँ बीस भाषाओं में फिल्म बनाती हैं। इसी तरह हम भी सभी भाषाओं में किताबें निकालने जा रहे हैं।

"विदेशों में हमारी सांस्कृतिक मुहिम का नेतृत्व," बौस ने कहा,— "स्टेट डिपार्टमेण्ट के हाथ में है। और हमारे यहाँ के करोड़पति अपनी पूँजी लगाकर उसे कार्यान्वित करते हैं। युद्ध के खत्म होते ही हमने अपने विशेषज्ञों के प्रतिनिधि-मंडल इन देशों में भेजने शुरू कर दिये। जापान में जो कमीशन गया, वह विशेष रूप से सफल सिद्ध हुआ।"

"जापान वाले प्रतिनिधि-मण्डल का मुखिया कौन था?" मैंने पूछा।

"प्रोफेसर स्टीवेन्स। अमरीका का एक सुप्रसिद्ध विद्वान।"

"वह किस यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर है?"

"यूनिवर्सिटी में नहीं, वह राकफैलर की फर्म में काम करता है?" बौस ने अपनी घड़ी की ओर देखते हुए कहा,—"प्रोफेसर, बड़े-बड़े वैज्ञानिक और लेखक, इस शुभ काम में हमें सभी का सहयोग प्राप्त है। विदेशों में स्थित हमारी सेनाओं के जितने भी हेडक्वार्टर हैं, स्थानिक लोगों में काम करने के लिए उन सबके साथ सी-आई-एण्ड-ई विभाग नत्थी हैं। इन विभागों की पुस्तकालय-यूनिटें हमारे साहित्य के प्रचार और प्रसार का काम देखती हैं।"

"लेकिन इस बारे में तुम्हारा क्या कहना है कि 'सूचना और शिक्षा',

का यह काम सैनिक खुफिया विभाग के सेक्शन जी-टू का अंग बना दिया गया है ?"

"विभाग-विशेष का नाम लेकर इस तरह बाल की खाल क्यों निकालते हो। यह क्या गर्व की बात नहीं है कि हमारा खुफिया विभाग इतना योग्य है कि वह साहित्यिक काम भी कर सकता है। निन्दा न करके तुम्हें हमारी काम करने की क्षमता की प्रशंसा करनी चाहिए।"

मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर बौस ने उसे दबाया, और मेरे कंधे को थपथपाते हुए कहा,—"यह याद रखो कि अमरीका में साहित्य-रचना ने जो इतना व्यापक रूप धारण कर लिया है, इसका कारण यह है कि हम अपनी जनता की रुचि के मालिक, उसके पोषक और निर्देशक हैं। विश्व-संस्कृति का मोर्चा आज अमरीका के हाथ में है। इस मोर्चे को जीतने के लिए हमारे देश के बड़े-बड़े उद्योगपति मारगन, राकफ़ैलर और मैलन, गूगानहाइम, ड्यूपौं वाण्डरबिल्ट, रोजेनवाल्ड, कार्नेगी, हैरीमैन और दूसरे भरपूर मदद दे रहे हैं।

बौस की युवती-सेक्रेटरी ने इसी समय फिर प्रवेश किया और कहा कि स्टीवेन्स बात करना चाहते हैं। बौस ने मेरी ओर भेद-भरी दृष्टि से देखते हुए सफेद टेलीफोन उठाया। बौस की दृष्टि का अर्थ समझ मैं वहाँ से उठकर बाहर चला आया।

[८]

बौस के आफिस से निकल कर मैंने एक ड्रग-स्टोर में प्रवेश किया, और गलातर करने के लिए टमाटर, गाजर और गोभी के रसों का घोल, जिसमें मिर्च भी पड़ी थी, पिया। यह ड्रगस्टोर इस तरह के न जाने कितनी प्रकार के घोल बनाकर बेचता था। एक ग्राहक ने कैस्टर आयल के घोल की माँग की। दुकानदार ने जोरों से हिलाकर एक लम्बे से गिलास में घोल तैयार किया, और ग्राहक को दे दिया। मेरी ओर कनखियों से देखते हुए उसने गिलास खाली कर दिया, और फिर जेब में से भुनी हुई मटर के दाने निकाल कर चबाने लगा।

"क्या यह जगह खाली है ?" सहसा मेरे पीछे से आवाज आई।

मैंने घूमकर देखा, और देखकर स्तब्ध रह गया।

काँच लगे दरवाजे वाले कमरे में जिन लोगों को देखा था, उनमें से एक मेरे सामने खड़ा था। इस बार मुझे अपनी आँखों पर विश्वास करना पड़ा। अब मेरे चकित होने का कारण उसकी आकृति नहीं, बल्कि यह था कि ड्रग-स्टोर में जितने भी लोग थे, उनमें से अन्य किसी को उसकी आकृतिमें कुछ भी अजब या असाधारण नहीं दिखाई दिया था। बिना किसी उत्साह या गर्मी के एक बार गरदन झुकाकर वह मेरे पास वाली दूसरी कुर्सी पर बैठ गया और लेमन सोडा के लिए उसने आर्डर दिया।

पास ही एक अखबार वाले की दुकान से मैं कितने ही पत्र-पत्रिकाएँ खरीद लाया था। मैंने उनके पन्ने पलटना शुरू कर दिया।

मुझे लगा कि असाधारण चेहरे वाला यह व्यक्ति मेरी ओर देख रहा है। निकट से देखने पर उसका चेहरा और भी अजब लग रहा था। उसे देख कर पेन्सिल से खींचे हुए एक ऐसे चेहरे की याद हो आई जिसकी रेखाओं को रबड़ से धुँधला कर दिया गया हो। अधिक सही बात तो यही थी कि चेहरा नाम की चीज उसके पास थी ही नहीं। मुँह की धुँधली बाह्य-रेखाओं के सिवाय और कुछ न था जिससे उसके चेहरे का, उसकी आकृति और व्यक्तित्व का, कुछ आभास मिलता।

इस अजनबी व्यक्ति ने अपनी जेब से एक चपटी बोतल निकाली, और उसे सामने रखे गिलास में उंडेल लिया। इस घरेलू घोल के लम्बे घूँट पीने के बाद वह कुछ चेतन हुआ और उसने बातें शुरू कर दीं। उसने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ का रहने वाला हूँ। मैंने बता दिया कि मैं कहाँ का रहने वाला हूं, और मेरी इस यात्रा का उद्देश्य क्या है। मेरी बात सुनकर उसने मुँह बिचका लिया।

"तुम्हारे देश के बारे में मैंने अनेक किताबें पढ़ी हैं, और अब तक कोई अच्छी राय मैं नहीं बना सका हूं। मैं समझता हूँ, तुम्हें यहाँ परेशान करने वाली चीजों से काफी वास्ता पड़ा होगा। क्यों, ठीक है न ?"

उसके बोलने के इस ढंग और व्यंग भरे अन्दाज ने मुझे कुछ चौंका-सा दिया।

"असली साहित्य का," उसने कहा,—"राजनीति से कोई वास्ता नहीं होता। साहित्य को राजनीति से पूर्णतया अलग, तटस्थ, रहना चाहिए।"

"तटस्थता की भी अपनी राजनीति होती है," मैंने कहा,—"जैसे युद्ध के दौरान में फ्रैन्को तटस्थ रहा था।"

"राजनीतिक बातों में तुम से लोहा लेना कठिन है", उसने कहा,—"लेकिन चूँकि तुम लेखक हो, इसलिए मैं समझता हूँ कि तुम्हारा उससे सीधा सम्बन्ध नहीं हो सकता। जो भी हो, एक-दूसरे से परिचित होना बुरा न होगा।"

मैंने अपना नाम बता दिया। उसने भी अपने विचित्र चेहरे और बोलने के विचित्र ढंग के साथ बुड़बुड़ा कर कहा,—"मेरा नाम है पी. एच. पी।"

मुझे लगा कि जैसे मेरे सुनने में कोई कसर रह गई, या यह नाम ही कुछ अजीब है। जो हो, मैंने इस सम्बन्ध में और कुछ नहीं पूछा।

"क्या तुम लेखक हो?" मैंने सवाल किया,—"और कितने दिनों से तुम इस क्षेत्र में काम कर रहे हो?"

"एक उपन्यास और ढेर सारी कहानियाँ मैंने लिखी हैं," गिलास में से एक लम्बी घूँट भरते और अपने चेहरे की धुँधली आकृति पर हाथ फेरते हुए उसने कहा। मुझे लगा जैसे उसके मुँह से एक हल्की-सी निश्वास निकल कर वातावरण में विलीन हो गई हो।

पत्र-पत्रिकाओं को उलट-पलट कर देखने के बाद मैं अनायास ही हँस दिया था।

"हँसी के आवरण में तुम अपनी ईर्ष्या को छिपाना चाहते हो," उसने कहा,—"तुम्हारे देश में इस तरह के पत्र श्यायद देखने को भी नहीं मिलते होंगे।"

"बिल्कुल ठीक कहते हो तुम," मैंने कहा,—"हमारे यहाँ इस तरह

की पत्र-पत्रिकाएँ नहीं हैं जिनमें रोंगटे खड़े करने वाली हत्याओं और हर प्रकार की लाशों की प्रदर्शनी सजाई जाती है,—टुकड़े की हुई लाशें, कुचली और चिथड़ी हुई लाशें, डूबी हुई लाशें, कबाब की तरह भुनी हुई लाशें, सफेद कपड़ों में लपेट कर बाकायदा पैक की हुई लाशें, और लाशों के इन पारसलों को ले जाने वाले हवाई जहाज,—नहीं, हमारी पत्र-पत्रिकाओं में यह सब नहीं होता। हमारे पत्र ग्रिसवेल जैसे भविष्य की बातें बताने वाले नजूमों को नहीं उछालते जिसने युद्ध का अन्त होने की तिथि की भविष्य-वाणी करने का श्रेय प्राप्त है। न ही हमारे पत्र इस तरह के लेख छापते हैं जैसे कि कैलीफोर्निया की वेधशाला के डाइरेक्टर ने लिखे थे। इन लेखों में यह रहस्य उद्घाटित किया गया था कि अणुबम विस्फोट के असर ने सौर-मण्डल को भी अछूता नहीं छोड़ा। न ही हमारे पत्र ब्रिटेन के उस कुत्ते की कहानी छाप कर अपने पाठकों का दिल बहलाते हैं जिसने २८.२ सेकण्ड में ४४० गज की दौड़ लगाई। अस्सी बरस के एक बूढ़े की ७६ बरस की एक अमीर बुढ़िया से शादी और यह कि कोनी द्वीप में किस प्रकार उन्होंने 'हनीमून' मनाया,—या फिर टैक्सा के उस आदमी की कहानी जो शर्त बद कर ७४ गिरगट निगल गया,—या यह कि अमुक फिल्म अभिनेता की अमुक अभिनेत्री साठवीं प्रेमिका है,—या यह कि वरमौंण्ट में पिछले महीने एक सौ बीस बिल्लियों ने आत्महत्या की,—या यह कि अमुक व्यक्ति चुम्बन के तीन हजार प्रकारों की दीक्षा देता है,—हमारे पत्रों में यह सब नहीं होता। बन्दरों को अगर किसी तरह पढ़ना सिखाया जा सके तो सम्भव है कि वे यह सब पढ़ना पसन्द करें, लेकिन......"

पी. एच. पी मन-ही-मन मुसकरा दिया।

"तो तुम्हें न हत्याओं की कहानियाँ अच्छी लगती हैं, न चुम्बन के तीन हजार प्रकारों में तुम्हारी दिलचस्पी है। अपनी-अपनी रुचि ही तो है। लेकिन इतने ऊँचे सिंहासन पर बैठ कर बन्दरों का मूल्यांकन करना ठीक नहीं। उन्हें पढ़ना सिखाया जाय तो क्या यह बुरा होगा? नहीं, बल्कि यह अच्छा होगा,—जैसी किताबों की खपत बढ़ जायगी, खपत बढ़ेगी तो हमारी आमदनी भी बढ़ेगी। मैं तो उन्हें बड़ी आशा भरी नजर से देखता हूं। हमें बन्दरों

को भी पढ़ना सिखाना है, उनके लिए साहित्य तैयार करना है..."

"मैं जानता हूँ कि तुम किस तरह और क्या पढ़ना सिखाते हो," मैंने कहा,—"अमरीकी सैनिकों के साथ-साथ अमरीकी फिल्मों और तुम्हारी जेबी किताबों ने भी जापान में प्रवेश किया। इसके एक साल के भीतर ही टोकियो-पुलिस ने सूचना प्रकाशित की कि जापान में डकैतियों की संख्या तीस गुना बढ़ गई है। पुलिस चीफ ने बताया कि यह जासूसी उपन्यासों और फिल्मों का नतीजा है।"

पी. एच. पी के होठों में बल पड़ गये।

"तुम्हें देखकर मुझे कहानी की एक राजकुमारी की याद हो आई है। वह इतनी कमीनी थी कि जब बोलती थी तो उसके मुँह से मेंढक झड़ते थे। हर बात की आलोचना करना तुम्हारी आदत में शामिल हो गया है।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है," मैंने कहा,—"जेबी किताबों की योजना की मैं निन्दा नहीं करता। यह एक अच्छी योजना है। लेकिन दुकानों पर अधिकांश किताबें जासूसी की ही दिखाई देती हैं। तुम्हारे बौस का कहना है कि जासूसी किताबें इसलिए छापी जाती हैं कि उनका असर शिक्षाप्रद होता है, दिमाग को वे तेज बनाती हैं........"

"दिमाग को तेज बनाती हैं,"—यह सुनकर पी. एच. पी को आश्चर्य हुआ। अपने मुँह को उसने हाथों से ढक लिया, और उसके कंधे हिल उठे। लगता था जैसे उसे हँसी आ रही हो। धीरे-धीरे उसकी हँसी की आवाज कुछ ऐसा रूप धारण करती गई जो रोने की आवाज जैसी मालूम होती थी। अन्त में अपनी मुट्ठी को मेज पर पटकते हुए उसने तेज स्वर में कहा,—"हर बात की एक हद होती है!"

उसने अपना रूमाल निकाला, नाक पोंछी और फिर शान्त तथा स्थिर आवाज में कहा,—"जहन्नुम में जाय यह बौस और इसकी बातें!"

पी. एच. पी ने अब अपने बौस के बारे में बताना शुरू किया।

बौस खुद कई साल तक विभिन्न पत्रों में लेख और टिप्पणियाँ लिखता रहा है। कुछ लेखों में वह डैमोक्रैटों की खबर लेता था और रिपब्लि-

कनों की तारीफ करता था, और कुछ में रिपब्लिकनों की बखिया उधेड़ता था और डैमोक्रैटों को आसमान पर चढ़ाता था। उसकी खास विशेषता यह थी कि वह राजनीतिज्ञों, लेखकों, अभिनेताओं आदि के जीवन के गुप्त रहस्यों को अपने लेखों में खोलता था। इस तरह के लेखकों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। एक तो वे जो पोल खोलने के लिए ही पोल खोलते हैं, और दूसरे वे जिनके सामने कोई अच्छा उद्देश्य होता है। बौस दोनों ही तरीकों का इस्तेमाल करता था। कुछ पत्रों में वह अच्छे उद्देश्य से पोल खोलता था, कुछ में बुरे उद्देश्य से,—एक पत्र में किसी लेखक की उसने इसलिए प्रशंसा की कि तीस वर्ष तक वह अपने घर की दासी को, वेतन के अलावा, दस डालर प्रति सप्ताह अलग से देता रहा। दूसरे पत्र में इसी लेखक के बारे में, उसे नीचे गिराने के लिए, उसने लिखा कि वह निहायत पतित है, घर की दासी से उसका बुरा सम्बंध है।

इस तरह के लेखक 'कालमिस्ट' कहलाते हैं। अखबारों के कालम लिखना अमरीका में बहुत जनप्रिय है। बहुत से लोग अपना लेखक-जीवन इसीसे शुरू करते हैं। रिंग लाडनर और विल राजर्स पहले कालम लेखक ही थे। वाल्टर लिपमैन ने भी इसी प्रकार ख्याति प्राप्त की। आजकल वह केवल एक सिद्धान्त का प्रचार करता है,—"अमरीका ही दुनिया का ध्रुवतारा है। सभ्यता की रक्षा के लिए लाल खतरे को खत्म करो।"

बौस ने अपने लिए दूसरा रास्ता चुना। वह साहित्यिक कृतियों का आलोचक बन गया। धीरे-धीरे वह एक बहुत बड़े बुक-क्लब के जजों की कमेटी में पहुँच गया, और आजकल जेबी-किताबों के उद्योग में साझीदार का स्थान रखता है। युद्ध के बाद, स्टेट-विभाग के आदेश से, विभिन्न देशों में प्रकाशित होने वाले मैगजीनों के लिए वह नियमित रूप से लेख लिख रहा है। उसके लेखों का विषय होता है,—'दुनिया के साहित्य और संस्कृति को अमरीका की देन।' आज के युग को वह अमरीकी संस्कृति का युग कहता है।

"ऐसा है हमारा यह बौस," अन्त में पी. ऐच. पी. ने कहा,—"लेकिन छोड़ो उसे। चलो, जरा घूमने चलें।"

[१०]

पास ही, अगली सड़क पर एक सिनेमा था। हम दोनों वहाँ पहुँच गए। सिनेमा-घर का आधा अग्र-भाग बड़े-बड़े पोस्टरों से ढका हुआ था। एक बहुत बड़े पोस्टर में पायजामा पहने एक मुसकराती हुई युवती बनी थी। युवती के पृष्ठ भाग में एक बहुत बड़ा शराब पीने का प्याला और एक ऐसे चेहरे का छायाचित्र बना था जिसका गला छुरे से बिधा था, आँखें भय से निकली हुई थीं, पुतलियों में घड़ी की सुइयाँ चमक रही थीं और सुइयों के अगल-बगल से दो शैतानी हाथ जीवन और आशा को मसल डालने के लिए आगे बढ़ते हुए दिखाई देते थे। यह पोस्टर अति-वास्तववादी चित्रकार साल्वाडोर डाली की शैली पर बना था। यह चित्रकार आजकल अमरीका में विशेष रूप में प्रसिद्ध है। उसके एक चित्र की अमरीकी पत्रों ने बहुत चर्चा की थी। इस चित्र का नाम है, "उबली हुई हड्डियों की नरम बनावट!"

टार्च लिए हुए एक लड़की ने हमें अपनी सीटपर ले जाकर बैठा दिया। हाल में अंधेरा था, और संवाद-चित्र (न्यूज-रील) दिखाये जा रहे थे, युद्ध के बाद की दुनिया के संवाद- चित्र। बी-एस नाम के बम-मार हवाई जहाजों की उड़ान दिखाई गई। यह बम-मार दूर स्थित देशों में बम गिरा सकते हैं। लम्बी उड़ान इनकी विशेषता है। एक दृश्य में कैनाडा में एक साथ पैदा होने वाले पाँच बच्चे दिखाए गये। फिर अमरीकी सेना के लिए बनाये गए आधुनिकतम अस्त्रों का प्रदर्शन हुआ। प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन का सुबह का घूमना दिखाया गया। बर्फीले देश में बिना बाधा के चलने वाली कारों और फिर सधे हुये बन-मानुषों की कसरत के दृश्य दिखाए गये। मैकार्थर को टोकियो में भाषण करते हुए दिखाया गया कि मानव-जाति अब युद्ध के लिए कभी तैयार न होगी। राडर की मदद से अमरीकी सेना के चाँद से सम्पर्क स्थापित करने और संगीत-द्वारा दिमागी रोगों को दूर करने की नयी पद्धति के नमूने दिखाए गये।

युद्ध के बाद की दुनिया के इन चित्रों को देखना, देखते रहना, मेरे लिए

कठिन हो गया। बाहर जाने के लिए मैं उठ खड़ा हुआ। मगर पी. एच. पी. ने हाथ पकड़ कर बैठा लिया। कहा,—"बीच में से उठ कर जाना ठीक नहीं।"

मेरी सिगरेट खत्म हो गई थी। पी. एच. पी ने यह देखा, और मुँह में डालने के लिए मीठे गोंद की एक टिकिया मुझे दे दी। मैंने उसे मुँह में डाल लिया। पहले तो यह मीठी-मीठी और ठंडी लगी, फिर उसकी मिठास गायब हो गई, लेकिन मैं उसे फिर भी चबाता रहा। दाँतों और जबाड़े की कसरत करते हुए मैं फिर पर्दे की ओर ताकने लगा।

संवाद-चित्रों के बाद दूसरे चित्रों का सिलसिला शुरु हुआ। मुझसे नहीं रहा गया। तीसरे चित्र के शुरु होते-न-होते मैं उठकर तेजी के साथ बाहर निकल आया। पी. एच. पी ने भी मेरा पीछा नहीं छोड़ा। बाहर निकल कर उसने मुझे पकड़ लिया। बोला,—"कैसा लगा?"

उत्तर देने से पहले गोंद की बेज़ायका और बेसुगन्ध और कभी न शेष होने वाली टिकिया को थूक कर मैंने मुँह खाली किया, माथे और कनपटी का पसीना पोंछा। हल्की मुसकराहट चेहरे पर लिए पी. एच. पी. ठीक उसी प्रकार मेरा अध्ययन कर रहा था जिस तरह, अणु-बम के विस्फोट के बाद, अणु-बम के असर की जाँच करने के लिए बिकनी से लाये गए गिनीपिग्स का विशेषज्ञों ने अध्ययन किया था।

फिल्म शुरु होने से पहले मेरे होश-हवास दुरुस्त थे, लेकिन फिल्म शुरु होने के कुछ ही देर बाद गायब होने लगे। फिल्म का नाम था : "सन्देह का प्रेत"। इसका कथानक, खेल की किताब के ही शब्दों में, यह था—

कैलीफोर्निया में सान्ता रोज़ा नामक एक छोटी-सी जगह है। वहाँ न्यूटन का सुखी परिवार रहता था। इस परिवार में चार्ली नामक एक सुन्दर लड़की थी। चार्ली के चचा बाहर से आते हैं, और न्यूटन-परिवार में खुशी दौड़ जाती है। कुछ दिन बाद मध्यवर्गीय घरों की जाँच करने वाली एक कमेटी के सदस्य न्यूटन परिवार में भी जाँच करने के लिए आते हैं। चार्ली के चचा तुरन्त ताड़ जाते हैं कि ये लोग असल में खुफिया विभाग के आदमी हैं। वे

चचा का फोटो लेने में असफल हो जाते हैं, मगर चचा उनके कैमरे को छीन लेते हैं। चचा का यह व्यवहार लड़की चार्ली को अजीब नहीं लगता। खुफिया विभाग वाले उसके कान में बताते हैं कि उसका चचा हत्या के अपराध का अपराधी है। उसे पुलिस की मदद करनी चाहिए।

चार्ली पहले तो इसके लिए तैयार नहीं होती, लेकिन तैयार न होने पर भी सन्देह का बीज उसके हृदय में घर कर जाता है, और अपने चचा की हर हरकत को वह अर्थपूर्ण दृष्टि से देखने लगती है। वातावरण सन्देह से भर जाता है, भरता जाता है। चचा ने रद्दी अखबार का एक टुकड़ा फाड़कर फेंक दिया था। चार्ली वह फटा हुआ अखबार उठा लेती है, और जानना चाहती है कि जो अंश फट कर अलग हो गया है, उसमें क्या था। लाइब्रेरी में जाकर वह उस अखबार को निकलवाती है। फटे हुये अंश में एक विधवा स्त्री की हत्या और हत्यारे के गायब हो जाने का समाचार छपा था। चार्ली को बाद में यह भी मालूम होता है कि उसके चचा ने जो अंगूठी उसे दी है, उस पर जिस नाम के प्रथम अक्षर खुदे हुए हैं, वे मृत विधवा के नाम से मिलते-जुलते हैं। सन्देह के साथ-साथ चार्ली के हृदय में अब आतंक भी प्रवेश करता है, और वह डरने लगती है कि अगर चचा गिरफ्तार हो गये तो परिवार का नाम और प्रतिष्ठा धूल में मिल जायगी। संकेत से वह अपने चचा को बताती है कि उसे सब कुछ मालूम है, और चचा को अब यहाँ से विदा हो जाना चाहिए।

इसके बाद कौतुक और उत्सुकता में वृद्धि होती है। सन्देह और आतंक गहरे होते जाते हैं। चचा जाने के बजाय अपनी भतीजी का गला घोंट कर मार डालना चाहता है, लेकिन सफल नहीं हो पाता। अन्त में चचा घोषित करता है कि वह चला जायगा। चार्ली उसे विदा करने के लिए स्टेशन तक जाती है। जब गाड़ी चलती है तो चचा उसे पकड़ लेता है, और चलती गाड़ी के नीचे फेंक देने की कोशिश करता है। चचा की आँखें खूनी हो उठती हैं, और युवती की आँखें हत्या के आतंक और विभीषिका से फटी-की फटी रह जाती हैं। सहसा चचा का पाँव फिसल जाता है, लड़की पर

उसकी गिरिफ्त कुछ शिथिल पड़ती है, और चचा की हड्डियाँ गाड़ी के पहियों के नीचे कुचल कर मलीदा बन जाती हैं। फिल्म का अंत मातमी दृश्य के साथ होता है। एक शव पेटिका रखी है, उसके पास लड़की और जासूस खड़े हैं। दुर्घटना का शिकार होने वाले चचा की मृत्यु के रहस्य को सिवा उसके और कोई नहीं जानता। लड़की का, चार्ली का, चेहरा फिर बड़ा करके दिखाया जाता है,—यह इसलिए कि उसने परिवार को बदनाम होने से बचा लिया, और चचा भी 'दुर्घटना के कारण बदनाम होने से बच गया!

इसके बाद अगले फिल्म के शुरु होने के पहले तक मेरे होश-हवास सन्देह और आतंक के प्रेत की भेंट चढ़ चुके थे। बस, फटी हुई आँखों से मैं देख रहा था। शरीर निष्क्रिय हो गया था, चेतना निष्क्रिय हो गई थी। दमघोट वातावरण, और दमघोट घटनाएँ। एक पति है जो अपनी पत्नी से तंग आ चुका है, और उससे छुटकारा पाना चाहता है। अन्य व्यक्ति रंगमंच पर आता है जो प्रेमी महादेय से तंग आ चुका है, और उससे छुटकारा पाना चाहता है। छुटकारा पाने का फिर वही एक पेटेण्ट तरीका सामने आता है। वह तरीका है हत्या। कोई एक आगे बढ़कर किसी दूसरे की हत्या करता है। फिर कोई एक किसी का पीछा करता है और उसके इतना निकट पहुंच जाता है कि बस उसे पकड़ ही लेगा। फिर गोली छूटती है, लेकिन निशाना चूक जाता है।

सन्देह और आतंक, आतंक और संदेह,—हृदय काँप उठता है, दिमाग काम करने से इन्कार कर देता है। और ठीक उस समय जब पर्दे पर हत्या का भयानकतम दृश्य दिखाई पड़ता है, दर्शकों में से कोई युवती चीख उठती है,—आतंक और आह्लादि के आवेश में चीख उठती है। फिर संतोष की साँस लेती है,—गनीमत है कि यह सब उस पर नहीं बीत रहा है!

फिल्म के प्रभाव से छुटकारा पाने के लिए मैंने भी अपनी आँखें बन्द कर लीं, और कुर्सी कीपीठ का सहारा लेकर अपने बदन को ढीला छोड़ दिया।

"बस इतने से ही घबरा गये!" पी. एच. पी. ने कहा,—"बात यह

है कि अभी तुम नये हो। कुछ दिन बाद जरा अभ्यस्त हो जाने पर इन फिल्मों को देखने का तुम्हें भी चस्का पड़ जायगा और नवीनतम 'हिट' को देखने के लिए तुम उतावले हो उठोगे !"

पी. एच. पी. को मैंने संकेत से समझाना चाहा कि अपनी इन बातों से मुझे मुक्ति दे। मेरा जी पहले ही घबरा रहा है।

वह हँस दिया। फिर कुछ खीझसी उतारते हुए बोला :

"तुम मास्कों की मुर्गी हो।" पी. एच. पी ने कहा,—"इतनी नरम चमड़ी लेकर तुम हम लोगों से क्या मुकाबला करोगे ? अमरीका में प्रति सप्ताह दस करोड़ आदमी सिनेमा देखते हैं। मानना पड़ेगा कि एंग्लो सैक्सन जाति तुम लोगों से अधिक मजबूत और कड़े दिल की है।"

"जहन्नुम में जाएँ तुम्हारी ये फिल्म," मैंने झुंझला कर कहा,—"फिल्मों से नहीं, मैं तुम्हारे साहित्य की दुनियाँ से परिचित होना चाहता हूं।"

पी. एच. पी मेरी बगल में आकर बैठ गया, और उसने मुझे समझाना शुरू किया।

"देखो," उसने कहा,—"जहाँ तक अमरीकी जनता के लिए प्रकाशित होने वाले साहित्य की बात है, उसे सिनेमा से अलग करके नहीं देखा जा सकता। इन दोनों में अटूट गठबन्धन स्थापित है।"

"अरे हाँ, एकाएक याद आया," मैंने पूछा—"'ह्यूहैम्निट' तुम लोग किसे कहते हो ?"

"तुम्हें मैं अभी सब बताता हूँ," उसने कहा—"अमरीका की साहित्यिक दुनिया में प्रचलित कुछ खास शब्दों में तुम्हारी दिलचस्पी पैदा हो गई है। अच्छा तो सुनो।

"सबसे पहले तुम्हें 'स्टापर' शब्द का मतलब मालूम होना चाहिए। इस शब्द का प्रयोग सब से पहले "लुक" नामक सचित्र मैगजीन के सम्पादक ने अपनी एक पुस्तक में किया था। यह पुस्तक भारी संख्या में बिकी। इस सम्पादक ने १९४४ में न्यूयार्क यूनिवर्सिटी में फोटोग्राफिक चित्रों पर कई

भाषण दिये थे। इन भाषणों को ही इस पुस्तक में छापा गया था। इस पुस्तक में 'स्टापर' शब्द का प्रयोग ऐसे चित्रों के लिए किया गया था जो हृदय को चौंका कर स्तब्ध कर दें। उदाहरण के लिए,–टैंक से कुचले जाने से एक क्षण पूर्व एक सैनिक का चेहरा, पाँव बाँध कर फाँसी पर लटकाये गये आदमी की आँखें, जलती हुई गगनचुम्बी इमारत की खिड़की से कूदकर जान देने वाली स्त्री का चित्र जो अब हड्डी और मांस का लोथड़ा भर रह गई थी और इस लोथड़े के बीच उसका ऊंची एड़ी का जूता साफ दिखाई पड़ रहा था।

"स्टापर' उन चित्रों को कहते हैं जिनका असर हृदय की धड़कन को स्तब्ध कर देने वाला होता है,—जिन्हें देखकर ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की नीचे रह जाती है।

इस शब्द को बड़ी उत्सुकता और व्यग्रता के साथ, फिल्म वालों ने अपना लिया और फिल्मी दुनियाँ में इसका प्रयोग सबसे पहले मोनोग्राम फिल्म कम्पनी ने अपने 'आजाद' नामक फिल्म के लिए किया। आजकल वही किताब और फिल्म सबसे अच्छा माना जाता है जिसका प्रभाव 'स्टापर' श्रेणी का होता है।"

[१०]

"लेकिन यह तो बताओ," मैंने पी. एच. पी. को याद दिलाते हुए कहा,—"हूहैन्निट शब्द का प्रयोग तुम किस लिए करते हो?"

"जरा ठहरो!" पी-एच-पी ने कहा–"तुम नहीं जानते कि हम लेखकों की क्या गत बना डाली है इन शब्दों ने। पहले मैं पर-स्त्री-प्रेम के कथानकों पर कहानियाँ लिखता था। इस कला में मैं काफी दक्ष हो गया था। स्त्रियों को भगाना, छोटे-छोटे बच्चों को गायब कर देना और फिर उनके लिए भारी रकमों की माँग करना, धोखा-धड़ी और लूट-खसोट, मनोविज्ञान के नाम पर जायज़-नाजायज़ सम्बन्धों का सीत्कार-फूत्कार,—सभी कुछ मैंने लिखा है और लिख सकता हूँ। लेकिन इन 'हूहैन्निटों' ने मेरी कमर तोड़ दी। अब केवल हत्या से काम नहीं चलता, हत्या तो केवल रसों का उद्रेक करने का आलम्बन-मात्र

होती है,—उत्सुकता हो, आतंक हो और मन को हलका करने के लिए हास्य भी हो। नाक में दम कर दिया है बौस ने। रोज नौकरी से अलग करने की धमकी देता है। 'हूहैन्निट' असल में एक पूरे वाक्य—हू हैज डन इट—का संक्षिप्त रूप है। दूसरे शब्दों में इसका मतलब है: "हत्या किसने की। इसका सबसे पहले 'अमरीकी पुस्तक समाचार' नामक मैगजीन में किसी आलोचक ने इस्तेमाल किया था। आज इस वाक्य का प्रयोग 'हूहैन्निट' के रूप में, फिल्मों और किताबों की आलोचनाओं के दौरान में टाइम, लिबर्टी, पिक आदि सभी पत्र करते हैं।

"युद्ध के बाद से हूहैन्निट श्रेणी के फिल्मों और किताबों का विशेष रूप से प्रचार और प्रसार बढ़ा है। इसके लिए बाकायदा कोशिशें की गई हैं। जनता के लिए जो आज साहित्य और फिल्म बड़े पैमाने पर बनाये जा रहे हैं वे........."

पी. एच. पी एकाएक उठ खड़ा हुआ और खजूर के पेड़ों के झुरमट के बीच से दिखाई पड़ने वाली एक इमारत की ओर संकेत करते हुए बोला—'हजारों लाखों की संख्या में बनने वाले फिल्मों और जेबी किताबों, रोंगटे खड़ी करने और हृदय की धड़कन को स्तब्ध करने वाली इन हूहैन्निट कृतियों को देखकर बरबस मन में सवाल उठता है,—हू हैज डन इट—यह सब किसने किया है,—कौन इसके लिए जिम्मेदार है,—किसने लाखों पाठकों की रुचि की हत्या की है, उनको साहित्य और संस्कृति का गला घोटा है......"

पी. ऐच. पी. की मुट्ठी बंध गई थी, और उस इमारत को लक्ष्य करते हुए वेग के साथ वह कह रहा था—"तुमने,—हालीवुड,—तुमने यह सब किया है ?"

मैंने पी.ऐच.पी. की ओर देखा, और मैं इतना चकित हो उठा कि मेरे मुँह से चीख निकलते-निकलते रह गई। उसके चेहरे का, आकृति का, धुँधलापन दूर हो गया था। उसकी आँखें, नाक, ठोड़ी और गाल पर मौजूद चोट का चिन्ह,—सभी स्पष्ट होकर उभर आये थे। यह परिवर्तन, वास्तव में, चकित कर देने वाला था।

पी. ऐच. पी को, और उसके जीवन के रहस्य को, और भी अधिक निकट से देखने और जानने-पहचानने का मैंने निश्चय किया।

"चलिए, कहीं चलकर एक साथ कुछ नाश्ता करें" मैंने कहा—"वहीं पर बातें भी होंगी।"

पी. ऐच. पी. ने अपनी घड़ी की ओर देखा, और मेरे निमंत्रण को स्वीकार कर लिया।

"सिनेमा और साहित्य के बारे में मुझे और भी बहुत कुछ कहना है," उसने कहा—"आज के अमरीकी साहित्य को सिनेमा से अलग करके नहीं देखा जा सकता। एक समय था जब सिनेमा दर असल साहित्य का अच्छा और उपयोगी साथी था। इसमें सन्देह नहीं कि उसने साहित्य के प्रचार और उसकी स्थिति को मजबूत बनाने में भी मदद की। लेकिन यह तब की बात है जब साहित्य ने भी, सिनेमा के साथ चलकर, जनता पर विजय प्राप्त करने के लिए आगे कदम बढ़ाया था। यहीं से इन दो शक्तिशाली माध्यमों में गठ-बन्धन स्थापित हुआ। उसके बाद सिनेमा ने अपने साथी लेखकों को अपने चंगुल में जकड़ना शुरू किया,—थैलियों के मुँह खुले, और डालर दिमाग पर चढ़ कर बोलने लगा। सिनेमा ने साहित्य को अपने पंजे में दबा लिया।"

"सिनेमा और साहित्य के इस गठबन्धन का नतीजा," मैंने कहा—"कुछ वैसा ही हुआ जैसा कि अमरीका और ब्रिटेन के गठबन्धन का,—अमरीका को सिनेमा समझो, और ब्रिटेन को साहित्य,—एक दूसरे को अपने चंगुल में फंसाता जा रहा है।"

पी-एच-पी मुँह बिचका कर रह गया।

"कला और साहित्य की बात करते समय," उसने कहा—"बुद्धिमानी इसमें है कि राजनीति को ताक पर रख दिया जाय। फिर मुझे बीच में टोकना भी ठीक नहीं। मैं यह कह रहा था कि सिनेमा ने साहित्य को अपने इशारों पर नचाना शुरू कर दिया। सिनेमा की सभी बातें साहित्य में भी प्रवेश करने लगीं। सिनेमा ने साहित्य के विषय और उसकी 'ध्वनि' को ही प्रभावित नहीं

किया, बल्कि उसकी गति और दिशा को भी बदल दिया—साहित्य का जीवन भी सिनेमा के रीति-रिवाजों और रूढ़ियों से बँधकर चलने लगा। जिस 'हिट' शब्द का प्रयोग फिल्मों के लिए होता था, वह अब किताबों के लिए भी होने लगा। हालीवुड के ढाँचे पर ही साहित्य की इमारत की भी नींव डाल दी गई। लेखक और उसकी कला के चर्खे को ताक पर रखिए। बस, मशीन का बटन दबाइए और देखिए कि किस प्रकार यह लेखक और उसकी किताब इस छोर से उस छोर तक "हिट" बन जाती है। बड़े ही कायदे से यह मशीन काम करती है। एक साधारण आदमी भी समझ सकता है कि इस चमत्कार के पीछे क्या रहस्य है। प्रतियोगिता, बुक-क्लब, प्रैस, फिल्मीकरण, रेडियो,—यह सब इसी एक मशीन के मुख्य पुर्जे हैं। बटन को दबा कर चाहे जिसको, पलक झपकते, आसमान पर चढ़ा कर 'हिट' बनाया जा सकता है।

"विज्ञापन से बढ़कर कोई चीज नहीं," पी-एच-पी ने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा—"पलक झपकते प्रसिद्ध करने की यह मशीन अमरीका की अपनी ईजाद है। यह न हो तो उद्योग-धन्धों की ही नहीं, साहित्य और राजनीति का भी दिवाला निकल जाय। विज्ञापन की कला से सम्बन्धित जितना अधिक साहित्य हमारे यहाँ प्रकाशित हुआ है, उसका हिसाब लगाना कठिन है। विज्ञापन अमरीकी जनता के जीवन का अंग बन गया है। युद्ध से पहले अमरीका के अखबार और बाजार एक रंगहीन गंधहीन पेटेण्ट तरल पदार्थ 'नुजलो' के विज्ञापनों से भरे रहते थे। इसके सेवन से रंग में निखार आता था, शरीर में फुर्ती और चुस्ती का संचार होता था। सभी विज्ञापनों में 'नुजलो' के ये गुण घोषित किये जाते थे। स्टैण्डर्ड तैल कम्पनी ने इसे उन चीजों से तैयार किया था जो पहले बेकार समझ कर नष्ट कर दी जाती थीं। लाखों अमरीकियों ने इसका सेवन शुरू कर दिया। लेकिन गुणों की बात जाने दीजिए, इसका अधिक सेवन करने से पेट की आँतें कमजोर पड़ जाती थीं। इसके बाद लिस्टरीन का चक्र चला। डाक्टरों ने बार-बार चेतावनी दी कि लिस्टरीन एक धोखा है। लेकिन विज्ञापनों की आवाज के सामने इन डाक्टरों की एक नहीं चली। विज्ञापनों की इस शक्ति को अमरीका ने अच्छी

तरह समझा है। विज्ञापन-कला विश्वविद्यालयों में अध्ययन का एक विषय बन गई है। हारवर्ड यूनिवर्सिटी अच्छे विज्ञापनों पर पुरस्कार और प्रतिवर्ष डिग्रियाँ प्रदान करती है।"

"दवाइयाँ, फिल्म और किताबें," पी. ऐच. पी ने कुछ रुककर कहा—"विज्ञापन पर ही इन सबकी सफलता निर्भर करती है। विज्ञापन की मशीनरी हमारे यहाँ इतनी पूर्ण है कि......"

कहते-कहते पी. ऐच. पी रुक गया। उसने अनुभव किया कि मैं उसकी बात सुन नहीं रहा हूं। और यह बात सच भी थी। मेरा ध्यान खिड़की से बाहर दिखाई पड़ने वाले एक दूसरे दृश्य की ओर चला गया था।

[११]

सड़क की पटरी पर एक आदमी खड़ा था जिसे रिपोर्टरों और अखबारों के लिए चित्र लेने वाले फोटोग्राफरों ने घेर रखा था। वह आदमी हरे रंग का नकाब डाले हुए था।

कुछ आतंकित-सी नजर से मैंने पी-एच-पी की ओर देखा,—"यह कौन है? कोई डाकू तो नहीं है?"

उसे देखकर मुझे लगा कि बस अब गोलियाँ चलने की आवाज सुनने भर की देर है। लेकिन सो कुछ नहीं हुआ। नकाब पहने व्यक्ति ने कोई उत्पात नहीं किया, बल्कि वह कायदे के साथ ऐसी मुद्रा और अन्दाज में खड़ा हो गया जिससे कि फोटोग्राफरों को उसका चित्र लेने में आसानी हो।

"यह कौन है?" मैंने पूछा।

पी. ऐच. पी. मेरा सवाल सुनकर मुसकरा दिया।

"फिल्मी दुनियाँ की भाँति" पी. एच. पी. कहता गया,—"किताबों की दुनियाँ में भी स्टार लेखकों का समावेश हो गया है। हालीवुड की फिल्म-स्टार प्रणाली ने साहित्य के क्षेत्र में भी दखल जमा किया है। जिनकी किताबें अधिक बिकती हैं वे स्टार लेखक की उपाधि प्राप्त करते हैं। इस उपाधि को पाने के दो तरीके हैं,—एक तो विज्ञापन की मशीनरी को चालू

करके जिसकी बागडोर मालिकों के हाथ में होती है और दूसरी अपनी प्रतिभा के सहारे......"

"यह स्त्रियों की एक पत्रिका का संवाददाता है। इसने एक उपन्यास लिखा है जिसमें भविष्य में होने वाले कीटाणु-युद्ध का कपोल-कल्पित चित्र खींचा गया है। इसका यह नकाब एक पब्लिसिटी स्टण्ट है,—लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचने का एक शिगूफा है। लेकिन स्टण्ट की भी एक सीमा होती है। दो अत्यन्त प्रसिद्ध लेखकों ने भी नकाब का प्रयोग किया था। कई वर्ष तक वे नकाब पहन कर सार्वजनिक उत्सवों और पार्टियों में शामिल होते रहे। उन्हें कोई नहीं पहचान सका। जहाँ देखिये, जनता में उन्हीं का जिक्र सुनाई पड़ता था। तरह-तरह की अफवाहें फैलने लगीं। कोई कहता कि ये सिंग-सिंग से लम्बी सजा भुगत कर आये हैं। कुछ कहते कि इनके चेहरे बुरी तरह बिगड़े हुए हैं, सम्भवतः किसी ने नाक-कान काट लिए हैं, इसलिए नकाब डाले रहते हैं। कुछ कहते कि ये बहुत ही बड़े परिवार के लोग हैं जो लेखक के अपने पेशे से लज्जित हैं।

"इन दोनों लेखकों में से एक का नाम एलेरी क्वीन था, दूसरे का बार्नबी रौस। दोनों जासूसी कहानियाँ लिखते थे, और दोनों की अपनी अलग और भिन्न शैली थी। नकाब ने उनके रहस्य में वृद्धि की, और इस रहस्य ने उनकी किताबों की बिक्री में वृद्धि की। जितना ही अधिक वे अपने को छिपाने में सफलता प्राप्त करते, उतना ही अधिक उनकी किताबें बिकतीं। आखिर एक दिन उनका रहस्य प्रकट हो गया। इस छोर से उस छोर तक एक हलचल मच गयी। दूसरे युद्ध के शुरू होने से कुछ ही पहले विज्ञापनों ने घोषित किया कि एलेरी क्वीन अपनी किताब पर बने फिल्म में खुद अभिनय भी करेगा। तभी यह भी मालूम हुआ कि एलेरी क्वीन वास्तव में कोई एक क्वीन नहीं, बल्कि दो व्यक्ति हैं जो बारी-बारी से नकाब पहन कर जनता के कौतुक और उत्सुकता में वृद्धि करते रहे हैं। बात इतने पर ही समाप्त नहीं हो गई। १९४१ में दूसरे 'नकाब' का भी रहस्योद्घाटन हो गया। दूसरे 'नकाब' अर्थात् बार्नबी रौस की पुस्तक 'ट्रैजडी आफ एक्स' का जब जेबी संस्करण

प्रकाशित हुआ तो खुद रौस ने घोषित किया कि बार्नबी रौस नाम का कोई व्यक्ति नहीं है। यह असल में 'क्वीन' का ही असली नाम है और 'क्वीन' किसी अन्य व्यक्ति का बनावटी नाम है। इसके बाद १९४२ में जब क्वीन की एक किताब "मनहूस नगर' का जेबी संस्करण प्रकाशित हुआ तो लेखक की ओर से अधिकृत घोषणा की गई कि 'क्वीन' नाम से लिखनेवाले दो चचा जाद भाई फ्रैडरिक डैनी और मैनफ्रैड ली हैं। पूरे नौ साल तक इन दोनों ने अमरीकी जनता को अपने नकाबों में उलझाये रखा और एलेरी क्वीन का नाम सबकी जबान पर चढ़ गया। आज क्वीन ने राष्ट्र-व्यापी महत्त्व का स्थान प्राप्त कर लिया है। अब वह अमरीका के जासूसी साहित्य के केन्द्रीय पत्र 'एलेरी क्वीन्स मिस्ट्री मैगजीन' का सम्पादक है।

"डैनी और मैनफ्रेड ली ने प्रसिद्ध होने के लिए निश्चित और पक्का मार्ग चुना। अमरीकी जनता 'सनसनी' और 'हलचल' की भूखी है। सुप्रसिद्ध अमरीकी लेखक एच. एल. मैन्कन ने ठीक ही लिखा था कि जासूसी और भेद भरी चीजों के प्रति आकर्षण आज अमरीकी जनता की प्रकृति में शामिल हो गया है।

"तरंग में आकर इसी मैन्कन ने एक बार कहीं यह लिख दिया कि अमरीका में सबसे पहला स्नानागार,—या स्नान करने की प्रथा—सिनसिनाटी नामक जगह में शुरू हुई। मैन्कन की इस बात को इतना 'सत्य' मान लिया गया कि पत्र और अखबारों ने इसका खूब विज्ञापन किया, यहाँ तक कि वैज्ञानिक पुस्तकों में भी मैन्कन के उद्धरण दिखाई देने लगे। जब खुद मैन्कन ने अपनी बात का खण्डन किया तो किसी ने नहीं सुना,—अमरीकी जनता 'खण्डनों' में विश्वास नहीं करती,—खण्डन को स्वीकार करने का मतलब है इस बात को स्वीकार करना कि कितनी आसानी से हम बेवकूफ बन जाते हैं।

"इस तरह की एक कहानी मैं भी पढ़ चुका हूँ," मैंने कहा,—"एक प्रमुख साहित्यिक विद्वान ने लेखकों और आलोचकों की एक सभा में यह पूछा कि क्या आप में से किसी ने रूसी, युक्रेनी, पोलिश और चैक साहित्य के प्रवर्तक सुप्रसिद्ध लेखक फ्योदोर दि मित्रीविच लार्योविच का नाम सुना है?

इस प्रश्न का कोई जवाब नहीं दे सका, क्योंकि किसी ने इस बड़े लेखक का नाम नहीं सुना था। सबको अपना 'अज्ञान' स्वीकार करना पड़ा। इसके बाद उस विद्वान ने इस रूसी लेखक के बारे में एक लम्बा भाषण दिया। इस भाषण को सबने बड़े ध्यान और दिलचस्पी से सुना। इतना ही नहीं, आगे चलकर लाशेविच के नाम से कविताओं का एक संग्रह भी प्रकाशित हुआ। लेकिन यह खेल अधिक दिन नहीं चल सका। अन्त में स्वीकार करना पड़ा कि यह सब मजाक था।"

पी.एच.पी ने कहा कि उसे इस मजाक के बारे में अच्छी तरह मालूम है। वह खुद इस मजाक का शिकार हो गया था, और उसके बौस ने पाँच हजार शब्दों के एक ऐसे लेख का लिखना स्वीकार कर लिया था जिसमें समूचे स्लाव साहित्य के पिता लाशेविच की प्रेम-कथाओं का जिक्र हो। एक प्रकाशक ने अपने सहित्यिक संदर्भ ग्रन्थ तक में लाशेविच के नाम को शामिल कर लिया था। जब गलती मालूम हुई तो उसे अलग किया।

"ऐसी है अमरीकी जनता" पी.एच.पी ने कहा,—"और उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए सभी तरह के तरीके काम में लाये जाते हैं। एलेरी क्वीन और क्रैग राइन्स ने तो खैर अपना विज्ञापन अपने-आप किया, लेकिन अधिकाँश लेखक ख्याति के लिये विज्ञापन की भारी-भरकम मशीनरी पर निर्भर रहते हैं। जिस तरह फिल्मों में काम करने वाली अभिनेत्रियों के चित्र और उनकी प्रेम-कथायें छाप कर उनका प्रचार किया जाता है, वैसे ही लेखकों के चित्र और उनके निजी तथा गुप्त जीवन की कहानियाँ भी छापी जाती हैं। जिन लेखकों को यह सौभाग्य' प्राप्त है, वे "पिन-अप" श्रेणी के लेखक कहे जाते हैं। यह पिन-अप शब्द भी सिनेमा की देन है। 'न्यूज वीक' और दूसरे पत्र आर्ट पेपर पर अभिनेत्रियों के चित्र छापते हैं, पाठक इन चित्रों को काट कर पिन से दीवार पर लटका लेते हैं,—पाठकों की दीवार पर जिसका चित्र पहुँच जाये वही 'पिन-अप' श्रेणी का लेखक या अभिनेता बन जाता है। पाठक लेखक के चित्र को अपनी दीवार पर लगा लेता है और प्रकाशक,—या हालीवुड,—लेखक को अपनी दीवार पर लोहे की पिन से—नहीं, सोने की कील

से,—जड़ देता है !"

"कुल मिला कर यह एक ऐसा चक्र बन गया है जिसमें एक बार फँस कर बाहर निकलना असम्भव हो जाता है," पी.एच.पी ने कहा—"कलतक जिसे कोई नहीं जानता था, अखबार और रेडियो उसे आसमान पर चढ़ा देते हैं। बढ़ती हुई ख्याति के साथ-साथ लेखक के जीवन में भी परिवर्तन हो जाता है। पुराने घर को छोड़ कर वह नये बंगले में प्रवेश करता है। बंगले को सजाने के लिए नया साजोसामान खरीदता है। किश्तों पर लिंकन कार अपने घर ले आता है। रेफ्रीजिरेटर से लेकर बिजली की मालिश तक का सामान उसके जीवन का अंग बन जाता है। फ्लोरिदा या पेरिस जाने की अपनी चिर पोषित इच्छा को वह पूरा करता है। खर्च भी बढ़ता जाता है, और खर्च के साथ-साथ महँगी भी बढ़ती जाती है। और जो कुछ भी वह लिखता है, सब इस खर्च और महँगी के पेट में समा जाता है। अपने प्रकाशक को निश्चित समय पर और निश्चित संख्या के शब्द लिखकर उसे देने ही होंगे, नहीं देगा तो......"

कुछ रुक कर पी.एच.पी ने फिर कहना शुरू किया—"आखिर वह स्थिति आजाती है जब लेखक को सिनेमा की शरण लेनी पड़ती है। कोई भी प्रकाशक या पत्र-संचालक सिनेमा का, हालीवुड का, मुकाबला नहीं कर सकता। हालीवुड में जाने के बाद........"

बीच में ही बात काट कर मैंने कहा—"ला बताइले" नामक पत्र में मैंने एमिल लुदविग का एक लेख पढ़ा था। इस लेख का शीर्षक था 'हालीवुड के सात स्तम्भ'। इसमें लुदविग ने लिखा था कि लेखकों की लाशों पर हालीवुड की इमारत खड़ी है,—उन लेखकों की लाशों पर जिन्होंने हालीवुड के हाथों अपनी आत्मा बेच दी थी!"

"टाइप मैगजीन ने भी," पी-एच-पी ने कहा—"एक बार लिखा था कि कोई भी साहित्यिक बिना अपने को चोट पहुँचाए हालीवुड वापिस नहीं आ सकता। लुदविग का यह सौभाग्य था कि वह सही-सलामत वहाँ से चला आया, और उसने लेखकों के इस मृत्यु-कैम्प पर सही

शब्दों में प्रकाश डाला। इसमें सन्देह नहीं कि फिल्मों की इस राजधानी की सड़कें लेखकों की लाशों से पटी हुई हैं। मेरा मन घृणा से भर जाता है जब सोचता हूँ कि हमारा साहित्य किधर जा रहा है;--एक ऐसे गर्त की ओर जिससे मृत्यु के सिवा और कोई छुटकारा नहीं दिला सकता!"

"दोष सारा हालीवुड का ही नहीं है,--खुद उन लेखकों का भी है जो........"

पी. एच. पी दाँत पीस कर उठ खड़ा हुआ। उसके हाथों की मुट्ठी बँध गई थीं, और वह कह रहा था,--"यह तुम मुझ से कहते हो,--उस आदमी से कहते हो जो चक्की के दो पाटों में पिस रहा हो। हम में कोई ऐसा नहीं है जो जरा भी हिल-डुल सके। सभी मजबूती के साथ जकड़े हुए हैं,--सोने की कीलों से जड़े हुए हैं। प्रकाशक और हालीवुड, चक्की के इन दोनों पाटों ने साहित्य की क्या गति कर डाली है, अपनी आँखों से जब तक नहीं देखोगे, तुम्हें विश्वास नहीं होगा!"

[१२]

पी.एच.पी मुझे उस इमारत में ले गया जो बौस के दफ्तर की खिड़की से दिखाई पड़ती थी। खजूर के पेड़ों के बीच स्थित सफेद रंग के ब्लाक, उनके सपाट अग्रभाग और आयताकार खिड़कियाँ।

पी. एच. पी ने कुछ रुक कर दरबान से दो-चार बातें कीं। सिनेरियो विभाग में प्रवेश करने की उसने हमें अनुमति दे दी; लेकिन एक शर्त पर। वह यह कि हम, किसी भी हालत में, भूलकर भी किसी कथानक का भेद न खोलें। कारण कि दूसरे लोगों के कथानक चुरा लेने का डर है। अक्सर दूसरे स्टूडियो तरह-तरह के आदमी भेज कर कथानकों का पता लगाने की कोशिश किया करते हैं। एक-दूसरे के कथानकों की चोरी एक आम बात हो गई है।

सिनेरियो विभाग के दरवाजे पर एक भारी भरकम दरबान बैठा था। उसकी चपटी नाक और मजबूत हाथों से मालूम होता था कि घूंसेबाजी का उसने जन्म कर अभ्यास किया है,—अर्थात् वह पेशेवर घूँसेबाज है।

एक लम्बे गलियारे में से होकर हम गुजरे जिसके दोनों ओर कमरे बने थे। किताब और मैगजीनों से लदी मेजों के पीछे बहुत से लोग, स्त्री और पुरुष दोनों ही, बैठे काम कर रहे थे। वे रंगीन पेन्सिलों से कुछ रेखांकित करने और स्टेनोग्राफरों को बोलकर लिखाने में व्यस्त थे। मेज पर लगी तख्तियों पर मैंने सभी देशों के नाम लिखे हुए देखे।

"इस विभाग में," पी. एच. पी ने कहा,—"दुनियाँ-भर में प्रकाशित मैगजीनों की छान बीन की जाती है। अगर किसी मैगजीन में कोई रोचक प्लाट (कथानक) दिखाई पड़ता है तो उसे अलग टाँक लिया जाताहै।

"उदाहरण के लिए," वह कहता गया,—"पुर्तगाल की मेज पर काम करने वालों को लिस्बन के एक मैगजीनमें असाधारण रूप से एक रोचक कहानी दिखाई पड़ती है। इस कहानी का कथानक एक इन्डैक्स कार्ड पर टाँक लिया जाता है,—जैसे रेड राइडिंगहुड नामक एक छोटी लड़की अपनी नानी से मिलने जाती है। रास्ते में उसे एक भेड़िया मिलता है। भेड़िया लड़की से पहले नानी के घर पहुँच जाता है और उसे चीर-फाड़ डालता है। फिर लड़की आती है। भेड़िया नानी की आवाज की नकल कर लड़की को भी मार डालता है। फिर उसके माँ-बाप उसकी खोज में निकलते हैं और नानी के घर पहुँच कर भेड़िये का पेट चीर डालते हैं। पेट चीरते ही लड़की और नानी, सही सलामत, बाहर निकल आते हैं। इस प्रकार कहानी का 'सुखान्त' अन्त होता है।

"कहानी की यह बाह्य रेखा फिर कहानी-विभाग में भेज दी जाती है। साथ ही विषय, पात्रों और सैटिंग्स के बारे में निर्देश भी नत्थी होते हैं। कहानी विभाग के लोग अपनी या दूसरों की कल्पना को काम में लाकर बाह्य रेखा के आधार पर कहानी बनाते हैं। इस काम में उन्हें दुनियाँ-भर के मैगजीन-विभाग के कथानक टंके-इन्डैक्स-कार्डों से बड़ी मदद मिलती है। उदाहरण के लिए पुर्तगाल वाली उसी सुखान्त कहानी की बाह्य-रेखा को लीजिए। उसके इन्डेक्स कार्ड पर बाकायदा नम्बर पड़ा है,—पी. समूह, आर. आर. एच. ई। इसके आधार पर कहानी विभाग कहानी का निर्माण करता है। रेड

राइडिंग हुड नामक एक छोटी लड़की अपनी बीमार नानी को देखने के लिए रवाना होती है। मार्ग में अनानास के पेड़ों का जंगल पड़ता है। सड़क के एक मोड़ पर उसकी एक भेड़िये से मुठभेड़ होती है। दोनों के संवाद। यह पता लगने पर कि लड़की कहाँ जा रही है, भेड़िया किसी दूसरे रास्ते से लड़की से पहले उसकी नानी के घर पहुँच जाता है। इस तरह कहानी आगे बढ़ती है, और उसका अन्त 'सुखान्त' होता है।

"सिनाप्सिस-विभाग का फिर नम्बर आता है। इस विभाग में कथानक की प्रत्येक कड़ी का रूप क्या होगा, वह किस प्रकार दूसरी कड़ी से जुड़ेगी, कैसे-कैसे मोड़ और उतार-चढ़ाव उसे पार करने होंगे, यह सब विस्तार के साथ देखा जाता है। जैसे,—एक छोटी लड़की है। रेड राइडिंग हुड उसका नाम है। एक पहाड़ी के उतार पर स्थित गाँव में वह रहती है। उसे अपनी नानी का ऐक खत मिलता है। नानी ने लिखा कि उसे जूड़ी देकर बुखार आता है। इस बुखार की जो भी सब से अच्छी दवा मिले, उसे अपने साथ लेकर राइडिंग हुड चली आये। अगली सुबह, तड़के ही राइडिंगहुड चल पड़ती है। एक पोटली में उसके लिए उसकी माँ खाना बाँध देती है। नानी के लिए दवा भी इस पोटली में रख दी गई है। विदा करते समय माँ उसका मुँह चूमती है। नानी के घर जाने वाली सड़क अनानास के जंगलों के बीच से गुजरती है। सड़क के एक मोड़ पर, ठीक उस जगह जहाँ एक टूटा हुआ गिरजा खड़ा है, उसे भूरे रंग का एक भेड़िया मिलता है। भेड़िया आदमी की तरह बोलता है,—आदि।"

कलात्मक प्रभाव में वृद्धि करने के लिए दवा के नाम आदि का कल्पना के सहारे आविष्कारनहीं किया जाता,—बल्कि वह सचमुच की दवा होती है। इसके लिए पहले किसी पेटेण्ट दवा के निर्माता से बातचीत की जाती है। जब उससे तय हो जाता है तो राइडिंगहुड की नानी के लिए वह भेजी जाती है।

इसके बाद 'चीफ' से राइडिंगहुड के कथानक को पास कराया जाता है और उसे 'पुनर्लेखन विभाग" में भेज दिया जाता है। अगर प्रबन्ध-विभाग यह निर्णय करता है कि इस कहानी की पृष्ठभूमि किसी दूर देश की होनी चाहिए

तो उसे 'अजब विभाग' में भेज दिया जाता है। इस विभाग के लोग राइडिंगहुड को तिब्बत में ले जाते हैं, और उसका नाम बदल कर था-नगा-मा रख देते हैं। उसके कपड़े भी तिब्बती हो जाते हैं। नानी के घर जाने का मार्ग भी अब अनानास के जंगलों में से होकर नहीं बल्कि बाँसों के जंगलों में से होकर जाता है। टूटे-फूटे गिरजे की जगह अब बौद्ध मन्दिर ले लेता है और भेड़िये की जगह शेर से अब लड़की से मुलाकात होती है। लेकिन अगर चीफ, प्रबन्ध-विभाग, यह निर्देश देता है कि कहानी में समुद्री दृश्य होने चाहिएँ तो समुद्री दृश्यों वाले विभाग में राइडिंगहुड पहुँच जाती है। न्यूजीलैण्ड या ब्राजील की पृष्ठभूमि में अब कहानी आगे बढ़ती है। किश्ती या बजरे में बैठ कर राइडिंगहुड अपनी नानी के पास जाती है, और जंगल में किसी भेड़िये या शेर की जगह आकाश-दीप के पास मगरमच्छ से अब उसकी मुलाकात होती है। और अगर प्रबन्ध-विभाग यह निर्णय करता है कि इसे जासूसी होना चाहिए तो राइडिंगहुड जासूसी विभाग में पहुंच जाती है। अपनी धनी नानी के यहाँ जब वह गाड़ी में सवार होकर जाती है तो गाड़ी में जेल से अभी-अभी भाग कर आये 'भेड़िया' नामक डाकू से उसकी मुठभेड़ होती है। यह डाकू छोटी लड़कियों की हत्या करने का आदी होता है। इस प्रकार पृष्ठभूमि और नाम बदल कर राइडिंगहुड की कहानी को चाहे जो रूप दे दिया जाता है। लेकिन यह सब होने पर भी एक चीज है जो नहीं बदलती,—वह चीज है उस अमरीकन दवा का नाम जो पीने में जायकेदार, बहुत ही सस्ती और फायदा करने में बेजोड़ होती है!

अधिक संभावना इस बात की होती है कि प्रबन्ध-विभाग जासूसी संस्करण को पास करे। इसके बाद कहानी "पहला ड्राफ्ट विभाग" में जाती है और वहाँ से कुछ इस रूप में निकलती है : सुबह का समय। गाँव दिखाई पड़ रहा है। लाल टोपी पहने एक छोटी लड़की। अपने माँ-बाप से विदा होकर चल देती है। अनानास का भयानक जंगल। सड़क के मोड़ पर, भारी-भरकम पेड़ के पीछे, जेल के कैदियों ऐसी धारीदार पोशाक पहने एक आदमी खड़ा है। उसके सीने पर भेड़िये का चित्र गोदा हुआ है। छोटी लड़की पेड़

के निकट पहुँचती है। इस प्रकार अनेक खून जमा देने वाली घटनाओं के बाद कहानी का 'सुखान्त' होता है।

यह पहला ड्राफ्ट फिर 'खास संशोधन विभाग' में पहुँचता है। इस विभाग में उसका पूरी तरह 'इलाज' किया जाता है,—अर्थात् उसे अधिक रक्त और माँस प्रदान किया जाता है, रङ्ग और रूप उसमें भरा जाता है, उसकी धड़कनों और उतार-चढ़ाव का बाकायदा प्रबन्ध किया जाता है। संवाद आदि भी इस विभाग में आने के बाद लिखे जाते हैं।

"यह बहुत ही महत्वपूर्ण विभाग है," पी. एच. पी ने कहा,—"पत्थर की प्रतिमा में प्राणों की प्रतिष्ठा इसी विभाग में होती है।"

इस विभाग में काफी क्रियाशीलता दिखाई पड़ती थी। अन्य विभागों की तरह इस विभाग में काम करने वालों की आकृतियाँ भी स्पष्ट नहीं थीं। मगर अब मुझे इस पर आश्चर्य नहीं हुआ।

सहसा एक नवयुवक तेजी के साथ कमरे में आया। अन्य लोगों से भिन्न उसका एक अपना व्यक्तित्व और एक अपनी आकृति थी। वह उत्साह और क्रियाशीलता से भरा हुआ था। उसके गालों पर लाली और उसकी मूछें महीन थीं। मालूम हुआ, यह प्रबन्ध-विभाग का आदमी है

"क्या के-एस-टी बहत्तर तैयार है?" दरवाजे के पास वाली मेज पर बैठे हुए लोगों से उसने पूछा। इस मेज पर 'घटना-विभाग' की तख्ती लगी हुई थी।

"कापी आगे भेज दी गई है", उन्होंने बताया,—"कुछ नयी घटनाएँ भी जोड़ दी गई हैं। जब छोटी लड़की उस बिस्तरे पर बैठती है जिस पर बीमार नानी की जगह भेड़िया लेटा है तो उसका बालों से भरा पंजा दिखाई पड़ता है। लड़की आश्चर्य से उसे देखती और सवाल पूछती है। दोनों में बातें होती हैं। चौथे भाग के तनाव को बढ़ाने के लिए दो आकस्मिक परिस्थितियाँ और जोड़ दी गई हैं: पहली घर की किसी चीज का सीढ़ियों पर से गिर कर आवाज करना और दूसरी कपबोर्ड के नीचे से बिल्ली के बच्चे का निकलना।

"लेकिन अच्छा यह हो कि सीढ़ियों वाली घटना यू-यू-अस्सी—

समुद्री डाकुओं के विवाह—के साथ जोड़ दो, और बिल्ली के बच्चे को पगा-नीनी की प्रेम-कहानी या मेरी अन्तोनियों में पहुँचा दो", उस युवक ने कहा—"कम्बल के नीचे से पंजे के दिखाई पड़ने वाले प्रसंग के बारे में 'हास्य-विभाग' से भी सलाह लो और उससे कहो कि दो-चार हँसने वाले प्रसंग और डाल दें। यह करने के बाद टी-एफ-पंद्रह सीरीज़ के तीन पहले ड्राफ्टों—तूफानी पागलपन, आतंक और तूफानी अजूबा को भी पूरा कर डालना।"

'रोमांच-विभाग' ने बताया कि उस दृश्य को अधिक रोमांचकारी बना दिया गया है जिसमें लड़की अपने आप को नानी के बजाय एक भेड़िये के साथ अकेला पाती है। भेड़िये का डरावना पंजा लड़की के गले की ओर बढ़ता है। प्रभाव को बढ़ाने के लिए पृष्ठभूमि में काली छाया का समावेश कर दिया गया है।

"अच्छा हो कि इसके लिए 'हत्यारे का दस्ताना' नामक फिल्म वाला दृश्य ले लो। वह दृश्य इतना प्रभावपूर्ण है कि हमेशा और हर बार प्रभावित करेगा। उसे इस फिल्म में भी दोहरा सकते हो।"

सैक्स-अपील-विभाग ने सलाह दी कि भेड़िये को भरमाने के लिए लड़की को कुछ हाव-भाव भी दिखाना चाहिए। लेकिन इसके लिए लड़की की उम्र कुछ अधिक होनी चाहिए। नहीं तो प्रभाव कम हो जायगा।

कुछ क्षण सोचने के बाद युवक ने कहा,—"अच्छी बात है; इस दृश्य के दो संस्करण तैयार करो। एक में लड़की की उम्र दस साल की हो; दूसरे में उसकी उम्र बड़ी हो,—एक दम चलता पुर्जा!"

इसके बाद युवक उस मेज की ओर गया जिस पर 'संवाद' की तख्ती लगी थी। इसके पास ही दूसरी मेजें थीं जिन पर "स्थानिक रंग", "आँसू खींच", "हत्या-पद्धति" की तख्तियाँ लगी हुई थीं।

"तुम लोगों को आज हो क्या गया है?" संवाद वालों से युवक ने कहा,—"लड़की-भेड़िया-संवाद का बाद वाला भाग बीस दो बार काट चुके हैं। जरा चुस्ती से काम करो। भेड़िये को पक्के डाकू की तरह बोलना चाहिए और लड़की को भोलेपन के साथ उसकी बातों पर यकीन करते जाना चाहिए।

जल्दी करो। इसे पूरा करने के बाद "मदांध फरिश्ता" और "हरजाई" के संवाद भी पूरे कर डालना।"

सबको निर्देश देकर युवक चला गया। हम भी उसके पीछे-पीछे चल दिए।

[१३]

गलियारे के दूसरे छोर पर, सब से अन्त में, एक और कमरा था।

"यह अडाप्टेशन विभाग है," पी. एच. पी. ने बताया—"यह चोरों का विभाग है। यहाँ लेखकों से अनुमति लिए बिना ही उनके कथानकों को उड़ाने का काम किया जाता है। इस विभाग के कर्मचारी मोटर-चोरों की तरह हैं। जिस तरह वे मोटर को चुराते हैं, उस पर दूसरा रङ्ग चढ़ाकर उसका लाइ-सेन्स-टिकट बदलवा लेते हैं। उसी तरह ये लोग भी किसी उपन्यास या नाटक को लेते हैं। इतना ही नहीं, कभी कभी तो ये लोग बाक़ायदा डाका डालते हैं। किसी विदेशी फिल्म को लेकर ये लोग उसे फिर से शूट करते हैं, और नाम बदल कर बाजार में चालू कर देते हैं। कभी-कभी तो नाम तक बदलने की भी तकलीफ गवारा नहीं करते। मारसेल कोन के फ्रेंच चित्र के साथ ऐसा ही हुआ। इसी तरह एक अंगरेजी फिल्म को भी उड़ा लिया गया था।"

"अगर मैं भूलता नहीं हूं तो बूथ टारकिंगटन ने, अनुमति के बिना उसके उपन्यास का फिल्म बनाने पर, वार्नर ब्रदर्स के विरुद्ध मुकदमा दायर किया था।"

"और, इस तरह की घटनाएँ तो अब एक आम बात हो गई हैं। टारकिंगटन के पास तो खैर इतनी क्षमता थी कि वह मुकदमा लड़ सके। अन्य बहुत से लेखक तो मन मसोस कर बैठ रहते हैं। फिर क्लासिक्स का जिस प्रकार हुलिया बदला जाता है, उसे देखकर तो आज के लेखकों के पूर्वज अपनी कब्रों में भी तिलमिला उठते होंगे। तौलस्तोय की अन्ना कैरेनीना को 'सुखान्त' बनाने के लिए जिस प्रकार तोड़ा-मरोड़ा गया वह......"

गलियारे के दोनों ओर बने कमरों की ओर देखकर, अपनी गरदन को

उदासी के साथ हिलाते हुए, पी. एच. पी ने कहा—"अब तक लेखकों के अलग अपने क्षेत्र, शैली और स्कूल होते थे,—उपन्यास लिखनेवाले, कविताओं की रचना करनेवाले, नाटक लिखनेवाले, आलोचक और पत्रकार आदि। लेकिन हालीवुड ने उनके इस व्यक्तित्व को खत्म कर दिया है, और वे फिल्म-उद्योग रूपी मशीनरी के पुर्जे बनकर रह गये हैं। प्रत्येक लेखक अपने-आप में पूर्ण किसी एक रचना को जन्म नहीं देता, वरन् अलग-अलग अंगों का निर्माण करता है। कहानी, उपन्यास और कविता लिखने वालों की जगह अब प्लाट खोजने वालों, प्लाट बनाने वालों, घटनाओं को जोड़ने वालों, पृष्ठभूमि के लिए दृश्य बनाने वालों, कथोपकथन लिखने वालों, हँसी और आँसू निकालने वालों, सेक्स अपील पैदा करने वालों, रोंगटे खड़े करने वालों, चोरी के माल को फिर से रंग-चुन कर पेश करनेवालों ने ले ली है। लेखकों की अब यह दशा हो गयी है। अगर ऐसा न किया जाय तो उत्पादन न बढ़े। यह 'कन्वेयर सिस्टम' कहलाता है। मेरा वश चले तो मैं फिल्मी दुनियाँ को जला कर धूल में मिला दूं।"

"इसमें फिल्मी दुनियाँ का नहीं," मैंने कहा,—"उन लोगों का दोष है जो उसके सूत्राधार हैं, उस व्यवस्था का दोष है जो..........."

"फिर वही राजनीति ?" पी. एच. पी ने कहा,—"मैं लेखक हूँ; और लेखक की हैसियत से उस निरंकुश मनमानी का जिक्र कर रहा हूँ जो सिनेमा ने साहित्य के साथ की है। मेरा मतलब खास हालीवुड से है, उसके मालिकों से नहीं। मालिकों को तो चाहे जब बदला जा सकता है, लेकिन उनके बदलने से हालीवुड नहीं बदल जायगा। जब मैं हालीवुड का नाम लेता हूँ तो मेरा मतलब कला के उस रूप से है जिसे हालीवुड ने, सिनेमा ने, जन्म दिया है; और जब मैं हालीवुड के बौसेज का जिक्र करता हूँ तो मेरा मतलब मालिकों से नहीं, बल्कि उस भावना और विधान से है जो हालीवुड में व्याप्त है, जिसके नियंत्रण में सिनेमा की कला का दम घुट रहा है।"

"बहुत ठीक," मैंने कहा,—"मैं भी जब हालीवुड का नाम लेता हूँ तो मेरा मतलब हालीवुड ही होता है, और जब मालिकों का नाम लेता

हूँ तो......"

"तुम्हारा दिमाग तो बिलकुल जंगली है !" पी-एच-पी ने हाथ हिला कर मेरी बात को हवा में उड़ाते हुए कहा और फिर चुप हो गया,—लगता था जैसे वह खो गया हो।

[१४]

पी-एच-पी गलियारे के दूसरे छोर पर होने वाली हलचल की ओर स्तब्ध-सी नज़र से देख रहा था।

मेरा ध्यान भी उधर गया। अजब हलचल थी। आग बुझाने के पाइप निकाले जा रहे थे, मेज-कुर्सियों का ढेर दरवाज़ों के आगे जमा किया जा रहा था।

"क्या आग लगी है ?" मैंने पूछा।

पी-एच-पी का चेहरा पीला पड़ गया, और वह दोनों कंधों के बीच अपना सिर छिपाने की कोशिश करने लगा।

"आग से भी बदतर," उसने कहा,—"आज फिर गड़बड़ शुरू हो गई !"

बाहर मोटर साइकिलों के आने की घरघराहट सुनाई दी। एक चीख मारकर पी-एच-पी पास की खिड़की में से कूदकर फूलों की क्यारी में जा गिरा। दो हट्टे-कट्टे आदमी एक युवती को पीट रहे थे। उन्होंने जब पी-एच-पी को देखा तो उसके सिर पर भी एक डंडा रसीद कर दिया। युवती लँगड़ाती हुई भाग निकली। मैं भागकर पी-एच-पी के पास गया। हट्टे-कट्टे आदमी बराबर के दरवाजे से बाहर खिसक गये। पी-एच-पी को मैंने जमीन से उठाया, और हम दोनों भागकर बाजार में पहुँचे। बाजार में अच्छी-खासी भीड़ जमा थी। मैंने जानना चाहा कि मामला क्या है, मगर इसका मौका नहीं मिला। दोनों हाथों से अपने सिर को दाबे पी-एच-पी फिर भाग खड़ा हुआ। मैंने भी उसका पीछा किया। पीछे से पिस्तौल चलने की आवाज सुनाई दी। मोटर साइकिलों की घरघराहट और भी तेज होती जा

रही थी। हम एक गली में घुस गये, और आने-जाने वालों से टकराते-बचते अन्त में एक ऊंची इमारत के खम्बों के पीछे हमने शरण ली।

"आखिर हुआ क्या ?" मैंने हाँफते हुए पूछा,—"क्या किसी की हत्या की गई ?"

पी-एच-पी दोनों हाथों से अपना मुंह ढके खड़ा था। सुबकियों से उसका सारा बदन हिल रहा था। अपने को संभालने में उसे कई मिनट लग गये।

"अजीब मुसीबत है," पी-एच-पी ने कहा,—"स्टूडियो के कर्मचारियों ने आज फिर हड़ताल कर दी है। पिछली हड़ताल १९४७ में शुरू हुई थी......सभी अखबारों में उसकी खबर छपी थी......कई सौ घायल हुए थे........"

"लेकिन तुम इतना आतंकित क्यों हो ? तुमने तो हड़ताल नहीं की ?"

"लेकिन वे यह थोड़े ही देखते हैं कि कौन हड़ताल कर रहा है और कौन नहीं। जो सामने पड़ जाता है, उसी पर चोट करते हैं। आँसू-गैस छोड़ते हैं। गन्दे-से-गन्दा मलबा उठाकर ऊपर उंड़ेलते हैं। सीधे आदमियों पर अपनी मोटर साइकिलें चढ़ा देते हैं...हरामी कहीं के........"

"आखिर किसे गाली दे रहे हो ?" मैंने पूछा।

"उन्हें जो डंडे चलाते हैं....मोटर साइकिल दल के सिपाही...सब हरामी हैं...लेकिन वे पैसे के लिए यह सब करते हैं....इनके मालिक जो कहते हैं......"

"उनके मालिक कौन.......कौन मालिक ?"

"तुम्हारा दिमाग तो बिलकुल जड़ है !" पी-एच-पी ने झुंझला कर कहा,—"मालिकों से मेरा मतलब है वे लोग जो असली सूत्रधार हैं, जो कभी सामने नहीं आते, लेकिन फिर भी........"

एक ही गिनती में पी-एच-पी सबके नाम गिना गया—फिल्म कम्पनियों के मालिकों के ही नहीं, उन लोगों के भी जो इन मालिकों का

सूत्र-संचालन करते हैं।

"असली मालिक यहाँ के बड़े-बड़े बैंक हैं," पी-एच-पी ने कहा,—"राकफैलर का चेज़ नेशनल बैंक, मारगन बैंक, लीहमान ब्रदर्स बैंक, मारगन का एटलस कार्पोरेशन, डिल्लन रीड का बैंकिंग कार्पोरेशन........"

"बीसवीं सदी फौक्स कम्पनी किसके नियन्त्रण में है ?" मैंने पूछा।

"राकफैलर के।"

"और कोलम्बिया ?"

"कैलीफोर्निया बैंकर्स के।"

"और यूनिवर्सल ?"

"स्टैण्डर्ड कैपीटल बैंक।"

"और न्यूजरील स्टूडियो !"

"मार्च आफ टाइम न्यूजरील मारगन के नियन्त्रण में है, और यूनाइटेड न्यूज........ ओह, सवाल पर सवाल करने की तुम्हें बुरी आदत पड़ गई है।"

पी-एच-पी सड़क पर चलने लगा। मैंने भी उसके साथ-साथ कदम बढ़ाये। अपनी गरदन के पिछले भाग को वह अभी तक सहला रहा था।

"जहन्नुम में जायें ये सब !" उसने कहा,—"मुझे इनसे कोई वास्ता नहीं। इसी तरह लोग 'लाल' बनते हैं। मैं लेखक हूँ, सिनेरियो विभाग में काम करने वाले लोगों की तरह लोहे की मशीन नहीं। मुझे साहित्य से दिलचस्पी है, फिल्म-कम्पनियों के मालिकों को कौन नचाता है, इससे मुझे कोई मतलब नहीं। मुझे सबसे अधिक चोट लगती है यह देखकर कि व्यापारिकता और मुनाफे की भावना ने किस हदतक हर जगह प्रवेश कर लिया है। मुनाफे के सिवा हमारे प्रकाशक और कुछ नहीं देखते।"

[१५]

सिगरेट खरीदने के लिए हम एक दुकान पर रुके। वहाँ क्लासिक्स के कुछ जेबी-संस्करण दिखाई दिये। ये जेबी-संस्करण अभी हाल ही में प्रकाशित होकर नये-नये बाजार में आये थे।

"यह देखो", मैं ने पी. एच. पी. से कहा,—"कितने सस्ते में क्लासिक्स के ये जेबी संस्करण प्रकाशित किये गये हैं। इन संस्करणों की तारीफ करनी ही पड़ेगी।"

"तुम तारीफ करने की बात करते हो," पी.ऐच.पी. ने गुस्से में भर कर कहा,—"मैं कहता हूं, इससे बढ़कर अपराध और कोई नहीं हो सकता। दिन-दहाड़े ये लोग क्लासिक्स की चोरी करते हैं, काट-छाँट कर उन्हें बराबर कर डालते हैं और फिर, ऊपर से रंग-चुन कर, उन्हें बिसातियों और दवाफरोशों के यहाँ बेचने के लिए भेज देते हैं। हाल्डमैन जुलियस ने क्लासिक्स को जेबी बनाने के लिए उनमें इतनी काट-छाँट की है कि उन्हें अब पहचानना तक मुश्किल हो गया है। इसी तरह की हरकत नौफ आधुनिक लेखकों के साथ कर रहा है। उनकी किताबों का कीमा बनाकर, दूसरे नामों से, वह उन्हें बाजार में चलाता है।"

व्यंग-भरी मुद्रा के साथ पी.ऐच.पी ने एक जेबी किताब की ओर संकेत किया। यह शेक्सपियर का जेबी संस्करण था जो खासतौर से आधुनिक पाठकों के लिए तैयार किया गया था।

'वीकली बुक रिव्यू' में इस जेबी संस्करण की आलोचना पढ़ कर देखो," पी ने कहा—"आलोचक ने, शाब्दिक मानी में, इसे 'शेक्सपियर की हल्की डोज' कहा है। ये लोग इस तरह लिखते हैं मानो शेक्सपियर लेखक न होकर कास्टर आयल हो जिसकी हल्की और भारी खुराकें दी जाती हैं। पेटेण्ट दवाइयों की तरह ये लोग अब शेक्सपियर को बाजार-घाट उतार रहे हैं। एस्पिरीन के तर्ज पर तुम इसे शेक्सपिरीन भी कह सकते हो। वह दिन दूर नहीं जब बाजार में 'डिकन्सोल', 'ह्यूगोल' आदि भी दिखाई पड़ने लगेंगे।"

सिगरेट स्टोर से हम बाहर निकल आये। पास ही एक और दुकान थी। उसके दरवाजे पर एक तख्ती लगी थी जिस पर लिखा था :

हमसे लिखाइए, अपने नाम से छपाइए !

कहानी और उपन्यास,
रिपोर्ताज और आलोचना,
भाषण और अभिनन्दन पत्र,
जीवनी और संस्मरण,
हम सभी कुछ सप्लाई करते हैं,
किफायती दाम, सन्तोषप्रद काम
हमसे लिखाइए, अपने नाम से छपवाइए :
[ए. ई. साहित्यिक एजेन्सी, शाखाएँ अमरीका-भर में ।]

"चलो, इसे भी देख लें," मैंने पी. ऐच. पी. से कहा ।

अन्दर प्रवेश करने पर सबसे पहले ही एक आकर्षक युवती से मुलाकात हुई । हमारे कुछ कहने से पहले ही उसने अपनी बात शुरू कर दी—

"किस तरह के लेखों में तुम्हारी दिलचस्पी है ? हमारी एजेन्सी हर तरह के आर्डर लेती है । समय पर हम काम देते हैं । तुरत काम कराना हो तो २५ प्रतिशत अधिक देना होगा । अरे......"

उसने एक बार मेरी ओर और फिर पी.एच.पी. की ओर देखा । फिर कहा,—"तुम लोग तो खुद लेखक हो । क्यों, मैंने ठीक समझा न ? हम तुम्हें विषय वस्तु—लिखने की कच्ची सामग्री—भी दे सकते हैं । सभी तरह का कच्चा माल हमारे पास है ।"

"तुम्हारी एजेन्सी की कोई अपनी खास शैली भी है ?" मैंने उससे पूछा ।

"बाबा आदम से लेकर अति आधुनिक शैली तक, स्टाइल जो भी तुम्हें पसन्द हो," उसने कहा,—"हमारे पास सभी आधुनिक शैलियाँ मौजूद हैं ।"

यह कह कर उसने एक मोटी अलबम उठाई । इस पर लिखा था—शैलियों का सूचीपत्र ।" इसके हर पन्ने पर शैलियों के नमूने दिये हुए थे ।

"यह देखये", युवती ने एक पन्ने की ओर संकेत करते हुए कहा—"यह फाकनर-शैली का नमूना है, यह थौर्नटन विलडर की शैली है और यह

गर्टरूड स्टीन की; और यह जायस की शैली का सुलझा हुआ संस्करण है,—चेतना का अन्तर प्रकाश जैसा का तैसा मौजूद है, तिस पर खूबी यह कि इसके शब्दों का रूप बोधगम्य है; और यह अमरीकी जायस जेम्स थर्बर की शैली है जो आजकल बहुत प्रचलित है; अगर अधिक जनप्रिय शैली चाहते हों तो यह देखिये, मिचेल और स्टुअर्ट ह्वाइट की शैली के नमूने भी यहाँ दिये हुए हैं।"

यह सब देख कर मैं अचरज में रह गया।

"हद है!" मैंने कहा,—"यह तो मैंने सुना था कि अमरीका में अनेक ऐसे प्रेत लेखक हैं जो लिखते तो खुद हैं, मगर वह छपता दूसरों के नाम से है। लेकिन इस चीज ने बाकायदा व्यापार की शक्ल ले ली है, यह मेरी कल्पना से बाहर था। मैं सोच भी नहीं सकता था कि........"

"इसमें आश्चर्य की क्या बात है?" युवती ने अपनी भौहों में बल डालते हुए कहा,—"तुम तो इस तरह बातें करते हो मानो सीधे टिम्बकटू से चले आ रहे हो।"

"यह मास्को के रहनेवाले हैं," पी. एच. पी. ने मेरा परिचय दिया।

युवती ने सकपकाई-सी दृष्टि से मेरी ओर देखा। फिर अगले ही क्षण उसके चेहरे पर चमक आगई।

"ओह, तो तुम शायद वहाँ से भागकर आये हो!" युवती ने कहा,—"और अब तुम अपने कड़वे अनुभव लिखना चाहते हो, ठीक है न? सोवियत संघ के बारे में हमारे पास बहुत ही दक्ष लेखक हैं। जो भी चाहो, तुम्हारे लिए लिखकर दे सकते हैं,—उपन्यास, कहानी, नाटक, संस्मरण, निबन्ध, लेखों की सीरीज। सीरीज के अनेक शीर्षक हमारे पास हैं, जैसे,—'साहित्य से शून्य देश', 'क्रेमलिन के गुप्त रहस्य।"

मैंने पी. एच. पी. की ओर कनखियों से देखा।

"मैं एक कहानी लिखना चाहता हूँ जिसमें 'सफेद टेलीफोन' का रहस्योद्घाटन किया गया हो।"

पहली बार युवती को जवाब देने में कुछ कठिनाई का सामना

करना पड़ा।

"अ-र-र........मैं कह नहीं सकती........यह तो अजब-सा विषय है.... जटिल विषयों पर हम अधिक चार्ज करते हैं........"

इसी बीच टेलीफोन की घण्टी बज उठी। युवती ने रिसीवर उठाया— "हलो....हाँ। एक लेख के लिए आर्डर? —सिनेटर ब्रू के लिए। हाँ, तैयार है। इसे कहाँ भेजें? ठीक, अभी भेजते हैं। क्या, कहा एक लेख और चाहिये? अच्छा........"

युवती को बात करते हुए छोड़कर हम बाहर चले आये।

[१६]

पी.एच.पी. की बुरी हालत थी। लगता था जैसे लड़खड़ाकर वह गिर पड़ेगा। जब तक हम एक पार्क में जाकर बैंच पर न बैठ गये, वह मेरी बाँह से चिपका रहा।

"तुम्हें शायद नहीं मालूम" उसने मेरे निकट खिंचते हुए कहा—"मैं खुद भी प्रेत-लेखक हूँ। पी-एच-पी का अर्थ है, पब्लिशिंग हाउस का प्रेत। मैं पेशेवर लेखक हूं। तीन उपन्यास, पचास से ऊपर कहानियाँ, अनगिनत लेख—साल में लगभग दस लाख शब्द मुझे लिखने पड़ते हैं। लेकिन मेरा अपना कोई नाम नहीं, खुद अपनी लिखी चीजों पर भी मुझे अपना नाम देने का अधिकार नहीं। मेरी तरह चार पी-एच-पी और हैं जो बॉस के यहाँ काम करते हैं। प्रकाशक जो नाम बताता है, उसे हम अपनी रचनाओं पर डाल देते हैं, और खुद प्रेत की तरह निराकार बने रहते हैं।"

"अमरीकन लेखकों की एक कान्फ्रेंस में," मैंने कहा—"अलबर्ट माल्ट्ज ने प्रेत-लेखकों के बारे में एक बयान दिया था। लेकिन तब मुझे उस पर विश्वास नहीं हुआ था।"

"हम में से कुछ," पी. ने कहा—"प्रेत योनि को छोड़कर अपने वास्तविक रूप में प्रकट होने में भी सफलता प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन ऐसा बहुत कम होता है। अधिकतर तो अपने नाम से छपी किताब देखने की आशा

हृदय में सँजोये अपना सारा जीवन प्रेत-योनि में ही बिता देते हैं।"

"और जो प्रेत योनि से बाहर निकल आते हैं, वे क्या करते हैं?" मैंने पूछा, और खुद ही इस सवाल का जवाब देते हुए कहा—"वे फिर दूसरे प्रेत-लेखकों को बटोर कर अपने निजी दफ्तर कायम करते हैं?"

"नहीं," पी. ने जोर से गरदन हिलाते हुये कहा—"अगर मुझे इस योनि को छोड़ने का अवसर मिले तो मैं कभी ऐसा न करूँ। और अगर ऐसा करना भी पड़ा तो मैं सात जन्म भी उतना निर्मम नहीं हो सकता जितना कि हमारा बौस है। कुछ भरोसा नहीं, किस वक्त वह हमें निकाल बाहर कर दे। हर वक्त एक डर बना रहता है।"

"लेकिन तुम भी सच कहते हो," पी ने कुछ रुक कर फिर कहना शुरू किया,—"प्रकाशकों की तरह हमारे लेखकों में भी व्यापारिकता घर करती जा रही है। भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं को वे 'लेखकों का बाजार' कहते हैं। उनका एक पत्र 'लेखकों का डाइजेस्ट' है। यह पाठकों के डाइजेस्ट से भिन्न है। इसका एक मात्र उद्देश्य लेखकों को उनके बाजार की स्थिति और उतार–चढ़ाव से परिचित कराना होता है। यह पत्र लेखकों को बताता है कि किस वक्त किस तरह की किताबों का बाजार गरम होता है, और किस तरह की किताबों का ठंडा, आमदनी बढ़ाने के लिए किस तरह के लेख लिखने चाहिएँ और किस तरह के नहीं।

"खुद तुमने भी शायद यह बात देखी हो," पी कहता गया—"हमारे यहाँ किताबों और फिल्मों के नाम अधिकतर एक से होते हैं। कुछ वर्ष पहले तुम्हारे देश का एक लेखक इलिया एरेनबुर्ग जब यहाँ आया था तो उसे भी यह बात अजब लगी थी। एरेनबुर्ग चाहे जितना अच्छा लेखक हो परन्तु व्यापार के बारे में कुछ नहीं जानता था। असल में नामों का यह टकसालीपन व्यापारिक राजनीति के एक प्रमुख सिद्धान्त पर आधारित है। यह सिद्धान्त ग्राहकों का इनरशिया नाम से प्रचलित है। उदाहरण के लिए तुम एक नये ढंग और काट की जाकेट तैयार करते हो और उसका नाम तिलस्माती जाकेट रखते हो। विज्ञापन के द्वारा तिलस्माती जाकेट चल पड़ती है। कुछ दिन बाद

तुम एक टोपी बाजार में चलाना चाहते हो, और इसका नाम भी तिलस्माती टोपी रख देते हो। नया नाम रखने से चलतू नाम अधिक ठीक होता है, और ग्राहक आसानी से उसे पकड़ लेते हैं। इसके बाद तिलस्माती साबुन, तिलस्माती तेल, तिलस्माती बूट पालिश,—चाहे जिसको तिलस्माती बनाकर सहज ही चला सकते हो। हालीवुड ने यही तरीका अपनाया। बिंग क्रासबी का फिल्म 'रोड टू सिंगापुर' बहुत चला। इसके बाद 'रोड टू जंजीबार', 'रोड टू मोरक्को', 'रोड टू उटोपिया', 'रोड टू रियो' आदि का एक सिलसिला शुरू हो गया।

"यही तरीका अब साहित्य की दुनिया में भी इस्तेमाल हो रहा है। वान डाइक ने एक से नामों की बारह किताबें लिखीं—मालूम होता था एक ही टकसाल के ढले हुए पेटेन्ट सिक्के चले आ रहे हैं। एलेरी क्वीन ने एक ही नाम की छः किताबें लिखीं। खयाल यह था कि तीन किताबों को जो पाठक अपना चुका है, बिना विरोध के वह नम्बर चार, पाँच, छः को भी हजम कर लेगा। वूलरिच का तो नाम ही ब्लैक वूलरिच पड़ गया क्योंकि उसकी हर किताब के नाम का पहला शब्द 'ब्लैक' होता था। केवल नामों तक ही नहीं, बल्कि विषय और कथानकों में भी यह परिपाटी चल पड़ी। रेबेका नामक एक फिल्म है जिसमें एक अंगरेजी गाँव के पुराने मकान में भयानक हत्या का दृश्य दिखाया गया है। बाद में बननेवाली दरजनों फिल्मों में इस फिल्म की सैटिंग्स दोहराई गईं और हत्या तथा आतंक से भरे फिल्मों की एक बाढ़ सी आगई। कार्टर डिक्सन ने दरजनों किताबें ऐसी लिखीं हैं जिनका कथानक और विषय एक-सा है,—लाश का एक कमरे में पाया जाना जिसका भीतर से ताला बन्द है। युद्ध के बाद प्रकाशित होने वाली किताबों में जितने भी हत्यारे आये वे सब अपने ही किसी सम्बन्धी की हत्या करते हैं,—पति, पत्नी, चचा, साले या बहनोई की। अन्तर सम्बन्धियों में पड़ सकता है, पर शेष सब कुछ एक सा रहता है। टकसाली नाम और टकसाली कथानकों की इस परिपाटी में आश्चर्य जनक कुछ भी नहीं है। सामूहिक उत्पादन के साथ टकसालीपन का होना अनिवार्य है। व्यापारिकता जब साहित्य के सिर पर सवार

ो जाती है.........."

"तुम तो बाकायदा लैक्चर देने लगे," मैंने कहा,—"जरा धीरे-धीरे बात करो।"

"बीच में मत टोको," पी. ने कहा,—"लेकिन इस तरह अधिक दिन नहीं चल सकता। हमारे यहाँ अनेक लेखक ऐसे भी हैं जो व्यापारिकता का विरोध करते हैं। पर्ल बक ने काफी विरोध किया है। सिनक्लेयर ल्युविस को जब पुलिट्जर पुरस्कार दिया गया तो उसने उसे लेने से इनकार कर दिया। कुछ दिन हुए तीन सौ लेखकों, कलाकारों और सिनेमा कर्मचारियों ने एक मैगजीन निकाला था। इसका नाम 'सैंतालीस' रखा था। पूँजीपतियों को इससे अलग रखा गया। देखो, व्यापारिकता से भरे इस देश में यह अव्यापारिकता सफल होपाती है या नहीं।"

[१७]

पी. ने अपनी जेब से 'सैटर्डे रिव्यू आफ लिटरेचर' की एक प्रति निकाली। उसे मुझे देते हुए कहा,—"यह देखो, व्यापारिकता का अब हमारे यहाँ खुल कर विरोध होने लगा है। इस अंक में एडविन सीवर का एक लेख छपा है। जरा इसे पढ़ो।"

सरसरी नजर से मैं लेख को देख गया। सीवर ने घोषणा की थी कि अमरीकी साहित्य अपनी रचनात्मक शक्ति खो चुका है, और अधिकांश लेखकों का विकास कुण्ठित हो गया है। उसने अधिकांश लेखकों पर यह आरोप लगाया था कि वे साहित्य की दृष्टि से नहीं, व्यापार को नजर में रखकर किताबें लिखते हैं। संपादक, प्रकाशक और आलोचक किताबों की बिक्री की संख्या से उनको परख करते हैं,—साहित्य की परख के लिए 'बिक्री' ही उनकी सबसे बड़ी कसौटी है।

व्यापारिकता की यह भावना, सीवर ने इस लेख में लिखा था, अमरीका के साहित्य पर छा गई है, बल्कि कहना चाहिए कि नासूर की भाँति अमरीकी-साहित्य के शरीर को खा रही है।

देखने के बाद मैंने पत्र पी. को लौटा दिया।

"सीवर के कथनानुसार," मैंने कहा,—"अमरीकी साहित्य अपनी रचनात्मक शक्ति खो चुका है, और उसका विकास अवरुद्ध हो गया है।"

"नासूर की बात उसने बहुत ठीक लिखी है," पी. ने कहा,—"यही हमारे साहित्य का सबसे बड़ा रोग है।"

"सो तो ठीक है। लेकिन आखिर यह नासूर है क्या बला?" मैंने पूछा।

पी. ने चकित होकर कहा—"इतनी देर से उसी का तो मैं रोना रो रहा हूं। अरे भाई! यह नासूर है मुनाफे की भावना जिसने हमारे साहित्य और लेखकों को ग्रस लिया है।"

"फिर वही भावना की बात," मैंने कहा,—"हालीवुड का जिक्र करते हुए जब मैंने उसके बौसों—सूत्रधारों—का नाम लिया था तब भी तुमने उन्हें आँखों की ओट कर व्यापारिकता की भावना की बात कही थी। आखिर भावनाओं का दामन तुम कभी छोड़ोगे या नहीं?"

"हालीवुड की बात छोड़ो," पी. ने कहा,—"साहित्य की बात करो। किसी एक प्रकाशक और सम्पादक की नहीं, व्यापारिकता की भावना को इस रोग के लिए जिम्मेदार ठहराना पड़ेगा।"

पी. सिगरेट के अवशेष को गटर में फेंकने के लिये उठा। मैं भी उसके साथ-साथ उठा। मेरा पाँव बैंच की टाँग में उलझ गया, और लड़खड़ाकर पी. के ऊपर जा गिरा। पी. मेरा आघात न सँभाल सका, और उसका सिर जोरों के साथ बैंच से जा टकराया। यह चोट डण्डे के आघात से कुछ कम गहरी नहीं थी।

मैंने पी. से बार-बार माफी माँगी, और अनुरोध किया कि अपनी बात को जारी रखे। धीमे स्वर में, पर आवेग के साथ, उसने कहना शुरू किया—

"सच पूछो तो नासूर की बात करना बेकार है। असल में इस स्थिति के लिए वे लोग जिम्मेदार हैं जो हमारे साहित्य के सूत्रधार हैं; प्रकाशकों

और सम्पादकों पर जो शिकंजा कसते हैं। मारगन और उसके साझीदार—बेकर्स, फिशर्स, वाण्डरबिल्ट और उनके दूसरे भाई-बन्धु 'टाइम', 'फारचून' और 'लाइफ' जैसे पत्रों के मालिक हैं। मारगन के हाथ में 'कोलियर', 'कन्ट्री होम' और 'वोमेन्स होम कम्पैनियन' की बागडोर है। वह उन्हीं पत्रों को हथियाता है जिन्हें लोग अधिक संख्या में पढ़ते हैं। लेकिन दूसरे पूँजीपति भी उससे पीछे नहीं हैं। 'न्यूजवीक' हैरीमैन, ऐस्टर, ह्विटनी और मैलन के हाथ में है। यह पत्र भी भारी तादाद में छपता है। अमरीका के साठ बड़े परिवारों में एक कर्टिस परिवार है। उसके हाथ में 'सैटर्डे ईवनिंग पोस्ट', 'लेडीज़ होम जर्नल' और 'कण्ट्री जेण्टलमैन' की बागडोर है। दैनिक पत्रों का नाम मैं जान-बूझ कर नहीं ले रहा हूं। तुम जानते ही होगे कि उनपर राकफैलर ग्रुप, मारगन ब्लाक, ह्विटनी बन्धु, मैलन, हार्कनैस, ड्यूपौं और गगनहाइम का कब्जा है। किताबों का सामूहिक उत्पादन करनेवाले बड़े-बड़े प्रकाशक भी उनके हाथों में हैं।"

"और उस पुरानी प्रतिष्ठित फर्म हार्पर ब्रदर्स का क्या हुआ?" मैंने पूछा।

"एक तरह से वे किताबों के व्यापार की दुनिया से अलग हो गये हैं। मैलन ने उनका सारा ताम-झाम खरीद लिया है। वैसे अमरीका में १०० प्रकाशक हैं। लेकिन इनमें अठारह ऐसे हैं जो अमरीका के कुल साहित्य के आधे से अधिक के मालिक हैं,—आधे में रब और बाकी में सब वाला किस्सा है।"

पी. ने एक बार अपने सिर को सहलाया, फिर घड़ी की ओर देखा और उछल कर खड़ा हो गया। सम्भवतः उसे अपने बौस का खयाल आगया था। मेरी ओर अनुरोध-भरी नजर से देखते हुये बोला :

"अपने ही पेशे के एक साथी से मिलकर बहुत खुशी हुई। लेकिन एक बात है जो मैं तुमसे कहना चाहता हूँ। वह यह कि जब तुम अपनी इस यात्रा के बारे में लिखो तो मेरा और मेरी कही हुई बातों का उल्लेख सही-सही करना। मैं मानता हूं कि दाग-धब्बे तो सूरज में भी होते हैं। अमरीकी साहित्य में भी अगर दाग हैं तो यह उसके सशरीर होने का लक्षण है। अमरीकी साहित्य राजनीति के अंकुश से मुक्त है और यहाँ के लेखक आजादी

के साथ अपनी लेखनी चलाते हैं। मैंने जो यह सब कुछ तुमसे कहा है, इसका उल्लेख करना न भूलना। नहीं तो," पी. ने अपने स्वर को कुछ धीमा करते हुए कहा,—"गैर अमरीकी कमेटी से मेरी जान नहीं बच पायगी और ट्रूमैन-भक्ति का शिकंजा मुझे दर-दर का भिखारी बना देगा।"

"चिन्ता न करो', मैंने पी. को विश्वास दिलाया,—"मैं तुम्हारी बातों का गलत या अधूरा उल्लेख नहीं करूँगा।"

[१८]

पी. से विदा होकर मैं अपने होटल के लिए चल दिया। पी. और उसके दूसरे लेखकों के वर्त्तमान और भविष्य के बारे में अनेक विचार मेरे दिमाग को मथ रहे थे।

"ओ हैल्लो ! दुःख है कि तुम्हारे यहाँ आने की खबर हमें पहले नहीं मिल सकी।" सहसा पीछे से मुझे एक उमंग-भरी आवाज सुनाई पड़ी। अगले ही क्षण किसी ने मेरा कन्धा थपथपाया और फिर बड़े उत्साह से मेरे हाथ को अपने हाथ में लेकर पूरी मिलनसारी के साथ दबाया।

मैंने घूम कर देखा। मेरे चारों ओर हँसते हुए चेहरे दिखाई पड़ रहे थे।

"हमें अभी पता चला कि तुम यहाँ आये हो। साथियों ने कहा कि हम तुमसे मिलें और मिलकर तुम्हारा और तुम्हारे देश की जनता का अभि-नन्दन करें।" ढीले-ढाले कपड़े पहने एक लम्बे युवक ने कहा,—"हम लोगों की वेश-भूषा का खयाल न करना। अभी-अभी पुलिस और 'लिजन' के फासिस्ट गुण्डों से निबट कर आरहे हैं।"

इस लम्बे युवक के पास ही एक दूसरा युवक, सैनिक वर्दी में, खड़ा था। उसके सिर पर पट्टी बंधी थी और गाल पर खरोंच का ताजा निशान था। उसने सीने पर लगे 'लाल सितारे' की ओर गर्व से संकेत करते हुए कहा,—"एल्ब नदी के तट पर तुम्हारे और हमारे देश के सैनिकों ने जब हाथ मिलाये थे तो एक सैनिक ने मुझे यह भेंट किया था। यही मेरा सब से बड़ा

तमगा है।"

"तुम हमारे साहित्यिक उत्पादन-केन्द्र का अध्ययन करने यहाँ आये हो," एक सुन्दर लड़की ने कहा। आँख के पास की अपनी चोट को हाथ से छिपाने का प्रयत्न करते हुए वह कह रही थी,—"मैंने तुम्हें बगीचे में देखा था.... सिनेरियो विभाग के सामने। मैं अभिनेत्री का काम करती हूँ।"

"उस प्रेत लेखक,—पी. एच. पी,—ने तुम्हें बहुत कुछ बता दिया होगा।" लाल सितारे वाले लड़के ने कहा,—"लेकिन एक बात वह गलत समझता है। वह यह कि अमरीका के डालर-सेठ,—यह बिलकुल साफ है कि,—न सब लेखकों को खरीद सकते हैं, और न सब पाठकों को मूर्ख बना सकते हैं।"

"हालीवुड साहित्य के लिए सचमुच खतरनाक बन गया है," ढीले कपड़े पहने हुए लम्बे युवक ने कहा,—"लेकिन तुम्हारा वह पी. एच. पी डालर-सेठों की ताकत को कुछ बढ़ा-चढ़ा कर भी पेश करता है। हालीवुड के साम्राज्यवाद का भी, दूसरे साम्राज्यवादों की तरह, अन्त निश्चित है। 'कन्वेयर सिस्टम'—जिसे असल में कतरन सिस्टम कहना चाहिए,—की बदौलत जिस तरह के फिल्म बन रहे हैं, वे हालीवुड की गाड़ी को अधिक दूर तक नहीं खींच सकते। दुनिया के पाठकों और सिनेमा देखने वालों को अपना दास बनाने का उनका सपना इन्हीं पाठकों और दर्शकों की लोहे की दीवार से टकरा कर चकनाचूर हो जायगा।"

"इस गंदगी से हम बराबर संघर्ष कर रहे हैं," लड़की के पास खड़े चश्मा लगाए एक युवक ने कहा,—"लेकिन अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। साल के सब से रद्दी फिल्म को हम एण्टी-आस्कर पुरस्कार प्रदान करते हैं। पूँजीवादी अखबार चाहे जितना प्रचार करें, हमारा यह पुरस्कार उनकी पोल खोल देता है।"

"अच्छे फिल्मों को जनता आज भी पसन्द करती है, और हमेशा पसन्द करेगी। 'हमारे जीवन के सबसे अच्छे वर्ष' नामक फिल्म को जनता ने बेहद पसन्द किया था। युद्ध के बाद के अमरीका से क्षुब्ध एक भूतपूर्व

सैनिक इस फिल्म का नायक था और..."

"इस फिल्म में एक दृश्य ठीक वैसा ही है जैसा कि हम अभी-अभी, अपने वास्तविक जीवन में, खेलकर आ रहे हैं," लम्बे युवक ने कहा,—"हार्स्ट" द्वारा प्रकाशित एक अखबार को पढ़ते-पढ़ते एक फाशिस्त सोवियत रूस के विरुद्ध युद्ध की आवाज लगाने लगता है। अन्त में फिल्म के उस दृश्य में उसकी खूब मरम्मत होती है।"

"इस फिल्म की सफलता," लाल सितारे वाले युवक ने कहा,—"और काल्डवेल, सिन्क्लेयर ल्युविस, हावर्ड फास्ट की पुस्तकें तथा चार्ली चैपलिन के फिल्म इस बात का प्रमाण हैं कि डालर अमरीका की समूची जनता और उसके सभी लेखकों को नहीं खरीद सकता।"

एक मीटिंग में उन्हें जाना था, इसलिए वे अधिक देर तक नहीं रुक सके। एक लड़के ने मुझे होटल के रास्ते का एक 'शार्ट कट' बताया कि अगर इधर से जाऊँ तो जल्दी पहुँचा सकता हूँ। सबसे विदा लेकर अभी मैं दो-चार कदम ही गया हूँगा कि मुझे अपने पीछे से पाँव पटकने और चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। बौस के आफिस की इमारत के प्रमुख दरवाजे से निकल कर अनेक लोग मेरी ओर चले आ रहे थे। एक खुली खिड़की पर झुका हुआ बौस, मेगाफोन हाथ में लिए, चिल्ला रहा था,—"हाँ, यही है।"

तरह-तरह की भली-बुरी आवाजें करते एक दरजन लोगों ने मुझे घेर लिया। इनके चेहरे और आकृति भावशून्य थे। उनके हाथों में फोटो लेने के कैमरे थे। हर कोण से उन्होंने मेरे चित्र लेना शुरू कर दिया। एक तो बिलकुल जमीन पर लेट गया, और लेटे-लेटे ही उसने मेरा चित्र लिया। फिर सबने अपनी नोटबुकें निकाल लीं, और मेरे अधिक पास खिसकते हुए सवालों की बौछार लगा दी।

"शोलोखोव किस अमरीकी अभिनेत्री को सबसे अच्छा समझते हैं? तुम्हारे उपन्यासकार क्या अमरीका के गुप्त हथियारों और आक्रमण के आतंक का चित्रण करने वाली किताबें नहीं लिखते? सोवियत लेखकों की यूनियन के कितने सदस्य ईंटें ढोने का काम करते हैं? एहरेनबुर्ग अपने आफिस में कितने

प्रेत-लेखकों से काम कराता है ? अपनी पतलून पर सोवियत लेखक क्या चीज बाँधते हैं,—पेटी-या सस्पेण्डर ?"

एक रिपोर्टर ठीक मेरी नाक के नीचे उछल-उछल कर बार-बार एक ही वाक्य को दोहरा रहा था—"तुम्हारे देश में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता नहीं है, लेकिन हमारे देश की कला आज़ाद है !"

मैंने उसे और दूसरे रिपोर्टरों को चुप रहने के लिए हाथ का संकेत किया। और सब तो शान्त हो गये, मगर वह उसी प्रकार उछल-उछल कर कहता रहा,—"तुम्हारे देश में लिखने की कोई आजादी नहीं है जबकि हमारे देश में है। तुम्हारे देश में········"

आखिर वह भी चुप हो गया, और मेरे पाँव के पास गुड़मुड़ी-सी बना कर बैठ गया और अपनी नोटबुक में, दूसरे रिपोर्टरों की तरह, वह भी जल्दी-जल्दी कुछ लिखने लगा। मैंने अपनी जाकेट की सलवटें सीधी कीं, और टाई को भी ठीक किया,—यह सोचकर कि सम्भवतः ये रिपोर्टर मेरे आकार-प्रकार और हुलिये का वर्णन लिख रहे होंगे। इसी बीच मैं यह सोचता रहा कि उनके सवालों के क्या जवाब मुझे देने चाहिएँ ? मेरी नाक के नीचे उछल-उछल कर अपनी आजाद लेखनी की दोहाई देने वाला रिपोर्टर लिखते-लिखते, अपने ही लिखे हुए पर बीच-बीच में खुश भी होता जाता था। मैंने झुक कर देखा कि वह क्या लिख रहा है। मैं चकित रह गया। अपनी आजाद लेखनी से बड़ी आजादी के साथ, हालांकि मैंने अभी तक जवाब देना शुरू भी नहीं किया था, वह मेरे द्वारा दिए गए तथाकथित जवाब लिख रहा था। उसने लिखा था कि रूसी अखबारों के दफ्तर लेखकों के लिए हवालात से कम नहीं होते। सोवियत संघ के आधे से अधिक लेखकों को ईंटा ढोने का काम करना पड़ता है। एक सोवियत लेखक ने अमरीका के गुप्त हथियारों पर एक नाटक लिखना शुरू किया, और लिखते-लिखते वह इतना आतंकित हो गया कि उसके हृदय की धड़कन बंद हो गई, उसकी चेतना को लकवा मार गया।"

धीरे-धीरे मेरी आँखों के सामने जीवन की वास्तविकता स्पष्ट होकर

उभरने लगी। हार्स्ट के कुत्तों की टोली अब मेरे सामने से गायब हो गई थी, और उसकी जगह अमरीकी पत्र-पत्रिकाओं का एक अम्बार लगा हुआ था। सामने का चौक गुलदान बन गया था, बौस के आफिस की भारी इमारत ने एक भीमाकार किताब का आकार धारण कर लिया था, और दूर से एक चीखनुमा आवाज आ रही थी—"हमारी कला आजाद है...."

यह आवाज, कला की आजादी की आवाज, भीमाकार किताब के भीतर से निकल रही थी जिसके कवर पर, सुनहरी अक्षरों में, लिखा था—"अणु-युग का अमरीकी साहित्य !"

मेरा कुत्ता रेगी मेरे पाँव के पास ऊँघ रहा था। सहसा कान खड़े करके वह गुर्रा उठा। किताब के भीतर से आनेवाली आवाज बंद हो गई।

और, इस प्रकार, साहित्य और संस्कृति के अमरीकी केन्द्र की मेरी यात्रा समाप्त हुई।

नागासाकी से कोरिया तक

चौबीस नवम्बर, १९५० । रात का अंधेरा अभी छट भी न पाया था कि अमरीकी सेनाओं ने पूरे दल-बल से हमला शुरू कर दिया। कोरियाई जन-सेना और चीनी स्वयं सेवकों को घेर कर नष्ट करना और मोर्चे के समूचे विस्तार में मंचूरिया तक आगे बढ़ते जाना इस हमले का उद्देश्य था।

आठवीं अमरीकी सेना की पहली और नौवीं टुकड़ियाँ आनजू और तोक्चोन के उत्तरी क्षेत्रों में केन्द्रित थीं। यहीं हमले का सर्वाधिक जोर था। उत्तर पश्चिमी और उत्तरी मोर्चा, इस छोर से उस छोर तक, युद्ध से गर्मा उठा था।

सभी छापामार दलों को, हमलावरों की पांतों के पिछवाड़े में जो केन्द्रित थे, जन सेना के हाई कमान द्वारा पहले से तैयार की गई योजना के मुताबिक, दुश्मन पर टूट पड़ने के आदेश जारी कर दिए गए।

चारनिम के दक्खिनी पहाड़ों में छिपे छापामार दलों को आठवीं अमरीकी सेना के पिछवाड़े पर हमला करने, तार-टेलीफोन की उनकी लाइनों और यातायात के साधनों को काटने, और पिछवाड़े की मदद को छिन्न-भिन्न करने का काम सौंपा गया।

आदेश के मिलते ही छापेमार-दल पच्छिम की ओर बढ़ चले। अनेक स्थलों से सिनसोनचेन-प्योंगयांग रेलवे लाइन को काटते हुए उत्तर-पच्छिम की ओर वे मुड़े और यमफोरी स्टेशन पर उन्होंने अधिकार कर लिया। मार्ग में पड़ने वाली दुश्मन की सभी सैनिक चौकियों और गारदों तथा अमरीकी सैनिकों को ले जाने वाली दरजनों मोटर-लारियों का उन्होंने सफाया कर दिया।

छब्बीस नवम्बर को, दिन के चार बजे के करीब, जहाँ पहली अमरीकी सुनचोंग नगर में टुकड़ी का हैड क्वार्टर था, छापेमारों ने तीन ओर से दरार डाल दी।

हमलावर इसके लिए कतई तैयार नहीं थे। वे बुरी तरह अस्त व्यस्त हो गये। आतंक ने उन्हें धर दबाया, और अमरीकी तथा सिंगमनरी के अधिकांश सैनिक भाग खड़े हुए,—अमरीकी सैनिक ट्रकों और जीपों पर, तथा सिंगमनरी के पैदल। सिंगमनरी के सैनिकों का एक दल स्टेशन के पास एक रसायन फैक्टरी में छिपा था। उसने नगर के केन्द्रीय जिलों पर जहाँ अमरीकियों का अभी भी आधिपत्य था, गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं। गोलियों की इस वर्षा के बीच अनेक फ-८२ वायुयानों का उदय हुआ और नीची उड़ान भरते हुए उन्होंने अपने ही सैनिकों को मशीनगनों से भूनना शुरू कर दिया। दखलन्दाजों के लिए यह कोई पहली या अनहोनी घटना नहीं थी। कुछ देर बाद हल्के बी- २६ बम-मार भी आ गये। अमरीकी और सिंगमन री के सैनिकों ने अनेक उड़न-चिन्ह छोड़े, तरह-तरह के संकेत दिये, लेकिन उड़ाकुओं ने उन पर कतई ध्यान नहीं दिया,—कोरियाई कम्यूनिस्टों की इस पेटेण्ट चालों का भला वे कैसे शिकार बन सकते थे।

बम-वर्षा के शांत होते ही छापेमार दलों ने हमला किया और शत्रु को शीघ्र ही नगर से बाहर खदेड़ दिया।

छापेमारों ने स्टेशन की इमारत में अपना अड्डा जमाया। जापानी शासन के काल में इस इमारत का निर्माण किया गया था। समूचा नगर, जो पहाड़ी ढलुवान पर बसा था, स्टेशन के प्लेटफार्म से दिखाई देता था। नगर का अधिकांश जल रहा था। लपटों के दारचीनी ऐसे रंग से साफ प्रकट था कि नापाम बमों से यह आग लगी है। आग और धुँए के दो भीमाकार बगूलों बीच गिरजे की ढलुवां सलेटी छत धुंधली-धुँधली-सी दिखाई दे रही थी।

दुश्मन से छीनी युद्ध-सामग्रियों से लदे ट्रक और जीप मोटरें स्टेशन के सामने वाले चौक में आ-आकर खड़ी हो रही थीं। कितने ही अमरीकी अफसर, जो बन्दी बना लिये गये थे, वहाँ लाये जा रहे थे। वे सब दूसरे डिवीजन का ढाल के आकार का सैनिक-चिन्ह, सितारे की पृष्ठभूमि में एक अमरीकी आदिवासी का सिर,—लगाए थे।

सैनिक स्टाफ में दुभाषिये के रूप में नियुक्त युवती युंग ओक टांग युद्ध से पहले वह जीव-विज्ञान की छात्रा थी,—दौड़ती हुई आई और संवाद आफिस में उसने प्रवेश किया। टुकड़ी-कमाण्डर आन प्योंग हाक, आफिस में डैस्क पर बैठा अपनी बांह पर पट्टी बाँध रहा था।

"जल्दी आओ!" युंग ओक टांग ने कहा, और वह फिर तेजी से बाहर चली गई।

प्योंग हाक दुश्मन से छीने हुए कपड़े पहने था,—दोसूती की भारी भरकम जाकेट जिसके किनारों पर बकरी की खाल की गोट लगी थी, 'फर' की गोट लगे ऊँचे बूट, लकड़ी के खोल में एक रिवाल्वर और कन्धे से लटकी हुई एक कारबाइन बन्दूक। उसकी बांह में गोलियों के दो घाव लगे थे। मतलब यह कि उसके लिए दौड़ कर जाना आसान नहीं था, और बाहर प्रतीक्षा करती जीप पर सवार होते-न-होते वह सर्वथा बेदम हो गया।

ओक टांग ने, मोटर चलाने में जो किसी पेशावर ड्राइवर से कम नहीं थी, गर्दन तोड़ गति से जीप को दौड़ाना शुरू कर दिया। रास्ते में उसने प्योंग हाक से कहा कि एक बंदी के बयान के मुताबिक गिरजा के पास वाली इमारत में अमरीकी प्रथम कोर का तोड़-फोड़ सम्बन्धी अत्यन्त गुप्त तथा खुफिया कार्यवाहियों का प्रमुख अड्डा कायम था। इस अड्डे के बड़े पंछी तो खैर भाग गये थे लेकिन बहुत सम्भव था कि इमारत में अभी भी हमारे कुछ साथी बन्द हों जिन्हें बचाया जा सके।

कोने पर पहुँचते ही कार तेजी से मुड़ी और एक झटके के साथ इमारत के सामने जाकर खड़ी हो गई। इमारत जल रही थी, लेकिन इसकी लपटों का रंग नापाम बम की लपटों जैसा नहीं था। ओक टांग कार से कूद कर बाहर निकल आई और दौड़ कर आंगन में पहुँच गई। लेकिन सैनिकों ने उसे आगे नहीं बढ़ने दिया। कहा कि इमारत बस अब गिरा ही चाहती है। उन्होंने यह भी बताया कि वे इमारत की अच्छी तरह से तलाशी ले चुके हैं। लेकिन उन्हें कोई मिला नहीं।

आँगन के एक कोने में ईंटों की एक पक्की खपरैल थी। कैदी उसी

में रखे गये थे। अमरीकी सैनिक भागने की इतनी जल्दी में थे कि उन्होंने सभी कैदियों को गोली का निशाना बनाने की जहमत नहीं उठाई, खिड़की के रास्ते एक हथ-गोला फेंककर ही उन्होंने संतोष कर लिया। हथ-गोले से तीन कैदी घायल हुए। मुक्त हुए सभी साथी पहले ही स्टेशन के लिए रवाना कर दिए गये थे।

एक सैनिक ने जो रुई की झुलसी हुई जाकेट पहने था, एक गीला फोल्डर और सुअर के चमड़े का एक बैग प्योंग हाक को दिया। उसने बताया कि एक कमरे में ये चीजें मिली हैं। कमरे की एक मेज पर बड़े-बड़े नक्शे पड़े थे, और एक कोने में फाड़े हुए कागजों का ढेर और यह फोल्डर जल रहा था।

दो अन्य सैनिक अमरीकी वर्दी पहने एक व्यक्ति को पकड़ कर लाये। उसकी बाँह पर एक बिल्ला लगा था। ओक टांग ने अनुवाद करके बताया कि इसके ऊपरी भाग में दो अक्षर हैं : एक यू और दूसरा एन, और इन अक्षरों के नीचे लिखा है;—युद्ध संवाददाता।

"निश्चय ही यह जापानी है," एक सैनिक ने कहा,—"इमारत में इसी ने आग लगाई थी। हमने जब इसे पकड़ा तो इसके हाथ में पैट्रौल का टीन था।"

युद्ध संवाददाता का बिल्ला लगाए आदमी ने बैठे हुए गले से कोरियाई भाषा में मिमियाते हुए कहा—"मैं जापानी नहीं......उन्होंने ही मुझ से यह सब कराया......"

कैदी को बीच में लेकर दोनों सैनिक कार में सवार हो गये। फिर ओक-टांग की ओर मुँह घुमाते हुए प्योंग हाक ने अधिकारपूर्ण स्वर में कहा,—"दस्तावेज और एक कैदी हमारे साथ है। गाड़ी को चलाने में अपनी आत्मघाती रफ्तार पर जरा अंकुश रखना।"

"बहुत अच्छा," ओक टांग ने विनम्रता के साथ जवाब दया। लेकिन स्टेशन के समीप पहुँचते ही उसने इतने तेजी से गाड़ी मोड़ी की एक सैनिक के मुँह से चीख तक निकल गई।

सैनिक बंदी को स्टेशन के वेटिंग रूम में पहुँचा दिया। बंदियों को यहीं

जमा किया जा रहा था। प्योंग हाक और ओकटांग अपने चीफ आफ स्टाफ के पास पहुंचे।

चीफ आफ़ स्टाफ ने जो कि एक भूतपूर्व खान-मजदूर ह्योन गिल योंग था, कहा कि पकड़ी हुई दस्तावेजों का सारांश तैयार करके दो। फोल्डर में, जिसके कवर पर "अत्यन्त गोपनीय जे-ग्रुप" लिखा हुआ था, चीनी भाषा में छपे हुए पर्चे रखे थे। इनमें मंचूरिया और मंगोलिया की आबादी के नाम एक अपील छपी थी। अपील पर संयुक्त राष्ट्रों की सेनाओं के सर्वोच्च सेनापति के हस्ताक्षर अंकित थे।

जापान के खिलाफ युद्ध के समूचे दौरान में चीफ आफ स्टाफ ने जेनरल लिन पिआओ की सेना में काम किया था। खामोशी के साथ उसने अपील को देखा, उसकी एक प्रति अपने पास रखी, और शेष को जलाने का आदेश दिया।

"जाहिर है कि यालू नदी के पार पहुँचने पर ये इन पर्चों का प्रचार करना चाहते थे," उसने कहा,—"अपनी तैयारियों में कोई कसर नहीं छोड़ी थी, बदमाशों ने!"

चमड़े के बैग में एक पुस्तक,—जापानी शतरंज का खेल सिखाने वाली एक गाइड,—और कपड़े की जिल्द चढ़ी एक नोटबुक थी। प्योंग हाक ने शतरंज की गाइड के पन्ने पलटे और उसके परिच्छेदों के शीर्षक अनुवाद करके बताये : पहली चालें, खेल के मध्य में, बचाव की चालें आदि। शतरंज की एक साधारण गाइड जिसका कोई खास महत्व नहीं,—अन्त में उसने अपनी राय प्रकट की।

लेकिन नोटबुक पर उसकी नजर तुरन्त जम गई। इसके पन्ने जापान की दोनों वर्णमालाओं,—कताकाना, और हिरागाना,—की लिखावट से भरे थे। लिखावट इतनी घसीट थी कि अक्षरों को पहचानना मुश्किल था। ऐसे ही एक पन्ना खोलकर उसने जोरों से पढ़ना शुरू किया। दो वाक्यों के बाद ही चीफ आफ स्टाफ ने उसे रोक दिया।

"समूची नोटबुक को ध्यान से देखने की जरूरत है। जम कर बैठो और इस काम को अभी कर डालो।"

इसी समय ओक टांग ने जो शतरंज-गाइड का अध्ययन कर रही थी, चिल्ला कर कहा,—"अब समझ में आ गया। हर पन्ने पर एक अक्षर के नीचे रेखा खिंची है, और हर पन्ने की संख्या पर एक निशान लगा है....निश्चय ही ये निशान इसकी कुंजी हैं।"

"बात इतनी आसान नहीं है", अपने सिर को कुरेदते हुये प्योंग हाक ने बुड़बुड़ा कर कहा—"मुझे तो इसमें अच्छा-खासा गड़बड़-झाला मालूम होता है........"

इस पर चीफ आफ स्टाफ ने अपने प्रिय कौल को दोहराया : "किसी बाधा पर काबू पाने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि उसे काबू में किया जाय।"

संवाद आफिस में लौटकर प्योंक हाक ने नोटबुक की जापानी लिखावट से जूझना शुरू कर दिया। पहले-पहल जो चीज मुश्किल मालूम होती थी, कुछ देर बाद जैसे-जैसे वह लिखावट से अभ्यस्त होता गया, वह आसान होती गई। कुछ अंश; खास तौर से नाम, अंकों के रूप में दिये हुए थे। इनका भेद खोलने में अधिक कठिनाई नहीं हुई। इन अंकों का शतरंज-गाइड के पन्नों की संख्या से सम्बन्ध था और रेखांकित अक्षर उनकी कुंजी थे।

नोटबुक से जूझने के दौरान में ओकटांग कई बार उसके पास आई थी। उसने बताया कि आग लगानेवाला जो आदमी रंगे हाथों पकड़ा गया था, उसने अपना सारा भेद खोल दिया है और बहुत ही दिलचस्प बातें उसने बताई हैं। फिर वह यह समाचार लाई कि जन सेना और चीनी स्वयं-सेवकों ने जवाबी हमला शुरू कर दिया है, सिन्फुन्दोंग-नोनवोल क्षेत्र में दुश्मन के मोर्चे में दरार पड़ गई है, और दूसरे तथा पचीसवें अमरीकी डिवीजनों की खूब मरम्मत की जा रही है।

सुबह होने तक प्योंग हाक ने अपनी आखिरी बाधा पर भी काबू पा लिया, और नोटबुक की समूची गुप्त लिखावट को पढ़ डाला। यह एक डायरी थी जिसके प्रारम्भ में निम्नलिखित कहानी अंकित थी।

डायरी

पहाड़ी पर बने प्राचीन चबूतरे से नगर के आसपास का शानदार दृश्य दिखाई देता है, खासतौर से दक्षिणी दरवाजे से शुरू होनेवाली सड़क का। बहुत दूर, पत्थर के एक पुल और उसके दाहिनी ओर एक पहाड़ी ढलुवान पर छाये अनन्नास के घने जंगलों की वाह्य-रेखाएँ दिखाई देती हैं। चबूतरे पर पत्थर की सीढ़ियों के पास मैं खड़ा हुआ था, और अपने एडज्यूटेण्ट और दुभाषिये पाक चा योंग के मुँह से मैंने यह कहानी सुनी थी।

यह चबूतरा, उसने बताया, तीन सौ पचास साल से भी अधिक पुराना है। ली वंश के २२वें शाह योंगचोंग ने इसे बनवाया था। उसके पिता प्रिंस चानवोन की समाधि जंगल-छाई पहाड़ी के उस पार स्थित है। उसकी मृत्यु अत्यन्त अजीब परिस्थिति में हुई थी।

पर राष्ट्र नीति के मामले में अपने पिता शाह योंगचोंग से उस का मतभेद था। शाहजादे का विश्वास था कि चीन को अपने कब्जे में करना जरूरी है, लेकिन शाह इसके खिलाफ था। अन्त में शाह ने आदेश दिया कि उनके गद्दीनशीन को एक सन्दूक में बन्द कर कीलो से जड़ दिया जाय। छठे दिन शाहजादे की मृत्यु हो गई।

ठीक १२८ साल पहले यह घटना घटी थी। लेकिन पाक का कहने का ढंग इतना सजीव और इतना भरा-पूरा था कि लगा मानो वह खुद अपनी आँखों देखी घटना का वर्णन कर रहा हो।

शाह चोंगचोंग अपने पिता की समाधि पर आँसू के फूल चढ़ाने के लिए बहुधा इधर आया करता था। वापिसी में वह ठीक इसी जगह खड़ा होकर चबूतरे से पहाड़ियों पर अन्तिम नजर डालता था। इसने एक प्रथा का रूप धारण कर लिया। चोंगचोंग के बाद जितने भी कोरियाई शाह हुए वे सबके सब बसन्त में सुवोन आते और अपने गौरवशाली पूर्वज की समाधि से लौटते समय, बिला नागा और बिला अपवाद, पहाड़ी पर चढ़ कर इस चतरे तक आते और देर तक पहाड़ों की

ओर देखते रहते, माथा झुकाकर अनेक बार अपनी श्रद्धा प्रकट करते।

इसके बाद पाकने देश के इन हिस्सों से सम्बन्धित अन्य कई ऐतिहासिक घटनाएँ सुनानी शुरू कीं, लेकिन मेरा ध्यान अब उस ओर नहीं था।

मेरी कल्पना में एक दूसरे ही दृश्यपट का एकाएक उदय हो गया था,—तोकियो और सागामो की खाड़ियों का दृश्य जिनकी पृष्ठभूमि में फूजीयामा ज्वालामुखी दिखाई देता था। ताकातोरी पर्वत की चोटी से एक दिन,—और उस दिन की याद भी सदा बनी रहेगी—मुग्धभाव से मैंने इस दृश्य को देखा था। भाग्य को पलट देने वाला वह दिन और उसके बाद जो कुछ हुआ वह सब, मेरी आंखों के सामने घूम गया।

अपने जीवन के इन पिछले कुछ सालों पर नजर डालने के बाद मैंने इस डायरी को लिखने का निश्चय किया है। खास तौर से इसलिए भी कि समय काटने के लिए, मुझे कुछ-न-कुछ तो करना ही था। यह निस्तब्धता, यह निश्चल स्थिति, कम-से-कम एक महीना और रहेगी, और जब तक वह आ नहीं जाता, मैं एकदम खाली रहूँगा। इसलिए नोटबुक के पन्नों को भर कर जबर्दस्ती की अपनी इस निष्क्रियता का मैं उपयोग करना चाहता हूँ।

कोरिया के शाह इस चबूतरे से उस पथ का लेखा-जोखा लेते थे जिसे कि वह अब तक पार कर चुके थे और उस दिशा में माथा झुकाते थे जिधर से कि वे शुरू-शुरू में आये थे। मैं भी ऐसा ही करूँगा। मैं ताकातोरी पर्वत की दिशा में माथा झुकाता हूँ जहाँ से कि वह शानदार पथ शुरू होता है जिस पर चलकर मैं,—शाही सेना की स्पेशल सर्विस का एक अफसर,—कोरियाई नगर सुवोन तक,—प्राचीन चबूतरे से सुशोभित इस पहाड़ी तक,—पहुँचा हूँ।

इस डायरी पर सिवा मेरे और किसी की नजर नहीं पड़ सकती। अपने ही लिए मैं इसे लिख रहा हूँ। और ऐसा कोई भेद नहीं है जो मैं अपने से छिपा कर रख सकूँ।

अत्यन्त गुप्त रहस्य

[१]

जून १९४५ के आरम्भ में तोकियो गुलाब ने (जापानी रेडियो से अंग्रेजी में समाचार सुनाने वाली युवती को अमरीकी गुलाब का फूल कहते थे) दुनियां में यह समाचार प्रसारित किया कि अमरीकी हवाई सेना की टुकड़ी तिनियान द्वीप में उतरी है। इस सेना को एक खास काम सौंपा गया था, और अमरीका से प्रशान्त क्षेत्र में इसकी रवानगी एक अत्यन्त गुप्त रहस्य की भाँति छिपा कर रखी गयी थी। यही कारण था जो तोकियो गुलाब के इस समाचार को सुनकर दुश्मन के सैनिक अधिकारी, शाब्दिक मानी में, स्तब्ध रह गये थे। आकाशवाणी के मोर्चे पर हमारी यह एक शानदार जीत थी।

चारों ओर से मुझ पर बधाइयों की बौछार होने लगी। हर जानकार व्यक्ति ने मेरी सराहना की। और सचमुच, अपने पर गर्व करने का मुझे पूर्ण अधिकार था, हालांकि यह सफलता अंधेरे में तीतर पकड़ने के समान थी जो संयोगवश मेरे हाथ लग गई थी।

मैं जेनरल हैडक्वार्टर्स के सेना-विभाग के अफसरों के एक दल में था, और टोकियो तथा सागामी खाड़ियों की तटवर्ती किले बन्दियों का मुआयना करने के लिए पूर्वी कमान के जो अफसर भेजे गये थे, उनके साथ मैं भी शामिल था। जेनरल हैडक्वार्टर्स के एडज्यूटैन्ट विभाग के कर्नल, मेरे पुराने मित्र जिनतान इस दल के अध्यक्ष थे। सैनिक कालेज के विद्यार्थी जीवन में हमने उन्हें यह नाम दिया था। कारण कि जिनतान की गोलियों के विज्ञापनों पर बने चेहरे से उनका चेहरा अद्भुत रूप में मिलता था।

कामाकूरा से लेकर मिसाकी तक, समूचे प्रायःद्वीप का हमने दौरा किया, और यहाँ से उरागा पार कर हम ओइहामा पहुँचे जहाँ समुद्री हवाई सेना का एक अड्डा था। यहाँ हमारा दल अनेक हिस्सों में बँट गया।

कुछ जुशी चले गये, और कुछ युद्धमंत्री जेनरल अनामी तथा समुद्री सेना के नये अध्यक्ष एडमिरल तोयोदा के आगमन की प्रतीक्षा में ओइहामा में ही रह गये।

जिनतान ताकालोरी पर्वत की यात्रा पर जा रहा था। उसने मुझे भी अपने साथ चलने का निमंत्रण दिया। यह पर्वत प्रायद्वीप के बीचोंबीच खड़ा था, और इस पर चढ़ कर दोनों जलडमरूमध्यों का शानदार दृश्य दिखाई देता था। इसके अलावा बोसो प्रायद्वीप और फूजी तथा हाकोने पर्वत भी यहाँ से नजर आते थे। निस्सन्देह, यह एक शानदार दृश्य था। लेकिन हम इसका आनन्द नहीं ले सके। शीघ्र ही अमरीकी अग्गाम-बम-मारों की उड़ान ने सारा मजा किरकिरा कर दिया। ये वायुयान बम-वर्षा के बाद, तोकियो की दिशा से लौट रहे थे। उनमें से एक हमारी दिशा में बढ़ने लगा। सम्भवतः उसका लक्ष्य प्रायद्वीप के बीच से गुजरना था। पहाड़ों की तलहटी में एक वायुयान-तोड़ मशीन छिपी थी। उसने उसे अपने गोलों का निशाना बनाया। वायुयान सहसा एक ओर झुक गया, और उसके पंख के नीचे से धुआँ निकलने लगा। जलते हुए वायुयान से, हवाई छतरी के सहारे, कुछ आदमी कूदे। हवा उन्हें काफी दूर तक बहा ले गई और उस जगह से कुछ ही दूर वे उतरे जहाँ पेड़ों के बीच जिम्बू मन्दिर की छत दिखाई देती है।

हम दौड़कर मन्दिर की ओर जानेवाली पगडंडी से नीचे उतरने लगे। तभी हमें गोलियाँ चलने की आवाज सुनाई दी। हमने अपने रिवाल्वर निकाल लिये और अपने कदमों की गति तेज करदी। मन्दिर के दरवाजे पर एक कप्तान से हमारी भेंट हुई। सैनिक पुलिस का काला फीता उसके कंधों पर लगा था। यह मालूम होने पर कि हम कौन हैं, उसने हमारे लिए रास्ता छोड़ दिया।

मन्दिर की सीढ़ियों के सामने रस्सी से बँधे तीन बन्दी खड़े थे,—उनमें से दो लम्बे कद और मजबूत काठी के युवक थे,—सार्जेन्ट, और तीसरा एक अफसर था,—छोटा-कद, सिकुड़ी आँखें, बाहर को निकले होंठ। उसकी वर्दी पर पचीसवें डिवीजन का सैनिक-चिन्ह लगा था,—एक हरा पत्ता जिस

के बीच विद्युत-रेखा बनी हुई थी। एक लैफ्टीनैन्ट कर्नल, जिसके कंधों पर काले फीते लगे थे, हमारे पीछे से दौड़ता हुआ आया। उसे देखकर जिनतान के होठों पर मुसकराहट दौड़ गई।

"अरे तुम हो, मुसोलिनी? मौके पर पहुँचने से तुम कभी नहीं चूकते। ठीक वक्त पर तुम दिखाई दिये!"

सैनिक पुलिस के लैफ्टीनेन्ट कर्नल की बड़ी-बड़ी आँखें बाहर को निकली थीं और ठोड़ी चौरस थी। वह सचमुच में मुसोलिनी मालूम होता था। दो टूक दृष्टि से उसने बन्दियों की ओर देखा और उनमें से एक की,—उसकी जिसका कद लम्बा और बाल भूरे थे,—छाती को थपथपाते हुए बन्दियों के अगल-बगल खड़े दो युवक अफसरों से बोला—"तुम्हारे बन्दी प्रादेशिक सेना के आदमी मालूम होते हैं। क्यों, ठीक है न?"

अफसर ने, जिसकी आँखों पर चश्मा चढ़ा था, जवाब दिया—"यस सर। अभी एक महीना पहिले ही हम भर्ती हुए थे; छात्र हैं।"

"क्या तुम तलवार के हाथ जानते हो?"

आँखों पर चश्मा चढ़े अफसर के दाँत चमक आये।

"जी, मैं विश्वविद्यालय में तलवार के हाथों का अभ्यास करने वाली टीम में था।"

मुसोलिनी ने भूरे बालों वाले युवक की ओर इशारा किया।

"अच्छा तो जाओ, और बन्दी पर अपने हाथ का जौहर दिखाओ। देखो, सफाई के साथ एक ही हाथ में इसके दो टुकड़े हो जाने चाहिएँ!"

जिनतान ने मेरी ओर सिर हिलाते हुए कहा—"पहले तुम खुद हाथ चलाकर इसे दिखाओ कि यह कैसे किया जाता है।"

मैं हँस दिया—"नहीं, एक ही हाथ में मैं दो टुकड़े नहीं कर सकता। माकिन द्वीप में अनेक बार मैंने इसकी कोशिश की, पर कोई नतीजा नहीं निकला। अपने शिकार को खून में लथपथ करने के सिवा मैं और कुछ नहीं कर सका।"

"तुमने आड़ा हाथ चलाया होगा," मुसोलिनी ने कहा,—"अबाबील

की उड़ान वाला हाथ, जैसा कि तुम जानते ही हो। यह बहुत ही खूबसूरत हाथ है, लेकिन कठिन भी बहुत है। सबसे अच्छा हाथ वह है जो तिर्छी काट करता है,—कंधे से कूल्हे तक, जैसे सारस उड़कर नीचे आता है।"

समुद्री सेना का लैफ्टीनेन्ट जो जिनतान की बगल में खड़ा था, बोले बिना नहीं रह सका,—"सिर की चोटी से लेकर कमर के बाँस के छोर तक काट करने वाला हाथ सब से सच्चा हाथ है,—सफाई के साथ दो टुकड़े हो जाते हैं,—मियासीतो मुसाशी स्टाइल........"

जिनतान हँस दिया।

"मैंने सुना है कि तुम नौ सेना के लोगों ने इस हाथ को साधने में खास मेहनत की है,—मुर्गी का एक भी चूजा तुमने बाकी नहीं छोड़ा!"

नौ सेना के लैफ्टीनेन्ट के सिवा बाकी सब ठहाका मार कर हँस पड़े।

मुसोलिनी ने, जो बन्दी अफसर की ओर ताक रहा था, जिनतान के कान में फुसफुसाकर कुछ कहा। यह देख अमरीकी बन्दी एकाएक घुटनों के बल गिर गया और करीब-करीब उच्चारण-शून्य जापानी में जल्दी-जल्दी बोला:

"मेरी जान न लो। मैं उड़ाका नहीं, मैं एक स्टाफ अफसर हूं। मुझे न मारो, मैं सब बता दूँगा। दया करो, मुझे न मारो।"

उसने अपने दोनों हाथ जोड़ लिए मानो, वह वन्दना कर रहा हो। उसका माथा धरती से जा लगा।

जिनतान को जरा एक बगल कर मैंने जोर से कहा,—"इसे मेरे हवाले कर दो। मैं इससे सब कुछ उगलवा लूँगा!" फिर फुसफुसाकर धीरे से बोला,—"और इसके बाद खुद अपने हाथ से इसे ठिकाने भी लगा दूँगा।"

जिनतान ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की, और मुसोलिनी के साथ गुम्बज की ओर चला गया। चलते-चलते सैनिकों को उसने आदेश दिया कि बन्दियों को भी वहाँ पहुँचा दिया जाय।

मैं मन्दिर के बरामडे पर चढ़गया। परिचारक मुझे एक छोटे से कमरे में लिवा ले गया। यह कमरा कपड़े से ढकी प्रतिमाओं और बण्डलों में लिपटे

चित्रों से भरा था। मैंने सैनिकों को आदेश दिया कि बन्दियों की रस्सी खोल दें। परिचारक चायदानी और प्यालों की मेरी एक ट्रे ले आया। साथ में चावल और उन्हें उठा-उठा कर खाने के लिए सींकें भी थीं। बन्दी को मैंने नीची मेज के सामने फर्श पर बैठने का आदेश दिया, और मैं उसके सामने एक तह की हुई हवाई छतरी पर बैठ गया।

बन्दी कायदे के साथ अपनी टाँगों को दोहरी करके बैठ गया। मैंने उसे एक सिगरेट दी। दम साध कर वह कश खींचने लगा। सहसा उसने अपना सिर मेज पर टिक दिया और फूट-फूट कर रोने लगा। मैंने उसे चाय का एक प्याला भेंट किया। वह उसे पी गया। इसके बाद उसने फिर अपना मुँह बिचका लिया, होठ बाहर को निकल आये। लगता था जैसे वह अब फिर रोने जा रहा हो। लेकिन एक चपत मार कर मैंने उसका मुँह सीधा कर दिया। फिर मुलामियत के साथ कहा,—"अपने को काबू में रखो। तुम कोई बच्चा नहीं, बल्कि एक अफसर हो। तुम्हारी जान का बचना न बचना तुम्हारे अपने हाथ में है।"

मैंने उसे एक सिगरेट और दी, और उससे जिरह करने लगा।

[२]

उसका नाम अलबर्ट हार्शबर्गर था। प्रशान्त में मित्र-सेनाओं के सर्वोच्च सेनापति जेनरल मैकार्थर के नीचे पच्चीसवें डिवीजन का वह एक स्टाफ अफसर था। कुछ ही दिन पहले, एक विशेष काम के लिए, उसे तिनियान द्वीप भेजा गया था। जापानी सेना के कुछ सैनिक रासो पर्वत के निकट बाँसों के झुरमुटों में अभी तक छिपे थे, हालांकि इस द्वीप पर अमरीकियों का कब्जा हुए करीब एक साल हो गया था, इन जापानी सैनिकों की वजह से अमरीकी अफसरों और सहायक कोर की महिलाओं की बाहर निकलते रूह काँपती थी। हार्शबर्गर ने अपने काम में सफलता प्राप्त की। भोंपुओं से उसने प्रचार किया और जापानी सैनिक आत्म समर्पण के लिए तैयार हो गए। लेकिन यह देख कर अमरीकियों को भारी आश्चर्य हुआ कि झुरमुटों में छिपे

जापानियों की संख्या, कुल मिला कर, केवल पाँच थी।

युद्ध से पहले हार्शबर्गर जापान में रह चुका था, और लूथरपंथी पादरियों के मिशन में काम करता था। युद्ध छिड़ने से कुछ ही पहले वह अमरीका चला गया था।

"संक्षेप में यह कि तुम एक जासूस थे," मैंने कहा।

"नहीं, मैं टोकियो में लूथरपंथियों की धार्मिक इन्स्टीच्यूट में अंग्रेजी पढ़ाता था......"

"इन्स्टीच्यूट का पता और उसके डाइरैक्टर का क्या नाम था?"

"नकानो जिला, चाशीनोमिया क्वार्टर। डाइरैक्टर का नाम हौर्न। वह एक अमरीकी था। इसके बाद मैंने सियोल में भी एक इन्स्टीच्यूट में अध्यापन का काम किया।"

"उसका पता, और उसके डाइरैक्टर का नाम?"

"सिनचोन जिला। नाम अण्डरवुड, एक अमरीकी।"

"दूसरे शब्दों में यह कि तुम कोरिया और जापान, दोनों ही जगह जासूसी का काम करते थे। लेकिन इस नुक्ते को लेकर मैं बहस नहीं करूँगा। अब यह बताओ कि तुम एकाएक घुटनों के बल गिर कर भिन-भिनाने क्यों लगे थे? समझ गए न कि मेरा मतलब क्या है?"

बन्दी ने अपने हाथों से अपना मुँह ढक लिया।

"पुलिस-सेना के लैफ्टीनैन्ट कर्नल ने जो कुछ कहा था, उसका मतलब मैं समझ गया था..........दक्षिणी द्वीपों में हमें अपने अफसरों और सैनिकों के शरीर मिले थे......इन द्वीपों के निवासियों ने भी इसकी पुष्टि की.......उन्होंने बताया कि तुम........", उपयुक्त शब्दों की खोज में कुछ रुक कर उसने कहा,—"कि तुम्हारे अफसर जीवित बन्दियों को काट डालते हैं, और उनका कलेजा......."

"हाँ," सिर हिलाते हुए मैंने कहा,—"जीवित शत्रु के शरीर से निकाला हुआ कलेजा सैनिक को साहस और बल प्रदान करता है।"

"बाद में हमें मालूम हुआ कि तुम्हारे कर्नल त्सूजी मसानोबू ने

सबसे पहले इसका श्रीगणेश किया था। और इसी लिए जापानी उसे मलाया का शेर कहने लगे......" बन्दी ने कहा।

उसका मुँह अभी भी उसके हाथों से ढका हुआ था।

"यह हमारी एक प्राचीन सैनिक प्रथा है,—किमोतोरी प्रथा," मैंने उसे बताया,—"इस प्रथा को हमने फिर से जीवित किया है। लेकिन तुम मुँह से अपने हाथ हटाओ। यह लड़कियों का स्कूल नहीं है।"

"और अब समय नष्ट न करो," मैंने फिर कहा,—"यह तुम जानते ही हो कि तुम्हारा क्या हश्र हो सकता है। अपने को बचाने का एक ही रास्ता है। वह यह कि हमें भेद की बहुमूल्य बातें बताओ। तुम एक स्टाफ अफसर हो, सो तुम्हें कुछ तो मालूम होगा ही। तीस सेकेंड मैं तुम्हें देता हूँ, सोच-समझ लो!"

मैंने अपनी कलाई पर बँधी घड़ी पर नजर जमा दी। समय पूरा होने से पहले ही कैदी ने बोलना शुरू कर दिया। जहरीली गैसों के जो प्रयोग अमरीका ने किये थे और उनके बारे में जो कुछ भी वह जानता था, सब बताने के लिए तैयार हो गया। मिसाल के लिए यह कि न्यु गिनी के कई जिलों में अमरीकी वायुयानों ने चावल और गन्नों की फसलों को नष्ट करने वाले एक खास किस्म के विषैले बमों की परीक्षा की थी।

"यह तो हम बहुत पहले से जानते हैं," मैंने कहा।

इसके बाद उसने आपरेशन औलिम्पिक के,—क्युशू द्वीप में सैनिक उतारने के,—बारे में बताया कि इसी साल, शरद के अन्त में, यह हमला शुरू हो सकता है।

मैंने उसे बताया कि जापान का बच्चा-बच्चा तक इस योजना से परिचित है। इतना ही नहीं, बल्कि हर कोई यह भी जानता है कि जापानी द्वीपों में सेनाएं उतारने से पहले अमरीकियों को सौ बार सोचना होगा, और अगर उन्होंने ऐसा किया भी तो इसके लिए उन्हें भारी मूल्य चुकाना पड़ेगा।

"यह सच बात है," बन्दी ने कहा,—"ईवोजीमा जैसा छोटा द्वीप भी, जिसका क्षेत्रफल तेरह किलोमीटर वर्ग से ज्यादा नहीं है, काफी मंहगा

सौदा सिद्ध हुआ। वहाँ उतारे गए हमारे कुल सैनिकों में से करीब तेतीस प्रतिशत मारे गए। पैण्टागोन का, अर्थात् हमारे युद्ध मंत्रालय का, अनुमान है कि जापान में सेना उतारने में हमें और कुछ नहीं तो ३००,००० लोगों की बलि देनी पड़ेगी......"

"और इचीगायदी में हमारे पैण्टागोन का अनुमान है कि," मैंने कहा,—"सेनाएँ उतारने में तुम्हें ५०००,००० जानों से मूल्य चुकाना पड़ेगा, और बहुत सम्भव है कि इसका अन्त तुम्हारे लिए अत्यन्त विनाशकारी सिद्ध हो। यही वजह है जो तुम, अपने ही शब्दों में, मैकार्थर-रणनीति पर अमल कर रहे हो,—केवल छोटे द्वीपों में ही हम से मुठभेड़ करने की रणनीति जहाँ हमारी ताक़त कम है और जहाँ भाग-झपट को अधिक गुंजायश हो। अगर तुम किसी बड़े भूखण्ड में, जैसे चीन में, हमसे लोहा लेते तो हम तुम्हारा भुर्ता बना कर रख देते। युरोप में तुम्हारी सभी जीतें सहज ही तुम्हारे हाथ लग गईं। जर्मनों के जब पाँव उखड़ गये तब तुमने उनका पीछा किया। और इसको तुम अपना प्रत्याक्रमण कहते हो। आर्डेनीज के मोर्चे पर तुम्हारी तमाम सेनाओं के जर्मन टैंकों की दो टुकड़ियों ने ही छक्के छुड़ा दिए। रूसियों ने आकर तुम्हें बचाया। तुम एक ही सूरत में लड़ना जानते हो,—उस सूरत में जब कि तुम्हारे पास दुश्मन के मुकाबले में पचास गुना ज्यादा सैनिक, टैंक, वायुयान और गोले होते हैं। दक्षि सागर के द्वीपों में तुम्हारी जीतों के पीछे सिवा इसके और क्या था। ; न हम वायदा करते हैं कि जापान की भूमि में तुम्हें लोहे के चने चबाने पड़ेंगे। यहाँ पहली बार एक सुविस्तृत मोर्चे पर तुमसे हमारी मुठभेड़ होगी। और तब हम देखेंगे कि तुम्हें कितना लड़ना आता है।"

"मैं कह सकता हूँ कि आपरेशन ओलिम्पिक के बारे में तुम्हारी बात सही है," हार्शबर्गर ने कहा—"मुझे भी भय है कि वह एक अत्यन्त जानलेवा आपरेशन सिद्ध होगा। और जहाँ तक आपरेशन कोरोनेट,—अर्थात् टोकियो खाड़ी में सेनाएँ उतारने का सम्बंध है, मेरा ख्याल है कि वह भी कागज़ पर ही लिखा रह जायगा.......वह जरूरत से ज्यादा महंगा स ौदा ई, ङ म

महंगी जीतों के कायल नहीं हैं,—महंगी हार तो और भी दूर की बात है। जो भी हो, तुम्हें हराने में काफी समय लगेगा। कुछ दिन पहले मैंने अपने चीफ आफ स्टाफ और मैकार्थर के दाहिने हाथ सदरलैण्ड तथा अन्य कई अफसरों से भी यही कहा था, और उनमें से हरेक ने यही राय प्रकट की थी कि टोकियो पहुँचने में अभी हमें कई साल और लग जाएँगे······"

"यह सब बातें, अपने बयान में, मुझे लिख कर दो। जहाँ तक हो सके, पूरे विस्तार के साथ लिखना।"

"तब तो मुझे नहीं मारोगे?" रोती-सी मुसकराहट के साथ उसने पूछा।

"अगर तुम्हारे बताये हुए भेद इस योग्य हुए तो तुम्हारी जान बच जायगी। हमारी सैनिक नैतिकता, अन्य चीजों के अलावा, हमें पराजित शत्रु के प्रति दया दिखाने की सीख देती है, खासतौर से उस शत्रु के प्रति तो और भी अधिक जो हमें महत्वपूर्ण भेद बताता है। सचाई की हम कद्र करते हैं।"

हार्शबर्गर ने माथा झुकाया और बिना अनुमति लिए मेज पर पड़े मेरे केस से एक सिगरेट निकाल कर जला ली।

मैंने सिगरेट केस बन्द कर दिया।

"तो तुम्हारे कमान का खयाल है कि विजय अभी काफी दूर है?"

"हाँ। और इसी लिए वाशिंगटन यह जानने के लिए बेहद उत्सुक है कि बड़ी-बड़ी कम्पनियों से सम्बंधित तुम्हारे ऊँचे हल्के के लोग आजकल क्या-कुछ सोच रहे हैं। हमें सूचना मिली है कि जर्मनी के आत्म-समर्पण के कुछ ही दिन बाद तुम्हारे दरबारी अफसरों का एक दल शान्ति की बात-चीत के बारे में थाह लेने के लिए सम्राट के पास गया था। हम जानते हैं कि कितामूरा को, जो कि स्वीजरलैण्ड में योकोहामा बैंक का एक साझीदार है, जापान की पाँच प्रमुख कम्पनियों ने यह अधिकार सौंपा है कि वह अमरीकी व्यापारियों से प्रारम्भिक बातें करके देखे। और इसके लिए हमने अपने वाइस कौन्सल लाड़ो-मोकारस्की को जो ओद्र बैंक की एक शाखा का डाइरैक्टर भी है, कितामूरा से सम्पर्क स्थापित करने का आदेश दिया है······"

"कहे जाओ।"

"....कितामूरा ने मोटे रूप में एक उड़ता हुआ संकेत दिया कि तुम्हारी सरकार सोवियत सरकार से समझौते की बातें करना चाहती है, और यह कि भूतपूर्व प्रधान मंत्री हिरोता को इसकी जमीन तैयार करने का काम सौंपा गया है।"

"इस सूचना ने वाशिंगटन में तुम्हारे लोगों को काफी परेशान किया होगा।"

"बेशक, इस सूचना ने उन्हें काफी चिन्तित किया। मास्को में हमारा राजदूत हैरीमैन पिछले युद्ध के बाद से ही इस सम्भावना के खतरे से हमें सावधान कर रहा था। और इसी लिए हमने च्यांगकाई शेक को आदेश दिया था कि वह नानकिंग के एक उच्च अफसर मियुपिंग को तुम्हारे प्रधान मंत्री से गुप्त वार्ता करने के लिए टोकियो भेजे।"

मैं हँस पड़ा।

"यह अन्दाज़ लगाना कठिन नहीं था कि इन गुप्त बात-चीतों के पीछे तुम लोगों का हाथ है। कारण कि जब तक मियुपिंग वहाँ रहा, तुम्हारे वायुयानों ने एक बार भी बम-वर्षा नहीं की।"

हार्शबर्गर ने बताया कि इससे पहले की गुप्त वार्ताओं में भी अमरीका का हाथ था,—मिसाल के लिए उस वार्ता में, जो माड्रिड में जापान के राजदूत सूमा और ब्रिटेन के राजदूत होर के बीच १९४२ में हुई थी, चर्चिल ने उस समय जापान के साथ सुलह करने का प्रस्ताव रखा था और उत्तरी चीन पर उसके अधिकार को चोट न पहुँचाने का वचन दिया था, और इसके बदले में उसके सिंगापुर और मलाया को लौटाने की माँग की थी। लेकिन तोजो ने वार्ता भंग करदी। कारण कि जर्मनी ने रूस पर हमला शुरू कर दिया था, और रोमेल स्वेज नहर की ओर बढ़ रहा था। माड्रिड में हुई इन सभी गुप्त वार्ताओं में अमरीका भी शामिल था।

"माड्रिड वार्ता हमारे लिए कोई आश्चर्य की चीज नहीं थी। कारण कि उन दिनों तुम्हारी स्थिति काफ़ी नाज़ुक थी।" मैंने कहा,—

"दक्षिण में हम आस्ट्रेलिया के निकट पहुंच गए थे, और उत्तर में हमने अपनी सेनाओं को अल्युशिएन द्वीपों में उतार दिया था। लेकिन इस समय जापान संगी-साथी-विहीन है, और प्रशान्त युद्ध में तराजू का पलड़ा तुम्हारे पक्ष में झुका हुआ है........तब फिर, ठीक इस मौके पर, तुम मियुपिंग को हमारे यहाँ क्यों भेजते हो? स्वीजरलैंड में वार्ता शुरू करने की क्यों कोशिश करते हो? क्या तुम युद्ध से तंग आ गये हो?"

"हाँ," बन्दी ने आँखें सिकोड़ते हुए कहा,—"तुम देख ही रहे हो.... जब से नये प्रेजीडैण्ट ने शासन-भार संभाला है, हमारे ऊँचे फौजी हल्कों में तुम्हारे साथ इस युद्ध का जल्दी-से-जल्दी अन्त करने की चर्चा गर्म है।"

"इसे भी अपने बयान में लिख डालो, और जहाँ तक हो विस्तार के साथ लिखना।"

"सब कुछ लिख देने पर तो तुम मुझे नहीं मारोगे?"

"तुम्हारी जान बख्श दी जायगी। तुम अब अपने भाग्य की सराहना कर सकते हो।"

हार्शबर्गर ने माथा झुकाया।

"अपने बयान में मैं हर चीज़ का विस्तृत विवरण लिख दूँगा। और अगर टोकियो, इचीगायदी या अन्य कहीं मुझ से जिरह की गई तो मैं कहूंगा कि उस समय सिवा मेरे और कोई बन्दी नहीं था,—नहीं, एक भी नहीं।"

उसने मेरे सिगरेट-केस की ओर हाथ बढ़ाया और मुझे ऐसा लगा मानो वह आँख मीच कर मेरे साथ अपनी घनिष्ठता जताने की कोशिश कर रहा हो। उठ कर मैं खड़ा हो गया, और उसके चेहरे पर एक चपत जड़ कर उसे सीधा कर दिया।

"कायदे से खड़ा हो, शैतान?" मैं चिल्लाया,—"यह नाचघर नहीं है। देखता नहीं, शाही सेना का अफसर तेरे सामने खड़ा है। मरने से पहले तमीज से काम ले।"

वह अपने पाँवों पर खड़ा हो गया, और कांपती हुई फुसफुसाहट

के साथ इस बार अंग्रेजी में बोला, "मैं माँफी मांगता हूँ सर। दया करें, मेरी जान न लें।"

"सिट डाउन मैजर," नर्मी से मैंने कहा, और उसे एक सिगरेट भेंट की,—"मैं पहले ही कह चुका हूँ कि तुम्हें अपनी जान के लिए डरने की जरूरत नहीं। तुम्हें कुसात्सू में रखा जायगा। वह एक बहुत ही आरामदेह कैम्प है। तुम्हारे अपने और ब्रिटिश जेनरल वहाँ नजरबन्द हैं।"

उसकी भौंहें माथे को छूने लगीं।

"कुसात्सू? वही जगह जहाँ औषधिक झरने हैं......शिराने पर्वत के पदतल में....वह तो एक सुप्रसिद्ध स्वास्थ केन्द्र है......"

"हाँ, वहीं तुम्हें रखा जायगा। पीने के लिये खनिज झरनों का पानी मिलेगा, ब्रिज और टैनिस से तुम मन बहलाओगे, और आराम के साथ युद्ध का अन्त होने की बाट देखोगे। होसकता है कि अपने घाव की चिकित्सा के लिये, जो जब-तब मुझे परेशान करता रहता है, मेरा भी वहाँ आना हो।"

मैंने अपना सिर घुमाया और अपने कान के पीछे लगे घाव का चिन्ह उसे दिखा दिया।

[३]

बन्दी ने अपनी सिगरेट का टुकड़ा रगड़ कर बुझा दिया, और धीमी आवाज में कहता गया,—"मोटी बात यह है कि हमारे देशों के बीच यह युद्ध अवांछनीय है। शुरू से आखिर तक यह एक भारी गलती है।"

"बेशक।"

"हाँ, बहुत से अमरीकी भी ऐसा ही सोचते हैं। अगर आप अनुमति दें तो मैं कुछ खुलकर कहना चाहूँगा,—लिखत से बाहर की बातें जैसा कि बहुधा कहा जाता है......."

"तुम्हें इसकी छूट है। आराम से बैठ जाओ। चाहो तो अपनी टाँगें पसार सकते हो।"

"हमारा सदा ही यह विश्वास है कि", उसने कहना शुरू किया—"तुम्हें

अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए। १६३१ में मंचूरिया पर तुम्हारे आधिपत्य का हमने समर्थन किया क्योंकि हम जानते थे कि यह आपरेशन सम्राट द्वारा स्वीकृत रूस के खिलाफ युद्ध की योजना का ही एक अंग था। हमारा खुफिया विभाग इस तथ्य से भी परिचित था कि जापान के सैनिक हल्कों में कुछ दिनों से दो योजनाओं के समर्थकों के बीच संघर्ष चल रहा है : उत्तर की दिशा में हमला करने की इशीहारा योजना और दक्षिण की दिशा में हमला करने की मूटो योजना। हम यह भी जानते थे कि खुद सम्राट की अध्यक्षता में दो जुलाई १६४१ की एक कान्फ्रेंस हुई थी जिसमें रूस के खिलाफ युद्ध का ऐलान करने का फैसला किया गया था। तुम्हारे सम्राट ने इशीहारा योजना को चुना। लेकिन उस समय जब जर्मन मास्को के निकट पहुंच रहे थे, मूटो योजना के हिमायतियों ने सम्राट के दिल में यह बात बैठा दी कि युद्ध में रूस की हार पूर्ण निश्चित है, और वह समय दूर नहीं है जब साइबेरिया में आसानी के साथ प्रवेश करके युराल तक उस पर आधिपत्य कर लिया जायगा। फलतः रूस से लड़ने के बजाय मूटो और तोजो ने मलाया, इण्डोनीशिया और आस्ट्रेलिया पर कब्जा करने का प्रस्ताव रखा, और सम्राट को विश्वास दिलाया कि प्रशान्त का युद्ध शीघ्र ही खत्म हो जायगा, कारण कि रूस की पराजय के बाद ब्रिटेन आत्मसमर्पण कर देगा और अमरीका अकेले अपने बूते पर युद्ध लड़ना नहीं चाहेगा। तुम्हारे सम्राट ने तोजो और मूटो का विश्वास कर लिया। दक्षिण की दिशा में तुमने अभियान किया और इस युद्ध की दलदल में तुम फंस गये। दूसरी दिशा को तुमने क्यों नहीं चुना ?"

मैं अपने कंधों को सिकोड़ कर मुसकरा दिया।

"इसके लिए तुम्हें रूसियों को दोष देना चाहिए। उन्हें दिसम्बर १६४१ में जर्मनों के आगे आत्म समर्पण कर देना चाहिए था, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, और इससे मूटो योजना का तख्ता ही उलट गया। लेकिन अब इस सब के बारे में बहस करने से क्या लाभ ?"

"हमारे यहाँ के प्रभावशाली हल्कों का खुला मत है कि हम दोनों के बीच यह युद्ध एक दुखद गलती है, और यह कि इस गलती को सुधारना

जरूरी है। जब तक यह युद्ध जारी है तब तक जाहिर है कि तुम हमारे दुश्मन हो, लेकिन दूर तक देखने वाले लोग तुम्हें प्रमुख मुसीबत नहीं समझते।"

मैंने समझदारी के साथ सिर हिलाया।

"तुम्हारा खयाल था कि यूरोप में युद्ध का अन्त होने तक रूसी दम तोड़ देंगे, लेकिन तुम्हारा अन्दाज गलत निकला। अभी तुम उन्हें मुसीबत नम्बर एक समझते हो, और वह दिन दूर नहीं है जब वे शत्रु नम्बर एक बन जायेंगे।"

"ठीक कहते हो। हमारे उच्चतम हल्कों का भी यही विश्वास है कि अमरीका के हाथों में विश्व की बागडोर के साथ युद्ध का अन्त होना चाहिए।"

"एकछत्र प्रभुत्व!"

"हाँ, एकछत्र प्रभुत्व। लेकिन वे लोग जिन्हें हम मुसीबत नम्बर एक कहते हैं, इस नेतृत्व के मार्ग में सब से बड़ी बाधा हैं। और समय के साथ-साथ यह बाधा और भी जबरदस्त होती जाती है। हमें भविष्य को, मुख्यतः इशीहारा योजना के अमरीकी संस्करण के भविष्य को, अपने ध्यान में रखना है। और इसके लिए हमें जापान की सख्त जरूरत है,—कहने की आवश्यकता नहीं, शक्तिशाली जापान की। इसलिए जापानी साम्राज्य का सर्वथा विनाश हमारे हित में नहीं है। एक दूसरे को करारा आघात पहुँचाने से पहले ही हमें इस युद्ध का अन्त करना है।"

"सो तुम्हारे शासकीय हल्के युद्ध का जल्दी-से-जल्दी अन्त करना चाहते हैं?"

"हाँ, ताकि हमारे हाथ खाली हों और हम निश्चिन्त होकर जल्दी-से-जल्दी........"

एक हृदय-बेधी चीख जो अपना मानवीय आभास खो चुकी थी, दूर से आई और अपने उच्चतम बिन्दु पर पहुँच कर जैसे उसका दम टूट गया। मुसोलिनी, प्रत्यक्षतः अपनी जिरह खत्म कर चुका था और अब बन्दी को ठिकाने लगा रहा था। हार्शबर्गर का मुँह फक़ पड़ गया और वह भरभरा कर फर्श पर गिर पड़ा। वह अपने दोनों हाथों से सिर को पकड़े था और बुरी

तरह से हिचकियाँ भर रहा था।

मैंने एक प्याले में चाय उंडेली, और एक दूसरे के ऊपर दो नल-कियाँ रखते हुए उससे कहा,—"बारी-बारी दोनों से चाय की चुस्कियाँ लो। हिचकियों का यह एक पुराना जापानी इलाज है। कोशिश करो। अगर इससे हिचकियाँ बन्द न हुईं तो कोई और तेज उपाय काम में लाना पड़ेगा।"

चुस्कियों ने काम किया। उसकी हिचकियाँ बन्द होगईं। और अधिक सवाल करने की अब जरूरत भी नहीं थी। प्रत्यक्षतः सारा भेद वह उगल चुका था, और अब अधिक समय लगाना बेकार था। मेरे सामने आदमी नहीं, बल्कि बलि का एक बकरा बैठा था,—जिसपर केवल तलवार की धार आजमाई जा सकती थी। सदा की भाँति निजी ढंग से मैंने अपनी जिरह को सम्पूर्ण किया। एकाएक उछल कर मैं खड़ा हो गया, और अपने उच्चतम स्वर में चिल्ला कर बोला :

"बहुत बक चुके। तुम्हारी तमाम बातें कूड़ा हैं। अब तत्त्व की बात उगलो। चलो, जल्दी करो। एकदम तत्त्व की बात बोलना। तीन तक मैं गिनता हूँ। एक........"

बन्दी ने प्याला गिरा दिया, और मेरी ओर अपने हाथ फैलाते हुए तेज फुसफुसाहट में बोला,—"जरा ठहरो। मुझे अभी न मारो। अगर तुम्हारा इशारा तिनियान की ओर है तो उसके बारे में मैंने इसलिये अब तक कुछ नहीं बताया कि खुद मुझे भी ज्यादा मालूम नहीं था। उसे अत्यन्त गोपी-नीय रखा गया है......."

"बोलो ?" मैंने फिर चिल्ला कर कहा।

इसके बाद मैं बैठ गया और अपने सहज स्वाभाविक स्वर में कहा,—"जो भी तुम्हें मालूम हो, बताओ।"

"मैं केवल इतना ही जानता हूँ कि ५०६ वीं भारी बम-मार सेना के स्थल सैनिक वेन्दोवर (उताह) के एक गुप्त हवाई अड्डे से २६ मई को तिनियान द्वीप में उतरे थे। इससे पहले भी इसी यूनिट के पन्द्रह बी-२६ बम-मार वहाँ पहुंच चुके थे। संयोगवश इतना ही मैं जान सका हूँ कि किसी

अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मुहिम के लिए ये सब इस द्वीप में उतारे गए हैं।"

हार्शबर्गर ने अपने हाथों को वन्दना की मुद्रा में जोड़ लिया और जोरों से अपने सिर को झटका देते हुये कहा।

"नहीं, बिल्कुल नहीं। एक अफसर के नाते अपनी मर्यादा की कसम खाकर मैं यह कहता हूं। मैंने केवल इतना ही सुना है कि किसी नये अस्त्र का प्रयोग किया जायगा.......कोलम्बिया नदी के किनारे हैनफोर्ड और नव-मैक्सिको के पास एञ्जेलीस में इस अस्त्र का निर्माण किया जा रहा है। इसके भेद को गुप्त रखने के लिए एक खुफिया दर खुफिया एजेन्सी का संगठन किया गया है जिसका गुप्त नाम 'क्रीप्ल' है। मुझे यह भी मालूम हुआ है कि ५०६ वीं बम-मार सेना जिस मुहिम के लिए यहाँ भेजी गई है, उसका नाम 'आपरेशन सिलवर डिश' है।"

"तुम झूठ बोल रहे हो। हमें अच्छी तरह मालूम है कि 'आपरेशन सिलवर डिश' का अर्थ दूसरे देशों में अमरीकी हथियार और खाद्य-सामग्रियाँ सप्लाई करना है। तुम्हारे खुफिया खतों में भी ठीक इसी अर्थ में इस गुप्तनाम का प्रयोग हुआ है। तुमने सोचा, कि हमें इसके बारे में कुछ मालूम नहीं होगा, इसलिये झूठ चल जायगा।"

"मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। तब निश्चय ही दो सिलवर डिशें होंगी। देख लेना, मेरा बयान ठीक सिद्ध होगा। मैंने तुम्हें हर चीज बतादी है, एकदम हर चीज। इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानता....चाहे मुझ से शपथ ले लो। बस, इतना ही मैं जानता हूँ।"

उसने तेजी के साथ अपने सिर को इधर-से-उधर झटका दिया, और मुँह के बल मेज पर गिर पड़ा।

"बहुत अच्छा, फिलहाल इतना ही काफी होगा।" मैंने कहा—"लेकिन अभी तुमने सारा भेद नहीं उगला है। मालूम होता है, इसके लिए जरा शिकंजे को और कसना पड़ेगा। अच्छा तो इस बीच तुम कुछ आराम कर लो।"

अपनी जगह पर एक सैनिक को तैनात कर मैं जिनतान की खोज में चल दिया। कुंवे के पास एक पत्थर पर वह बैठा था, और एक बन्दी की जेब में

मिली नोटबुक के पन्नों को देख रहा था। जब मैंने उसे हार्शबर्गर से मालूम की गई बातें बताईं तो उसने कहा कि इचीगायदि के अफसरों को इसकी रिपोर्ट देना अच्छा होगा। वह ओइहामा जा रहा था, और वहाँ से जेनरल हैडक्वार्टर्स में एडज्युटैण्ट जेनरल के डिपार्टमैन्ट में भी उसे जाना था।

"और उन दोनों का क्या हुआ?" मैंने पूछा।

जिनताम ने इस प्रकार अपने हाथ को हरकत दी मानो वह तलवार चला रहा हो।

"मैंने उन्हें बताया कि किस प्रकार सफाई के साथ दो टुकड़े किए जाते हैं,—एक ही आघात में, कंधे से कूल्हे तक सीधी काट करते हुए। लेकिन दूसरे के साथ सब गड़बड़ हो गया। उसे छात्रों में से एक युवक अफसर के हवाले किया गया था। उसने भरसक कोशिश की लेकिन अपने कपड़ोंको खून में रंगने के सिवा वह और कुछ नहीं कर सका। आखिर मुसोलिनी ने यह काम अपने हाथ में लिया और किमोतोरी का बहुत ही सुन्दर हाथ दिखाया। छात्रों से देखा नहीं गया, वे करीब-करीब बेसुध हो गये.......और जहाँ तक तुम्हारे बन्दी का सम्बंध है, मैं चीफ से रिपोर्ट करूंगा और जो कुछ होगा, तुम्हें बता दूंगा। मेरा ख्याल है कि उस पर तुम खुद अपना हाथ आजमाना चाहोगे।"

"साकिन द्वीप में अनेक बार मैंने इसकी कोशिश की थी। वहाँ भी कुछ बन्दी वायुयान-चालक थे। लेकिन वे तगड़े लोग थे। इस कम्बख्त का का दिल तो बस योंही है,—मुर्गी के चूजें जैसा। देख कर उबकाई आती है। मुझे डर है कि कहीं मेरा हाथ न काँप जाय। सो मैं तो उसे यों ही बींध डालूँगा।"

घन्टाभर बाद एक सैकण्ड लैफ्टीनैन्ट जिनताम के पास से यह समाचार लेकर आया कि टोकियो से बन्दी को तुरन्त सही सलामत-वार आफिस भेजने के आर्डर प्राप्त हुए हैं। इचीगायदाई में भी हार्शबर्गर ने अपने उसी बयान को दोहराया। आपरेशन ओलिम्पिक, कोरोनेट और सिलवर डिश के बारे में उसने जो कुछ मुझे बताया था, प्रत्यक्षतः उससे अधिक वह और कुछ नहीं

जानता था। पैन्टागोन की मौजूदा मनस्थिति का उसने विस्तार के साथ वर्णन किया,—खास तौर से "तीसरे और अन्तिम" युद्ध की अनिवार्यता का युद्ध मंत्री-के आदेश से बन्दी की जान बख्श दी गई, और उसे फुकोका के बंदी शिविर नम्बर सत्रह में भेज दिया गया।

ठीक इन्हीं दिनों टोकियो गुलाब ने जापानी रेडियो से अमरीकी हवाई सेना के बारे में विशेष समाचार प्रसारित किया था। जहाँ तक मेरा सम्बंध है, युद्ध-मंत्री के चीफ एडज्युटैन्ट ने मुझे बुलवाया, और बन्दियों से भेद उगलवाने की मेरी विशेष दक्षता की सराहना में नैपोलियन नामक फ्रैंच ब्राण्डी की एक बोतल मुझे भेंट की।

अन्तर्राष्ट्रीय दावपेंच

[१]

मैं कभी सोच भी नहीं सकता था कि एक अमरीकी अफसर के मुँह से उगलवाया हुआ वह भेद इस हद तक और इतना मूल्यवान सिद्ध होगा। इस बात पर कि निकट भविष्य में अमरीका और सोवियत संघ के बीच युद्ध होने की सम्भावना है, पूरा भरोसा किया गया। स्टाकहोम में हमारे अपने सैनिक सम्पर्क-अफसर ओनोदेरा तथा बर्न में हमारे प्रतिनिधि ओकामोटो ने भी अपनी रिपोर्टों में इसकी पुष्टि की।

और अब सुवोन पर्वतों की इस ऊँचाई से जब मैं अतीत पर नजर डालता हूँ तो साफ अनुभव होता है कि युद्ध के अन्तिम महीनों में हमारे 'ऊपरी हलकों' में चलने वाले विवाद कितने हास्यास्पद और बेहूदा थे, और आश्चर्य होता है यह सोचकर कि कितने निकम्मे और कोता दृष्टि लोगों के हाथों में उन दिनों हमारे साम्राज्य की बागडोर थी।

टोकियो और ओसाका के थैलीशाहों के गुर्गों, शाही दरबार के बड़े अफसरों, का खयाल था कि युद्ध का पासा बुरी तरह पलट चुका है। अपनी जिद पर अड़े रहकर अमरीका की नाराजी मोल लेने से कोई लाभ नहीं। अच्छा यही है कि जल्दी-से-जल्दी उसके सामने आत्म-समर्पण कर दिया जाय ताकि वह निश्चिंत होकर रूस से निबट सके। इसके बाद हम देखेंगे कि ऊंट.......

लेकिन हमारे बड़े-बड़े फौजी नेता जिन्होंने तोजो और मूटो का समर्थन किया था और साइबेरिया पर हमला करने के बजाय पर्लहार्बर पर बम

गिराने की घातक गलती की थी, अब यह तर्क पेश करते थे कि नया युद्ध शुरू करने की खातिर अमरीका प्रशान्त के युद्ध से तुरन्त हाथ खींच लेना चाहता है। इसका मतलब यह है कि अमरीका को हमारे साथ शान्तिपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार किया जा सकता है, और एशिया में हमारी प्रभुताई भी कायम रह सकती है। लेकिन अमरीका से रियायतें पाने के लिए यह दिखाना जरूरी था कि हम में अभी भी अनिश्चित काल तक लड़ने की क्षमता है।

फौजी कमान के जोर देने पर सर्वोच्च युद्ध-परिषद की एक असाधारण बैठक बुलाई गई। इस बैठक में युद्धमंत्री जेनरल अनामी और जेनरल स्टाफ के चीफ जेनरल उमेदज़ू ने आखिरी क्षण तक युद्ध चलाने का कार्यक्रम पेश करके सबको चौंका दिया। प्रधान मंत्री एडमिरल सुजूकी और अन्य मंत्री इसे सुनकर एकदम स्तब्ध रह गये।

कार्यक्रम में नियोजित रण-नीति इस प्रकार थी:

होनशू में अमरीकी सेनाओं के उतरते ही हमारी तमाम द्वीपीय सेनाएँ फील्ड मार्शल सूगीयामा और हाटा के कमान में दो फौजी दलों में बँट जाएंगी, और ठीक समुद्री किनारे पर ही उनसे लोहा लेंगी। अगर हम शत्रु को समुद्र में धकेलने में सफल न हो सके तो हमारी सेनाएँ व्यवस्थित रूप से पीछे हटती हुई भीतर के पहाड़ी इलाकों में चली आएँगी। लड़ाई के दौरान में अगर हमारे सैनिक एक-दूसरे से कट-छूंट गये, तो वे अलग-अलग स्वतंत्र इकाइयों के रूप में, तथाकथित केंचुआ रण-नीति से काम लेते हुए, लड़ाई जारी रखेंगे।

जापान के युद्ध का क्षेत्र बनते ही सम्राट और सरकार मंचूरिया में स्थानान्तरित हो जायंगे और सिनकिंग को अस्थायी राजधानी बना लिया जायगा। साम्राज्य की नयी राजधानी की रक्षा का भार क्वान्तुंग सेना के जिम्मे रहेगा।

सर्वोच्च युद्ध-परिषद के किसी भी सदस्य को इस कार्यक्रम के विरुद्ध बोलने का साहस नहीं हुआ। अनामी और उमेदज़ू ने युद्ध की इस

अन्तिम योजना को सम्राट के सामने रखा। सम्राट ने योजना को जैसा-का तैसा स्वीकार कर लिया। समूचे देश में इस की घोषणा कर दी गई : हम आखिरी क्षण तक लड़ाई जारी रखेंगे। चाहे जापान राख का ढेर क्यों न बन जाय, लेकिन हम जीत हासिल किये बिना पीछे नहीं हटेंगे। हर जापानी का कर्तव्य है कि जान हथेली पर रखकर आगे बढ़े,—हीरे की भाँति, चूर-चूर होने पर भी जिसकी आब नहीं जाती। जब तक अमरीका बिना शर्त आत्म-समर्पण करने की काहिरा-घोषणा को रद्द नहीं करता, हमारी लड़ाई जारी रहेगी।

[२]

युद्ध के अन्तिम साल के प्रारम्भ में हमने एक नये अस्त्र का प्रयोग किया। छोटे गुब्बारों के साथ बम बाँधकर हमने उन्हें समुद्र के उस पार रवाना कर दिया। बाद में मालूम हुआ कि इनमें से कुछ बम अमरीका पहुँच गये थे। लेकिन आबाद बस्तियों से काफी दूर उनका विस्फोट हुआ। जंगल में लकड़ी काटने वाले कुछ लोगों को आतंकित करने के सिवा उनका और कोई नतीजा नहीं निकला।

लेकिन हमारी पाँच बड़ी कम्पनियों के इशारे पर शाही दरबार के अफसरों ने जो गुब्बारा छोड़ा था, वह इन से कहीं अधिक कारगर सिद्ध हुआ। स्वीजरलैंड में योकोहामा स्पेसी बैंक के साझीदार कितामूरा के जरिये यह खबर अमरीकियों के कानों में डाल दी गई कि टोकियो और मास्को के बीच कुछ साठगाँठ चल रही है। इस खबर को प्रमाणिकता का जामा पहनाने के लिए भूतपूर्व प्रधान मंत्री हिरोता को पहाड़ी स्वास्थ्य केन्द्र हाकोने भेजा गया जहाँ सोवियत राजदूत मलिक ठहरे हुए थे। हिरोता को वहाँ भेजने का लक्ष्य सोवियत स्थिति की थाह लेना था। लेकिन मौसम आदि के बारे में बातें करने के अलावा मलिक से और कुछ मालूम नहीं हो सका। हिरोता की इस यात्रा की खबर दो तटस्थ राज्यों के प्रतिनिधियों को मालूम हुई,—स्वेडन के राजदूत को एक जापानी धनिक से जिसके साथ वह गोल्फ खेलते

थे, और स्वीजरलैंड के राजदूत को एक शिक्षक से जो उसकी पत्नी को जापानी पढ़ाता था।

तब तक हम यह नहीं जानते थे कि याल्टा में एक गुप्त समझौते पर हस्ताक्षर हो चुके हैं जिसके अनुसार सोवियत संघ ने अपने मित्र-राष्ट्रों को वचन दिया है कि जर्मनी की पराजय के बाद वह जापान के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर देगा। भविष्य इसका साक्षी है कि रूस ने अपने इस वचन का पालन किया।

जो भी हो, हमारी चाल सफल हो गई। टोकियो में स्वेडन और स्वीजरलैंड के राजदूतों ने जो कुछ सुना था उसे संबंधित क्षेत्रों तक पहुँचा दिया। सुन कर अमरीकियों के कान खड़े हो गये। रूसियों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने का उनका कोई इरादा नहीं था, और इसीलिये वे खुद रूसियों का कोई भरोसा भी नहीं करते थे,—ठीक वैसे ही जैसे कि हमारी जापानी गीशाएँ किसी पर विश्वास नहीं करतीं क्योंकि अपने वचनों को भँग करना खुद उनके बाएँ हाथ का खेल होता है।

सो यह नतीजा निकालने के बाद कि रूसी उन्हें चकमा देने जा रहे हैं, वाशिंगटन की गीशाओं ने अब हमारी ओर नजरें फेंकना शुरू किया। सान फ्रान्सिस्को से प्रसारित रेडियो के कार्यक्रम इस बात को साफ प्रकट करते थे। मिसाल के लिए अमरीकी सीनेट के सदस्य अर्ल केपहार्ट ने एक बयान में कहा कि जापान को बिना शर्त आत्म-समर्पण करने के लिए मजबूर करना गलत है। इस तरह की माँग का नतीजा, सीनेटर ने बताया कि, युद्ध को लम्बा खींचने के सिवा और कुछ नहीं होगा। 'टाइम' और 'लाइफ' नामक पत्रों ने लिखा कि अगर समझौता न हुआ तो अमरीका को कम-से-कम दस लाख जनों की बलि देने के लिए तैयार रहना चाहिए।

हमारे उच्चतम अफसरों ने यह जानकर कि उनका गुब्बारा ठीक अपने निशाने पर जा लगा है, बातचीत की तैयारी शुरू कर दी। युद्ध को आखिरी क्षण तक चलाने की सम्राट की घोषणा उनके मार्ग में जरा भी बाधक नहीं हुई। उन्होंने सम्राट से कहा कि युद्ध के मोर्चे पर और साम्राज्य के

भीतर दोनों जगह स्थिति नाजुक है। जनता के घरों के आखिरी बरतन-भाँडों तक को हथियारों के लिए गलाया जा चुका है। अगर जाड़ों तक युद्ध को खींचा गया तो जनता व्यापक विद्रोहों पर उतर आयगी। कम्युनिस्टों को इससे अधिक और क्या चाहिये। साम्राज्य क्रांति के चंगुल में फंस जायगा।

आतंक के अस्त्र का प्रयोग करने वाला खुद भी आतंक का शिकार हो जाता है। ऊपरी सदन के जमींदार-सदस्यों ने खुफिया पुलिस तथा पर-राष्ट्र मंत्रालय के अधिकारियों को खटखटाया और उनसे यह रिपोर्ट मांगी कि साम्राज्य के भीतर और बाहर कम्युनिस्टों का असर किस हद तक बढ़ा हुआ है। खुफिया पुलिस के एक अधिकारी ने ऐलान किया कि कम्युनिस्टों के दल ओसाका जिला में, कगावा के थाने और यहाँ तक कि योकोसूका के समुद्री अड्डे तक में, गुपचुप अपना जाल फैला रहे हैं। कम्युनिस्टों के भूमिगत केन्द्र सभी जगह कायम हैं और उनकी गतिविधि जोरों पर है।

पर राष्ट्र मंत्रालय के अधिकारी ओगाता की रिपोर्ट और भी भयावह थी। वह मास्को के हमारे दूतावास में मंत्री के पद पर काम कर चुका था। दुनिया में कम्युनिस्टों के प्रभाव की बढ़ती का जोरदार चित्र खींचने में उसने कसर नहीं छोड़ी। वह इतने आवेश में आगया कि रिपोर्ट के दौरान में अपने को सँभालने के लिए उसे दो बार गोलियाँ खानी पड़ीं। इसी प्रकार अन्य अधिकारियों ने भी अपनी रिपोर्टें दीं। अपर सदन में आतंक छा गया। इन रिपोर्टों को शब्दशः लिखा गया और उनकी एक प्रति तुरन्त प्रिन्स कोनोए के पास भेज दी गई। प्रिन्स कोनोए ने सम्राट को रिपोर्ट दी। बाद में मैंने सुना कि इसके शीघ्र बाद ही शाही डाक्टरों को महल में बुलवाना पड़ा था।

[३]

शाह के निजी अफसरों और सैनिक अधिकारियों में केवल एक ही बात पर मतभेद था,—केवल कार्यनीति के बारे में। शाह के अफसरों का मत

था कि चाहे जिस मूल्य पर भी हो जल्दी-से-जल्दी शान्ति-संधि कर लेना चाहिए। इससे पहले कि घरेलू उत्पात जोर पकड़ें, जिसका नतीजा सर्वनाश हो सकता है, अमरीका के सामने पूर्ण आत्म समर्पण कर देना चाहिए। लेकिन जेनरल अनामी और उमेदज़ू अभी युद्ध को जारी रखने के पक्ष में थे ताकि कम-व-बेश अनुकूल शर्तों पर शान्ति-संधि का भाव-ताव हो सके।

आखिरी क्षण तक युद्ध चलाने की घोषणा के शीघ्र बाद ही टोकियो गैरीजन के अफसरों में एक परचा बाँटा गया। केन्द्रीय सैन्य-अफसरों के एक गुप्त संगठन की ओर से यह परचा जारी किया गया था,—ठीक वैसे-ही-जैसे कि अतीत में दैवी योद्धाओं की गारद, नन्हीं चैरी सोसायटी आदि सैनिक अफसरों के अन्य संगठन जारी किया करते थे।

इस संगठन का लक्ष्य स्याह-सफेद करने के तमाम अधिकारियों से युक्त एक सैनिक सरकार कायम करना था। यह सरकार, जिसमें गैरफौजियों के लिए कोई जगह नहीं होगी, अमरीका से सम्मानपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर करेगी और उसकी मदद से उस योजना को अमल में लायगी जिसे सम्राट ने पहले स्वीकार कर लिया था, और फिर, दक्षिण दिशा में हमला करने की मूटो-योजना के पीछे, अस्थायी रूप से ताक पर रख दिया था।

जिनतान और मुसोलिनी मेरे पीछे पड़ गये कि मैं इस संगठन में शामिल हो जाऊँ। इसके लिए अपने हाथ की कनकी उँगली के रक्त से एक कागज पर अपने नाम का चिन्ह अंकित करना होता था। मैंने जवाब दिया था कि अभी मैं स्थिति को समझ नहीं सका हूँ, और इसके बारे में सोचना चाहता हूं। मैंने अपने पुराने हितैषी और मित्र लैफ्टीनेन्ट जेनरल आक्टौपस से, जो अब रिजर्व सेना में था, सलाह लेने का निश्चय किया। उन दिनों जबकि वह फौजी स्कूल का चीफ था, हमने आक्टौपस का यह उसे नाम दिया था। अपने जमाने में अफसरों के अनेक षड्यन्त्रों में वह हिस्सा ले चुका था। और सच तो यह है कि प्रधानमंत्री इनुकाई की हत्या में शामिल होने के अपराध ए घरेलू कैद की सजा भी मिल चुकी थी।

वाकामिया बस्ती की उशीगोम स्ट्रीट में उसका घर था। उसके घर के पिछले आँगन में एक खन्दक थी। इसी खन्दक में वृद्ध आक्टौपस से मेरी बातें हुईं। बूढ़े ने खन्दक को काफी आरामदेह बना लिया था। फर्श चटाई से ढका था, ऊपर कैनवास की छत तनी थी, तश्तरियाँ और तम्बाकू रखने के लिए खाने बने थे, और चूंकि उसे अपनी अधिकांश रातें यहीं बितानी पड़ती थी, इसलिए अपने पाँवों को गरमाने के लिए एक अंगीठी भी उसने रख छोड़ी थी।

उससे बातें करके बड़ी निराशा हुई। वृद्ध आक्टौपस मतलब की एक भी बात मुझे नहीं बता सका। मैंने अनुभव किया कि तोजो के इस वृद्ध अनुयायी का वास्तविकता से अब कोई सम्पर्क नहीं रहा है। जो हम से लड़ना नहीं चाहते, उन्हीं अंगरेज-अमरीकियों से हमें युद्ध में फँसाने के बाद अब ये वृद्ध जेनरल, जैसे भी हो, अपने को सही सिद्ध करना चाहते हैं। वृद्ध आक्टौपस कई घंटों तक हमारी सेना के सैन्सर-विभाग का ही रोना रोता रहा। उसका कहना था कि सैन्सर का निकम्मापन सारी गड़बड़ के लिए जिम्मेदार है। अपढ़ लोग उसमें भरे हैं। ऐसे पत्रों को भी वे सैनिकों के पास जाने देते हैं जिनमें इशारों की भाषा में घर पर भुखमरी से तंग आकर उनकी पत्नियों के दुराचारी बनने की बातें लिखी रहती हैं। उसका कहना था कि इस तरह के पत्रों ने सेना का सारा मनोबल खराब कर दिया है।

लेकिन युद्ध,—उसने कहा,—अभी भी हमारे हाथ से बाहर नहीं हुआ है। देवता हमारी रक्षा करेंगे। सरकारी मंत्रियों और हाई कमान के अफसरों के साथ सम्राट राज्यकुल की देवी अमातेरासु की वन्दना कर चुके हैं। समूचे राष्ट्र को वन्दना-दिवस मनाना चाहिए। इसके बाद अमरीकियों के पास अपने किसी अत्यन्त वाक्पटु खुफिया अफसर को हमें भेजना चाहिए। जब उन्हें अन्तिम क्षण तक युद्ध करने की हमारी योजना और हमारे गुप्त हथियारों के बारे में मालूम होगा तो वे शान्ति के लिए तैयार हो जायंगे और फिर, अपने समान शत्रु रूस के खिलाफ, गुप्त हथियारों का हम दोनों इस्तेमाल करेंगे।

[४]

गुप्त हथियारों के सम्बंध में जो काम हो रहा था, किसी हद तक मैं उससे परिचित था।

हमारे दो वैज्ञानिक, निशीना और अराकात्सू, अणु-शक्ति के क्षेत्र में काम कर रहे थे, लेकिन अभी तक वे प्रारम्भिक अवस्था से आगे नहीं बढ़ सके थे। इससे कहीं अधिक दिलचस्प प्रयोग शिमादा में किये जा रहे थे। ये प्रयोग एक ऐसी किरण से सम्बंधित थे जो दूर से ही इंजनों को ठप्प कर सकती थी, विस्फोटों में आग लगा सकती थी। लेकिन ये प्रयोग भी अभी पूर्ण सफलता से बहुत दूर थे। किरणों की कारगरता कुछ मीटर की दूरी से आगे जाने पर खत्म हो जाती थी। तथाकथित के-बम से भी हमें भारी आशाएं थीं। यह बम रेडियो-नियंत्रित डेटोनेटर से सुसज्जित था। कहा जाता था कि यह बम जो निशाने की ओर स्वयं निर्देशित होकर चलता है, अचूक मार करता है। युद्ध मंत्रालय के केन्द्रीय टैकनीकल विभाग का अनुमान था कि यह एक साल के भीतर तैयार हो जायगा। अगर तब तक युद्ध को खींचा जा सका तो हमारे हाथों में एक नया और अत्यन्त दुर्जेय अस्त्र आजायगा।

हमारा प्रमुख गुप्त अस्त्र ई-बम था। यह मैडीकल सर्विस के लैफ्टीनेन्ट इशी शीरो का आविष्कार था। चीनी तरबूज़ के बराबर आकार का पोर्सलीन मिट्टी से बना यह एक छोटा-सा पात्र था जिसमें घातक बीमारियों के कीटाणु भरे थे। इन बमों को बनाने वाली केन्द्रीय प्रयोग-शाला टोकियो के वाकामात्सुचो क्वार्टर में इशी के घर के पास ही स्थित थी। लेकिन इस इमारत में आग लग गई थी और जो यंत्रादि नष्ट होने से बच रहे, उन्हें नीगाता और होक्काइदो भेज दिया गया। अब मंचूरिया में दो प्रयोग शालाएं इस बम का निर्माण कर रही हैं। एक जो "यूनिट नम्बर ७३१" कहलाती है, हारबिन के निकट पिंगफान में और दूसरी "यूनिट नम्बर १००" सिंगकिंग के निकट मोगातोन में। चीन और मंचूरिया में ई-बम की सफलता के साथ परीक्षा की जा चुकी है और सेना के अस्त्रागार में अब वह मौजूद है।

इस प्रकार हमारे कारगर अस्त्रों में से केवल एक ही अब तक तैयार था। यह एक बढ़िया अस्त्र था, लेकिन अमरीका के खिलाफ इसका इस्तेमाल करना क्या ठीक होगा? इस सवाल का जवाब देने से पहले एक दूसरे बुनियादी सवाल के बारे में तय करना जरूरी था,—वह था मौजूदा युद्ध को चलाने या न चला के बारे में।

[५]

अब, १९५० के इस वसन्त में, उन दिनों बेहद परेशान करने वाले अपने संदेहों पर जब मैं नजर डालता हूं तो वे मुझे सच्चे अर्थ में बेहूदा मालूम होते हैं। लेकिन आदमी को हमेशा घटना के बीत जाने के बाद समझ आती है। उन दिनों मैं नहीं जानता था कि ऊँट किस करवट बैठेगा और अगर हमने आत्म-समर्पण किया तो अमरीका किस प्रकार हमारे साथ व्यवहार करेगा।

भला मैं यह कैसे जान सकता था कि मिसूरी जहाज पर आत्म समर्पण की दस्तावेज पर दस्तखत करने के रस्मी समारोह के बाद जब अमरीकी कमाण्डर-इन-चीफ ने हमारे द्वीपों में प्रवेश किया था तो उस समय तक वह हमें अपने भावी मित्रों के रूप में अपनाना तय कर चुका था? किस प्रकार मैं यह जान सकता था कि वह आदमी जिसके आदेश से हमारे नगरों पर बम-मार वायुयानों ने 'बमों के कालीन' बिछाये वह, जापान के शान्तिप्रिय नागरिकों के खिलाफ युद्ध कर रहा था, न कि जापानी अफसरों और सैनिकों के, जिन्हें कि वह भविष्य के लिए सुरक्षित रखना चाहता था। यह सच है कि अगर मैंने ध्यान से देखा होता तो मालूम कर लेता कि अमरीकी बम-मार टोकियो की अत्यन्त घनी बस्तियों,—शिताया और असाकूसा जिनमें गरीब लोग रहते थे—को ही अपना निशाना बनाते थे, और मारूनोउची-जिले पर जहाँ हमारी सबसे बड़ी व्यापार-कम्पनियाँ स्थित थीं या जिन जिलों में हमारे सबसे बढ़िया महल और भूकम्प-प्रूफ इमारतें स्थित थीं, एक भी बम नहीं गिराते थे। बी-२९ बम-मारों ने बड़ी सावधानी के साथ इन

इमारतों की नष्ट होने से रक्षा की थी जिनमें कि, आगे चल कर, अमरीकी सेना के विभागों और संस्थाओं को स्थापित किया गया।

सचमुच, ऐसी बहुत-सी चीजें थीं जिन्हें १९४५ की गर्मियों में मैं नहीं समझता था।

मेरी दुविधा का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी था कि स्पेशल सर्विस में अपना काम शुरू करने के दिन से ही मुझे चीन के मामलों से जितना वास्ता पड़ा, उतना रूसी मामलों से नहीं। मैं चीनी मामलों का ही विशेषज्ञ था, और रूसी मामलों के बारे में मेरी जानकारी बहुत नाकाफी थी। यही वजह है जो मैंने दक्षिण दिशा में हमला करने की मूटो-योजना को पहले स्वीकार किया। मेरा विश्वास था कि हमारे साम्राज्य का सबसे प्रमुख काम समूचे चीन पर अपना आधिपत्य कायम करना है, और इसे पूरा करने के लिए दक्षिण की ओर से चीन के निकटवर्ती तमाम प्रदेशों को,—हिन्द चीन और मलाया को,—अपने कब्जे में करना होगा, ठीक उसी प्रकार जैसे कि हमने उत्तर के निकटवर्ती प्रदेशों पर,—मंचूरिया और मंचूरिया की दक्खिन पूर्वी सीमा से लगे हुए कोरिया प्रायःद्वीप पर,—अपना कब्जा कर रखा था।

इतना ही नहीं, बल्कि मेरी यह भी धारणा थी कि चीन में हमारी प्रमुख शत्रु कुओमिन्तांग सरकार है, न कि कम्युनिस्ट।

केवल युद्ध के दौरान में ही और खास तौर से पिंगसिन्कवान के बाद जबकि चूतेह की आठवीं सेना ने इतागाकी के कमान में हमारी सेनाओं को छिन्न-भिन्न कर दिया था, अन्तिम रूप से मैं यह समझ सका कि चीन में हमारे शत्रु कम्युनिस्ट हैं, और यह कि च्यांगकाईशेक और कुओमिन्तांग सरकार हमारे मित्र हैं, और यह एक गलती है जो हम एक-दूसरे के विरुद्ध लड़ रहे हैं।

सन्देहों ने मुझे घेरना शुरू कर दिया। मूटो-योजना में मेरा विश्वास डगमगाने लगा और मैंने देखा कि प्रशान्त में हमारा युद्ध एक भारी गलती है।

इसी समय हार्शबर्गर से मेरी भेंट हुई, और मेरी आँखों पर जो पर्दा पड़ा था वह एकदम हट गया।

इसके शीघ्र बाद ही, सत्य की ओर एक और कदम उठाने में विधाता ने मुझे मदद दी। एक दिन, सुबह के समय, जब मैंने आफिस में प्रवेश किया तो ताक पर रखी एक पुस्तक पर मेरी नजर पड़ी। इस पुस्तक का नाम था: "अन्तिम युद्ध।" इसके आखिरी कवर पर एक सूचना प्रकाशित थी कि स्वयं लेखक ने इसे छपाया है, और यह कि पुस्तक बिक्री के लिए नहीं है।

इस पुस्तक का लेखक सुप्रसिद्ध लैफ्टीनेन्ट जेनरल इशीहारा कानजी था जिसने जेनरल स्टाफ के रण-नीति विभाग के प्रमुखाध्यक्ष की हैसियत से रूस के खिलाफ युद्ध की एक योजना का संयोजन किया था। इस योजना में युराल तक समूचे साइबेरिया पर कब्जा जमाने की व्यवस्था थी। एक पखवारे के भीतर ही इस योजना के कारण यह समूचे जापान में प्रसिद्ध हो गया था।

अपनी पुस्तक में इशीहारा ने बताया था कि हालांकि अमरीका और रूस मौजूदा समय में एक ही खेमे में हैं, लेकिन यह स्थिति शीघ्र ही बदल जायगी और इन दोनों में टक्कर होना अनिवार्य है। समूची पुस्तक एक ही तथ्य का पोषण करती थी। वह यह कि रूस अमरीका और जापान दोनों का समान शत्रु है, भावी युद्ध में दोनों एक खेमे में होंगे, और जितनी जल्दी मौजूदा मनहूस युद्ध का अन्त किया जायगा, उतना ही दोनों के लिए अधिक अच्छा होगा।

मैंने पुस्तक को तीन बार पढ़ा। केवल एक ही पुस्तक और थी जिसे मैंने इतनी दिलचस्पी पढ़ा था। यह एक दस्ती किताब थी जिसे सागा समुराई ने लिखा था। इसका नाम था "भेद की बातें"। सच्चे सैनिक को कैसा होना चाहिए, यह इस पुस्तक में दिखाया गया था।

इशीहारा की पुस्तक का सावधानी के साथ अध्ययन करने के बाद ऐसा अनुभव हुआ मानो पू॰ प्रकाश के पथ पर मैंने एक डग और भरा हो। आत्मा की मुक्ति के पथ की आठ मंजिलों में से पहली को पार करने के बाद बौद्ध भिक्षुओं को भी कुछ मेरी ही भांति अनुभव होता होगा। जो हो, कुछ सन्देह अभी भी बाकी थे। उनसे मुक्ति पाना जरूरी था।

[६]

एक दिन मैंने अपने पुराने मित्र लैफ्टीनेन्ट कर्नल ली से पूर्व क्षेत्रीय हैडक्वार्टर्स में भेंट की। प्रशान्त युद्ध से पहले वह और मैं एक साथ शंघाई में स्पेशल सर्विस में काम करते थे। मेरा काम चीन में जर्मन खुफिया विभाग के संगठन एरहाद् ल ब्यूरो से सम्पर्क कायम रखना था।

ली चीन-प्रवासी श्वेत रूसियों की बस्ती में काम करता था। बाद में हम दोनों को जेनरल स्टाफ़ के तथाकथित आठवें सैक्टर में भेज दिया गया, जिसका काम अनेक प्रकार की खुफिया मुहिमों को सरंजाम देना था। आगे चलकर मुझे मोर्चे पर और ली को जेनरल स्टाफ़ के दूसरे सेक्शन के पाँचवे या रूसी विभाग में भेज दिया गया। उसे वे अपना श्रेष्ठतम रूसी विशेषज्ञ समझते थे।

ली मुझे अपने रिहाइशी फ्लैट में ले गया। वृद्ध आक्टौपस के घर से थोड़ी दूर, उशीगोम क्षेत्र में,अफसरों के एक होटल में वह रहता था। ली में कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ था। वैसा ही गोल-मटोल चेहरा, वैसी ही भली-सी मुद्रा और छोटी-छोटी तेज आँखें जिनमें मुस्कराहट की चमक कभी नहीं दिखाई देती थी। बावजूद गोलमटोल शरीर और अपेक्षाकृत छोटी-छोटी बाँहों के वह भारी शान के साथ चलता था। वह धीरे-धीरे, और हर शब्द पर जोर देते हुए, बोलता था; और बोलते समय कभी अंग-संचालन नहीं करता था।

उसने रूसी मदिरा वोडका से, जो अभी मास्को से लाई गई थी, मेरा स्वागत किया। दूसरे सैक्शन के पाँचवे विभाग के अफसर, कूटनीतिक सन्देश-वाहक के बाने में झूठे पार-पत्रों के सहारे बारी-बारी से रूस जाते रहते थे।

ली और मैं जम कर बैठ गये, और दिलचस्प बातों का सिलसिला शुरू हो गया।

"इस मूर्खतापूर्ण युद्ध को खत्म करने में हमें एक क्षण की भी देर नहीं करनी चाहिए," ली ने कहा,—"किन्हीं भी शर्तों पर, चाहे वे कितनी भी कठोर क्यों न हों। केवल एक ही बात को हमें ध्यान में रखना है कि राजवंश सही-

सलामत रहे। युद्ध का तुरन्त अन्त करना जरूरी है ताकि आने वाले युद्ध के लिए हमारी शक्ति अधिक-से-अधिक मात्रा में सुरक्षित रहे। इसमें अमरीका हमारा साथ देगा। तेजी के साथ हम अपनी क्षतियों की पूर्ति कर लेंगे। प्रशान्त, मंचूरिया और कोरिया में गिनती के दो-चार छोटे-छोटे द्वीपों के बजाय युराल तक समूचे साइबेरिया पर हमारा कब्जा होगा, अथवा इससे भी बढ़कर यह कि वोल्गा तक हमारे अधिपत्य का विस्तार होगा। क्यों, इस सौदे के बारे में तुम क्या कहते हो?"

मैंने सिर हिला दिया।

"लेकिन, बिला शक, इससे भी अच्छा यह होगा कि हम एशिया में अपने प्रभुत्व को कायम रखें, और इसके अलावा साइबेरिया पर भी अधिकार कर लें। आखिर तुम अमरीका पर दबाव डालने के क्यों विरुद्ध हो?"

"इसलिए कि इसका अर्थ युद्ध को जारी रखना होगा, जो परिणामतः, हमारे और अमरीका दोनों के लिए नुक्सानदेह है। और यह मूर्खतापूर्ण है। पहली बात तो यह कि हमें और अमरीका को अपने-आपको बिला वजह कमजोर नहीं बनने देना है। अपने समान शत्रु से हम दोनों को लोहा लेना है। दूसरे यह कि अमरीका के खिलाफ युद्ध को जारी रखकर हम रूस के साथ उसके युद्ध को स्थगित करने के लिए उसे बाध्य करते हैं। और रूस पर हमें जल्दी-से-जल्दी आक्रमण करना है, इससे पहले कि वह कुछ दम ले सके। प्रशान्त में युद्ध को जितना ही अधिक हम खींचेंगे, उतना ही अधिक समय हम रूसियों को अपनी शक्ति बटोरने के लिए देंगे।"

ली के तर्कों की ध्वनि निर्णयात्मक थी।

"तो आपका खयाल है कि इन दोनों के बीच शीघ्र ही सचमुच में टक्कर होगी?" मैंने पूछा।

"अमरीकियों से शान्ति-संधि होते ही हर चीज हमारी आँखों के सामने प्रकट हो जायगी," ली ने हँसते हुए जवाब दिया।

एक अन्य व्यक्ति के आगमन ने हमारी बातों का सिलसिला भंग कर दिया। ली ने मेरा उससे परिचय कराया। जब मैंने हमारी समूची सेनाओं

में प्रसिद्ध कर्नल त्सूजी मसानोबू का नाम सुना तो मैंने आदर के साथ नवागन्तुक का निरीक्षण किया। सिर घुटा हुआ, झाड़ीनुमा भौंहें, तीखी दृष्टि और प्रभावशाली चेहरे से साफ जाहिर होता था कि वह एक सच्चा सैनिक है। मुझे आक्टौपस और अन्य लोगों की बात याद हो आई कि इस कर्नल ने ही, जिसे मलाया का शेर कहा जाता था, ब्रिटिश और अमरीकी सैनिकों पर सबसे पहले किमोतोरी का प्रयोग किया था। सागा जाति के एक समुराई परिवार के इतिवृत्त में वर्णित प्राचीन परिपाटी का सख्ती से पालन करते हुए उसने इसे सम्पन्न किया था।

कर्नल ने रेडियो खोल दिया और ली के कान में फुसफुसाकर कुछ कहने लगा। मैं विदा लेने के लिए खड़ा हो गया। ली ने रेडियो बन्द कर दिया, और मलाया के शेर से कहा,—"इसके सुनने में कोई हर्ज नहीं। देर या सबेर, हैडक्वार्टर्स के अफसरों को यह सब मालूम हो ही जायगा।"

त्सूजी अत्यन्त दिलचस्प सूचना लेकर आया था। मार्शल येन हसीशान ने एक अफसर के द्वारा प्रथम सेना के चीफ आफ स्टाफ मेजर जनरल यामाओका के पास यह प्रस्ताव भेजा था कि शान्सी में चीनी कम्युनिस्टों की सेनाओं के खिलाफ संयुक्त हमला करने के बारे में एक गुप्त समझौता किया जाय। येन हसीशान के दूत से मेजर जेनरल यामाओका को यह भी मालूम हुआ था कि कुओमिन्तांग के पास मौजूद सूचनाओं के मुताबिक अमरीका और रूस के बीच निकट भविष्य में युद्ध होने की सम्भावना है। ऐसी स्थिति में एशिया में कम्युनिज्म के खिलाफ लड़ने के लिए जापान और चीन का संयुक्त मोर्चा बनना जरूरी है।

यामाओका इशोहारा योजना के अत्यन्त कट्टर समर्थकों में से था, और इस रूप में काफी बदनाम हो चुका था। जर्मनी और रूस के बीच युद्ध छिड़ने के समय वह मास्को में हमारा सैनिक अटैची था। कहा जाता है कि जेनरल स्टाफ के पास हर सप्ताह वह इस आशय की एक रिपोर्ट भेजता था कि तमाम बातों को देखते हुए यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस सप्ताह के अन्त तक रूसी हथियार डाल देंगे। बाद की अपनी रिपोर्टों में

वह मास्को के पतन की भी घोषणा करने लगा। और तीन पृथक अवसरों पर उसने पतन की निश्चित तिथियां तक की भविष्यवाणी की थी। अन्त में इस 'भविष्य वक्ता' को वापिस टोकियो बुला लिया गया और इसके शीघ्र बाद ही उसे चीनी मोर्चे पर रवाना कर दिया गया। चीन पहुँचकर भविष्य वाणियाँ बजाय उसने राजनीति में पांव रखने का निश्चय किया और कुओमिन्तांग से साँठ-गाँठ समझौते की जमीन तैयार करनी शुरू कर दी।

इन समाचारों की सूचना देने के बाद त्सूजी चटाई पर लेट कर अपने शरीर को सीधा करने लगा और हुंकार भरते हुए बोला:

"युद्ध को निश्चित रूप से खत्म करना चाहिए। एक अंधा भी यह समझ सकता है। और समय रहते कुओमिन्तांग से हमें समझौता करना चाहिये ताकि चीनी कम्युनिस्टों को चीन पर अधिकार करने से रोका जा सके।"

मुझे विदा करने के लिए जब ली बाहर के दरवाजे तक आया तो मैंने उससे पूछा—"तो आप, मेरा मतलब इशीहारा के समर्थकों से है, सम्राट द्वारा स्वीकृत आखिरी युद्ध के बुनियादी कार्यक्रम को......"

सम्राट का नाम सुनते ही उसने आदर के साथ मस्तक झुकाया और धीमे स्वर में कहा:

"वह एक आत्मघाती योजना है। लेकिन हमारा युद्ध-मंत्री उसे फिर भी अमल में लाकर देखना चाहता है। मैंने सुना है कि रात को वह अपने दफ्तर की खिड़की के पास खड़ा हो जाता है, और मुँह से जीभ निकाल कर चाँद को दिखाता रहता है। उसके सभी सहायक अफसरों में इसकी चर्चा है......यह एक भयानक बात है कि हमारे साम्राज्य के इन नाजुक क्षणों में यदि एक पागल हमारा युद्धमंत्री हो। और दुर्भाग्य यह कि सम्राट इस बात से अपरिचित है......"

ली से इस भेंट के बाद मैंने "अन्तिम युद्ध" पुस्तक को एक बार फिर पढ़ा, और इस नतीजे पर पहुँचा कि जेनरल इशीहारा भूमण्डल पर सर्वाधिक दूर दृष्टि वाला राजनीतिज्ञ है।

दर्पचूर्ण सूर्यकान्त मणि

[१]

सत्ताइस जुलाई को अंधेरे मुँह अमरीकी रेडिओ ने पोट्सडम घोषणा प्रसारित की, जिसमें आत्म-समर्पण के लिए जापान का आह्वान किया गया था। इसके एक घंटे के भीतर ही सैनिक पुलिस और पुलिस के केन्द्रीय विभाग में रिपोर्ट आई कि घोषणा का जापानी में अनुवाद करके उसे समूचे नगर में बाँटा जा रहा है। दिन चढ़ने पर यह भी मालूम हुआ कि शाही मोहर के रक्षक मारक्विस किदो से गुप्त वार्ता करने के लिए प्रिन्स कोनोए और प्रीवी परिषद के अध्यक्ष बेरन हीरानूमा सकाशीता द्वार से शाही महल में गये हैं। इचीगायदाई में भी एक कान्फ्रेंस हुई जिसमें युद्धमंत्री अनामी ने सभी सैनिक नेताओं को आमंत्रित किया था।

समाचारों की प्रतीक्षा में हम सारे दिन एडज्युटैन्ट जेनरल के आफिस में बैठे रहे। जिनतान मंत्रालय की ओर चला गया और उसने वायदा किया कि वहाँ से वह मुझे टेलीफोन करेगा। हाल ही में क्वान्तुंग सेना से बदल कर हमारे विभाग में आये दो युवक अफसर क्वात्सूमाता और मीने ने बताया कि क्वातुंग सेना के कुछ बड़े अफसरों को, जो किसी काम से टोकियो आये हुए थे, अभी-अभी आदेश दिये गये हैं कि वे वायुयान से तुरन्त मंचूरिया लौट जाएँ।

"निश्चय ही वहाँ कुछ शुरू होने वाला है!" उसाँस भरते और अपनी तलवार की मूंठ को हाथ से थपथपाते हुए कैप्टेन कात्सूमाता ने कहा।

कैप्टेन मीने ने भी कुछ वैसी ही मुद्रा में फुसफुसाकर कहा,—"सम्भ-

वतः आज रात को अमरीका से युद्ध बन्द करने और रूस से युद्ध करने का फैसला लिया जायगा।"

मैं हँस पड़ा।

"साफ दिखाई देता है कि तुम दोनों इशीहारा के पक्के अनुयायी हो और जहाँ तक रूस से लड़ने का सम्बन्ध है, मुझे भय है कि इसके लिए क्वान्तुङ्ग सेना अभी काफी मजबूत नहीं है। फिर उसकी कितनी ही यूनिटों को चीन और घरेलू द्वीपों में भी तो भेजना होगा।"

दोनों केप्टिनों ने जोरों से इन्कार करते हुए कहा कि मेरा डर एकदम निराधार है। क्वान्तुङ्ग सेना में,—उन्होंने बताया, आजकल अनेक पृथक सेनाएँ एकजूट हैं। सोवियत संघ से युद्ध होने पर क्वान्तुङ्ग सेना इशीहारा योजना के मुताबिक धावे शुरू कर देगी। कितनी ही चुनी हुई टुकड़ियाँ, "गुणों की खान", "पथ" और "कण्ट्रोल" टुकड़ियाँ, साथ ही द्वितीय हवाई बेड़ा, सीधे कमाण्डर-इन-चीफ के नेतृत्व में बैकाल झील पर निर्णयात्मक आक्रमण के लिए तैयार हैं। और "ब्लेड", "सारस", "चट्टान", "अजेय", "दृढ़ता", "लम्बी पकड़" तथा अन्य सैनिक टुकड़ियाँ पहले, मंचूरियन मोर्चे को गरमाने की ताक में हैं। चौबीस घंटों के भीतर ब्लादिवोस्टोक और खाबारोवस्क पर कब्जा करने का उन्हें काम सौंपा गया है। और अगर रक्षात्मक युद्ध करने की नौबत आई तो क्वान्तुङ्ग सेना तिहरी किले बन्दियों के पीछे जम जायगी,—जिनका कि पिछले चौदह सालों से निर्माण किया जा रहा है, और जिनके सामने मैगीनोट और सीगफ्रीड लाइनें बच्चों का खेल है।"

"क्वान्तुंग सेना को रक्षात्मक युद्ध करने का आदेश मिलने की सम्भावना नहीं है," मैंने कहा,—"दिन के आर्डर नम्बर एक में केवल एक ही वाक्य होगा : युराल की ओर बढ़े चलो!"

"और आक्रमण की नोक टैंक नहीं, बल्कि डिसइन्फैक्शन यूनिटें होंगी," मीने ने गम्भीरता के साथ कहा,—"कारण कि आर्डर नम्बर एक के जारी होने से पहले ही आर्डर नम्बर ज़ीरो पर अमल होगा : 'गुप्त अस्त्र से

काम लो !"

टेलीफोन द्वारा जिनतान से कोई सूचना न मिलने पर मैंने मुसोलिनी को फोन किया। लेकिन वह मिला नहीं। मैंने आक्टोपस के घर जाकर उससे मिलने का निश्चय किया। वह घर में ही बिस्तर पर लेटा हुआ मिला। एक रंगी-चुनी वयस्का स्त्री उसकी पीठ पर मोक्सा की मालिश कर रही थी। जब वह अपना काम कर चुकी तो उसने गुस्से से मेरी ओर देखा, और बिना किसी अभिवादन के कमरे से बाहर हो गई। वृद्ध को यह सूचना पहले ही मिल चुकी थी कि युद्धमंत्री अनामी के नेतृत्व में सैनिक अफसरों के एक दल ने सर्व सम्मति से सम्राट से यह अपील करने का फैसला किया है कि पोटसडम घोषणा को रद्द किया जाय और उस समय तक युद्ध जारी रखा जाय जब तक कि सम्मानपूर्ण शान्ति न हासिल हो।

कुछ दिन बाद, सैनिक कमान के दबाव से बाध्य हो, प्रधान मंत्री एडमिरल सुजुकी को सरकारी तौर से कहना पड़ा कि सरकार ने पोट्सडम घोषणा को ठुकराने का फैसला किया है। टोकियो रोज ने इस घोषणा को अंग्रेजी में रेडियो से प्रसारित किया। तमाम समाचार-पत्रों को आदेश दिया गया कि अपने प्रत्येक संस्करण में निम्न नारों को प्रमुख रूप से प्रदर्शित करें : "अन्तिम चरण तक युद्ध !" "बाँस की बर्छियाँ उठाकर हम अपने देश की चप्पा-चप्पा भूमि के लिए लड़ेंगे!", "दस करोड़ जापानी सूर्यकान्त मणि की भांति चूर-चूर हो जायँगे, पर आत्म-समर्पण नहीं करेंगे !"

[२]

छै अगस्त को, अपनी ड्यूटी खत्म करने के बाद, जिनतान और कात्सू-माता मुझसे मिले।

"कहो, क्या खबर है ?" मैंने जिनतान से पूछा।

उसने बताया कि सेना-विभाग की एक शाखा के चीफ मेजर सकाकी-बारा से अभी फोन से बातें की थीं, लेकिन कोई खास खबर नहीं मालूम हुई। दोपहर का भोजन करने के बाद मंत्री विश्राम के लिए अतामी चले गये हैं।

"मैंने सुना है कि कल निशीनोमिया और नाकासाकी पर भारी बम-वर्षा हुई। ऐसे नगरों पर बम बरबाद करना निरी मूर्खता है। शरणार्थी बच्चों के कैम्पों के सिवा वहाँ और कुछ नहीं है", मैंने कहा।

"आज सुबह उन्होंने हिरोशीमा पर बम गिराये," कात्सूमाता ने कहा,—"इतना ही नहीं, अमरीकियों के रेडियो ने घोषणा की है कि एक नये बम का प्रयोग किया गया है। लेकिन वायुयान-तोड़क तोपों के विभाग को अभी तक इसकी कोई सूचना नहीं मिली है।"

जिनतान ने और भी ज्यादा दिलचस्प समाचार सुनाये। उसने बताया कि न केवल शान्सी और येन हशी-शान में स्थिर हमारे सेनिक कमानों के बीच ही, बल्कि चीन में हमारे कमाण्डर-इन-चीफ कुओकामूरा और ओमिन्तांग जेनरल स्टाफ के चीफ-हो इङ्ग-चिन के बीच भी गुप्त वार्ताएं चल रही हैं। साफ है कि च्यांगकाईशेक कम्युनिस्टों के खिलाफ शीघ्र ही जेहाद शुरू करेगा। चीन में हमारी सेनाएँ पिछले नवम्बर से शान्त हैं। वहाँ के युद्ध का एक तरह से अन्त हो गया है, और च्यांगकाईशेक की सेनाओं के एक काफी बड़े हिस्से ने कम्युनिस्टों के इलाकों की नाकेबन्दी करली है।

उस रात एक भी हवाई आक्रमण नहीं हुआ। अगले दिन मुझे ओइ्-हामा जाने का आदेश मिला जहाँ एक नये किस्म के गोतामार बम-मारक-ई-११५ की परीक्षा की जानेवाली थी। परीक्षा सफल हुई। बम-मार के डिजाइ-नर ने इस वायुयान के पहियों की विशेष बनावट के बारे में बताया। उसने कहा कि वायुयान के हवा में उठते ही इसके पहिये अपने-आप वायुयान से अलग हो जाते हैं और दूसरे वायुयान के लिए इनका प्रयोग किया जा सकता है। इस वायुयान के शहीद-चालकों को केवल उड़ने के समय ही पहियों की जरूरत होगी, क्योंकि एक बार आकाश में पहुंचने के बाद जीवित रूप में नीचे उतरने की कोई सम्भावना नहीं रहेगी।

वापिस लौटते समय मैं योकोहामा में रुक गया। मुझे आक्टौपस से तीसरी पैदल ब्रिगेड की "सुबह का सूरज" नामक यूनिट के एक कप्तान के नाम पत्र लेना था। कप्तान से समुद्र के किनारे सेनिक अफसरों के एक छोटे

से जलपान घर में मुझे मिलना था। युद्ध-पूर्व के दिनों की मदिराओं का यहाँ अच्छा स्टाक मौजूद था, और भूतपूर्व गीशाएं अफसरों का स्वागत-सत्कार करती थीं। अनिवार्य श्रम-कानून से बचने के लिए वे यहाँ जमा हो गई थीं। मजे के साथ हमने अपना समय बिताया। यहाँ एक मामूली-सी घटना भी हो गई। ससाकी नशे में चूर हो गया था। उसने फब्ती कसी कि शीघ्र ही तमाम गीशाओं को दस्ती गोले फेंकने की ट्रेनिंग दी जायगी ताकि वे सम्राट के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर सकें। एक गीशा ने, देखने में सुन्दर और आयु में अन्य से कुछ बड़ी एक स्त्री ने जो सामीसेन बजा रही थी, कोई ऐसी बात कह दी जो जरा सम्मानपूर्ण नहीं थी। मैंने उसके बाल पकड़ लिए, खींचता हुआ उसे गलियारे में ले आया और उसके इतनी ठोकरें लगाईं कि वह माफी माँगने लगी। इसके बाद मैंने उसे "लहरों पर लाशों की नैया" वाला गीत लगातार पाँच बार गाने के लिए बाध्य किया।

अगली साँझ मैं टोकियो लौट आया और जिनतान से बम-मार क-ई-११५ की परीक्षाओं का जिक्र किया।

"उस दिन हीरोशीमा पर उन्होंने क्या गिराया था? कुछ मालूम हुआ?" मैंने पूछा।

जिनतान ने बताया कि सुबह आठ बजकर पन्द्रह मिनट पर दो अमरीकी वायुयान नगर के ऊपर प्रकट हुए थे। इनसे किसी को आशंका नहीं हुई, क्योंकि अमरीका के स्काउट-वायुयान हिरोशीमा पर से आये दिन गुजरते थे। उनमें से एक ने बम गिराया। नगर के मध्य में, ठीक आइओई पुल के ऊपर, धरती से करीब पाँचसौ मीटर की ऊँचाई पर उसका विस्फोट हुआ। उसकी चमक इतनी तेज थी कि आंखें अंधियाँ गईं। फिर एक बहुत जोरों का धमाका हुआ और आग का एक गोला आकाश की ओर उठता चला। साँप की छतरी के आकार का कई सौ मीटर ऊँचे धुएं का एक स्तम्भ का आकाश में उदय हो गया। समूचा नगर आग की लपटों से घिर गया।

पच्छिमी जिले की गैरीजन और हैडक्वार्टर्स को तो अधिक नुक्सान

नहीं पहुँचा, लेकिन नगर के अधिकांश निवासी आग की भेंट होगये जिनमें होस्टलों में रहने वाले कई हजार शरणार्थी बच्चे भी थे । एक विचित्र बात यह हुई कि बम की चमक ने पक्की इमारतों की दीवारों पर वृक्षों की छायाओं को अंकित कर दिया, और सूमीतोमो घाट की सीढ़ियों पर एक महिला की अमिट छाया उतर आई, जबकि खुद महिला के शरीर की एक चिन्दी भी कहीं नहीं दिखाई देती थी। समाचार पत्रों पर रोक लगादी गई कि हिरोशीमा के बारे में कोई समाचार न छापें ।

"अमरीकी क्या कह रहे हैं ?"

"खुद प्रेजीडेण्ट ने रेडिओ से घोषणा की है कि एक नये किस्म के, ऐटमी, बम का प्रयोग किया गया है।"

मैंने गरदन हिलाकर सहमति प्रकट की।

"तो यही वह आपरेशन सिलवर डिश है। मेरा खयाल था कि वे कहीं सेनाएँ उतारने वाले हैं......तो यह उनकी आखिरी चाल है। लेकिन इस चाल को चलने का यह तो कोई मौका नहीं ?"

"अफवाह है कि अमरीकी टोकियो की खाड़ी में सेनाएँ उतारना चाहते हैं," जिनतान ने कहा,—"पूर्वी जिले के कुछ स्टाफ अफसरों के मुँह से मैंने यह सुना है था।"

हिल्डा के पीछे छिपे उद्देश्य को,—अमरीका के प्रेजीडेण्ट ट्रूमन ने बड़े प्यार से हिरोशीमा बम का यह नामकरण किया था,—उस समय न तो मैं समझ सका था, और न ही जिनतान। लेकिन अब हम भी वह बात जानते हैं जो कि प्रेजीडेण्ट को पहले से मालूम थी : यह कि दो दिन बाद रूस का भी युद्ध में प्रवेश हो जायगा और हमें जल्दी-से-जल्दी पराजित करने में रूसी कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। ऐसी स्थिति में, स्पष्ट ही, जापान पर ऐटम बम गिराने में कोई तुक नहीं थी।

यह छोटा सा-बम जिसका आकार बेसबाल से कुछ ही बड़ा था और जो छै अगस्त १९४५ को जापान के हीरोशीमा नगर से आधा किलोमीटर ऊपर आकाश में फूटा था, किसी युद्धनीति से प्रेरित होकर नहीं, बल्कि राज-

नीतिक उद्देश्यों को सामने रखकर गिराया गया था।

लेकिन इन सब बातों से काफी बाद तक हम सर्वथा अपरिचित रहे।

[३]

अपने कमरे में लौट कर मैंने मच्छरदानी तानली, और नींद लेने के लिए काउच पर लेट गया। वह एक दम घोटने वाली रात थी। हवाई आक्रमण के खतरे का भोंपू सुनकर मैंने पर्दे गिरा दिये और कमरे का वातावरण भट्ठी की भाँति गरम हो उठा। मैं इमारत से बाहर नहीं निकला। कारण कि इधर कुछ दिनों से अमरीकियों ने शाही निवास-स्थानों पर बम गिराना बन्द कर दिया था। करीब चालीस मिनट तक हवाई आक्रमण चलता रहा।

रात के दो बजे के करीब मुसोलिनी ने मुझे जगा दिया। मच्छरदानी को हटाकर वह मेरी टाँगों को झंझोड़ रहा था। उसके पीछे आक्टोपस का एडी कप्तान मिकामी खड़ा था। वह अपने हाथ में एक लैम्प लिये था। उसकी मुद्रा कुछ इतनी अजीब थी कि मैं एकदम उछलकर खड़ा हो गया और तकिये के नीचे से अपना तावीज और रिवाल्वर मैंने निकाल लिया।

"क्या उन्होंने सेनाएं उतार दी हैं? क्या हमला शुरू हो गया है?" मैं ने विचलित स्वर में पूछा।

मुसोलिनी ने बुदबुदा कर कुछ कहा, और अपनी आस्तीन से अपना मुँह पोंछने लगा। मैंने तेजी से कपड़े पहने, और दरवाजे की ओर लपका।

"जल्दी चलो, देर न करो!"

लेकिन उन दोनों ने अत्यन्त विचित्र व्यवहार का परिचय दिया। मुसोलिनी काउच पर गिर गया, मेरे पंखे को उसने उठा लिया और उसे धीरे-धीरे अपने सिर पर झलने लगा। मिकामी भी, जो एक छैला-टाइप आदमी था और सिर में डालने के तेलों पर जान देता था, बैठ गया और उसने बुदबुदाकर कुछ कहा। मैं झुंझला उठा।

"तुम क्या बुदबुदा रहे हो ? तुम्हारी जुबान को क्या लकवा मार गया है ?"

"शुरू हो गया ......!" आखिर मुसोलिनी के मुंह से निकला, और, अपनी आँखें बन्द कर, फिर काउच पर ढह गया।

"शुरू हो गया," मिकामी ने फुसफुसाकर कहा और सोफा के ऊपर लटके हुए नक्शे की ओर संकेत किया। यह मंचूरिया और पूर्वी साइबेरिया का नक्शा था।

वह अब शुरू हो गया था। बीस वर्षों से जिस सपने को साम्राज्य के हम सैनिक अपने हृदयों में संजोये थे, वह अब सच हो रहा था। रूस से युद्ध शुरू हो गया था।

मिकामी इतना अधिक विचलित था कि अपनी बातों में कोई तारतम्य नहीं रहा था। कैसे क्या हुआ, उसने मुझे बताना शुरू किया। आधे घंटे पहले एक रिपोर्ट आई थी कि मंचूरिया की सीमाओं पर लड़ाई शुरू हो गई है। सोवियत संघ भी तीन राष्ट्रों के साथ युद्ध में शामिल हो गया है और जापान को घुटनों के बल गिराने का उसने फ़ैसला कर लिया है।

अब सब कुछ ई-बम के गिराने या न गिराने पर निर्भर करता था। हैडक्वार्टर्स के सेना-विभाग में ड्यूटी-पर-तैनात अफसरों के सिवा और कोई नहीं था, और उनसे सिवा इसके और कुछ नहीं मालूम हुआ कि 'शुरू हो गया है।" बस इतना ही, अधिक कुछ नहीं। मैंने एडज्यूटेन्ट जेनरल के आफिस में फ़ोन किया। लेकिन जिनतान वहाँ नहीं मिला। हम मंत्रालय की ओर चल दिये। रेडिओ ने अभी तक कुछ नहीं बताया था, लेकिन फिर भी वह समाचार आंधी की भांति तेज गति से फैल गया था। इची-गायदाई के सामने ढलुवान मैदान मोटरों और मोटर साइकलों से अटा था।

युद्ध शुरू होने से लेकर अब तक मंत्रालय में इतनी भीड़ पहले कभी नहीं हुई थी, सो भी गई रात के इस पहर में। निचले तल्ले के दूसरे छोर पर स्थित गलियारे में, जहाँ मंत्री के सीनियर एडी और प्राइवेट सेक्रेटरी के आफिस थे, लोग मानो चुम्बक से खिंचे हुए चले आरहे थे। हर व्यक्ति

जो मंत्रालय में पहुँच सकता था, वहाँ मौजूद था, और गलियारा दफ्तर जाने के समय भूमिगत स्टेशन पर जमा भीड़ की भाँति लोगों से भरा हुआ था।

जेनरल उमेज़ू ने जो क्वान्तुङ्ग सेना के कमाण्डर-इन-चीफ यामादा से अभी सीधे टेलीफोन पर बातें करके आये थे, मंत्रणा-गृह में प्रवेश किया जहाँ एक संकट-कालीन कान्फ्रेन्स चल रही थी। फील्डमार्शल सुगीयामा और हाटा, सैन्य-परिषद् के सभी सदस्य, पूर्वी क्षेत्र के कमाण्डर जेनरल तनाका तथा हाई कमाण्ड के अन्य सदस्य कान्फ्रेन्स में बुलाये गये थे।

ऊमस से भरे गलियारे में हम रात-भर प्रतीक्षा करते रहे। हमारी बेचैनी का कोई अन्त नहीं था। सुबह तक कान्फ्रेन्स चली। जब जेनरल मंत्रणा-गृह से बाहर निकले तो हमने उन्हें घेर लिया, और उन पर सवालों की बौछार लगा दी। अनुशासन और तहजीब के सभी नियम हम भूल गये। समाचार-पत्रों के संवादाताओं की सिर पर चढ़े आने वाली एक भीड़ की भांति हम मालूम होते थे। जेनरलों ने खामोशी के साथ हम सबको एक किनारे कर दिया।

हवाई सेना के चीफ तेरामोटो ने अफसराना अन्दाज में कहा,—"हम सभी कील-कांटों से दुरुस्त हैं!"

ग्यारहवीं सेना के कमाण्डर ने, जो उसके साथ-साथ चल रहा था, बुद-बुदा कर कहा,—"असली युद्ध तो अब अब शुरू हो रहा है।"

एक नाटे, तुन्दयल और बड़ी-बड़ी आँखों वाले जेनरल; तेरहवीं सेना के कमाण्डर दोईहारा ने प्रसन्नता से छलछलाते हुए चिल्लाकर कहा,—"क्वान्तुंग सेना दुनिया में बेजोड़ है। उसे कोई नहीं हरा सकता!"

सहसा समूची इमारत अफसरों से गूँज उठी : प्रथम सेना अब गोर-देकोवो क्षेत्र में युद्ध कर रही है; सत्रहवीं सेना की "दीर्घजीवी" यूनिट ने पोस्येत पर कब्जा कर लिया है; लैफ्टीनैन्ट जेनरल हरादा की द्वितीय हवाई सेना ने पूरी ताकत से चीन पर आक्रमण किया है, और "निर्मल हृदय" यूनिट ने ब्लादिवोस्टोक-खबारोवस्क रेलवे को काट दिया है।

मैंने आँखें बंद कर अपना साँस रोक लिया। अपने जीवन में पहली

बार आन्तरिक हृदय से एक साथ सभी-देवताओं की वन्दना में मैंने माथा झुकाया। तोपों की सेना का एक कर्नल मेरी बगल में खड़ा था। फुसफुसा कर उसने मेरे कान में कहा, "हमारे टैंक इस समय मंगोलिया पार करते हुए बैकाल झील की ओर बढ़ रहे होंगे।"

कोई पाँच मिनट बाद मैंने देखा कि मिकामी गलियारे के दूसरे छोर से लोगों की भीड़ के बीच धकिया कर अपना मार्ग बनाता हुआ मेरी ओर आ रहा है। वह पसीनों में बुरी तरह तर था, और उसके बाल बुरी तरह अस्त-व्यस्त थे।

"हमारी सेनाओं ने आमूर नदी के पार और ब्लागोपेश्चेयस्क पर कब्जा करलिया है।" उसने फुसफुसाकर मुझसे कहा,—"खबारोवस्क चीता लाइन काट दी गई है।"

और आखीर वह अफवाह भी सुनाई दी जिसकी हम सब प्रतीक्षा कर रहे थे : हमारे गुप्त अस्त्र-ई-बम का प्रयोग शुरू हो गया है। साईबेरिया के सत्रह नगरों पर बम गिराये गये हैं।

भीड़ में से कोई चिल्लाया,—"हमारे सम्राट, बानजाई!"

आल्हाद में भर हम सब ने इस नारे को उठा लिया।

अब केवल इन अफवाहों की पुष्टि की प्रतीक्षा थी।

[४]

लेकिन अफवाहों की पुष्टि नहीं हुई। हैडक्वार्टस की प्रातःकालीन विज्ञप्ति में पिछले चौबीस घंटों के भीतर केवल होएडो बन्दरगाह के केन्द्रीय और पच्छिमी हिस्से पर, क्यूशू और टोकियो पर, अमरीकियों की बम-बर्षा का उल्लेख था। नये मोर्चे का जिक्र तक नहीं था। खबारोवस्क रेडियो से जापानी भाषा में प्रसारित समाचारों में भी सीमा पर युद्ध होने की कोई खबर नहीं थी।

साढ़े दस बजे सर्वोच्च-युद्ध परिषद की बैठक बुलाई गई। प्रधान मंत्री सुजूदो और पर-राष्ट्र मंत्री तोगो ने बताया कि अब, सोवियत संघ की स्थिति

के स्पष्ट हो जाने के बाद, सफलता के साथ युद्ध का अन्त करने की अन्तिम आशा भी धूल में मिल गई है। इन परिस्थितियों में युद्ध चलाना अपना सब कुछ आग में झोंक देने के समान होगा। राज्यवंश का भाग्य खतरे में है।

बैठक समाप्त होने के ठीक पहले नागासाकी से एक रिपोर्ट आई कि वहाँ सुबह के आठ बजे, एक और ऐटम बम गिराया गया है। इस बार नगर के बाहरी छोर जहाँ एक डाक्टरी इन्स्टीच्यूट, एक अनाथालय और एक गिरजा है, क्षतिग्रस्त हुये हैं।

अनामी की बगल में बैठे प्रधान मंत्री ने फुसफुसाकर उससे कहा,—"इस बम के बाद अब और कुछ सोचने के लिए नहीं रह जाता!"

"अठारहवीं सेना के हैडक्वार्टर की रिपोर्ट है कि उसे कोई नुक्सान नहीं पहुँचा," अनामी ने भी फुसफुसाहट मे उत्तर दिया,—"केवल नागरिक मारे गये। नतीजे निकालने में हमें जल्दी नहीं करनी चाहिए।"

दोपहर के दो बजे परिषद् की बैठक खत्म हुई। बैठक कोई निश्चय नहीं कर सकी।

ढाई बजे मंत्रि-मण्डल की विशेष बैठक बुलाई गई। बीच में एक क्षण का भी अवकाश लिए बिना रात के दस बजे तक चलती रही। बैठक के दौरान में एक समाचार मिला कि सोवियत-सेनाओं ने पच्छिमी दिशा से मंचूरिया में प्रवेश कर लिया है,—मंचूरिया स्टेशन और तीन नदियाँ जिले के क्षेत्र में वे आगई हैं। साथ ही पूर्व में, हूँगचुन के दक्खिनी क्षेत्र में भी उनका प्रवेश हो गया है। सोवियत टैंकों ने हमारी सीमावर्ती किलेबन्दी भंग कर दी है।

अधिकांश मंत्रियों का मत था कि युद्ध को और अधिक खींचना राज्य वंश के लिए खतरनाक हो सकता है।

ग्यारह बजकर पचपन मिनट पर, सम्राट की अध्यक्षता में, शाही भवन में एक संकटकालीन बैठक शुरू हुई। सर्वोच्च युद्ध-परिषद् के सदस्यों के अलावा प्रीवीकौन्सिल के अध्यक्ष भी बैठक में शामिल थे। युद्ध-मंत्री ने

कहा,—"परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से युद्ध का सफलता के साथ अन्त करने के लिए यह जरूरी है कि अमरीका की स्थिति के स्पष्ट होने तक प्रतीक्षा की जाय, और इस बीच मंचूरिया में युद्ध जारी रखा जाय।

युद्ध-मंत्री की रिपोर्ट सुनने के बाद सम्राट ने सिर हिलाकर अपनी सहमति प्रकट की।

इसी समय युद्ध-मंत्री के हाथ में क्वान्तुंग सेना के कमाण्डर-इन-चीफ का एक सन्देश दिया गया। सोवियत टैंक तेजी से बढ़ रहे थे। तीन दिशाओं से हार्बिन बन्दरगाह के घिर जाने का खतरा पैदा हो गया था, और सेना नम्बर ७३१ को बन्दरगाह खाली करने के आदेश दे दिये गये थे।

जेनरल यामादा का तार पढ़ने के बाद सम्राट ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और एक संक्षिप्त अवकाश के बाद सरकार को आदेश दिया : "मित्र-ताकतों से मालूम करो कि अगर जापान ने शान्ति की शर्तें स्वीकार कर लीं तो क्या इसका उसकी राज्य-प्रणाली पर असर पड़ेगा?

ढाई बजे बैठक समाप्त हुई। बहुत ही गर्म, चान्दनी खिली रात थी। उस रात एक भी अमरीकी वायुयान नहीं आया। शाही हौज से मच्छरों के दल ने अवश्य सभा-महल पर धावा बोल दिया था। जब तक मीटिंग चली, मच्छरों को उड़ाने के लिए तालियों की झुंझलाहट भरी-पटापट सुनाई देती रही। सिगरेट का धुआँ मच्छरों को भगाने में सहायक हो सकता था, लेकिन सम्राट के सामने सिगरेट पीना वर्जित था।

पर-राष्ट्र मंत्री ने सम्राट की इच्छा का पालन किया। स्वेडन और स्वीजरलैंड में हमारे राजदूतों के पास दुश्मन की ताकतों से यह आश्वासन लेने के आदेश भेज दिये गये कि युद्धोत्तर काल में शाही शासन-तंत्र को कोई आँच नहीं पहुंचेगी।

इन वार्ताओं को शेष सारे देश से एकदम छिपाकर रखा गया। सुबह के पत्रों में युद्ध-मंत्री का एक बयान प्रकाशित हुआ जिसमें साम्राज्य के नागरिकों से एक जान होकर युद्ध जारी रखने की अपील की गई थी।

[५]

सोवियत टैंक बढ़ते आरहे थे। वे पश्चिम में हालहिन गोल, उत्तर में पेइटो और पूर्व में पोग्रानिचनाया, संचागो और टूनिंग को पार कर चुके थे। प्रथम सैन्य-पाँतों को भंग कर मिंगफान की ओर तेज गति से बढ़ रहे थे।

बारह अगस्त को रात के दो बजे अमरीकियों ने रेडिओ से अपने पर-राष्ट्र मंत्री बर्नेस का वक्तव्य प्रसारित किया, जिसमें कहा गया था कि जापान के आत्म-समर्पण के बाद सम्राट के अधिकार जापान-स्थित मित्र ताकतों के सर्वोच्च कमाण्डर की सत्ता द्वारा नियंत्रित रहेंगे। हमारे ..राष्ट्र-मंत्री ने सम्राट के पास यह जवाब भेज दिया। सम्राट ने शाही परिवार के सभी लोगों को आमंत्रित किया और मंचूरिया में युद्ध की स्थिति के बारे से रिपोर्ट मंगवाई। शत्रु ने आमूर नदी के दक्खिनी तट के लोपेई और लहासुसू पर, उस्सूरी नदी के पच्छिमी तट पर हुतोउ और पच्छिमी मंचूरिया के मोर्चे आरगून पर कब्जा कर लिया था। शाही परिवार के सभी सदस्य अमरीका और ब्रिटेन से समझौता करने के पक्ष में थे।

इसके शीघ्र बाद मंत्रि-मण्डल की भी एक जरूरी बैठक बुलाई गई। जेनरल अनामी ने रिपोर्ट दी कि सेना ने गुस्से के साथ शान्ति की तमाम बातों को रद्द कर दिया है क्योंकि शान्ति का अर्थ है आत्मसमर्पण। और ऐसी हालत में जबकि अमरीका से मानने लायक शर्तों पर शान्ति करने की गुंजायश मौजूद है, रूस के सामने आत्म-समर्पण करना साम्राज्य के लिए आत्म-घाती होगा।

मंत्रि-मंडल की बैठक से कुछ ही पहले सैनिक अफसरों के छोटे-छोटे दलों ने ट्रकों पर नगर में घूम-घूम कर पर्चे बाँटना शुरू कर दिया था। इन पर्चों में मौजूदा गैर फौजी सरकार को उलट कर फौजी सरकार कायम करने का आह्वान किया गया था। फौजी हल्कों में यह चर्चा जोरों से गर्म थी कि क्वान्तुंग सेना ने जवाबी हमला शुरू कर दिया है।

मंत्रि-मण्डल की बैठक गई रात तक चलती रही। वह किसी निश्चय पर नहीं पहुँच सकी। आधी रात के समय नये समाचार मिले। सोवियत टैंक अब हिन्गान पर्वतों को पार कर चुके थे। होलून-आरशान किलेबन्दियों को उन्होंने तोड़ दिया था। इसके बाद एक तार और आया। तार संक्षिप्त था, पर उसका कोई मतलब नहीं निकलता था। मालूम होता था कि क्वान्तुङ्ग सेना के अधिकारियों ने संदेश भेजते समय कोड के गुप्त नम्बरोंको घुला-मिला दिया है। इसके दोनों ही मतलब हो सकते थे : या तो स्थिति बहुत अच्छी है, या फिर वह बहुत खराब है।

अगले दिन, तेरह अगस्त को, दिन के दो बजकर पैंतीस मिनट पर सर्वोच्च युद्ध-परिषद की बैठक हुई। सेना के हाई कमाण्ड के प्रतिनिधि ने कहा कि आखिरी क्षण तक युद्ध करना जरूरी है, ताकि सम्मानपूर्ण समझौता किया जासके। प्रधान मंत्री ने जब मंचूरिया के युद्ध की स्थिति जानने के लिए अनुरोध किया तो जेनरल अनामी आँखें उठाकर दूत की ओर देखने लगा, और बोला कि मंचूरिया के मोर्चे की विस्तृत रिपोर्ट नहीं दी जासकती क्योंकि इसमें सैनिक भेद प्रकट होने का खतरा है।

इसके बाद मंत्रिमण्डल की एक और जरूरी बैठक हुई। यह साँझ तक चलती रही, मगर फिर किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सकी। उस दिन केवल एक ही रिपोर्ट मिली थी। वह यह कि सोवियत टैंक बढ़ते जा रहे हैं। शीघ्र ही सोलून, हूलिन और मुदानकियांग में उनका प्रवेश हो जायगा।

उसी दिन, गई रात, कात्सूमाता और मीने मुझसे मेरे आफिस में मिलने आये। भयानक समाचार वे लाये थे,—वह यह कि पिंगफान की प्रयोग शालाओं को डिनेमाइट से उड़ा दिया गया है।

"रूसी तीन दिन के भीतर २६० किलोमीटर बढ़े हैं," मीने नें बैठे हुए गले से फुसफुसाकर कहा।

"हमारी सारी आशाओं का आधार अब केवल मोगाटोन की यूनिट नम्बर १०० रह गई है," मैंने कहा,—"लेकिन वह भी शीघ्र खतरे में पड़

सकती है। जितनी जल्दी हो, उसका सारा साज-सामान जापान ले जाना चाहिए।"

"लोगों को मंचूरिया की स्थिति मालूम हो चुकी है," कात्सूमाता ने कहा,—"अफवाह गर्म है कि अब से कुछ ही घंटे बाद होक्काइडो और त्सूरूगा क्षेत्र में रूसी सैनिक उतरने वाले हैं। इचीगायदाई के अधिकारियों में चर्चा है कि अमरीका एक-दो दिन के बाद ही अल्टीमेटम देनेवाला है।"

कुछ क्षण तक खामोशी छाई रही। फिर मैंने कहा,—"रूसी अपनी सेनाएँ नहीं उतार रहे हैं........यह निरी बकवास है। अल्टीमेटम, सो वह एक दूसरी बात है।"

"कहीं ऐसा तो न होगा कि हमें अपने बम का प्रयोग तक करने का अवसर न मिले!" कात्सूमाता ने फुसफुसाकर कहा,—"वह अभी तक तैयार क्यों नहीं हुआ? आखिर वह बेवकूफ इशी किस सोच में मुब्तिला है?"

"वह बम ऐसा नहीं है जिसे पहले से बनाकर रखा जा सके," मैंने कहा,—"ऐन वक्त पर वह आयगा। नहीं तो वह ताजा नहीं रहेगा, और उसकी कारगरता खत्म हो जायगी। अब मोगोतोन की प्रयोगशाला ही हमारा सहारा है। अगर वह भी जाती रही तो..........."

कात्सूमाता ने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढक लिया और रोने लगा। मैंने भी रोने की स्थिति में पहुंचा गया था।

[६]

चौदह अगस्त की सुबह फिर अमरीकी वायुयानों का धावा हुआ, लेकिन इस बार बमों की जगह उन्होंने पर्चे गिराये। ये पर्चे उस आश्वासन का जवाब थे जो कि जापान की सरकार ने दुश्मन की ताकतों से माँगा था।

दस बजकर पैंतालीस मिनट पर, सम्राट की अध्यक्षता में, शाही बम-बचाव-घर में एक कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इस कान्फ्रेंस में सर्वोच्च परिषद के छै सैनिक सदस्यों के अलावा सभी मंत्री और प्रीवीकौन्सिल के अध्यक्ष भी शामिल हुए। पिछली समूची रात भी शाही अफसरों की एक

कान्फ्रेन्स चलती रही थी। और यह स्वाभाविक भी था। कारण कि अन्तिम क्षण सिर पर आ पहुँचा था, और उसके लिए पूरी तैयारी करनी थी।

सम्राट ने, कहना न होगा कि शाही अफसरों से परामर्श पाकर क्वान्तुंग सेना के कमाण्डर-इन-चीफ को नवीनतम रिपोर्ट सुनाने का आदेश दिया। रिपोर्ट देने के सिवा अब और कोई चारा नहीं था। और सौभाग्यवश क्वान्तुंग सेना के आफिस कर्मचारियों ने कोड नम्बरों के साथ इस बार कोई घपला नहीं किया था। शुरू से अन्त तक रिपोर्ट का प्रत्येक शब्द अपनी पूरी भयानकता के साथ स्पष्ट था। सोवियत टैंकों का बढ़ाव जारी था। और चूंकि सिंगकिंग के घिरने का खतरा पैदा हो गया था, इसीलिए मोगोतोन में यूनिट नम्बर १०० की तमाम कीटाणु-बमों की निर्माणशालाओं को यहाँ से हटा दिया गया था।

युद्ध चलाने के पक्ष और विपक्ष में तमाम तर्कों को आखिरी बार सुनने के बाद सम्राट ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और अनेक लम्बी तथा प्रत्यक्षतः अन्तहीन मिनटों तक इसी प्रकार निश्चल बैठे रहे। फिर ठीक दोपहर के समय सम्राट ने रूमाल निकालकर अपनी आँखों को ढक लिया और अपने निश्चय को वाणी प्रदान की :

"युद्ध समाप्त करने के बारे में शाही फरमान का मसौदा तैयार करो।"

सम्राट के निर्णय को सबने खड़े होकर सुना, और दोनों हाथों से अपने चेहरों को ढक लिया।

[७]

आज दिन तक, बावजूद इसके कि साढ़े चार साल बीत चुके हैं, उन भयानक दिनों को जब भी मैं याद करता हूँ तो मेरा हृदय काँप उठता है। उन दिनों ऐसा मालूम होता था मानो साम्राज्य का अन्त होने जा रहा है, स्वर्ग के समान हमारा देश मानो सदा के लिए इतिहास के पन्नों से मिट रहा है, ठीक उसी प्रकार जैसे कि प्रशान्त के द्वीप भूकम्प के कारण जब-तब समुद्र के गर्त में समाते रहते हैं।

आज दिन भी मेरे लिए यह रहस्य एक पहेली बना हुआ है कि मुझ जैसा गम्भीर व्यक्ति भी किस प्रकार उन दिनों इतनी नासमझी का शिकार हो गया था। १९४५ के मध्य-अगस्त में उन भयानक दिनों की घटनाओं की जब मैं याद करता हूं तो ऐसा मालूम होता है मानो किसी दुस्वप्न के बिखरे हुए टुकड़े मेरी आँखों के सामने तैर रहे हों।

उस रात की और उसके बाद अगली सुबह की घटनाओं का एक सिलसिले से वर्णन करना असम्भव है। कहते हैं कि जेनरल अनामी को चाँद में कात्सूरा वृक्ष दिखाई दिया था। एक सफेद लोमड़ी उस पर बैठी थी, और सिर हिला-हिला कर वह उसे बुला रही थी। हो सकता है कि उसे चाँद में सच-मुच कात्सूरा वृक्ष दिखाई दिया हो, क्योंकि यह विश्वास हमारे यहाँ प्राचीन काल से चला आ रहा है, लेकिन सफेद लोमड़ी का दिखाई देना निश्चय ही युद्ध-मंत्री की उस मानसिक गड़बड़ का नतीजा था जो कि तेजी के साथ बढ़ रही थी। अन्तिम क्षण के लिए तैयारी की गहरी चिन्ता और थकान के कारण उनका मस्तिष्क विचलित होगया था।

उन दिनों के चहुँमुखी तनाव तथा लाख सिर पटकने पर नींद न आने की शिकायत ने मेरे मस्तिष्क को भी कुछ गड़बड़ा दिया था। अपने आत्मसमर्पण के दिन पन्द्रह अगस्त से पहली रात को मैंने जो हरकतें कीं, सिवा इसके उनका मुझे और कोई कारण नहीं दिखाई देता। और शायद इसीलिए मेरी स्मृति उन घटनाओं के कुछ इने-गिने टुकड़ों को ही याद रख सकी है।

मुझे याद है कि मैं जिनतान के पास गया था,—यह जानने के लिए के ठीक टोकियो के बाहर तोकोरोदजावा हवाई अड्डे पर रूसियों के उतरने की अफवाह कहाँ तक सही है। मुसोलिनी और जीवन-गारद के मेजर हतानाका भी उस समय वहाँ मौजूद थे। उन्होंने कहा कि यह अफवाह सही है। इसके बाद जिनतान ने यह भी बताया कि टोकियो गैरीजन के अफसरों के एक गुप्त संगठन ने शहरी लोगों की मौजूदा सरकार का तख्ता उलटने और सम्राट से रूस के खिलाफ युद्ध जारी रखने का फरमान निकलवाने का फैसला किया है। सरकार का तख्ता पलटने का समय रात के ग्यारह बजे रखा गया है।

जिनतान ने जब मुझसे पूछा कि क्या मैं उनका साथ दूँगा तो मैंने उत्तर दिया,—"हाँ।"

मेजर हतानाका ने चेताया कि विद्रोह में सफलता न मिलने पर सिवा आत्महत्या करने के और कोई चारा नहीं रहेगा। इसलिए जरूरी है कि अपनी जेब में एक निजी वक्तव्य और दफनाने आदि के खर्च के लिए कुछ धन मौजूद रहे।

"चाहो तो अपने अन्तिम वक्तव्य में किसी कविता की पंक्तियाँ भी जोड़ सकते हो," मुसकराते हुए उसने सलाह दी,—"और अपनी मृत्यु को किसी अच्छे-से बौद्ध नाम के साथ जोड़ने के बारे में भी सोचना।"

जिनतान ने उसे बीच में क्रुद्ध भाव से ही रोक दिया। "तुम केवल असफलता की ही बातें क्यों करते हो? इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हम सफल होंगे।" उसने मेरा कंधा थपथपाया, और बोला,—"जेनरल अनामी के सरकार बना लेने और यह घोषणा करने के बाद कि जापान की समूची आठ करोड़ जनता मरने के लिए कटिबद्ध है, अमरीका कहेगा कि बाबा बस करो, और यह लो, शान्ति-सधि पर दस्तखत कर दो। इसके बाद देखना, क्या गुल खिलते हैं।"

उस समय हम में से किसी को भी यह संदेह नहीं हुआ कि तोकोरोदजावा हवाई अड्डे पर रूसी सेना उतरने की बात निरी बकवास थी। उन दिनों रूसियों के बारे में हमें हर अफवाह सच मालूम होती थी। अगर कोई मुझसे यह कहता कि सोवियत टैंक ओसाका की ओर बढ़ रहे हैं तो मैं इस समाचार को भी, बिना किसी दुविधा के, यंत्रवत सच मान लेता।

लेकिन बहुत शीघ्र ही मुझे इस अफवाह के स्रोत का पता लग गया। टोकियो के पास इनोगाशीरा देहात में एक गुमनाम वायुयान ने पर्चे गिराये थे। इन पर्चों में सोवियत सेनाओं के आकाश से उतरने की और यह बात छपी थी कि सरकार जापान की राजधानी को रूसियों के हवाले करना चाहती है। यह पता नहीं चला कि वह वायुयान किस का था। यह तथ्य कि वह हमारा अपना हमाकिस वायुयान था अथवा अमरीका पी-१९, किसी ने जानने की कोशिश नहीं की।

[८]

रात के ठीक ग्यारह बजे सम्राट शाही महल के एक कमरे से बाहर निकले, माइक्रोफोन के पास पहुँचे और शाही फरमान को पढ़ना शुरू किया :

"विश्व की घटनाओं और अपने साम्राज्य की मौजूदा परिस्थितियों पर गम्भीरता के साथ विचार करने के बाद हमने आज की हालत का अन्त करने के बारे में एक असाधारण कदम उठाने का फैसला किया है। अपनी स्वामीभक्त और नेक प्रजा के सामने हम ऐलान करते हैं कि आज के दिन हमने अपनी शाही सरकार को अमरीका, ब्रिटेन, चीन और सोवियत संघ की संयुक्त घोषणा को मंजूर करने की उन्हें सूचना देने का आदेश दिया है।

"........साम्राज्य के लिए स्वतंत्र नीति और पूर्वी एशिया में शान्ति हासिल करने के एक मात्र लक्ष्य से अनुप्राणित होकर हमने अमरीका और ब्रिटेन के खिलाफ युद्ध की घोषणा की थी। अन्य देशों की सर्वप्रभुता का उल्लंघन करने या उनके इलाकों पर अधिकार करने का हमारा कोई इरादा नहीं था।

"जब हम अपनी वफ़ादार प्रजा का ध्यान करते हैं, जिसने युद्ध के मोर्चे पर लड़ते और पिछवाड़े में अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपनी जान दी, जब हम उन सब लोगों के बारे में सोचते हैं जिन्हें मृत्यु का शिकार होना पड़ा, तो हमारा कलेजा मुंह को आने लगता है।

"हम अपनी प्रजा की सच्ची भावनाओं को जानते हैं, लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में हमारा यह फ़र्ज है कि जो सहा नहीं जा सके उसे भी सहें, जो बरदाश्त नहीं किया जा सके, उसे बरदाश्त करें।"

सम्राट के इस भाषण का रिकार्ड भरा गया। बिना पोर्टफोलिओ के एक मंत्री शिमोमूरा, सूचना-विभाग के डाइरेक्टर, शाही मंत्रालय के कई सदस्य और रेडिओ के अनेक अफसर इस अवसर पर मौजूद थे। रिकार्ड के भर जाने पर उन्होंने मशीन को घेर लिया और रिकार्ड एक हाथ से दूसरे हाथों में जाता हुआ अन्त में किसके पास पहुँचा, यह देखने का किसी को समय नहीं मिला। रेडिओ के लोगों ने आवाज भरने के यंत्र और माइक्रोफोन को जल्दी से बटोरा और मंत्री शिमोमूरा के साथ शाही महल से विदा हो गये।

इस समय रात के ग्यारह बजकर बीस मिनट हुए थे, और इससे ठीक बीस मिनट पहले विद्रोह शुरू हो गया था।

[९]

केवल मुट्ठी-भर अफसरों ने ही विद्रोह में भाग लिया,—प्रमुख रूप से जीवन-गारद के अफसर और अति-दाहिने पंथी संगठनों के कुछ दरजन सदस्य ही इसमें शामिल हुए। शेष ने विद्रोह को व्यर्थ समझा और उसमें कोई योग नहीं दिया। मंचूरिया की बेहद खराब स्थिति की अफवाहों से वे परिचित थे। बाद में इन अफवाहों की पुष्टि भी होगई। सोवियत टैंक तीन दिशाओं से सिनकिंग की ओर बढ़ रहे थे, और क्वान्तुंग सेना के बाजू टूटने लगे थे।

शाही महल के आठों फाटकों पर विद्रोहियों ने अधिकार कर लिया और जीवन-गारद के कमाण्डर लैफ्टीनेन्ट जेनरल गोरी को, विद्रोह में साथ देने से इन्कार करने के कारण, मौत के घाट उतार दिया गया। सम्राट के भाषण के रिकार्ड के लिए हमने एक-एक कोना छान डाला,—ताकि वह रेडियो से प्रसारित न हो सके,—मगर उसे पाने में हम सफल नहीं हो सके।

शीघ्र ही हमें मालूम हुआ कि विद्रोह में टोकियो गैरीजन हमारे साथ नहीं है। पौ फटने के आस-पास युद्ध-मंत्री के अंग-रक्षकों में से एक ने टेली-फोन से हमें सूचना दी कि अनामी और अन्य कितने ही जेनरलों ने आत्महत्या कर ली है।

"और हम सब भी अब महल चौक जा रहे हैं," अंग-रक्षक ने कहा,—"ताकि हम भी अपने इन अफसरों के पथ का अनुसरण कर सकें। राष्ट्रवादी संगठनों के सदस्य और टैकनीकल स्कूल के कुछ छात्र भी हमारे साथ हैं।"

मैं सिर झुकाये सतर खड़ा था। जिनतान ने जब मुझे इस अजीब मुद्रा में देखा तो मेरे हाथ से फोन लेकर खुद सुनने लगा। फिर मुसकरा कर उसने फोन में कहा: "सो तुमने सूर्यकान्तमणि की भांति अपने को चूर-चूर करने का फैसला किया है। अच्छी बात है, हम भी महल चौक पहुँच रहे हैं।

तुम शान्ति से मर सको, यही कामना है।"

जिनतान ने सबको सूचित कर दिया कि जेनरल अनामी की मृत्यु के कारण, जिन्हें कि नयी सरकार का अध्यक्ष बनना था, सत्ता पर अधिकार करने की योजना हो गई है और हम सबने महल चौक में पहुंच कर अपनी जानों को बलि देने का निश्चय किया है।

[१०]

महल चौक। सुबह का समय। सदा की भाँति गम्भीर निस्तब्धता, जो उस दिन और भी अधिक गहरी हो उठी थी। जहाँ-तहाँ, अकेले और समूहों में, एक सी मुद्रा में लोगों के मृत शरीर पड़े थे,—घुटने मुड़े हुए, सिर धरती पर झुका हुआ, मानो शाही महल के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट कर रहे हों प्रत्येक शरीर के पास एक लिफाफा और एक खरीता पड़ा था।

प्रमुख फाटक तक जाने वाले पुल के सामने, लकड़ी के बाड़े के पीछे, पुलिसमैन खड़े थे। उनसे कुछ ही गज दूर खाकी रंग के सादे कपड़े पहने दो आदमी फर्श पर आकर बैठ गये, शाही महल की ओर उन्होंने माथा झुकाया, और एक-दूसरे को गोली मार कर दोनों ने अपना अन्त कर दिया। पुलिसमैनों ने यह देखा, आगे बढ़ कर वे उनके निकट आये, उनके शरीरों को यथाविधि मुद्रा में कर दिया, खरीतों को खून में तर होने से बचाने के लिए एक ओर खिसका दिया, और यह सब करने के बाद वे फिर बाड़े के पीछे लौट गये। राज्य की वफ़ादार प्रजा को अपनी जान देने से रोकने के लिए नहीं, बल्कि व्यवस्था बनाये रखने के लिए वे यहाँ नियुक्त थे।

महल चौक के दूसरे छोर पर, एक चबूतरे की बगल में, कई पांतों में लाशें पड़ी हुई थीं। पांतों में कुल बीस लाशें थीं, सब के घुटने मुड़े हुए, सिर धरती को छूते हुए। पिछली पाँत की लाशों के पास न तो लिफ़ाफे पड़े थे, और न खरीते। दूसरी पांत में पाँच लाशों के पास लिफाफे दिखाई दिए। इन लिफ़ाफों पर जिनतान, मुसोलिनी, हुतानाका, कात्सूमाता और मीने के नाम थे।

उलटी मुद्रा में पड़े होने के कारण, या फिर मृत्यु के ही किसी असर के कारण, अपने मित्रों का आकार-प्रकार मुझे कुछ अजीब ढंग से बदला हुआ दिखाई दिया। जिनताम जीवित अवस्था के मुकाबिले में अब अधिक लम्बा मालूम होता था, और मुसोलिनी जैसे अधिक हृष्ट-पुष्ट हो गया था। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि लिफाफों पर ठीक उनके ही नाम लिखे थे, और जिनताम के शरीर के नीचे से बाहर निकली तलवार की हाथी दाँत की मूंठ भी मेरी जानी-पहचानी थी। टोपी उतार कर मैंने अपना सिर झुका लिया। फिर मैंने अपने लिए भी एक जगह चुनने के बारे में सोचा। कात्सूमाता के पीछे एक लाश पड़ी थी जिसकी बगल में न तो कोई तलवार दिखाई देती थी, और न ही कोई लिफाफा। उसके पास मैंने अपनी तलवार, रिवालवर और लिफाफा रख दिया। मेरा इरादा जिनताम और कात्सूमाता के बीच अपनी जान देने का था।

इसी क्षण मुझे अपने पीछे किरच की आवाज सुनाई दी। तीन कैडेट आगे बढ़ आए, उन्होंने मुझे सलामी दी और फाटक की ओर माथा झुकाकर धरती पर वे बैठ गये। उनमें से एक ने फ्लास्क का मुंह खोला, अपना गला उसने तर किया और फिर फ्लास्क को अपने दूसरे साथी की ओर बढ़ा दिया।

मैंने महल चौक की दूसरी ओर देखा। टेकनीकल स्कूल के छात्रों और राष्ट्रवादी संगठनों के युवकों का एक दल वहाँ मौजूद था। उनमें से कुछ धरती पर बैठ चुके थे, और कुछ अभी तक खड़े थे।

सहसा धरती पर बैठे हुओं में से एक बगल के बल लुढ़क गया, उसकी तलवार उसके पेट में धँसी हुई दिखाई दी, और जोर से एक चीख मार कर वह तड़फड़ाने लगा। फिर एक के बाद एक तेजी से दो बार गोलियों के चलने की मुंहबन्द आवाज सुनाई दी, और अगली पाँत में खड़े दो व्यक्ति गिर पड़े। लेकिन पीछे खड़े छात्र स्पष्ट ही कुछ हिचकिचा रहे थे। मैंने इशारे से कहा कि जल्दी करें, लेकिन उन्होंने मुझे नहीं देखा। दौड़कर मैं उनके पास पहुँचा, और चिल्लाकर मैंने कहा,—"सोच क्या रहे हो, जल्दी करो!"

किसी ने मेरी बात का जवाब नहीं दिया। वे एक-सरे से सट करदू

खड़े थे। उनमें सब से बड़े की आयु सोलह साल से अधिक नहीं होगी।

"बैठकर अपना कर्तव्य पूरा करो," शान्त स्वर में मैंने आदेश दिया,—"तोकोताई के शुभ नाम को कलंकित न करो।"

इस बीच कुछ लोग वहाँ और जमा हो गये। बे-मतलब, केवल यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है, ये लोग यहाँ खड़े हो गये थे। उनमें से कुछ मैली बनियानें और घुटन्ने पहने हुए थे, कुछ मजदूरों की पोशाक में थे। उनकी कमीजों के कालर पर शिबाऊरा फैक्टरी की छाप लगी थी।

"जल्दी करो", चश्मा लगाये और माथे पर एक सफेद पट्टी बाँधे युवक से मैंने कहा,—"अपने साथियों के सामने एक सच्चे जापानी वीर की मिसाल रखो। क्या तुमने अपना खरीता और धन तैयार कर लिया है?"

"नहीं......और हम अपनी राइफलें भी पीछे छोड़ आये हैं," अपनी आँखों को ओट में करते हुए उसने कहा,—"अपनी तलवारें भी हम अपने साथ नहीं लाये हैं।"

"किसी के पास चाकू है?"

एक संक्षिप्त निस्तब्धता के बाद उनमें से एक ने जवाब दिया,—"हाँ है; लेकिन उससे कोई लाभ नहीं। पेन्सिल बनाने का चाकू है।"

मैंने अपनी कमरवाली जेब में हाथ डाला, लेकिन मेरा फालतू रिवाल्वर उसमें नहीं था। जब मैंने अपना हाथ जेब से बाहर निकाला तो कोई चीज जमीन पर गिर पड़ी। यह एक ताबीज था। धरती से उठाकर मैंने उसे फिर अपनी जेब में रख लिया।

"ये युवक मरना नहीं चाहते," मेरी पीठ पीछे से किसी ने कहा,—"नाहक तुम उन्हें मजबूर करते हो?"

मैंने घूमकर देखा। मुसी हुई टोपी और चिकनाई के दाग लगी कमीज पहने एक वयस्क आदमी मेरे सामने खड़ा था।

"अपना रास्ता पकड़ो!" मैंने चिल्लाकर कहा,—"यहाँ कोई तमाशा नहीं हो रहा है।"

"अभी इनकी उम्र ही क्या है?" छोटी बाँहों का स्वेटर पहने हुए

धूप में तपे चेहरे वाले एक व्यक्ति ने कहा,—"इन्हें छोड़ दो !"

"युद्ध खत्म हो गया है," गोल मुँह और ढीला पायजामा पहने एक स्त्री ने कहा,—"शीघ्र ही रेडियो से इसकी घोषणा होनेवाली है।"

"यहाँ से चले जाओ। बीच में दखल न दो, वरना..."

मेरा हाथ खाली जेब में रिवाल्वर टटोलने लगा।

"अगर तुम मरना चाहते हो तो एक बार नहीं सौ बार मरो !" धूप में तपे चेहरेवाले व्यक्ति ने कहा,—"लेकिन इनकी जान क्यों लेते हो ?"

मैंने अपने चारों ओर देखा। युवक छात्र तेजी से, करीब-करीब दौड़ते हुए, इम्पीरियल थियेटर की ओर लपके जा रहे थे। मेरे पास कोई हथियार नहीं था। और पाँच आदमी तथा एक स्त्री से मुझे सुलटना था। उनमें से एक ने अपना डंडा भी उठा लिया था।

"लुटेरे !" मैंने गुस्से में भर कर कहा,—"कुत्ते !"

"देखो, मरने से पहले अपनी जुबान गन्दी करना ठीक नहीं !" धूप में तपे चेहरे वाले व्यक्ति ने चटखारा लेते हुए कहा।

जिसके हाथ में डंडा था वह कुछ कहने ही जा रहा था कि वयस्क आदमी ने उसे रोक दिया, और वे पार्क की दिशा में चल दिये। देर तक मैं उनकी ओर देखता और अपने दाँत पीसता रहा,—"कमीने......देश और राज्य के दुश्मन......!"

काफी नीचे उड़ते हुए कुछ वायुयान आये और पर्चे गिराते हुए गुजर गये। चैरी फूल की पत्तियों की भाँति हवा में लहराते हुए पर्चे धीरे-धीरे लाशों पर आगिरे। उनमें से एक पर्चा मैंने उठा लिया। पर्चे में साम्राज्य की गौरव सूर्यकान्त मणि की रक्षा के लिए हथियार उठाने और साँस रहने तक लड़ने के लिए अतागो पहाड़ी पर पहुंचने का सम्राट के सभी सच्चे सेवकों से आह्वान किया गया था।

पर्चे को मैंने जेब में रख लिया और अतागो पहाड़ी की ओर चल दिया। पहाड़ी का समूचा इलाका पुलिस और सैनिकों से घिरा हुआ था जो किसी को भी उधर नहीं जाने देते थे। मैं एक वयस्क पुलिस अफसर के पास

पहुंचा ।

"मैं विद्रोहियों में शामिल होने नहीं जा रहा हूँ," मैंने कहा,—"मैं केवल पहाड़ी पर जाना चाहता हूं ताकि मरने के लिए कोई उपयुक्त स्थान चुन सकूँ । बस, यही मेरा लक्ष्य है ।"

"मुझे खेद है......लेकिन हम किसी को भी जाने की अनुमति नहीं दे सकते । वहाँ विद्रोहियों का जमाव है । अच्छा हो कि महल-चौक चले जाओ । मैं समझता हूँ कि वहाँ कोई घेराबन्दी नहीं होगी ।"

मैंने सिगरेट का पैकेट निकालकर उसके सामने पेश कर दिया । झुक कर उसने एक सिगरेट निकाल ली ।

"महल-चौक में तो फालतू लोगों की काफी भीड़ जमा है," मैंने कहा—"मैं अपनी मौत को एक तमाशा नहीं बनाना चाहता.......यहाँ पहाड़ी पर ठीक रहेगा ।"

"अगर ऐसा है तो तुम उएनो पार्क में जा सकते हो," उसने सुझाव दिया,—"कानेई की समाधि के पास निरा सुनसान मिलेगा । लेकिन अपनी बगल में अपना कार्ड या पासबुक रखना न भूलना और अपने सगे-सम्बन्धियों का पता भी दे देना ।" और आदर के साथ उसने एक बार फिर अपना माथा झुकाया ।

मैं वहाँ से चल दिया । मुझे खुद पता नहीं था कि मैं कहाँ जा रहा हूँ । पिछली रात से जिस मानसिक व्यग्रता में मैं डूबा हुआ था, वह अब शान्त हो चली थी, और मैं अब एक ऐसे खुमार का अनुभव कर रहा था जो किसी तेज नशे के उतरने के समय मालूम होता है । मेरा शरीर ढीला पड़ता जा रहा था, और टाँगें जैसे किसी मजबूरी में पड़कर घिसट रही थीं । आखिर एक ऐसे खुले मैदान में मैं पहुँचा जो टाइलों और टीन के टुकड़ों तथा आग धुएँ से काले पत्थरों से छितरा हुआ था । राख के ढेरों के बीच तोड़े-मरोड़े हुए रोशनी के खम्बे और अधजले पेड़ बहुत ही वीभत्स मालूम होते थे । लोहे के एक बाड़े के पीछे एक खाई बनी हुई थी । उसमें काली पड़ी कुछ आकृतियाँ मैंने देखीं, जो एक-दूसरे से सटी हुई खड़ी थीं,—ये उन लोगों के

लाशें थीं जो जीवित ही जला दिए गये थे। खण्डरों को पार कर ट्राम की पटरियाँ बिछी एक पक्की सड़क पर मैं पहुंचा। सड़क सिर पर गठरियाँ रखे लोगों से भरी थी,—और इन लोगों तथा उनकी गठरियों का रंग भी वैसा ही था जैसा कि उन जीवित जलाए हुए लोगों का।

अन्त में मैं एक ऐसी बस्ती में पहुंचा जो क्षतिग्रस्त होने से बच गई थी। सड़क पर लगे एक भोंपू के चारों ओर लोगों की भीड़ जमा थी। पुलिसमैन राहचलतों और साइकिल सवारों को रुकने और अपने सिरों पर से टोपियाँ उतारने के संकेत कर रहे थे। मैंने सुना: "......अपनी प्रजा की सुख समृद्धि की आशा और इस आकाँक्षा से कि सभी देश मिल-जुल कर सुख-समृद्धि का उपभोग करें, अपने महिमामय पूर्वजों के इस आदेश को पूरा करने के लिए हमने सदा अनथक प्रयास किया......जब हमें अपनी प्रजा का ध्यान आता है......तो हमारा कलेजा......."

यह सम्राट की आवाज थी,—उनका शाही फरमान था, जिसमें युद्ध का अन्त करने की घोषणा की गई थी। भीड़ निस्तब्ध और निश्चल खड़ी थी। लोगों के चेहरों पर न खुशी के भाव थे, न रंज के। अंत में राष्ट्रीय गीत की धुन बजनी शुरू हुई थी, लेकिन लोग अभी भी निश्चल खड़े थे।

अन्य कितनी ही सड़कों पर से मैं गुजरा जो अपेक्षाकृत कम क्षतिग्रस्त और सर्वथा सुनसान थीं। सड़क के एक कोने पर, पुलिसमैन की अधजली छतरी के सामने, एक युवती पर मेरी नजर गई। उसके बाल बिखरे हुए थे और उसकी पीठ पर एक बण्डल-सा लटका हुआ था। मैं उसके पास गया और पूछा कि क्या वह मुझे इस सड़क का नाम बता सकती है। वह मुस्करा दी और बोली—"देखते नहीं, मेरे कंधों पर अब पर उग आये हैं। शीघ्र ही उड़कर मैं दूर, बहुत दूर, चली जाऊँगी।" चपल भाव से उसने अपने सिर को झटका दिया और पाँव धरती पर पटका। इसके बाद उसने मेरी ओर से अपना मुँह फेर लिया, और मैंने देखा कि उसकी पीठ से शिशु नहीं बल्कि एक टूटा हुआ गुलदान बंधा हुआ है। अपनी टाँगों को किसी प्रकार खींचता और ठोकरें खाता हुआ मैं आगे बढ़ गया। सामने ट्राम का एक स्टेशन था।

उसका नाम पढ़ने पर मालूम हुआ कि मेरी टाँगें मुझे कहाँ ले आई हैं। एक तंग ढलुवाँ सड़क पर चढ़ाव की ओर मैं चलने लगा। पहली गली में मैं मुड़ा और शीघ्र ही आक्टोपस के घर के सामने मैं पहुंच गया। लेकिन उसका घर तो अब गायब हो चुका था,—घर की जगह अब लट्ठों, दरवाजे की टूटी हुई चौखटों, टाइलों के टुकड़ों और चूर-चूर हुए चीनी के बरतनों का एक ढेर पड़ा था। तोड़े-मरोड़े हुए दरवाजे के पास चोटों से क्षतविक्षत लोहे की एक तिजोरी जमीन पर पड़ी थी। घर को दस्ती गोलों ने नष्ट कर दिया गया था।

मैंने क्षीण होती हुई अपनी शक्ति को बटोरा, और जैसे-तैसे आगे बढ़ा। शीघ्र ही मैं अफसरालय के सींखचेदार चिरपरिचित फाटक पर पहुँच गया जहाँ ली रहता था। धक्का देकर मैंने उसे खोला, और वहीं ड्योढ़ी पर ढेर हो गया।

दासी स्त्रियों ने मेरे जूते उतारे, और मुझे उठाकर ली के कमरे में ले गईं। बराण्डे की ओर जानेवाले दरवाजे खुले थे। बगीचे के एक कोने में कुछ अफसर कागज-पत्तर जला रहे थे और धरती में खोदे गये एक गहरे गढ़े में कैनवास में लिपटे बक्सों को उतार रहे थे। उनमें मिकामी और कोरियाई मूछों वाले एक लम्बे कर्नल पर मेरी नजर पड़ी। वे कागज-पत्तरों की छानबीन में लगे थे। कुछ को फाड़कर वे आग में फेंक रहे थे और कुछ को एक सन्दूक में रख रहे थे। ली कमरे में आया। उसका सिर नंगा था, और कमीज पर कारिख तथा धूल के दाग लगे थे। एक तौलिये से उसने अपने पैर पोंछे, मेरी बगल में आकर बैठ गया और अपने दक्ष हाथों से मेरे कन्धों की मालिश करने लगा।

"सब कुछ चकनाचूर होगया............!" मैंने कहा—"और बूढ़े आक्टोपस का घर......"

"बूढ़ा अभी जीवित है," ली ने तुरन्त मुझे ढाढस दिया और जो कुछ हुआ था, उसका वर्णन किया। सवेरे-ही-सवेरे नागरिकों का एक दल ट्रक पर सवार हो आक्टोपस के घर के सामने पहुंचा और प्रत्यक्ष ही उसके घर

को किसी मंत्री का घर समझकर उसमें दस्ती बम फेंकने शुरू कर दिये। संयोगवश बूढ़ा उस समय बगीचे में था। इसलिये वह बच गया, लेकिन उसका हृदय अभी तक सदमे के असर से मुक्त नहीं हुआ है। कहने की जरूरत नहीं, दस्ती बम फेंकने वाले ये लोग किसी अति-दाहिने-पंथी संगठन के सदस्य थे।

"कुछ देर मैं आराम करूँगा, और फिर चला जाऊँगा.......महल चौक की ओर," मैंने कहा।

"इस बेहूदा गड़बड़ में तुम कैसे फंस गये?" ली ने मुझ से शिकायत की,—"संभवतः तुमने रूसियों के उतरने की अफवाह को सच समझा। मेरी सलाह है कि तुम्हें जीवित रहना चाहिए और फिलहाल गुप्तावास में चले जाना चाहिए। अमरीकी बन्दियों वाली बात के बारे में तुम क्या कहते हो? तुमने उनपर किमोतोरी का प्रयोग किया था न?"

मुँह से कुछ कहे बिना मैंने गरदन हिला दी।

"तब तो तुम पर अमरीकी फौजी अदालत में मुकदमा चलने का खतरा है। तुम्हें छिपकर रहना होगा।" यह कह वह फिर तेजी से बाहर चला गया।

एक वृद्ध स्त्री लाल मदिरा की बोतल लेकर आई और एक ऊपर तक भरा छलछलाता प्याला होठों से लगाने के लिए उसने मुझे मजबूर कर दिया। वह मेरा बदन अंगोछने और कमर पर पलास्तर लगाने के लिए भी तैयार थी। लेकिन मैंने मना कर दिया।

ली कमरे में आया और दासी को चले जाने का संकेत करते हुए बोला—"सारी व्यवस्था कर ली गई है। आज ही हम तुम्हें देहात भेज देंगे। तुम्हारी खोज में वहाँ कोई नहीं पहुंच सकेगा। स्थिति के कुछ ठीक होते ही हम तुम्हें फिर यहाँ बुला लेंगे।"

"लेकिन तुम खुद क्या करोगे? रूसियों के यहाँ आजाने पर क्या उनके जूते साफ करने का इरादा है?"

ली के चेहरे पर मुसकराहट की एक रेखा दौड़ गई। यह देखकर

मुझे अचरज हुआ कि ऐसे समय में भी वह हँस सकता है।

"कम्बख्तों ने सब कुछ चौपट कर दिया!" ली ने कहा,—"अब हम स्पेशल सर्विस के अफसरों का यह काम है कि आगे बढ़कर बिगड़ी हुई स्थिति को सँभालें और साम्राज्य को बचाने के लिए जो कुछ भी किया जा सकता है वह करें।"

"मौका हाथ से निकल गया। एक ही बात अब बाकी रह गई है,—रूसियों के आगे नाक रगड़ना!" कड़ुवाहट से भरकर मैंने कहा।

"नहीं, रूसी यहाँ पाँव नहीं रख सकेंगे," ली शान्त स्वर में कहता गया,—"पिछली रात, चीन और दक्खिन मोर्चे के हमारे कमाण्डर-इन-चीफों को तो सम्राट के आदेशों से सूचित कर दिया गया है कि वे युद्ध बन्द कर दें, लेकिन क्वान्तु ंग सेना के कमाण्डर को आत्म-समर्पण की घोषणा के बावजूद अन्तिम क्षण तक लड़ाई जारी रखने के आदेश भेजे गये हैं। देखकर दुःख होता है कि सम्राट के भाषण के रिकार्ड की खोज में कल तुमने नाहक ही इतना समय बरबाद किया। आत्म-समर्पण की घोषणा मंचूरिया पर लागू नहीं होती। वहाँ युद्ध चलता रहेगा। एक-दो दिन में ही प्रिन्स ताकेदा वायुयान से वहाँ जाएँगे और खुद अपने हाथों से जेनरल यमादा को सम्राट के विशेष आदेश देंगे। इसी बीच में अमरीकी सेनाएँ जापान में उतरेंगी, और साम्राज्य क्रान्ति के खतरे से बच जायगा।"

"लेकिन 'अन्तिम युद्ध' का क्या हुआ? अमरीकी तो तुरन्त युद्ध शुरू करना चाहते थे ताकि रूसी मंचूरिया पर कब्जा न कर सकें। क्वान्तु ंग सेना की मदद के लिए वे अपने सैनिक भी भेजने वाले थे......"

"रूसियों से युद्ध शुरू करने से पहले अमरीकियों का जापान में उतरना, और अपना अड्डा बनाना जरूरी है ताकि समय आने पर मंचूरिया या कोरिया के खिलाफ भारी पैमाने पर सैनिक कार्यवाही की जा सके। युद्ध करने के लिए पाँव के नीचे कोई जमीन तो होनी चाहिये न। बिना किसी अड्डे के वे कुछ नहीं कर सकते......"

"लेकिन जल्दी ही यह सब होना चाहिए........एक क्षण की भी हम देर

नहीं कर सकते। रूसी बढ़ते आ रहे हैं........"

मैं खड़ा हो गया और लड़खड़ाता हुआ इस छोर से कमरे के उस छोर तक टहलने लगा।

"बैठ जाओ। अभी भी सब कुछ हाथ से नहीं गया है," ली ने मेरी ओर झुकते हुए कान में फुसफुसा कर कहा,—"आत्मसमर्पण के फरमान को रेडियो से प्रसारित हुए अभी एक घंटा भी नहीं बीता होगा कि अमरीका के कमाण्ड ने हमारे हैडक्वार्टस में रेडियो से एक संदेश भेजा। इस सन्देश में हमारे हैड-क्वार्टस के प्रतिनिधियों को तुरन्त मनीला बुलाया गया था ताकि आत्म-समर्पण के तौर-तरीके के बारे में उन्हें निर्देश दिये जा सकें। लेकिन दिलचस्प बात कुछ और ही है। मैकार्थर के चीफ आफ स्टाफ सदरलैंड ने जोर दिया है कि या तो हम अपने जेनरल स्टाफ के सहायक चीफ लैफ्टीनैन्ट जेनरल कवाबे को या क्वान्तुंग सेना के भूतपूर्व चीफ-आफ-स्टाफ लैफ्टीनैन्ट कसाहारा को भेजें। दोनों के दोनों रूसी मामलों के विशेषज्ञ हैं। दोनों के दोनों, किसी न किसी समय, मास्को में हमारे सैनिक अटैची के पद पर काम कर चुके हैं।"

"आत्म समर्पण से सम्बन्धित निर्देश देने के लिए खास तौर से इशीहारा दल के लोगों को ही उन्होंने क्यों बुलाया है ?"

ली ने अपने कंधे सिकोड़े।

"अभी हम कुछ नहीं जानते। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि अंधेरे में भी आशा की एक झलक दिखाई देती है........"

"इसका मतलब यह है कि अब सब कुछ क्वान्तुंग सेना पर निर्भर करता है। अगर वह जमी रहती है तो अमरीकियों, कुओमिन्तांग और अंग्रेजों से शान्ति-सन्धि हो सकती है। इसके बाद........"

"हाँ, कल या परसों तक हमारे प्रतिनिधि मनीला के लिये रवाना हो जायँगे। चाहे जो हो, क्वान्तुंग सेना को हर हालत में जमे रहना है........"

"मंचूरिया से कोई नयी खबर मिली ? मुझे तो केवल कल के समाचार ही मालूम हैं।"

"नये समाचारों के अनुसार सोवियत टैंक ताश्रोनान तक बढ़ आये हैं।"

"ताश्रोनान? अगर यह खबर सच है तो फिर कुछ नहीं हो सकता। क्वान्तुंग सेना का तो अब अन्त ही समझो। अमरीकी आयँगे, लेकिन मरीज के दम तोड़ लेने के बाद!"

अपने कंधों पर लगे सैनिक फीतों को मैंने नोचकर एक कोने में फेंक दिया, और चटाई पर गिर गया,—"नहीं, अब कुछ नहीं हो सकता। सूर्य कान्त मणि चूर-चूर हो गई........"

ली ने अपना सिर हिलाया।

"सूर्यकान्तमणि चूर्ण हो गई है," धीमे स्वर में उसने कहा,—"सूर्य कान्त मणि को फिर से जोड़ा जायगा!"

गुप्तावास के दिन

[१]

मियोगी और अराफून पर्वतों के बीच की घाटी में एक छोटा-सा गाँव है। इसके उत्तर में असामा ज्वालामुखी का धुआँ जंगलों से ऊपर उठता हुआ दिखाई देता है। दक्खिन में छै पर्वतों की एक शृङ्खला चली गई है और जब अकाश साफ होता है तो क्षितिज से मिले हुए फूजीयामा की सफेद छाया-आकृति नजर आती है।

इसी गाँव में एक पुलिस-अफसर के घर में मैं रहने लगा। मेरी इस रिहायश का श्रेय, कहने की जरूरत नहीं, ली को ही प्राप्त था। बाकायदा सरकारी मोहर लगा एक डाक्टरी सर्टीफिकेट भी मुझे मिल गया था। इस सर्टीफिकेट में लिखा था कि विस्फोट का आघात लगने के कारण मेरी स्मरण शक्ति नष्ट हो गई है, और मुझे देश वापिस भेजा जा रहा है। सर्टीफिकेट पर चौदह फरवरी १९४५ की, अमरीकी सेनाओं के उतरने से पाँच दिन पहले की, तारीख पड़ी थी। एक सर्वथा कल्पित व्यक्ति के नाम से यह सर्टीफिकेट जारी किया गया था।

इस सर्टीफिकेट ने हर सन्देह से मेरी रक्षा की। किसी ऐसे आदमी से पूछताछ करना बेकार था जो अपने बीते हुए जीवन के बारे में सब कुछ भूल चुका हो। इस प्रकार मुझे अपने अतीत से छुटकारा मिल गया। और महल चौक की वह कभी न भूलनेवाली सुबह, जब एक नामहीन लाश के पास मैंने अपना लिफाफा छोड़ दिया था, उस लाश को निश्चय ही मेरे

नाम से दफना दिया गया होगा, और मेरे सगे-सम्बन्धियों को मेरी सम्मान-पूर्ण मृत्यु की सूचना भी दे दी गई होगी।

जिनलान, मुसोलिनी तथा अन्य की स्मृति में मैंने एक घरेलू चबूतरा बना लिया और उस पर उनके नामों की तख्तियाँ लटका दीं। इसकी बगल में ही साके मदिरा के एक पीपे पर रेडियो रखा था जिससे मुझे बाहर की दुनिया की खबरें मालूम होती रहती थीं।

मैंने सुना कि मैकार्थर के बुलावे पर हमारे हाई कमान के प्रतिनिधि वायुयान से मनीला गये हैं। ठीक उस समय जबकि वे मनीला हवाई अड्डे पर वायुयान से उतरे, सोवियत हवाई सैनिक सिंगकिंग, मुकदेन और हारबिन उतर रहे थे। क्वान्तुंग सेना ने हथियार डाल दिये थे और आशा की अन्तिम किरन भी ओझल हो गई थी। युद्ध का अब सचमुच में अन्त हो गया था। ब्लैक आउट की तमाम बन्दिशों को सरकारी तौर से उठा लिया गया था।

आत्मसमर्पण की दस्तावेज पर हस्ताक्षर होने के एक सप्ताह बाद अमरीकी सैन्य ताकतों के कमाण्डर-इन-चीफ जेनरल मैकार्थर ने टोकियो में प्रवेश किया। यह वही आदमी था जो फिलीपीन की सेना को अपने भाग्य पर छोड़कर वायुयान द्वारा बातान से भाग गया था। समूची सेना नष्ट हो गई, केवल कमाण्डर-इन-चीफ को छोड़कर। अब उसीके सिर पर विजय का मुकुट सजा था। हीबिया जिले में, म्युचुअल बीमा कम्पनी की इमारत में, उसने अपना हैडक्वार्टर बनाया था।

शाही सेना और नौ सेना का विघटन शुरू हुआ। तमाम रेजीमेण्टों को उनके सैनिक चिन्हों और पताकाओं से वंचित कर दिया गया। जेनरल हैडक्वार्टर, जेनरल स्टाफ और युद्ध-आफिस खत्म हो गये, तमाम सैनिक स्कूल बन्द कर दिये गये। हमारे कितने ही युद्धपोतों और वायुयान-वाहकों को नष्ट या बेकार कर दिया गया।

यह बातान के भगोड़े के सामने निशस्त्र-जापान का आत्म-समर्पण था।

आत्म-समर्पण की अपनी आखिरी घोषणा में सम्राट ने कहा था,—"वर्तमान परिस्थितियों में हमारा कर्तव्य है कि जो सहा न जा सके उसे भी सहें, जो बरदाश्त न किया जा सके उसे भी बर्दाश्त करें।"

अपनी वफादार प्रजा के सामने खुद सम्राट ने इसकी एक मिसाल रखी। अपनी फील्ड मार्शल की वर्दी उतार कर सम्राट ने एक नयी शोक सूचक पोशाक धारण की,—काले रंग का लबादा जो राज्य-चिन्हों से शून्य था, काली गोट लगा गहरे रंग का पायजामा, वक्ष और बाहों पर काली कसीदाकारी और कालर पर काले रेशम से कढ़ा हुआ क्रिसान्थेमम का फूल जो कि राज्यवंश का चिन्ह था। सम्राट ने घोषणा की कि तेन्नो की उपाधि उन्होंने छोड़ दी है। और समाचार-पत्रों की रिपोर्ट के मुताबिक, अपने अध्ययन कक्ष में सम्राट ने अमरीका के प्रेजीडेण्ट अब्राहम लिन्कन की मूर्ति स्थापित कर ली थी।

[२]

पड़ोस के गाँव में एक तोपखाना और पर्वत के उस पार, जुमोनजी दर्रे से कुछ दूर, उड़ाकुओं का एक स्कूल था। विघटन के बाद देखते न देखते तोपखाने की बैरकों के फाटक पर एक नयी तख्ती लग गई: "चावल उत्पादकों की सहकारी समिति।" और उड़ाकुओं का स्कूल भी अब खमीर बनाने वाली जापान की एक कम्पनी बन गया था। तोपखाने के सैनिकों और उड़ाकुओं ने भी नये युग के मुताबिक अपना चोला बदल लिया था।

एक दिन पुलिस अफसर ने, जिसके घर में मैं रहता था, मुझे बताया कि पुरानी सड़क के उस पार एक पहाड़ी पर स्थित बौद्ध मठ में दो पंगु व्यक्ति और रहते हैं। मेरी भाँति उनकी स्मृति भी जाती रही थी। आत्म-समर्पण के शीघ्र बाद ही वे यहाँ आये। ली के इस आदेश के बावजूद कि गाँव में मैं किसी से मेल-मिलाप न रखूं, मैंने निश्चय किया कि एक दिन बौद्ध मठ में जाकर इन लोगों से मिलना चाहिए। लेकिन इससे पहले कि मैं उनसे मिलता, वे गायब हो गये। सम्भवतः वे अमरीकी सैनिक पुलिस के आगमन से डर कर भाग गये थे। सैनिक पुलिस के ये लोग एक भूतपूर्व कर्नल से जो

कि कुछ दिनों तक स्कूल का अध्यक्ष रहा था और आजकल खमीर कम्पनी के डाइरेक्टरों के बोर्ड का चेयरमैन था, पूछ-ताछ करने उड़ाकुओं के स्कूल में आये थे। विचित्र संयोग कि इस कर्नल का नाम उस आदमी के नाम से मिलता था जिसकी कि अमरीकी सैनिक पुलिस खोज कर रही थी।

इन्हीं दिनों रेडियो से समाचार मिला कि फिलीपीन, बातान और साइतों में अमरीकी सेनाओं के छक्के छुड़ाने तथा १९४२ में बातान प्रायद्वीप के युद्ध में जनरल मैकार्थर को भागने के लिए मजबूर करने वाले जापानी कमाण्डरों को फौजी अदालत के सुपुर्द कर दिया गया है। इसके शीघ्र बाद ही उनके फाँसी पर लटकाये जाने की खबर भी आगई। जेनरल मैकार्थर को अपना कलेजा ठंडा करने का मौका मिला और गर्व में भरकर उसने अपने निजी वायुयान का नाम बातान रखा।

घरेलू दुश्मन अलग सिर उठाये थे। टोकियो और ओसाका की सड़कों पर वे रोज लाल झंडे लेकर निकलते थे। पुलिस उन पर गोली तक नहीं चला सकती थी। वामपक्षी समाचार-पत्रों और मेगजीनों में सम्राट का अब केवल हिरोहितो कह कर उल्लेख किया जाता था, मानो वह कोई मामूली रिक्शा वाला हो। तोजो तथा हमारे दूसरे जेनरलों और अफसरों पर जब इचीगायडाई में मुकदमा चलाया गया तो कम्युनिस्टों ने खूब खुशियाँ मनाईं; और सरकार से चावलों की माँग करने के लिए भूखों को बटोर कर जब उन्होंने जलूस निकाला तब तो हद होगई। पुलिस की घेरेबन्दियों को तोड़कर शाही महल में वे घुस गये और उन्होंने पाकशाला तक को छान मारा। कुछ फिल्म लेनेवाले भी उनके साथ-साथ वहाँ पहुंच गये। उन्होंने एक डाक्युमेंटरी फिल्म तैयार की जो टोकियो में मजदूरों के क्लबों में दिखाई गई। फिल्म का प्रत्येक दृश्य ऐसा था कि उसे बनाने वालों को किसी प्रकार भी नहीं बख्शा जा सकता। फिल्म का नाम था: "हम भूखों मरते हैं और हिरोहितो मालपुवे उड़ाता है।"

सम्राट ने यह सब बरदाश्त किया, लेकिन मेरे धीरज का बाँध टूट रहा था। पुलिस अफसर की मार्फत मैंने ली के पास एक पुर्जा भेजा कि चाहे मुझे

फाँसी पर क्यों न लटका दिया जाय, लेकिन टोकियो पहुँचकर इन शैतानों में से दो-चार को मैं ठिकाने लगाना चाहता हूँ।

ली का जवाब आया—"बेवकूफी न करो। सब ठीक हो जायगा। अमरीकी कमान्ड ने फैसला किया है कि सम्राट को युद्ध-अपराधी नहीं घोषित किया जायगा। चीन की ओर देखो, और वस्तुस्थिति को समझो।"

[३]

ली के पत्र से मेरा काफी ढाढ़स बँधा। सचमुच, चीन में अमरीकियों का व्यवहार एक दूसरा ही चित्र पेश कर रहा था। हमारे आत्म-समर्पण के तुरन्त बाद ही अमरीकियों ने उत्तरी चीन के बन्दरगाहों पर अधिकार कर लिया और पाइपिंग तथा नानकिंग में अपनी सेनाएं उतार दीं; ताकि इन नगरों पर कम्युनिस्टों का कब्जा न हो सके। और मंचूरिया से सोवियत सैनिकों के हटते ही अमरीकी मदद से कुओमिन्तांग सेनाओं ने मुकदन पर अधिकार कर लिया।

इसके बाद अधिक समय बीतने भी न पाया था कि अमरीकी हथियारों से लैस कुओमिन्तांग सेनाओं ने केन्द्रीय और उत्तरी चीन में पूरे दल-बल के साथ कम्युनिस्टों के खिलाफ आम आक्रमण शुरू कर दिया, और कम्युनिस्टों को पीछे हटने के लिए बाध्य होना पड़ा।

मुझे अपने अमरीकी बन्दी की बात याद हो आई जिसने कहा था,—"हमें भविष्य के बारे में सोचना चाहिए,—प्रमुख रूप से इशीहारा योजना के अमरीकी संस्करण के भविष्य के बारे में।"

सोवियत संघ के खिलाफ युद्ध की योजनाओं से सम्बन्धित हमारी दस्तावेजों का टोकियो मुकदमे के दौरान में पर्दाफाश हो चुका था। ये दस्तावेजें प्रमाणिक थीं। उनमें से कई मैं पहले भी देख चुका था। ऐसा मालूम होता है कि सिंगकिंग पर अधिकार करते समय ये दस्तावेजें रूसियों के हाथ लगी थीं। क्वान्तुंग सेना के स्टाफ अफसरों को सम्भवतः इन दस्तावेजों को जलाने का समय नहीं मिला था, या फिर उन्होंने सोचा होगा कि

गुप्त संकेतों में लिखी होने के कारण रूसी इनका भेद नहीं जान सकेंगे। लेकिन अब तो भन्डा फूट चुका था, और इन योजनाओं के साथ जुड़े नाम प्रकट हो गये थे।

लेकिन अब मैं यह भी जानता था कि सम्राट खतरे से बाहर हैं। युद्ध-अपराधियों की सूची में इशीहारा का नाम भी नहीं था। रूस के खिलाफ युद्ध की योजना का प्रणेता, मुकदन-बम दुर्घटना का सूत्रधार जिसने १६३१ में मंचूरियाई घटनाओं को जन्म दिया था, सेना का एक अत्यन्त प्रभावशाली नेता, बिल्कुल बेदाग छूटा हुआ था। यही हाल उसके अनुयायियों और शिष्यों का था,—कवाबे, कसाहारा, यामाओका, सभी साफ बचे हुए थे। इतना ही नहीं, बल्कि युद्ध और नौ सेना मंत्रालयों को भंग कर उनकी जगहों पर अब विघटन विभागों का संगठन किया गया था, जिनमें इशीहारा के अनुयायी जिम्मेदार पदों पर नियुक्त थे। अमरीकियों की रजामन्दी से यह सब किया गया था।

मैकार्थर ने इशीहारा से शुरू करके रूसी मामलों के हमारे सभी नामी विशेषज्ञों को अपने दामन में छिपा लिया था।

चीनी कम्युनिस्टों के खिलाफ आक्रमण तेजी से बढ़ रहा था। कुओ-मिन्तांग सैनिकों के डिवीजन अग्रिम दस्तों में थे, और अमरीकी सेनाएं पिछवाड़े में। अमरीकियों का लक्ष्य, मंचूरिया और साथ में कोरिया को भी, अपने कब्जे में करना था। हौज की २४वीं सेना ओकीनावा से दक्खिनी कोरिया में स्थानान्तरित कर दी गई थी, और सोपाकसान तथा चिरीसान पहाड़ों में कोरियाई छापेमारों से लड़ रही थी।

इन्हीं दिनों में फुल्टन में चर्चिल ने अपना वह सनसनीखेज भाषण दिया जिसमें शत्रु नम्बर एक सोवियत संघ के खिलाफ अपनी ताकतों को संयुक्त करने के लिए अमरीका और ब्रिटेन का आह्वान किया गया था।

युरोप और एशिया दोनों ही जगह महत्वपूर्ण घटनाओं के चिन्ह प्रकट हो रहे थे। लेकिन मैं था कि अपनी माँद में छिपा हुआ बैठा था। इससे तो कब्र में सोना कहीं अधिक अच्छा होता। ऐसे जीवन से तो मौत अच्छी। रह-

रह कर मेरा हृदय बुरी तरह कचोट उठता था कि उस दिन महल-चौक में ही मैंने अपने जीवन का अन्त क्यों नहीं कर दिया।

लेकिन मेरे भाग्य में तो कुछ और ही बदा था। मेरी जीवन की अवधि अभी पूरी नहीं हुई थी। लो का मुझे एक पत्र मिला जिसमें मुझे टोकियो बुलाया गया था और उसी दिन रवाना होने के लिए मुझसे कहा गया था।

इस जीवित समाधि को हृदय से लगाये मुझे दो वर्ष से भी अधिक हो चुके थे।

[४]

टोकियो का बुलावा मुझे अवश्य मिल गया था, लेकिन मैं खतरे से बाहर नहीं था। किमोतोरी का अभ्यास करने वाले अफसरों की खोज जारी थी, गुआम द्वीप में उन पर मुकदमा चलाया जा रहा था और सीधे मौत की सजा उन्हें दी जाती थी। इसलिए अत्यन्त सावधानी बरतना जरूरी था। नाकासाकी स्टेशन पर जब मैं गाड़ी में सवार हुआ तो मैंने अपने मुँह पर फ्लू-मास्क चढ़ा लिया। यह एक भारी सौभाग्य की बात थी कि फ्लू रोग के कीटाणुओं से मुंह-नाक को बचाने के लिए जापान में इन मास्कों (छींकों) को लगाने का उन दिनों चलन था। इनसे मुँह और नाक छिप जाते थे, और साथ में एक धूप का चश्मा और लगा लेने से पूरा काम बन जाता था। गाड़ी में सैनिक फीतों और बिल्लों से विहीन अफसरों की वर्दी पहने अन्य कितने ही लोग भी इन छींकों को चढ़ाये थे।

उशीगोम के क्लबघर की शक्ल एकदम बदल गई थी। उसके फाटक पर अंग्रेजी अक्षरों में बड़ा-सा साइनबोर्ड लगा था: 'मनीला क्लब' साइन बोर्ड पर क्लब का चिन्ह भी बना था,—एक ढाल आड़ी छड़ों और एक कोने में घोड़े के सिर से युक्त थी। इसके पास ही एक और, काफी छोटा, साइन बोर्ड लगा था। इस पर जापानी अक्षरों में लिखा था: खमीर कम्पनी। कम्पनी का दफ़्तर दूसरे तल्ले पर था।

लो भी एकदम बदला हुआ था। युरोपीय सूट पहने, आँखों पर सुन-

हरा चश्मा चढ़ाये, और सोने के दाँत । देखने में पूरा बिजनेसमेन मालूम होता था। उसने सुझाव दिया कि दफ़्तर के ऊपर एक छोटा-सा कमरा है। मेरे लिए वह उपयुक्त होगा। बराबर के दूसरे कमरे में आक्टोपस का भूतपूर्व एडी मिकामी अड्डा जमाये था।

क्लब की इमारत किसी चीनी से किराये पर ली गई थी। टोकियो और योकोहामा में भी इस चीनी ने कई रेस्तोराँ खोल रखे थे,—केवल युरोपियनों के लिए। अमरीकी सैनिक अफसरों का उसे विशेष संरक्षण प्राप्त था। क्लब टोकियो में तैनात पहले घोड़ सवार डिवीजन के अफसरों के लिए जुवे का अड्डा बन गया था। घोड़े का सिर, जो कि घोड़ सवार डिवीजन का चिन्ह था, निरा धोखा था। कारण कि इस डिवीजन में घोड़े नहीं, बल्कि टैंक और तोपें थीं।

मेरे बदले हुए हुलिए को ली ने पसन्द किया। मैंने अब मोछें रख ली थीं, और बाल भी दूसरी तरह से संवारने लगा था। कभी-कभी वह मुझे बाहर जाने की भी इजाजत दे देता था, फिर भी मैं अत्यन्त सावधानी बरतता था। दुश्मन द्वारा अधिकृत प्रदेश में जिस प्रकार एक स्काउट को चारों ओर से चौकन्ना रहकर चलना पड़ता है, बाहर निकलने पर मैं भी उतना ही चौकन्ना रहता था।

किसी पराजित और मान कुचली राजधानी को जैसा होना चाहिए, टोकियो ठीक वैसा ही था। हर कहीं छत-विछत इमारतों पर नजर पड़ती थीं। लेकिन गिनजपो, असाकूसा, शिनजूको और उएन्को की चहल-पहल में आज भी कोई कमी नहीं थी। सिनेमाओं, काफों, नाचघरों और मदिरा पान-गृहों में,—जो कि रंगीछुनी बैरकों में खुले थे,—खूब भीड़ रहती थी। टोकियो में बीस हजार से ज्यादा काफे खुले थे और उनके अंग्रेजी नामों में नये युग की छाप साफ दिखाई देती थी। रौक्सी, कैपीटल, क्वीन मेरी, पेरिस, फ्लोरिडा आदि। रंगीछुनी स्त्रियाँ या जैसा कि उनके प्रमुख ग्राहक अमरीकी, सैनिक उन्हें कहते थे पानपान, इन काफों के फाटकों पर मंडराती रहती थीं। पानपान नवीनतम फैशन के युरोपीय कपड़े पहनती थीं, और 'ऐटमबम स्टाइल' में

सिर के ऊपर उठा हुआ अपने बालों का जूड़ा बाँधती थीं। लेकिन नहीं, ऐटमबम का असर इनके बालों के फैशन तक सीमित नहीं था। कभी-कभी उसके अन्य दृश्य भी दिखाई दे जाते थे। भूमिगत रेल्वे से जाते समय एक स्त्री पर मेरी नजर पड़ी जिसके चेहरे पर जले के दाग और रंगीन धारियाँ पड़ी हुई थीं। वह हिरोशिमा से आई थी और बम से निकली विषैली किरनों ने उसके चेहरे को बिगाड़ दिया था।

जली हुई इमारतों और गीशाओं की भाँति रंगीचुनी बैरकों से युक्त टोकियो बहुत कुछ हिरोशिमा से आनेवाली इस स्त्री के समान मालूम होता था।

[५]

किस्सोजी मार्केट में, जो कि राजधानी के मुनाफाखोरों का केन्द्र था, वह घटना घटी। इस मार्केट की ओर मैं अकसर घूमने निकल जाता था। यह टोकियो के उन गिने-चुने हिस्सों में से था जिन्हें युद्ध की मार ने क्षत-विक्षत नहीं किया था। उस दिन, तड़के ही, मैं मार्केट में पहुँच गया था, और भूख का अनुभव करने पर पेट में कुछ डालने के लिए एक दुकान के सामने मैं रुक गया था। सहसा भारी शोरगुल सुनाई दिया। पुलिस की सीटियों और मोटरों के भोंपुओं की आवाजों से मार्केट भर गया। लाल झंडे और पताकाएँ लिए लोग, छोटे-छोटे दलों में, दौड़ कर मार्केट के चौक में घुस आये। हमारे पुलिसमैन और सफेद रंग की लोहे की टोपी लगाये सैनिक पुलिस के लोग उनका पीछा कर रहे थे। साफ जाहिर था कि हड़तालियों के खिलाफ कार्य-वाही की जा रही है। हड़तालियों में से दो व्यक्ति दौड़ते हुए मेरी ओर आये। उनमें से एक मुँह में भोंपू लगाये कुछ चिल्ला रहा था, दूसरा एक पताका फहरा रहा था जिस पर निम्न शब्द अंकित थे : "जापान कभी उप-निवेश नहीं बनेगा।"

भीड़ ने हड़तालियों को रास्ता दे दिया, और उनके गुजरते ही भीड़ फिर घनी हो गई। पीछा करने वाली पुलिस को रास्ता नहीं मिला। उन दो

हड़तालियों के निकट आने पर मैंने दुकान से एक बरतन उठा कर उनपर आघात किया। जो अपने हाथ में भोंपू लिए था,—सम्भवतः वह उनका नेता था,—कूद कर एक ओर हट गया, पताका लिए दूसरे हड़ताली ने भी अपने को बचा लिया और बरतन चौकोनी टोपी पहने एक छात्र की टाँगों से जा टकराया। वह एक स्त्री की भांति चीख कर मुझपर झपटा। मैंने उसे धक्का दिया, वह लड़खड़ाया और गिरने से बचने के प्रयास में मेरी बाँह उसके हाथ में आ गई। अपने घुटने से मैंने उसके पेट में आघात किया, और दर्द से कराहते हुए वह दोहरा हो गया।

"गद्दार !" उसके मुह पर घूँसा मारते हुए चिल्लाकर मैंने कहा। वह गिर पड़ा।

"एक और !" पीछे से कोई चिल्लाया।

"कुत्ता कहीं का !"

भीड़ की सहानुभूति प्रत्यक्षतः मेरे साथ थी, हड़ताली के नहीं। लेकिन तभी ठीक मेरे कान के पास ही मुझे सीटी की आवाज सुनाई दी। इससे पहले कि मैं घूम कर कुछ कहता, मेरे सिर पर डंडे का आघात लगा, और उसी क्षण मेरे हाथों को जकड़ लिया गया।

"मुझे छोड़ दो, मैं कम्युनस्ट नहीं हूँ !" मैंने चिल्ला कर कहा।

लेकिन सैनिक पुलिस ने एक न सुनी। मुझे घसीटते हुए वे एक जीप के पास ले गये, उठाकर उसमें मुझे पटक दिया और सिर पर डंडे का एक और आघात करते हुए चुपचाप बैठने का मुझे आदेश दिया। मेरे हाथों में उन्होंने हथकड़ी पहना दी और बन्दी बना कर मुझे हीबिया जिले की ओर ले चले। शीघ्र ही हम म्यूचुअल जीवन बीमा कम्पनी की सात मंजिला इमारत के सामने, जिसमें अमरीकी सर्वोच्च कमाण्डर का हैडक्वार्टर था, पहुँच गये।

निचले तल्ले के एक छोटे-से तहखाने में मुझे बन्द कर दिया गया। मैंने बहुतेरा कहा कि मै कम्युनिस्ट नही हूँ। गलती से मुझे पकड़ लिया गया है। मेरी हथकड़ियाँ खोल दी और अपने बड़े अफसर के सामने मुझे पेश

करो। लेकिन सब बेकार। उन्होंने मेरी तलाशी ली और मेरी जेब से एक तावीज तथा बाकायदा मोहर लगा डाक्टरी सर्टीफिकेट निकाल कर अपने साथ ले गये।

साँझ तक मैं तहखाने में बन्द रहा। आखिर वे आये और लिफ्ट के जरिये सातवें तल्ले के एक कमरे में मुझे ले गये। इस कमरे में फौजी वर्दी पहने एक युवती मेज पर बैठी थी। "तुम अन्दर आ सकते हो!" उसने जापानी में कहा, लेकिन उसके उच्चारण में भारी अमरीकी पुट मिला हुआ था।

मेरी हथकड़ियाँ खोल दी गईं, और एक बड़े कमरे में मैंने प्रवेश किया जो मेज पर रखे केवल एक लैम्प की रोशनी से आलोकित था। मेज पर बैठे अमरीकी अफसर के सामने सिर झुका कर मैंने सम्मान प्रकट किया। कमरे के बीच में एक कुर्सी रखी थी। उसपर बैठने के लिए उसने संकेत किया, और मेज पर रखे लैम्प की रोशनी का रुख मेरी ओर कर दिया। रोशनी में उसने मुझे एक बार ध्यान से देखा, और फिर अपने पाइप की नलकी साफ करने लगा। कमरे में मेरे प्रवेश करने से पहले भी वह यही काम कर रहा था।

अब मुझे भी उसे अच्छी तरह से देखने का अवसर मिला। उसकी सिकुड़ी हुई आँखों, रेखाएं पड़े माथे और बाहर को निकले होठ को देख कर मेरे शरीर में कंप-कंपी दौड़ गई। सन्देह की जरा भी गुंजाइश नहीं थी। भगवान् ही अब मुझे बचा सकता था। तेजी से फुसफुसा कर मैं वन्दना करने लगा: नमुआमीदाबुत्सू नमुआमीदाबुत्सू नमुआमीदाबुत्ससू...!

यह मेरे मस्तिष्क का विकार नहीं था। मेरी आँखों के सामने वास्तव में वही मौजूद था।

[६]

"जुलाई १९४५ के उत्तरार्द्ध में मियुरा प्रायद्वीप में अमरीका के बन्दी लड़ाकुओं की निर्मम हत्याओं की खोजबीन का काम मेरे हाथ रहा है और

इससे सम्बंधित सभी जापानी अफसरों के नाम मैं जानता हूँ,' हार्शबर्गर ने जापानी में कहा,—"तुम्हारा असली नाम भी मुझे मालूम है।"

हार्शबर्गर ने अपनी गरदन पर हाथ फेरा और कनखियों से मेरी ओर देखा। फिर अपनी युवती सेक्रेटरी को बुलाया और उसकी ओर एक पुर्जा बढ़ाते हुए कहा,—"युद्ध-अपराधियों की फाइल में से इस आदमी का सारा विवरण निकाल कर लाओ।"

युवती ने पुर्जा ले लिया। जब उसने पुर्जे पर नजर डाली तो उसका मुँह ढीला पड़ गया और भयभीत कौतुक से मेरी ओर ताकती रह गई।

कुछ देर बाद ठंडे औपचारिकता पूर्ण स्वर में हार्शबर्गर ने मुझ से पूछा,—"तुमने हमारी सैनिक पुलिस के सामने प्रतिरोध-प्रदर्शन क्यों किया?"

"इसलिए कि मुझे गलती से गिरफ्तार कर लिया गया था। मैं एक कम्युनिस्ट को ठिकाने लगाना चाहता था कि......"

"तुमने एक आदमी को चोट भी पहुँचाई......"

"वह एक कम्युनिस्ट छात्र था। वह भाग कर निकला जारहा था कि मैंने..........."

हार्शबर्गर ने मेज पर हाथ पटकते हुए कहा,—"तुमने सादे कपड़े पहने हमारे एक आदमी के मुँह पर आघात किया, और अन्य कई जगहों में भी चोटें पहुंचाई। तुमने उसे करीब-करीब पंगु बना दिया। वह एक सुप्रसिद्ध कम्युनिस्ट नेता के पीछे लगा हुआ था। हम तुम्हारे खिलाफ, सही मानी में, जापान की कम्युनिस्ट पार्टी के आदेश से सी. आई. सी के एक एजेण्ट की हत्या करने के प्रयास का आरोप लगा सकते हैं। इन सब हरकतों के लिए फौजी अदालत में तुमसे सारा हिसाब चुकता किया जायगा।"

"अगर मुझे अदालत में भेजा गया तो मैं यह भी बताऊंगा कि अमरीका के कुछ बन्दी अफसरों ने अपनी जान बचाने के लिये किस प्रकार युद्ध संबंधी अत्यन्त गोपनीय भेद बताये।"

"लेकिन तुम्हारे पास सबूत क्या है?" मुसकराते हुए उसने पूछा,—

"आत्म-समर्पण के बाद युद्ध-मंत्रालय के सभी गुप्त कागज, युद्ध-मंत्री की की नोटबुकें तक, हमारे सुपुर्द कर दी गई थीं। इन नोटबुकों की लिखावट इतनी घसीट थी कि उन्हें पढ़ा नहीं जा सका। फलतः उन्हें जला दिया गया। मतलब यह कि अपने बयान की पुष्टि में तुम कोई सबूत नहीं दे सकोगे, और अदालत युद्ध-अपराधी के शब्दों पर अधिक ध्यान देगी नहीं।"

"खेद के साथ कहना पड़ता है कि युद्ध-मंत्री की नोटबुक के आधार पर मैंने एक रिपोर्ट तैयार की थी। मेरी रिपोर्ट में उस अमरीकी बन्दी का भी नाम था जिसने आपरेशन ओलिम्पिक, कोरोनेट और सिलवर डिश के बारे में भेद प्रकट किये थे। अदालत के सामने मैं सर्वोच्च युद्ध-परिषद के दफ्तर के अनेक बड़े अफसरों के नाम भी प्रकट कर दूंगा जो उस रिपोर्ट को पढ़ चुके हैं," मैंने जवाब दिया।

"क्या नाम हैं उन अफसरों के?"

मैंने अपनी स्मृति पर जोर देने का जैसा अभिनय किया, और इसके बाद सिर हिला दिया।

"तो तुम नाम नहीं बताओगे, क्यों?"

मेज पर से एक भारी सिगरेट-लाइटर उठाकर उसने मेरी ओर फेंका, जो सीधे मेरे कान पर आकर लगा।

जीवित गवाहों को पेश करने की बात ने उसे उचकचा दिया था। वह अपने को एकदम बेदाग समझता था, लेकिन अब उसने अनुभव किया कि वह खुद भी फंस सकता है। हम दोनों एक ही किश्ती के सवार थे।

हार्शबर्गर ने अपनी कुर्सी को जोरों से पीछे धकेल दिया, और मेरे निकट आ कर खड़ा हो गया।

"कुत्ते की जात, खड़ा नहीं हुआ जाता!" उसने चिल्ला कर कहा,—"अपनी हैसियत को समझ। अभी तुझे तमीज सिखाता हूँ।"

मैं अपने पांवों पर खड़ा हो गया। उसने लपक कर मेज पर से दो पेन्सिलें उठा लीं।

"अपने हाथ आगे कर!"

उसने मुझे अपनी उँगलियाँ फैलाने का आदेश दिया। उंगलियाँ फैला लेने पर उसने पेन्सिलें उंगलियों के बीच में फंसा दीं।

"अब मैं शिकंजा कसता हूँ,—जब तक कि तुम नाम नहीं बताते। नामों को तुम नहीं बताना चाहते, ताकि तुम उनका मेरे खिलाफ इस्तेमाल कर सको। क्यों, यही बात है न?"

उसने ठीक मेरी आँखों में अपनी नजर गड़ा दी।

"तुम मुझसे डरते हो, इसलिए अपनी जेब में एक चाल रिज़र्व रखना चाहते हो?"

"हाँ, मैं तुम से डरता हूँ, और तुम मुझ से डरते हो। हम दोनों की स्थिति एक जैसी है।"

"नहीं, मेरा पलड़ा भारी है। इस बार तुम मेरे बन्दी हो। लेकिन... आओ, अब मतलब की बात करें। क्यों, ठीक है न?"

मैंने गरदन हिला दी।

इसी समय दरवाजे पर खटखटाने की आवाज सुनाई दी। पेन्सिलें मेज पर फेंक हार्शबर्गर अपनी कुर्सी पर जा बैठा।

"भीतर चले आओ!"

युवती सेक्रेटरी ने एक कागज मेज पर रख दिया। कागज के साथ एक कार्ड भी नत्थी था। फिर उसने फर्श पर पड़े सिगरेट लाइटर को उठाया और अपने चीफ को दे दिया। इसके बाद वह बाहर चली गई।

हार्शबर्गर ने कार्ड पर एक नजर डाली, कुछ अचरज के भाव से मेरी ओर देखा और मुझे सिर घुमाने का आदेश दिया। मैंने सिर घुमा दिया।

"घाव का निशान मौजूद है। निस्सन्देह, यह वही है।" अपनी पीठ को उसने कुर्सी के सहारे टिका दिया, और मुसकराते हुए बोला,—"तुम्हें देख कर खुशी के मारे मैं यह भूल ही गया था कि तुम्हें मरे हुए एक मुद्दत हो चुकी है। महल चौक में तुम्हारी लाश मिली थी। उसे जला दिया गया और अस्थियाँ तुम्हारे सम्बन्धियों को दे दी गईं। यह विवरण सर्वथा प्रामाणिक है। हमारी खुफिया फाइलें अत्यन्त विश्वसनीय सामग्री से तैयार की गई हैं।"

"मैं भी इनकी प्रामाणिकता को सन्देह से परे मानता हूँ" विनम्रता के साथ मैंने कहा।

"तुम लोग बहुत चतुर हो," सराहना के स्वर में उसने कहा,—"एक प्राच्यवासी का दिमाग ही इतनी सूझ-बूझ का परिचय दे सकता है। एक आदमी अपने हृदय में छुरा भोंकता है और किसी दूसरे की लाश वह बन जाता है......अब समझ में आया कि हमारी टाइगर-सूची के तमाम लोग मरे हुए क्यों निकलते हैं। सो उनकी मौत भी वैसी ही है जैसी कि तुम्हारी। शरीर कब्र में है, लेकिन आत्मा नगर में विचरण कर रही है,—क्यों यही बात है न ?"

"नहीं, ऐसा अकेले मेरे साथ ही हुआ है, सो भी केवल संयोगवश," अपनी आँखें नीची करते हुए मैंने कहा,—"मैंने जान देने का पूरा निश्चय कर लिया था, लेकिन बीच में एक बाधा आगई.......और इसके बाद फिर कोई अवसर न मिला। लेकिन मेरे मित्रों ने वीरों की भांति अपनी जान दी। उनकी सम्मानपूर्ण मृत्यु......"

"मतलब यह है कि तुम्हारे वीर बनने में कसर रह गई। लेकिन अपने उन वीर मित्रों के नाम तो बताओ।"

मैंने जिनतान, मुसोलिनी, कात्सूमाता और मीने के नाम बता दिये। मेरे यह बताने पर कि ये लोग क्वान्तुंग सेना के स्टाफ में काम कर चुके हैं, उसने उनके नाम नोट कर लिये और पूछा कि क्या इनमें से किसी ने जासूसी के नकानो स्कूल में भी ट्रेनिंग प्राप्त की है। उत्तर में मैंने मुसोलिनी और कात्सूमाता का नाम बता दिया। हार्शबर्गर ने कागज पर फिर कुछ नोट किया।

"शानदार रिकार्ड है तुम्हारा," कार्ड के साथ नत्थी कागज पर हाथ मारते हुए हार्शबर्गर ने कहा,—"महाद्वीप में खुफियागीरी का तुम्हारा अनुभव अत्यन्त मूल्यवान है। मैं समझता हूँ कि तुम हमारे लिए उपयोगी होगे। कुछ सवालों के जवाब से तुम अपने काम की शुरूआत कर सकते हो। बैठ जाओ, मिस्टर प्रेत !" मेज के पास रखी एक आराम कुर्सी की ओर उसने

इशारा किया।

हार्शबर्गर ने मुझे कुछ सवाल लिख कर दिये जिनमें पूछा गया था : शंघाई खुफिया विभाग में मैंने क्या काम किया, कुओमिन्तांग और गुप्त हुन-पांग सोसायटी के उन जासूसों की मैं एक लिस्ट बनाकर दूं जो कि मेरे निर्देशन में काम करते थे, और तथाकथित तोआ-दोबून-शोइन इन्स्टीट्यूट के,—शंघाई में हमारी खुफिया एजेन्सी के,—बारे में कुछ बताऊँ जिसका काम कम्युनिस्टों के भूमिगत केन्द्रों को छिन्न-भिन्न करना था।

"इन सवालों को अपने घर ले जाओ। जब तक इनके जवाब लाओगे, मैं कुछ दूसरे सवाल भी तैयार कर लूँगा।"

आँखें फैलाकर उसने मेरी ओर देखा। फिर एक लिफाफे में मेरा तावीज़, डाक्टरी सर्टीफिकेट और सवालों वाला पर्चा रख दिया।

"अब भेष बदल कर घूमने की जरूरत नहीं। तुम्हारा सर्टीफिकेट एक प्रामाणिक दस्तावेज़ है। इसे अपने पास रखो, और निश्चिन्त होकर काम करो। बधाई!"

मैंने लिफाफा ले लिया।

"अब तुम जा सकते हो," उसने कहा,—"जब भी जरूरत होगी, मैं तुम्हें फोन से सूचित करूंगा।"

हार्शबर्गर ने एक लैफ्टीनेन्ट को बुलाया और उससे कहा कि मुझे इमारत से बाहर जाने की इजाज़त है। विदा करते समय उसने मुझे सावधान किया कि मैं अपराधियों के गुप्त रजिस्टर में एक लाश के रूप में दर्ज हूँ, इसलिए अपने असली नाम को मुझे सदा के लिए भूल जाना चाहिए। डाक्टरी सर्टीफिकेट में दर्ज नाम और पद ही अब मेरा एकमात्र सहारा है। जापानी अफसर की हैसियत से शपथ लेकर मैंने उसे आश्वासन दिया कि यह भेद कभी प्रकट नहीं होगा।

हैड ग्राफ़िस

[१]

घर लौटते ही मैंने ली से सब कुछ बता दिया,—अपनी गिरफ्तारी के बारे में, हैडक्वार्टर पहुंचने और हार्शबर्गर से जो बातें हुईं उन सब के बारे में। अपनी प्रिय मुद्रा में, दोनों हाथों को जोड़ कर पेट पर रखे और सन्तोष के साथ जब-तब सिर को हिलाते हुए, ली ने मेरी बातें सुनीं।

"अन्त भला तो सब भला," ली ने कहा,—"तुम्हें सी. आई. सी के उस जासूस का कृतज्ञ होना चाहिए। तुम अब अपने को मुक्त समझो, और खुल कर मेरे आफिस में काम कर सकते हो।"

"अर्थात तुम्हारी खमीरी खादों के लिए ग्राहक बटोरना शुरू करूं?" मैंने कुछ खीझकर कहा।

ली निशब्द हंसी हँसा।

"नहीं, अब मैं तुम्हें अपने आफिस के असली काम के बारे में बता सकता हूँ। तुम्हें काफी दिलचस्प मालूम होगा।"

और उसने मुझे तथाकथित मनीला सम्मेलन के बारे में बताना शुरू किया। आत्मसमर्पण की घोषणा के प्रसारित होने के तुरन्त बाद ही जेनरल मैकार्थर ने जेनरल कवाबे तोराशीरो को मनीला बुलाया, खुद हवाई अड्डे पर आकर उसका स्वागत किया और गुप्त निर्देश दिये। चीफ आफ स्टाफ जेनरल सदरलैंड भी वार्ता के समय मौजूद थे।

टोकियो लौटने पर कवाबे ने सम्राट के सम्मुख अपनी विनम्र रिपोर्ट पेश की, और सम्राट की सरकार ने मैकार्थर के निर्देशों पर तुरन्त अमल शुरू कर दिया।

चीन में जापानी सेनाओं के कमाण्डरइनचीफ ओकामूरा को कुओ-मिन्तांग सेना के जेनरल स्टाफ के चीफ से गुप्त संधि करने का आदेश दिया गया। इसी प्रकार की एक अन्य संधि मारशल येन सी-शान से भी की गई। इन दोनों संधियों का लक्ष्य चीन के प्रमुख क्षेत्रों को चीनी कम्युनिस्टों के हाथों में पड़ने से रोकना था।

इसके बाद देश जापानी सेनाओं का विघटन शुरू हुआ। सैनिक यूनिटों और सैनिक संस्थाओं के विघटन के साथ-साथ विघटित लोगों के विविध प्रकार के अन्य संगठनों और संस्थाओं का,—कम्पनियों, व्यापार करने वाली दुकानों, सोसायटियों और क्लबों का,—उदय हो गया। नियमित सेना के अफसर बिखर कर तितर-बितर न हो जायं, इसलिए उन्हें विभिन्न संस्थाओं के रूप में गूंथ दिया गया था। अफसरों की तमाम सोसायटियाँ,—उनके नाम और प्रकृति चाहे जो भी हों,—अमरीकी सर्वोच्च कमान के हैडक्वार्टर्स के मातहत थीं।

जापानी सेना के सैनिकों की पूरी सूची और जेनरल स्टाफ की तमाम फाइलें,—प्रमुख रूप से वे जो इशीहारा योजना से सम्बंधित थीं,—अमरीकी कमान को सौंप दी गईं।

दूसरे शब्दों में यह सर्वोच्च अमरीकी कमाण्डर के तमाम निर्देशों को अमल में लाया गया।

"हमारे विघटित सैनिक हैडक्वार्टर्स के किस विभाग के अन्तर्गत आते हैं?" मैंने ली से पूछा।

"एक विशेष विभाग के जिसका काम जापानी पुलिस की यूनिटों का संगठन करना है। लेकिन यह तो केवल ऊपर की बात हुई। असल में इसका कार्यक्षेत्र काफी व्यापक है। इस आफिस का नाम है 'ज़ी. फो.'।"

"इन अक्षरों का क्या मतलब है?"

"ज़ी से मतलब है ज़ीरो, और फो से फोर्सेज़!"

"यानी ऐन वक्त पर काम आने वाली सेनाएँ......बहुत ही आशाप्रद नाम मालूम होता है!"

उसने गरदन हिला कर सहमति प्रकट की।

"इसका मतलब साफ़ है। अमरीकियों ने इशीहारा योजना को अपनाने का निश्चय कर लिया है। हम जो नहीं कर सके, उसे अब वे पूरा करेंगे।"

"लेकिन इसका मतलब यह भी है कि हमारे बिना उनका काम नहीं चल सकता।"

"हाँ, हमारे बिना उन्हें सफलता नहीं मिल सकती।"

हमने एक-दूसरे की ओर देखा और हंस पड़े। ली ने अपनी अलमारी में से 'सफेद सारस' की बोतल और दो प्याले निकाल लिए।

"तुम्हारे हार्शबर्गर के बारे में भी मैं कुछ जानता हूँ," ली ने कहा,—"कहते हैं कि वह हैडक्वार्टर्स के खुफिया अफसर मेजर जेनरल चार्ल्स विलोबी के यहाँ अत्यन्त गुप्त कामों का इनचार्ज है। वह "हशहश" नाम से प्रसिद्ध है, और 'जी.फो' में कार्य करता है।"

सुबह तक हम बातें करते रहे। ली ने अपनी घड़ी की ओर देखा और रेडिओ खोल दिया। 'लापता सगे-सम्बंधी और मित्र' नामक प्रोग्राम सुनाया जा रहा था। देर से उठने की आदत होने के कारण इस प्रोग्राम को मैं पहले कभी नहीं सुन सका था। लेकिन इतना मैं जानता था कि युद्धोत्तर जपान में रेडिओ का यह प्रोग्राम सर्वाधिकार दिलचस्पी के साथ सुना जाता है।

जो चन्दन का एक व्यापारी अमुक नाम और अमुक जगह का निवासी है, कृतज्ञ होगा अगर कोई यह बता सके कि उसकी पत्नी जो टोकियो पर बम वर्षा के दौरान में एक दिन गायब हो गई थी, अब कहाँ है? बर्मा में मारे गये एक गैरकमीशन्ड अफसर के सम्बंधियों को सूचना दी जाती है कि अमुक पते पर जाकर वे उसकी अस्थियाँ प्राप्त कर लें। एक विवाहित दम्पत्ति ने नन्हीं लड़की को अपने यहाँ रख लिया था। इस लड़की की मा मर गई थी और उसका पिता अब कोरिया से लौट आया था। सो दम्पत्ति को लौटे हुए पिता का अता-पता मालूम करना था ताकि लड़की को उसके पास भेज दिया जाय।

अन्त में रेडिओ ने सूचना दी : "सकानो कुमाको नामक नर्स जो पिछले साल पन्द्रह नवम्बर को बोर्नियो से अपने घर लौटी थी, मिस्टर इमादा इन्सोक से अपने पुराने पते पर मिलना चाहती है।"

मैं हंस दिया।

"कोई प्रेमिका अपने प्रेमी से मिलना चाहती है।"

"नहीं," ली ने कहा,—"इसका मतलब यह है कि कल साँझ के तीन बजे,—साकूमा फर्म के आफिस में,—हमारी हवाई यूनिट के अफसरों की एक मीटिंग होगी। जरूरत पड़ने पर इस तरह की सूचनाओं के लिए इस प्रोग्राम से काम लिया जाता है।"

[२]

टोकियो में व्यापारियों की बस्ती में जब कभी भी मैं जाता था तो उसकी तंग गलियों में भांति-भांति के साइन बोर्ड लगे घरों की पांतें तुरन्त मेरा ध्यान आकर्षित करती थीं। उस आकर्षण का रहस्य अब मेरी समझ में आया, और साइन बोर्डों पर बने तरह-तरह के चिन्हों, नम्बरों, अंग्रेजी और जापानी अक्षरों का असली मतलब अब मेरे सामने प्रकट हुआ।

अब मैंने जाना कि 'खमीरी खाद' और 'शीता के कुकुरमुत्ता' का एक ही अर्थ है। इन चीजों का प्रचार-प्रसार करने वाली तमाम कम्पनियाँ और फर्म जेनरल इशीहारा के सुप्रसिद्ध संगठन पूर्वी एशिया लीग की शाखाएँ थीं।

नाम की जगह नम्बर पड़ी तमाम सोसायटियाँ और क्लब,—जैसे सोसायटी ८, सोसायटी १४, सोसायटी ३८ तथा अन्य,—एक उसी यूनिट या एक उसी स्कूल में ट्रेनिंग प्राप्त अफसरों की संस्थाएँ थीं

तोको रोजावा, योकोता और मिसाका आदि क्षेत्रों में स्थित "कृषि सहकारी समितियाँ," हवाई अफसरों की संस्थाएं थीं, और बड़े नगरों में साइकिल रिक्शा सहकारी समितियाँ' तथा जापान सागर के तटवर्ती गाँवों में 'मछिहारों की की समितियाँ' स्थल और नौ सेना के अफसरों की संस्थाएँ थीं। इन सहकारी समितियों में से कुछ में केवल टैंक और हवाई सैनिकों

की शहीदी यूनिटें शामिल थीं।

जूनियर अफसरों के इन संगठनों के साथ अति दाहिनी पंथी संस्थाओं के सदस्य भी शामिल थे। युद्ध के बाद इन संस्थाओं को भंग कर दिया गया था, लेकिन अमरीकी अधिकारियों के संरक्षण में शीघ्र ही विभिन्न नामों से इनका फिर उदय हो गया।

आत्मसमर्पण के समय हमारे विद्रोह में हिस्सा लेने वाला महान् ओरियेण्ट स्कूल चोला बदल कर अब फूजी कामर्शियल कम्पनी बन गया था। इसी प्रकार अन्य संगठनों ने अन्य नाम धारण कर लिए थे : सिलवर स्टार व्यापार कम्पनी, मिदोरी उद्योग असोसिएशन, अर्थशास्त्र और मजदूरों की अध्ययन सोसायटी, महान जापान के श्रमिकों का संघ आदि। क्युशु द्वीप की काला अजगर सोसायटी अब किसनथीयम पताका असोसिएशन बन गई थी। इस तरह की करीब दो हजार सोसायटियों के नाम मैकार्थर के हैडक्वार्टर्स में रजिष्टर्ड थे। इन सब का लक्ष्य कम्युनिस्टों के,—साम्राज्य के घरेलू और भीतरी दुश्मनों के,—खिलाफ जापान के युवकों को तैयार करना था।

बड़े अफसर एक-दूसरे से सर्वथा पृथक छोटे-छोटे दलों में संगठित थे,—ठीक उसी प्रकार जैसे कि किसी विद्रोह के अवसर पर किया जाता है।

शिनजुकू क्षेत्र में योत्सुआ स्टेशन के सामने फुकुदाया होटल में समुद्री अफसरों का अड्डा कायम था, और इशीगोम जिले के वाकामात्सूसो होटल में कीटाणु-युद्ध के विशेषज्ञ जमा होते थे। पच्छिमी गिनजिपो में रोमान्स क्लब जासूसी के नकानो सैण्ट्रल स्कूल के अफसरों का केन्द्र था। शिबूया क्षेत्र में अकाहोशी काफे कोरिया में जापानी सेना के स्टाफ अफसरों का अड्डा था। रूसी मामलों के विशेषज्ञ अफसर ली के दफ्तर में अपना ताना-बाना बुनते थे। इस प्रकार समूचे टोकियो में चायघरों, जलपान-घरों और होटलों के रूप में अफसरों के ये संगठन फैले हुए थे।

इन सब संगठनों और दलों की देखभाल बड़े अफसरों के सबसे ऊँचे संगठन करते थे। यह संगठन समुद्री यातायात कम्पनी, आयात-निर्यात

कम्पनी तथा इसी तरह की अन्य बड़ी-बड़ी कम्पनियों के रूप में कायम थे।

और इन तमाम छोटे-बड़े संगठनों, कम्पनियों, फर्मों और सहकारी समितियों, क्लबों और काफों के सूत्र एक जगह पर केंद्रित थे,—हीबिया क्वार्टर में,—जिसे सरकारी तौर पर जेनरल हैडक्वार्टर्स या 'जी. एच. क्यू' कहा जाता था। अंग्रेजी के इन तीन अक्षरों 'जी. एच. क्यू' का हमारे घरेलू दुश्मन जापान के कम्युनिस्ट दूसरा ही अर्थ लगाते थे। गो होम क्विक—जल्दी अपने घर लौट जाओ!

[३]

काबूकीजा नाट्यशाला के घूमते हुए स्टेज की भाँति टोकियो का अब एक नया ही रूप मेरी आँखों के सामने प्रस्तुत था। टोकियो अब मुझे हिरोशिमा की उस स्त्री के समान नहीं मालूम होता था जिसका मुंह झुलसा हुआ था और जिसके चेहरे पर रंग-बिरंगी धारियों के दाग पड़ गये थे। टोकियो अब मुझे गुप्त भाषा में लिखी और अत्यन्त भेद-भरी दस्तावेज़ की भाँति मालूम होता था।

पोट्सडम घोषणा और जनतंत्र का युग समाप्त हो चुका था। अमरीका के सर्वोच्च कमाण्डर के आदेश से हमारी सरकार ने हड़तालियों, प्रदर्शन करने वालों, उत्पातियों और उनके सभी समर्थकों को सीखचों में बन्द करने के आर्डर जारी कर दिए थे। देखते-न-देखते नज़रबन्दी गृहों और जेलों में तिल रखने की भी जगह नहीं रही। प्रधान मंत्री याशीदा ने घोषित किया कि सरकार नये-नये बन्दीगृहों का निर्माण करने के लिए पूरी तरह तैयार है। इसमें जरा भी कोताही नहीं की जायगी।

प्रतिक्रियावादी संगठन मैदान में उतर आये। मजदूरों की सभाओं और उनके नेताओं पर हमले किए जाने लगे। कम्युनिस्ट पार्टी के मंत्री तोकूदा पर दस्ती बम फेंका गया, मगर वह बाल-बाल बच गये।

तोकूदा पर हमले के तीन दिन बाद ही मैकार्थर ने कारखानों के मजदूरों तथा सरकारी और म्युनिसिपल कर्मचारियों की हड़तालों को गैर

कानूनी करार दे दिया। सरकार ने ऐलान किया कि हड़तालों में हिस्सा लेने वालों पर फौजदारी अदालत में मुकदमा चलाया जायगा।

इसके विरोध में समूचे जापान में हड़तालों की लहर दौड़ गई। टोकियो मशीन शौप के मजदूरों ने सब से पहले हड़ताल की, फिर शिकोकू, होकाइदो और क्युशु द्वीप के रेलवे मजदूर आगे बढ़े, इसके बाद ओसाका, नगानो और होंशो द्वीप के अन्य नगरों के डाक-तार मजदूर हड़ताल में शामिल हो गए। जापान के चारों बड़े द्वीपों पर हड़ताल-कमेटियों के लाल झंडे फहराने लगे।

[४]

जापान के कम्युनिस्ट अब हमारा सब से बड़ा सिर-दर्द बन गये थे। एक ही चोट में उनका सफाया करना जरूरी था। एक घटना ने इसका अवसर प्रदान कर दिया।

किनूतामूरा बस्ती में तो तोहो फिल्म कम्पनी का स्टूडिओ था। इसके कुछ मजदूरों और कर्मचारियों को नौकरियों से अलग कर दिया गया था। प्रतिरोध में उन्होंने फिल्म स्टूडिओ पर कब्जा कर लिया, और काम पर फिर से लगाये जाने की माँग करने लगे। स्टूडिओ के अन्य सब कर्मचारी भी उनके साथ शामिल हो गये। महीनों से यह संघर्ष चल रहा था, और दोनों पक्षों में से एक भी झुकने के लिए तैयार नहीं था।

करीब दो हजार हड़तालियों और उनका साथ देने वाले अन्य कारखानों के मजदूरों ने स्टूडियो के इलाके पर कब्जा कर लिया था। अच्छी खासी किलेबन्दी की उन्होंने रचना की थी। गर्म-दली फिल्म-डाइरेक्टर इस किलेबन्दी के पीछे थे। कामेई फूमियो के नेतृत्व में, पुलिस और फौज के आक्रमण से अपनी रक्षा करने के लिए, तरह-तरह के जालों की रचना की गई थी। इमारत के अग्र भाग में, रंगों के बड़े-बड़े पीपों पर, मूवी वैन्टीलेटर फिट थे। यह इसलिए कि पुलिस के धावा बोलने पर उसकी आँखों में रंगों के फव्वारे छोड़े जायँ। कटे हुए पेड़ों और काँच के टुकड़ों से भरे थैले तैयार

थे। छतों पर से कटे हुए पेड़ों को लुढ़काने और खिड़कियों से काँच के टुकड़ों की वर्षा करने की व्यवस्था थी। बिजली भरे तारों और अन्य बहुत से विचित्र उपायों से काम लिया गया था। इन सबकी रचना करने में फिल्म डाइरेक्टरों ने अपनी पूरी सूझ-बूझ से काम लिया था।

अमरीकियों को विश्वास था कि हड़ताली अस्त्र-शस्त्रों से पूरी तरह लैस हैं।

जेनरल हैडक्वार्टर्स ने हड़ताल को कुचलने का निश्चय किया। जापानी पुलिस के लिए आवश्यक आदेश जारी कर दिये गए। चूँकि घटनास्थल पर सभी अफसर और समाचार-पत्रों के संवाददाता मौजूद रहेंगे, इसलिए पुलिस को ताकीद कर दी गई कि वह पहले गोलियाँ न चलाए और हड़तालियों को आक्रमण करने दे। ऐसा होने पर उनकी हड़ताल सशस्त्र विद्रोह का रूप धारण कर लेगी, और तब उनके खिलाफ प्रत्येक कार्रवाई करने का हमें कानूनी अधिकार प्राप्त होगा।

पुलिस के तमाम लोगों को चेता दिया गया कि खून-खराबे के लिए तैयार रहें। स्टूडियो के समूचे क्षेत्र को चारों ओर से घेर लिया जायगा ताकि हड़तालियों को नगर से मदद न मिल सके, न ही उनमें से कोई बच कर भाग सके। ऐसा करनेवालों को गिरफ्तार करने और प्रतिरोध करने की सूरत में उन्हें गोली का निशाना बनाने के आदेश जारी कर दिये गए।

[५]

अगले दिन, सवेरे ही, करीब बीस अफसर ली के घर पर जमा हुए। ाकनूतामूरा के लिए हम ट्रक से रवाना हो गए।

फिल्म स्टूडियो का क्षेत्र एक सुविस्तृत उद्यान मालूम होता था। नीची पहाड़ियों और अनानास तथा बांसों के घने झुरमुटों के बीच पैवीलियन और युरोपीय ढंग के छोटे-छोटे बँगले बने थे।

बस-स्टाप से कुछ ही दूर हम ट्रक से उतर गए और प्रवेश-द्वार की ओर चलने लगे। हड़तालियों ने कंटीले तारों का जाल-सा फैला रखा था और

जहाँ-तहाँ लगी खतरे की तख्तियों से मालूम होता था कि इन तारों में बिजली भरी है। लोहे के ऊँचे बाड़े के उस ओर बैरीकेडों और उनके पास खड़े पिकेटों की झलक दिखाई देती थी। पिकेट निशस्त्र थे। देखने पर वे लड़ाई के लिए जरा भी प्रस्तुत नहीं मालूम होते थे। साधारण खेल के कपड़े,— खुले गले की कमीज और निकर,— पहने थे। लड़कियाँ भी साफ-सुथरे कपड़े पहने थीं। पेड़ों के बीच कहीं से भोंपू की आवाज आरही थी। ऐसा मालूम होता था कि मानो स्टूडियो में किसी फिल्म का शूटिंग होने जा रहा हो।

आकाश में तीन वायुयान प्रकट हुए। स्टूडियो पर दो-तीन चक्कर लगा कर वे विलीन हो गये। थोड़ी देर बाद सड़क पर कुछ जीपें और ट्रक आते दिखाई दिये। हमने समझा कि हमारी पुलिस आई है। लेकिन निकट आने पर उनमें से अमरीकी सैनिक पुलिस के आदमी उतरते दिखाई दिये। वे अस्त्र-शस्त्रों से पूरी तरह लैस थे। फिर टामीगनों से सुसज्जित अमरीकी सैनिकों का एक दल, जो आधी कम्पनी से कम न होगा, प्रकट हुआ। उनके पीछे अनेक बख्तरबन्द गाड़ियाँ भी थीं।

कुछ देर बाद तीन टैंकों का आगमन हुआ। उनके पीछे अमरीकी अफसरों की मोटरें थीं। एक मोटर में फिल्म उतारने का साज-सामान था। अन्तिम कार में एक जेनरल सवार था। सहसा उसने चिल्लाकर कुछ कहा और स्टूडियो के दरवाजे के पास एक घर की छत की ओर इशारा किया। सफेद कपड़े पहने दो आकृतियाँ छत पर थी। मैंने दूरबीन से देखा। दो युवतियाँ छत के किनारे पर बैठी कुछ खा रही थीं। दोनों ही निशस्त्र थीं।

अन्त में अमरीकी फौजी ट्रकों में हमारी पुलिस भी आगई। उनकी रक्षा के लिए साथ में रुण्ड-मुण्ड-विहीन जापानी टैंक भी था। वे हल्के खाकी रंग की ग्रीष्मकालीन वर्दी पहने थे और रिवाल्वरों, कुदालियों, फावड़ों और तार काटने की कैंचियों से सुसज्जित थे।

वायुयानों ने स्टूडियों के ऊपर एक बार फिर चक्कर लगाये। उनमें से एक इतना नीचे उतर आया कि अनानास के पेड़ों की फुनगों और उस छत

को जिस पर युवतियाँ बैठी थीं, करीब-करीब छूता हुआ निकल गया। युवतियाँ तेजी से खिसक गईं।

मिकामी ने दौड़कर हमें सूचना दी कि उधर, नदी की ओर दरवाजे के पास, कुछ होने वाला है। और सचमुच उस दरवाजे के सामने अमरीकी टैंक, बख्तरबन्द गाड़ियाँ, अमरीकी सैनिक पुलिस तथा हमारी अपनी पुलिस से भरे ट्रकों की कतार मौजूद थी। दरवाजे के पास वाली इमारत की छत पर ईंटों, गाड़ी के पहियों तथा लोहे-लंगड़ का अम्बार तैयार था,—हमले के शुरू होते ही हड़तालियों पर बरस पड़ने के लिए।

मिनट बीतते गये, मगर अमरीकियों ने हमला करने का सिगनल नहीं दिया। निस्तब्धता में भोंपू की आवाज सुनाई दी—"सब लोग स्टेज नम्बर दो पर पहुँच जायँ। गैट रेडी!"

पेड़ों के बीच से सफेद कपड़े पहने लोग तेजी से गुजरते हुए दिखाई दिये। हम अमरीकी टैंकों के बराबर में जाकर खड़े हो गये। हमारे हाथ जेबों में अपने रिवाल्वरों को पकड़े हुए थे।

लेकिन पेड़ों के पीछे से गोलियाँ चलने की आवाज की जगह हमें गाने की आवाज सुनाई दी। आवाज दरवाजे के निकट आती जा रही थी। पुलिस ट्रकों की कतार के पीछे से लाल फरहरे उभरते हुए दिखाई दिये। हड़ताली ही पहल कर रहे थे। लेकिन न जाने क्यों, दरवाजे के पास खड़े अमरीकी और हमारी अपनी पुलिस के लोग पीछे हट गये। हड़तालियों की पहली पाँतें अब बाहर निकल आई थीं। वे अपने हाथों लम्बे बांसों के सिरों पर लगे हुए झण्डे में लिए थे। इनके बाद अन्य हड़ताली, पुरुष और स्त्रियाँ दोनों, चार-चार की पाँतों में, हाथ-में-हाथ डाले, प्रकट हुए। उनके पास न तो झडे थे, न कोई हथियार। हमारी कुछ समझ में नहीं आया कि यह क्या हो रहा है। हड़तालियों के दस्ते, दुनिया-भर के मजदूरों की एकता का गीत गाते हुए, टैंकों के पास से, बख्तरबन्द गाड़ियों और अमरीकी सैनिकों से भरे ट्रकों के पास से, गुजर गए।

एक हड़ताली ने चिल्लाकर कहा,—"जहाजी बेड़े को भी अपने साथ

खे आते। बस, उसी की कसर रह गई!"

हड़तालियों के समूचे दस्ते में हँसी की लहर दौड़ गई। लड़कियों ने खुशी में अपने घुटनों को थपथपाया और हँसी के मारे दोहरी हो गईं। मैंने अपनी दोनों जेबों में रिवालवरों को मजबूती से पकड़ लिया और अपने चारों ओर नजर घुमा कर देखा। अमरीकी अपनी कारों में खड़े थे,—अपने हाथों को बगल में दबाए, और अपनी ऊँची टोपियों को आगे की ओर खींचकर आँखें ढके हुए। एक जीप पर, ड्राइवर के बराबर में, हश-हश खड़ा था। हमारी नजरें मिलीं। आँखें सिकोड़ कर उसने अपना मुँह दूसरी ओर कर लिया।

अमरीकी और हमारी पुलिस के लोग, चेहरों पर अचरज का भाव लिए निश्चल खड़े थे। वायुयानों ने कई चक्कर और लगाए, और नीचे कुछ न होता देख वापिस चले गये। हड़तालियों के दस्ते का अंतिम छोर भी सामने से गुजर गया, और कुछ देर बाद सड़क के दोनों ओर खड़े पेड़ों की ओट में विलीन हो गया। हड़तालियों के गाने की गूंज अभी तक सुनाई दे रही थी,—"हम तुम से नहीं, बल्कि तुम्हीं हो हम से भयभीत!"

अगले दिन समाचार-पत्रों में अमरीकी सैनिकों औरजापानी पुलिस के इस संयुक्तआपरेशन का विस्तृत विवरण प्रकाशित हुआ। अमरीकी स्थल-सेनाओं का निर्देशन,—समाचार-पत्रों ने लिखा,—ब्रिगेडियर जेनरल हाफमैन ने किया था, और मेजर जेनरल विलियम चेज ने, आपरेशन का समग्र रूप में वायुयान से सचालन किया था। कुल मिलाकर दो हजार जापानी पुलिसमैन, एक जापानी पुलिस का टैंक, डेढ़ सौ अमरीकी पुलिस के सैनिक, मोटर-इन्फैन्टरी की एक प्लैटून, छै बख्तरबन्द कारों और ४५ मिलीमीटर की तोपों से युक्त तीन शेरमान टैंकों को इस आपरेशन के लिए जुटाया गया था।

वामपक्षी पत्रों ने अपनी खुशी को जरा भी नहीं छिपाया। उन्होंने लिखा कि अधिकारी सशस्त्र टक्कर के लिए उकसाना चाहते थे ताकि वे हड़-तालियों को अपनी गोलियों का निशाना बना सकें। जापान में मजदूरों की

तमाम यूनियनों पर ताला डाल सकें। लेकिन हड़तालियों ने उनका इरादा भाँप लिया, और उनके उकसावे में नहीं आये।

एक गर्मदली पत्र ने इस मोटी सुर्खी के साथ किनुतामूरा घटना का समाचार छापा—"समुद्री बेड़े के अलावा उन्होंने और कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा!"

बाद में मुझे मालूम हुआ कि जेनरल चेज ने कम्युनिस्टों पर हमला करने का खतरा क्यों नहीं उठाया। उन्हें रिपोर्ट मिली थी कि टोकियो से किनतामूरा हड़तालियों की मदद के लिए कम्युनिस्टों की टुकड़ियाँ आ रही हैं। और इससे पहले कि वह इस रिपोर्ट के सच या झूठ होने का पता लगाता, हड़तालियों के दस्ते घेरे के बीच से गुजर चुके थे।

[६]

लाल झंडे वालों को एक ही आघात में कुचलने में अमरीकी सफल नहीं हो सके। किनुतामूरा आपरेशन की विफलता से हम सबको गहरी निराशा हुई।

इसके प्रतिकूल हमारा स्पेशल सर्विस (खुफिया) विभाग खूब काम कर रहा था। युद्ध के अंतिम दिनों में च्याँगकाईशेक के और हमारे कमाण्डरों के बीच हुआ समझौता तेजी के साथ पूरा हो रहा था। च्याँगकाई शेक ने, अमरीकियों की अनुमति से, हम से बातें करने के लिए अपना एक गुप्त राजदूत भेजा था।

राजदूत का नाम तेह-चेंग था। उसने तकाजा किया कि हम जापान में स्वयंसेवकों की,—उड़ाकुओं, टैंक-चालकों और तोपचियों की,—भर्ती करें और उन्हें जल्दी-से-जल्दी चीन भेजना शुरू कर दें। हीबिया में मैकार्थर के हेडक्वार्टर्स ने भी इसकी सिफारिश की। लेकिन हमारे अफसर इसके लिए तैयार नहीं हुए। कारण कि बिना सोचे-समझे भर्ती करना खतरे से खाली नहीं था। इधर हमारे कुछ अफसरों तक में अवांछनीय चिन्ह प्रकट होने लगे थे,—खासतौर से उनमें जो ड्राइवरों, साइकिल-रिक्शाओं, मछियारों

और खेतिहरों के रूप में काम कर रहे थे। मिसाल के लिए ओसाका में ट्रक-ड्राइवरों के एक दल ने,—भूतपूर्व टैंकमैनों ने,—हड़तालों पर पाबन्दी के खिलाफ मजदूरों के विरोध-प्रदर्शनों में हिस्सा लिया था। और नीगाता थाने में हमारे तोपखाने के अफसरों ने, किसानों के साथ मिल कर, एक स्थानिक जमीदार के गोदामों पर बाकायदा धावा बोला था।

अमरीकी अधिकारियों को ये सब बातें मालूम थीं। उन्होंने हमारे अफसरों की बात को मान लिया और तेह-चेंग को सलाह दी कि वह जल्दी न करे। लेकिन सच पूछा जाय तो खतरे की यह बात केवल एक बहाना थी—विद्रोहियों के साथ मिलजानेवाले अफसरों पर हमारी पहले से ही कड़ी निगरानी थी, और स्वयंसेवकों में उन्हें भर्ती करने का हमारा जरा भी इरादा नहीं था। फिर इन स्वयंसेवक-दलों को चीन भेजने के बारे में हमें कोई जल्दी नहीं थी। हम अभी देखना चाहते थे कि ऊँट किस करवट बैठता है। चीनी मोर्चों की स्थिति नाजुक थी। कम्युनिस्टों ने सभी मोर्चों पर जवाबी हमला शुरू कर दिया था,—कांगचुन, मुकदन और ताइयून को उन्होंने घेर लिया था, और शान्तुंग का समूचा प्रान्त उनके कब्जे में आगया था। और देखते देखते, पाइपिंग-तीनतसिन का समूचा क्षेत्र भी उनके अधिकार में आगया।

ऐसी परिस्थिति में चीन में अपनी सेनाओं को भेजने का मतलब चाय की केतली से ज्वालामुखी की आग बुझाने के समान होता। इस लिए अभी स्थिति का अध्ययन करने की जरूरत थी। जेनरल हैडक्वार्टर्स की भी यही राय थी। चीन के बजाय स्वयंसेवकों को ताईवान (फारमूसा) भेजने का अब हमसे प्रस्ताव किया गया। इसका हमने कोई विरोध नहीं किया। विरोध न करने का कारण यह नहीं था कि हम कुओमिन्तांग के अन्तिम गढ़ के रूप में इस द्वीप की कम्युनिस्टों से रक्षा करना चाहते थे, बल्कि इस लिए कि ताईवान को हम खुद अपने वास्ते सुरक्षित रखना चाहते थे।

[७]

स्वयं-सेवक यूनिटों में भर्ती आदि की कैसे-क्या व्यवस्था होगी, किसके जिम्मे क्या काम रहेगा, इस सब के लिए अमरीकियों की मंजूरी प्राप्त हो गई, और काम आगे बढ़ने लगा। निश्चय किया गया कि यूनिटों के निर्माण तथा ताईवान के लिए उनकी रवानगी से सम्बंधित तमाम कामों को 'आपरेशन वाको' की संज्ञा दी जाय ।

इस नाम का सभी ने हृदय से स्वागत किया। छै शती पहले हमारे पूर्वज पूर्वी एशिया के सभी सागरों पर छा गये थे और ताईवान पर सबसे पहले धावा बोलने वाले जापान के वाको नामक समुद्री डाकू थे। और हमारे वीर सैनिक, अपने युद्ध-देवता सूमिया हाचीमानू के सामने माथा टेक कर, एक बार फिर दक्षिण सागरों की ओर प्रयाण कर रहे थे।

कवाबे, दोई और अन्य कई अफसरों के साथ, ली इशीहारा से मिलने के लिए यामागाता बस्ती की ओर चल दिया। इशीहारा बीमार था। उसने बताया कि निकटतम हल्कों के लोग ही नहीं, बल्कि अमरीकी स्टाफ अफ़सर भी दवाइयाँ आदि लेकर इशीहारा के पास पहुँचते हैं।

"जेनरल हाल्डर," ली ने मुसकराते हुए बताया—"जिसने रूस के खिलाफ युद्ध की बारबरोसा योजना की रचना की थी,जर्मनी में अमरीकियों के लिए काम कर रहा है। हाल्डर जर्मनी का इशीहारा है।"

कम्युनिस्टों ने चीन में यांगसी नदी को पार कर नानकिंग पर अधिकार कर लिया था। कुओमिन्तांग राजधानी के पतन के बाद उएनो उद्यान के कानेई मन्दिर में एक सभा हुई। ताईवान (फारमूसा) के लिए पहली यूनिट की रवानगी के उपलक्ष्य में इस सभा का आयोजन किया गया था।

मन्दिर के प्रवेश-द्वार पर इन्फ्लुएँजा-विरोधी टीके लगाये। कई लोग पर्चे बाँट रहे थे जिनमें भर्ती करनेवाले अफसरों के पते छपे हुए थे। चैरी के वृक्ष फूलों से लदे थे और मन्दिर चारों ओर चैरी के फूलों की पत्तियों का कालीन-सा बिछा हुआ था।

जेनरल सुमिदा ने विदाई का भाषण दिया :"साम्राज्य की रक्षा के लिए चैरी के फूलों की पत्तियों की भाँति हमें अपने को न्योछावर करना होगा। स्वयं सेवक यूनिट के सैनिकों को मैं बधाई देता हूँ जो कि राख के ढेर से नया जन्म लेने वाली शाही सेना के प्रथम अंकुर हैं!"

तालियों की गड़गड़ाहट से सारा मन्दिर गूँज उठा और 'यूमी यूकावा' गीत के स्वर हवा में तैरने लगे। यह एक अति स्मरणीय गीत था जिसे सभी सच्चे जापानियों ने युद्ध के समूचे दौरान में गाया था :

"हमारी लाशें लहरों पर
हमारी लाशें धरती पर
मृत्यु को गले लगाएँ हम
सम्राट को जीवित रखें हम!"

[८]

जरूरी बुलावा पाकर हश-हश से मिलने के लिए मैं तकानावा पहुँचा। मैंने उसे बताया कि मैं अपना एक अलग आफिस खोलना चाहता हूं। इस आफिस का लक्ष्य चीन में स्पेशल सर्विस के भूतपूर्व जासूसों की भरती करना तथा शंघाई, बूसीह, हानचौ और नानकिंग में अपनी एजेन्सियों से नये सिरे से सम्पर्क बनाना और इसके बाद ताईवान की दिशा में काम की शुरूआत करना होगा।

मैं अपनी बात खत्म भी नहीं कर पाया कि हश-हश ने सिर हिलाते हुए कहा,—"नहीं, तुम्हें दूसरी दिशा में काम करना होगा।"

"किस दिशा में?"

वह गुर्रा उठा। साफ मालूम होता था कि उसका मिज़ाज ठिकाने पर नहीं है।

"इसका मतलब यह कि तुम कुछ नहीं जानते? जेनरल स्टाफ का अफसर, एक ऐसा आदमी जिसके बारे में सिफारिश की गई थी कि वह एक अत्यन्त अनुभवी खुफिया अफसर है, इतना मन्दबुद्धि होगा यह मैं नहीं

जानता था।"

किसी प्रकार अपने-आप पर काबू कर मैंने बाधित विनम्रता से कहा,—"अगर तुम मुझे मन्दबुद्धि समझते हो तो फिर अच्छा यही है कि अपनी बात को जरा खोल कर कहो।"

"हमें एकदम नये सिरे से, क·ख·ग से, अपना काम शुरू करना है,—ठीक वहीं से जहाँ से कि तुमने शुरूआत की थी। क्यों, अब तो समझ में आया?"

"यानी इशीहारा योजना की एकदम शुरू से शुरुआत करनी है!"

हश-हश की मुद्रा से विक्षोभ प्रकट था।

"देखता हूँ कि प्राचीन काल से प्रसिद्ध जापान की शिष्टता ने तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचाया है। इसने तुम्हें साहसी की बजाय कायर बना दिया है, और तुम्हारे दिमाग को जो खराब कर दिया है सो अलग......"

आवेश में आकर मैं खड़ा हो गया और मैंने राखदानी उठाली।

"कायर तुम खुद हो!" मैंने चिल्ला कर कहा,—"कहे देता हूँ, मेरा अपमान करने का साहस न करना!"

वह भी उछल कर खड़ा हो गया और अपने हाथ को जेब में डालते हुए दांत भींचकर बोला—"बस, आगे पांव न बढ़ाना, पीला बन्दर,—नहीं तो यहीं भून कर रख दूंगा। कायर, घिनौना जापानी!"

"कायर तुम खुद, अमरीकी कुत्ता!"

बीच में हमारे मेज थी, और हम दोनों आमने-सामने खड़े थे। उसकी नजर मेरे हाथ पर थी जिसमें मैं राखदानी उठाए था, और मेरी नजर उसके हाथ पर थी जो उसकी जेब में धंसा हुआ था। केवल नजरें मिलने की देर थी कि विस्फोट हो जाता। निस्तब्धता इतनी थी कि उसके हाथ में बंधी घड़ी की टिक-टिक साफ सुनाई देती थी। एक मिनट बीत गया। वह हंसा, और जेब में से अपना हाथ बाहर निकाल कर बैठ गया। मैं भी बैठ गया और राखदानी को मैंने मेज पर रख दिया। उसने अपना पाइप निकाल कर सुलगाया। मैंने भी एक सिगरेट जला ली। वह मुसकराते हुए बोला :

"अच्छी बात है, अब हम कायदे से बात करेंगे...इस तरह की हरकत से कोई लाभ नहीं। अब हम अपना बहुमूल्य समय नष्ट नहीं करेंगे। हमारा एक समान दुश्मन और एक समान लक्ष्य है।"

मैंने सिर हिलाया और राखदानी को उसकी ओर बढ़ा दिया, लेकिन राखदानी पर से अपना हाथ मैंने हटाया नहीं।

"हाँ तो अब बताओ, तुम क्या कहना चाहते थे?"

"असल में कहना कुछ भी नहीं है। हर चीज बिल्कुल साफ है। तुम्हारे आत्म-समर्पण के बाद एशिया में हम तुरंत तुम्हारी जगह लेना चाहते थे, लेकिन च्यांगकाईशेक ने सब कुछ बण्टाढार कर दिया। चीन में सब कुछ गड़बड़ हो गया। इसने एशिया में हमारी समूची नीति को ही डगमगा दिया अगर हम कोई जवाबी कार्रवाई नहीं करते तो फिर एक ही रास्ता हमारे सामने रह जाता है। वह यह कि एशिया से विदा हो जाएँ। लेकिन इसके लिए हम कैसे तैयार हो सकते हैं। सो अब हम वही करेंगे जो तुमने किया था। एशिया में अपनी स्थिति मजबूत बनाने के लिए पहले तुमने ताईवान पर अधिकार किया और फिर........"

"........कोरिया पर? लेकिन हमने ये दोनों काम एक साथ नहीं किये थे।"

"तब स्थिति भिन्न थी। रूस और चीन लाल नहीं थे। अब एक क्षण के लिए भी प्रतीक्षा नहीं की जा सकती.......ताईवान और कोरिया पर हम एक साथ अधिकार करेंगे, और फिर मंचूरिया पर कब्जा कर आगे बढ़ते जायेंगे। तुम्हारी इशीहारा-योजना केवल रूस के खिलाफ थी, हमारी योजना उससे कहीं ज्यादा व्यापक है,—उसका लक्ष्य है रूस, और उसके अलावा सम्पूर्ण एशिया!"

"सरकारी भाषा में जापान में इस योजना को 'हाक्को इचीनू' कहा जाता है,—अर्थात "एक आकाश के नीचे क्षितिज की आठ दिशाएं।"

"बहुत लम्बा और बहुत प्रत्यक्ष नाम है। हमारा नाम छोटा है। लेकिन तुम्हें यह सब जानने की जरूरत नहीं। अब तुम जो काम करोगे वह

एक बड़ी योजना के अन्दर आता है। योजना का वह हिस्सा ए. बी. सी कहलाता है।"

राखदानी पर से मैंने अपना हाथ हटा लिया।

"अब समझा। कोरिया प्रायद्वीप की दिशा में अब हम काम करेंगे......"

"हाँ, इसका दक्खिनी भाग ताईवान जनतंत्र कहलाता है और उत्तरी भाग में, जैसा कि तुम्हें मालूम है, कम्युनिस्ट अपने पाँव जमाये हैं। वे यालू की दिशा में हमारा मार्ग रोके हुए हैं। इसलिए पहले उनका सफाया करना होगा।"

मैं हंसा।

"ताईवान के बजाय अब ताईहान की ओर प्रयाण होगा। सो तुमने अब दूसरे छोर से महाद्वीप में प्रवेश करना तय किया है।"

"हाँ, हम इस ओर से आक्रमण करेंगे, और च्यांगकाईशेककी हार का बदला लेंगे।"

हश-हश उठ कर अलमारी के पास गया और एक बोतल, नींबू और चीनी निकाल लाया। उसने दो गिलास भरे और अपने गिलास को ऊँचा उठाते हुए बोला:

"पूसान-यालू-मार्ग से अभियान के उपलक्ष्य में,—हुर्रा!"

नींबू का एक टुकड़ा मुंह में डाल कर मैंने अपनी भौंहें सिकोड़ लीं।

"साढ़े तीन सौ साल पहले हिदेयोशी ने इसी मार्ग पर ठोकर खाई थी। उसकी सेनाएं प्योंगयांग के उत्तरी क्षेत्र तक पहुंच गईं थीं, लेकिन तभी दुनियाभर की अप्रिय चीजें घटीं और उसे प्रायद्वीप से वापिस लौटना पड़ा!"

"तुम्हारा हिदेयोशी एक कमजोर सैनिक था। कहने को तुम्हारे इतिहासज्ञ उसे नेपोलियन कहते हैं, लेकिन था वह कुछ नहीं। इसी लिए उसका कोरियाई अभियान सफल नहीं हुआ......"

हश-हश ने अपनी आंखें सिकोड़ लीं, और घृणा में होंठ बिचका लिए,—"तुम्हारे हिदेयोशी के पास न बाजूका थे, न पैटन टैन्क थे, न जैट-

वायुयान और नापाम बम थे....नहीं, उसके पास ये तथा इसी तरह के दूसरे हथियारों में से कुछ भी नहीं था........हमारा सुप्रीम कमाण्डर अमरीका का बेजोड़ रण-नीतिज्ञ है। उसकी विजय हार का मुंह देखना नहीं जानती।

सुप्रीम कमाण्डर और अपनी सफलता के अभिनन्दन में हमने गिलासों को खनका कर मुंह से लगा लिया।

उस दिन से मैंने कोरिया प्रायद्वीप की दिशा में काम करना शुरू कर दिया।

ऐतिहासिक खोज-सोसायटी

[१]

अपनी कार में बैठा कर हश-हश मुझे तकानावा से सीधे योकोहामा ले गया। नानकिंग स्ट्रीट पर एक छोटा-सा रेस्तोराँ था। पीछे के दरवाजे से हमने इसमें प्रवेश किया। तेल और अफीम से गंधाते एक अंधेरे गलियारे को पार कर एक छोटे से कमरे में हम पहुंचे। कमरे के बीचों-बीच एक चिकनी गोल मेज रखी थी। चुस्त कपड़े पहने, अति शालीन, एक वयस्क आदमी ने हमारा स्वागत किया। देखने में वह मुझे जापानी अमरीकन मालूम होता था, लेकिन असल में वह अमरीकी कोरियन निकला।

उसने डाक्टर रोबर्ट जैफर्सन हान के नाम से अपना परिचय दिया और टूटी-फूटी जापानी में कहा कि वह इस भाषा को समझ तो लेता है, मगर बोल नहीं सकता।

मैंने अपना डाक्टरी सर्टीफिकेट वाला नाम बता दिया। हश-हश ने कहा, "लैफ्टीनैन्ट कर्नल का कोड-नाम हिरोपोन है।"

अफीम-गांजे की भांति हिरोपोन एक नशीला द्रव्य था। हम में से अधिकांश, गोलियों या इन्जैक्शनों के रूप में, उसका सेवन करते थे।

"बहुत ही बढ़िया नाम है। मुझे तुम केवल डाक्टर कह सकते हो।"

केतली और चाय के प्याले लाये गए। लेकिन केतली में चाय नहीं, बल्कि खाकी रंग का कोई पेय था जिसमें दवाई ऐसी सुगंधि आ रही थी। रोबर्टहान ने बताया कि पहाड़ी जड़ी-बूटियों से बना यह एक सुप्रसिद्ध चीनी पेय है। इसमें मन को ताजा रखने के अद्भुत गुण हैं।

इसी बीच एक और महोदय आ गये। रोबर्ट हान उठकर खड़ा हो गया और घुटनों पर हाथ रख, काफी नीचे झुक कर, आगन्तुक के प्रति उसने अपना सम्मान प्रदर्शित किया। यह कोरियाई मूंछों वाला वही कर्नल था जिसे मैंने आत्मसमर्पण के दिन विद्रोह के समय जिनतान से बातें करते देखा था। उस समय भी वह मौजूद था जब ली के बाग में दस्तावेजों से भरे सन्दूकों को जमीन में दफनाया जा रहा था। अब उसने अपनी मूछों को साफ कर लिया था। हल्का-सा नमस्कार करने के बाद उसने मुझ से पूछा :

"क्या तुम ऐतिहासिक खोज सोसायटी में काम करते हो ?"

हश-हश ने मेरी ओर से जवाब दिया : "नहीं, स्पेशल सर्विस के मामलों में यह मेरा सलाहकार है, लेकिन ऐतिहासिक खोज सोसायटी से भी इसे परिचित करा दिया जायगा।"

हश-हश ने संकेत से सूचना दी कि जिनसे मिलने के लिए यहाँ आए थे, उनसे मिलना हो गया। अब चला जाय। वापसी में उसने बताया कि मुझ पर काम का भारी दबाव रहेगा। रोबर्ट हान के साथ मुझे काम करना होगा। चीनी कम्युनिस्टों के केन्द्रों में अपने जासूस घुसाकर भीतर से तोड़-फोड़ करने का उसे खूब अनुभव है।

योत्सूआ स्टेशन के सामने फूकूदाया होटल में रोबर्ट हान का अड्डा था। वहाँ मैं उससे मिला। मेइजी विश्वविद्यालय का एक छात्र पाक चा योंग दुभाषिये के रूप में मुझे दिया गया। वह एक बहुत ही अस्थिर, ढीली जुबान का, लड़का था और यह शेखी बघारने में कभी नहीं चूकता था कि सभी बड़े जापानी अफसरों के साथ,—खासतौर से फौजी पुलिस के अफसरों के साथ,—वह काम कर चुका है।

दो अन्य महत्वपूर्ण विभूतियों से मेरा परिचय कराया गया,—दक्षिणी कोरिया के रक्षा-मंत्री, सिन सुंग मो और जेनरल स्टाफ के सहायक चीफ मेजर जेनरल चुंग इर क्वोन से। दोनों में से एक ने भी मुझे प्रभावित नहीं किया। सिन सुंग मो, जिसका जबड़ा ऊँचा और कान छाज से थे और जिसे अपनी आँखों को जब-तब अजीब ढँग से सिकोड़ने की अजब आदत थी,

ओसाका के सूदखोर की भाँति मालूम होता था। दूसरे विश्वयुद्ध में वह एक ब्रिटिश फ़ाइटर (जंगी जहाज) का कप्तान रह चुका था और गर्व के साथ वह इसका उल्लेख करता था।

जेनरल चुंग इर ग्वोन मानचुको सेना में था और मंचूरिया में चीनी कम्युनिस्टों के साथ लड़ने वाले कोरियाई छापामारों को सबक सिखाने का काम उसके जिम्मे था।

ताईहान (दक्षिणी कोरिया) की इन दोनों विभूतियों ने, समान लक्ष्य के लिए, अत्यन्त तेज गति से काम करने के लिए कहा।

चुंग इर ग्वोन ने मुझे एक नया सहायक दिया,—लिम हो, अर्थात हेनरी लिम। जापान के आत्म-समर्पण से पहले वह दक्षिण कोरियाई जेनरल स्टाफ के खुफिया विभाग का एक अफसर था।

कर्नल हिदाका और सुजुकी केइशी भी हमारे दल में शामिल किये गये। हश-हश ने जब मुझसे पूछा कि अपने दल के लिए क्या मैं और कुछ नामों की सिफारिश करना चाहता हूँ तो मुझे अनायास ही अपने दिवंगत मित्रों की याद हो आई: जिनतान की जो उत्तरी चीन में काम कर चुका था, और मुसोलिनी की जिसे कोरिया का अनुभव प्राप्त था। व्यर्थ ही उन्होंने अपनी जान दी। अगर आज वे जीवित होते......!

[२]

ऐतिहासिक खोज सोसायटी, कर्नल हयाशी जिसके अध्यक्ष थे; सच्चे अर्थ में ऐतिहासिक खोज का कार्य करती थी। अनेक सैनिक अफसर इसके खोज-कार्यों में हिस्सा लेते थे।

मैकार्थर के हैडक्वार्टर्स के आदेशानुसार सोसायटी एक योजना का अध्ययन और उसे विकसित करने के काम में जुटी थी। दक्खिनी कोरिया के जेनरल स्टाफ ने, सीनियर अमरीकी राजनीतिक सलाहकार ब्रिगेडियर जेनरल रौबर्ट के निर्देशन में, यह योजना तैयार की थी।

सोसायटी के सदस्यों ने सबसे पहले उस तमाम सामग्री की खोजबीन

की जो कोरिया में जापान के पूर्व आक्रमणों से सम्बन्ध रखती थी। १८७२ में जेनरल सैगो ताकामोरी ने कोरिया पर आक्रमण की एक योजना बनाई थी। इसी प्रकार १८९४ में प्रिन्स आरिसुगावा ने चीन पर आक्रमण करने की एक योजना तैयार की थी। दोनों ही योजनाओं में पूसान और इनचोन में सेनाएँ उतारने तथा फ्योंगयांग को रौंदते हुए तेजी के साथ यालू की ओर बढ़ने की व्यवस्था की। लेकिन आज की स्थिति कुछ भिन्न थी। पूसान और इनचोन अब दक्खिनी कोरिया के पास थे और उनके लिए लड़ने की कोई आवश्यकता नहीं थी। इसलिए हमारे इतिहासज्ञों ने इन योजनाओं के केवल उत्तरार्द्ध का अध्ययन किया,—सिय्रोल से फ्योंगयांग और फिर यालू।

अमरीकी अफसर ने सुझाव दिया कि इस सम्बन्ध में अमरीकी सामग्री का भी अध्ययन किया जाय। १८८६ में अमरीकी समुद्री सेना के जनरल शेरमान ने फ्योंगयांग में अपनी सेनाएँ उतारी थीं। हालांकि उस आक्रमण में अमरीकियों को हार का मुँह देखना पड़ा था, लेकिन उस आक्रमण की मूल बातों से आज भी फायदा उठाया जा सकता है।

हमारे जेनरलों ने कहा कि फ्योंगयांग के क्षेत्र में समुद्री या हवाई सेनाएँ उतारने की बात है तो ठीक; लेकिन ऐसा करने पर हम दक्खिनी कोरिया की मदद करने का नाटक पूरा नहीं कर सकेंगे। असल में होना यह चाहिए कि उत्तरी कोरिया के समुद्रतट के आसपास किसी अमरीकी जहाज पर हमले की घटना रची जाय और इसके जवाब में अपना कदम आगे बढ़ाया जाय। लेकिन इससे भी अच्छा यह होगा कि स्थल-सीमाओं पर कुछ उत्पात शुरू किया जाय और उत्तरी कोरिया को हमला करने वाला पक्ष घोषित कर फिर आगे बढ़ा जाय।

रौबर्ट द्वारा प्रस्तुत योजना को ऐतिहासिक खोज सोसाइटी ने और भी चमका दिया। इसमें दुश्मन पर सीधे सामने से जोरदार आघात करने तथा उसकी पांतों के पिछवाड़े में सेनाएँ उतारने के जरिये विजय पाने की व्यवस्था भी थी।

जुलाई के प्रारम्भ तक तमाम तैयारियाँ पूरी हो गईं। जेनरल किम

सुगचोन के कमान में प्रथम सेना और चाए बियुंग दुक के कमान में द्वितीय सेना हमले के लिए प्रस्तुत हो गई। जेनरल रौबर्ट ने तमाम सैनिक सलाहकारों को अपनी-अपनी यूनिटों के साथ मौजूद रहने के आदेश जारी कर दिये। खुद रौबर्ट भी अपने स्टाफ के साथ सुवोन में, सियोल के दक्खिन में पचीस किलोमीटर दूर, जम गया। कर्नल बीयर्ड का आफिस भी वहीं था।

हमारे अफसरों का एक काफी बड़ा दल, जिसमें ली और मिकामो भी शामिल थे, कोरिया के लिए रवाना कर दिया गया।

[३]

उस दिन, साँझ के समय, मुझे हश-हश की युवती सेक्रेटरी ने फोन से सूचना दी कि उसके चीफ मुझसे तुरन्त मिलना चाहते हैं। हश-हश से मिलने के लिए मैं ताकानावा की ओर चल दिया। जब मैं वहाँ पहुँचा तो शान्त-निस्तब्ध सड़क पर अंधेरा छाया था। सड़क के लैम्पों में से एक भी रोशन नहीं था। हश-हश के निवास-स्थान में भी अंधेरा था और दरवाजे की घंटी बजाने पर भी नहीं बजी। हारकर मैंने दरवाजा खटखटाया। हार्शबर्गर ने दरवाजा खोला और जब उसने देखा कि कौन है तो उसके चेहरे पर अचरज का भाव दौड़ गया।

"तुम यहाँ कैसे ?—तुम से मिलने का दिन तो कल था ?"

मैंने उसे बताया कि उसकी सेक्रेटरी ने फ़ोन से मुझे सूचना दी है। यह सुन उसने झुँझलाहट प्रकट की और अपनी सेक्रेटरी को कोसा : कम्बख्त ने आज फिर गड़बड़ कर दी। केवल अपने युवक-मित्रों से मिलने की तिथियों को छोड़कर उसे और कुछ याद नहीं रहता। और यह अंधेरा ! बिजलीवालों ने हड़ताल कर दी है। चौबीस घंटों तक बिजली गायब रहेगी। अब समय आ गया है कि इन कम्युनिस्टों का दिमाग ठीक किया जाय।

हश-हश के पास माचिस नहीं थी, और उसका सिगरेट-लाइटर काम नहीं कर रहा था। अंधेरे में टटोलते हुए हमने भीतर प्रवेश किया।

कुछ देर बाद, बाहर दरवाजे पर, किसी के खटखटाने की आवाज सुनाई दी। हश-हश ने बाहर जाकर दरवाजा खोला। मैंने उसे किसी से क्रोध-भरी

जोरदार फुसफुसाहट में बातें करते हुए सुना। फिर वह लौट आया और धीमे स्वर में मुझ से बोला :

"दूसरे कमरे की चाबी मेरे पास नहीं है। यहाँ मुझे किसी दूसरे आदमी को लाना है। सो तुम तुरन्त चले जाओ, और उसकी उपस्थिति में मुझसे कोई बात न करना। मैं तुमसे कल शाम को मिलूँगा।"

अंधेरे में मैंने उसे दो आदमियों को कमरे में दाखिल करते और दूर कोने की ओर ले जाते हुए सुना। उसी समय एक कार अहाते में आकर खड़ी हुई, और उसके भोंपू की आवाज सुनाई दी। हश-हश तेजी से बाहर के दरवाज़े की ओर गया और कोरियाई भाषा में किसी को मैंने उसे सम्बोधित करते हुए सुना। बीच-बीच में अंग्रेजी में कुछ कोसता भी जाता था। कार का इन्जन फिर भनभनाने लगा और उसके लैम्पों की रोशनी से खिड़की तथा क़मरा चमक उठा। एक क्षण के लिए ही यह रोशनी हुई होगी, लेकिन उतनी ही काफी थी। मैंने उस कोने की ओर नजर डाली जहाँ नवागन्तुक बैठे थे। और मैं एकाएक चौंक उठा। क्या यह कोई भ्रम था? नहीं मेरी, आँखों को धोखा नहीं हुआ। वे मेरे सामने बैठे थे,—जीते-जागते, सही-सलामत। क्या वे अपनी कब्रों में से उठकर यहाँ चले आये थे?

हश-हश ने भीतर आकर कहा : "हाँ तो शेरी, अब तुम्हें यहाँ से चले जाना होगा,—एक, एक करके जाना। पहला, बाहर पहुंचने पर, दाहिनी ओर को जाय; दूसरा बाँई ओर को; और तीसरा पिछवाड़े के अहाते से दूसरी सड़क पर निकल जायगा। और देखो, किसी के मुँह से जरा सी भी आवाज नहीं निकलनी चाहिए।"

मैं जोरों से हँस पड़ा।

"यह नाटक करने की जरूरत नहीं, लैफ्टीनैन्ट कर्नल। स्पेशल सर्विस के हम जापानी अफसर, केवल गंध से ही, अन्धेरे में भी एक-दूसरे को पहचान सकते हैं। नमस्कार, जिनतान और मुसोलिनी!"

"नमस्कार, कप्पा!" उन्होंने समवेत स्वर में कहा।

"मैंने अपना गुप्त नाम बदल लिया है। कप्पा नहीं, अब मैं हिरोपोल

हूँ। लैफ्टीनैन्ट कर्नल हार्शबर्गर, हमारा उद्धारकर्ता, बनजाई!"

"बनजाई!" उन्होंने दोहराया।

हश-हश ने एक लम्बी सिसकारी-सी भरी। फिर बोला: "बहुत खूब........एक ने दूसरे को सूँघ कर पहचान लिया!"

अपनी जेब से मैंने माचिस की एक डिबिया निकाली।

"यह लीजिए, माचिस है। हमें इस अवसर को मनाना चाहिए। आपके पास ह्विस्की होगी। आइए, सब मिल कर आज की रात को सुहावनी बनायें।"

"नहीं, मेरा घर मधुशाला नहीं है," हश-हश ने कड़े स्वर में कहा,—"और कहीं जाकर जशन मनाओ। इसके अलावा आज रात मुझे काफी काम करना है।"

हम तीनों ने विदा ली, और उन्हें मैं अपने घर ले आया। फिर पास के एक रेस्तराँ में खाने और साके की कुछ बोतलों का आर्डर दिया। उस दिन महल चौक में दूसरों की लाशों के पास उनके लिफाफों की बात के बारे में मैंने कुछ नहीं पूछा। उन्होंने भी अपनी ओर से उसका कोई जिक्र नहीं किया। कुछ देर बाद हँसते हुए जिनतान ने कहा: "मैं जानता था कि तुम लाशों को देख कर समझ जाओगे, और हमारी ही भाँति बच निकलोगे।"

जवाब में सिर हिलाने के सिवा मैं और करता भी क्या। मैंने कहा, लाशों को जब मैंने देखा तो शुरू-शुरू में कुछ अचरज हुआ। फिर मैं समझ गया कि इसका क्या मतलब है, और मैंने भी अपने साथियों का अनुसरण करने का फैसला कर लिया।

"कात्सूमाता और मीने कहाँ हैं?" मैंने पूछा।

"कात्सूमाता ओकीनावा में है और मीने ताईवान में," मुसोलिनी ने जवाब दिया।

सुबह होने तक हम खाते-पीते रहे। संशय के बादलों का मेरे हृदय में अब जरा-सा भी लेश नहीं रहा था। मेरे मित्र जीवित थे, और उनमें से एक ने भी अपने हथियार नहीं डाले थे। विधाता ने उस दिन मृत्यु के चंगुल से

हमारी रक्षा की, कारण कि अभी हमें महान भूमिकाओं का निर्वाह करना था।

[४]

दक्षिणी कोरिया के प्रेजीडेण्ट डाक्टर सिंगमन री अपने चीफ आफ जेनरल स्टाफ चाए बीयुंग डुक के साथ सियोल से जापान आये। हानेदा हवाई अड्डे पर जाकर खुद मैकार्थर ने उनका स्वागत किया और उन्हें अपने साथ सीधे अकासाका ले आया जहाँ पहले अमरीकी दूतावास था। अतिथि अगले दिन तक अकासाका में रहे और फिर वायुयान से सियोल लौट गए।

अकासाका में क्या बातें हुईं, यह पता नहीं चल सका। फिर भी यह साफ था कि इन बातों का उद्देश्य अब तक की तैयारियों और फैसलों से आगन्तुकों को परिचय देने के सिवा और कुछ नहीं हो सकता था।

वायुयान-चालकों, बन्दूकचियों और ट्रक-ड्राइवरों की यूनिटों को कोरिया की दशा में भेजने के आदेश जारी कर दिए गये। वाइस एडमिरल कोशे की सेना को पहले ही ओकीनावा से कोरिया के लिए स्थानान्तरित कर दिया गया था। कोरिया भेजे जाने वाले तमाम स्वयंसेवकों को अमरीकी वर्दियाँ जारी की गईं। उन सब को आदेश दिया गया कि ठिकाने पर पहुँचने पर वे अपने-आपको अमरीकी सेना की ४२२वीं बटालियन का सैनिक बताएँ। यह यूनिट जापानी मूल के अमरीकीयों से बनी थी और युद्ध के दौरान में इटली के मोर्चे पर लड़ चुकी की।

रिजर्व पुलिस के रूप में सैनिकों की शीघ्र ही भर्ती जारी होने की चर्चा गर्म थी।

जिनतान का एक कार्ड मुझे मिला। कार्ड पर हांगकांग की मोहर थी। उसने लैफ्टीनैण्ट जेनरल डोबाशी का मेरे नाम अभिनन्दन भेजा था जो आजकल सैगौन में था। इसका मतलब यह कि हमारी यूनिटें हिन्द चीन में भी पहुँच गई थीं।

आखिर वह दिन भी आया जिसकी मैं प्रतीक्षा कर रहा था। हश-हश ने सूचित किया कि मुझे कोरिया जाना है,—सुवोन में जहाँ स्पेशल सर्विस

का हमारा केन्द्र होगा। हश-हश और डाक्टर भी बाद में हमसे आमिलेंगे। ऐन मौके पर, अभियान से, कुछ ही पहले वे आजाएँगे । सुवौन सियोल से केवल पचीस किलोमीटर दूर था। लेकिन हश-हश की ताकीद थी कि एक क्षण के लिए भी मैं अपने अड्डे को न छोड़ूँ ।

जेनरल कवाबे और ईवाकूरा से विदाई भेंट करने के बाद मेजर कबू-राकी से मिलने के लिए मैं कुबाना होटल गया। काबूराकी हाल ही में सियोल से वायुयान द्वारा आया था। उसने विलियम रसोई नामक खुफिया विभाग के एक दक्षिण कोरियाई अफसर से मेरा परिचय कराया।

हम तीनों रात-भर बातें करते रहे । पाक चा योंग ने फोन से बताया कि हानेदा हवाई अड्डे पर पहुँचने का समय हो गया। कबूराकी और विलियम रसोई ने निश्चय किया कि मुझे छोड़ने के लिए वे भी हवाई अड्डे तक चलेंगे।

कबूराकी यह देखने के लिए खिड़की के पास जा खड़ा हुआ था कि कहीं हमारी कार आ न गई हो। उसका कमरा दूसरे तल्ले पर था। सहसा उसने मेरी ओर संकेत किया और फुस फुसा कर कहा,—"जरा इधर आओ। लेकिन आवाज बिलकुल न करना।"

नीचे सड़क पर साइकिल लिए तीन लड़के दिखाई दिए। उनमें से एक जिसके सिर पर पट्टी बंधी थी, सड़क के अन्तिम छोर की ओर देख रहा था, जब कि अन्य दो सामने के एक मकान के लकड़ी के बाड़े पर कोई पोस्टर चिपका रहे थे।

खिड़की की चौखट पर एक बोतल रखी थी। मैंने उसे उठा लिया और अपनी पूरी शक्ति से उसे फेंक कर मारा। बोतल एक लड़के के जा लगी और वह जमीन पर चित्त हो गया। लेकिन अगले ही क्षण उसने अपना सिर उठाया, और बोतल को वापिस हमारी खिड़की में फेंक दिया। मैं उछल कर अलग हट गया और बोतल बाल-बाल बचती हुई दीवार से जा टकराई और ताक पर रखे चीनी के कुछ बरतन गिरकर टूट गए। मैंने अपना रिवाल्वर निकाल लिया, लेकिन लड़के तब तक गायब हो चुके थे और सामने एक पोस्टर

लगा था : "फासिस्ट सैन्यवादी मुर्दाबाद !" इस नारे के बराबर में एक सैनिक अफसर का भोंडा-सा चित्र बना था। चश्मा चढ़ा और लम्बी मूछों वाला उसका चेहरा कूड़े के पीपे में से उसकी आंखों पर झांक रहा था। पोस्टर के ऊपरी हिस्से में एक सीमाकार हाथ अफसर की लम्बी मूँछ को उसकी गरदन में लपेट कर पीपे से बाहर खींच रहा था। अफसर की शक्ल लैफ्टीनैन्ट जेनरल ईवाकूरो से मिलती थी।"

"पिछले सप्ताह भी इसी जगह पर ठीक ऐसा ही एक अन्य पोस्टर लगा था," कबारूकी ने कहा,—"लेकिन उसमें जेनरल कवाबे की शक्ल बनी थी।"

"हमें इनकी ताक में रहना चाहिए और बिना कुछ सोचे उन्हें गोली मार देनी चाहिए!" मैंने कहा।

कबारूकी ने अपना सिर हिलाया।

"इन्हें पकड़ना इतना आसान नहीं है। साइकलों पर वे आते हैं और पोस्टर लगाकर गायब हो जाते हैं। नगर-भर में वे पोस्टर लगाते हैं। और तुमने देखा, कितना सही निशाना साध कर उसने बोतल फेंकी थी? दस्तीबम फेंकने में दक्ष हाथ ही ऐसा कर सकता है। निश्चय ही वह कोई भूतपूर्व सैनिक है।"

मैंने सिर हिला कर सहमति प्रकट की। दुर्भाग्यवश उसकी बात सच थी। हमारे कितने ही सैनिक कम्युनिस्टों से जा मिले थे, सम्राट के साथ उन्होंने गद्दारी की थी।

"लेकिन पुलिस इस बारे में चुप क्यों है?"

"पुलिस चुप नहीं है। वह बराबर उनका पीछा करती है। हमारी भी, और अमरीकी पुलिस भी। इसके लिए पोस्टर-फाड़ दल संगठित किये गए हैं।"

इसी बीच हमारी कार भी आगई और हम नीचे उतर आए। नीचे गलियारे में हम अपने जूते पहन रहे थे कि तभी मोटर-साईकलों की फटफट सुनाई दी। ये पोस्टर-फाड़ दल के तीन फौजी सिपाही थे। उन्होंने

अपनी मोटर साइकलें हमारी कार के पास खड़ी कर दीं। आग बुझाने के पाइप जैसी चीज से उन्होंने पोस्टर को तर किया और फिर तारों के ब्रुश से उसे खुरचने लगे। अपना काम खत्म करने के बाद ब्रुशों और पाइप को उन्होंने मोटर साइकलों पर रखा और आगे बढ़ गए।

"ट्रैफिक शुरू होने से पहले, सवेरे ही, ये लोग पोस्टरों की तलाश में सारे नगर में घूमते हैं," कबाकुकी ने कहा।

"इन्हें और भी जल्दी निकलना चाहिए," मैंने कहा।

"तब वे इनके निकल जाने के बाद पोस्टर लगाएँगे।"

"सियोल में भी वे इसी प्रकार पोस्टर लगाते हैं," विलियम रसोई ने कहा,—"कभी-कभी वे सीधे दीवारों पर ही अपने नारे पेंट कर देते हैं। जब कोई ऐसा करता पकड़ में आजाता है तो उसे तुरन्त गोली से उड़ा दिया जाता है।"

कार में बैठ, सूनी सड़कों को पार करते हुए, हम चल दिए। रास्ते में हमें पाक चा योंग को भी लेना था। मोमीयूरी पत्र के संपादकीय आफिस को पार कर हम कोने से मुड़े ही थे कि शंघाई कबारेट के सामने दो अखबार बेचने वाले लड़के दीवार पर कुछ लिखते हुए दिखाई दिए। हमारी कार की आवाज सुनते ही वे एक दरवाजे में घुस गये। दीवार पर लिखा था: "जल्दी अपना बिस्तरा गोल करो!"

हवाई अड्डे के मार्ग में अनेक लाल पोस्टरों पर हमारी नजर पड़ी। सिनागावा स्टेशन के निकट एक तम्बाकू स्टोर पर "ऐटमबम पर रोक लगाओ!" लिखा था। और इनारी मन्दिर के निकट एक खम्बे पर लटके हुए पोस्टर में विश्व शांति की रक्षा करने का आह्वान किया गया था।

हम हवाई अड्डे पर पहुँचे। विदा होने से पहले मैंने राजधानी के सम्मान में माथा झुकाया। मेरे जीवन का वह एक बहुत ही गम्भीर क्षण था, लेकिन मेरा मिजाज खराब हो गया था। अखबार बेचने वाले वे लड़के अभी तक मेरे मस्तिष्क में घूम रहे थे। कुछ साल बाद वे सेना में भर्ती करने लायक हो जाएंगे, लेकिन हम कैसे उन पर भरोसा कर सकते हैं। और वे सकूली लड़के

जिन्होंने आत्मसमर्पण के दिन महल-चौक में अपने जीवन का अन्त करने से इन्कार कर दिया था,—वे भी तो अब सेना में भर्ती करने योग्य हो गए होंगे। और वह जिसने निशाना साध कर खिड़की में बोतल फेंकी थी? नहीं, इनमें से किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता?

पाक चा योंग ने मुझ से कुछ कहना शुरू किया। लेकिन मेरा ध्यान दूसरी ही ओर था। अनायास ही मेरे मुंह से निकला,—"अगर दूसरों ने भी इसी प्रकार धोखा दिया तो........?"

"दूसरे कौन?" पाक ने पूछा।

मैंने मुँह फेर लिया और यात्रा के समूचे दौरान में चुपचाप बैठा रहा।

सुवोन पहुँचने पर जापानी स्वयंसेवकों की यूनिट से मेरी मुलाकात हुई। यूनिट के सभी अफसर अमरीकी वर्दियाँ पहने थे। लेकिन मैंने और पाक चा योंग ने दक्षिणी कोरिया के तीसरे डिवीजन की वर्दी धारण की। यह डिवीजन दक्षिणी कोरिया की राजधानी सियोल में तैनात था।

[५]

हश-हश आगया है और काम तेजी से बढ़ रहा था। कुछ ही दिनों में काम करने के लिए हमें कच्चा माल भी मिल जाएगा,—गिरफ्तार हुए लोगों का एक दल जिनके सम्बंधी उत्तरी कोरिया में रहते थे। उत्तरी कोरियनों के लिए जासूसी करने के अपराध में इन्हें पकड़ा गया था। इस अपराध का सिवा इसके और कोई आधार नहीं था कि इनके सम्बंधी उत्तरी कोरिया में थे। इन सबको अपनी विशेष कसौटी पर कसना, उपयुक्त लोगों को इनमें से चुन कर छाँटना और उन्हें ट्रेन करना हमारा काम था। ताकि उत्तरी कोरिया में भेज कर उनसे तोड़-फोड़ का काम कराया जा सके।

रौबर्ट हान अब केसोन में था। शीघ्र ही वह यहाँ आ जायगा।

रेडिओ से पता चला कि समूचे जापान में सभाओं, सम्मेलनों और प्रदर्शनों पर रोक लगा दी गई है। पुलिस चौकन्नी है और राज्य-पुलिस की

तमाम यूनिटों को बख्तरबन्द गाड़ियाँ तथा मशीनगनों से सुसज्जित जीपें दे दी गई हैं। टोकियो, ओसाका, कोबे, नागोया, योकोहामा, हमामात्सू और दूसरे नगरों में गिरफ्तारियाँ हो रही हैं।

यह पिछवाड़े को 'निष्कण्टक' बनाने की शुरुआत थी। इसके बिना कोई आक्रमण नहीं किया जा सकता। कारण कि हमले के शुरू होते ही करीब-करीब समूची आठवीं अमरीकी सेना जापान से हटा कर मोर्चे पर भेज दी जायगी।

× × ×

जेनरल ब्राडले फिर टोकियो में आ गया है। युद्धमंत्री जान्सन और फौस्टर डलेस भी उसके साथ हैं। एशिया में अमरीका की सक्रिय नीति से सम्बंधित सवालों पर बातें करने के लिए वे आये हैं।

रौबर्टहान भी आगया। उसने बताया कि ताईहान (दक्षिणी कोरिया) की मुख्य सेनाएँ समानान्तर रेखा पर केंद्रित हो चुकी हैं। जेनरल किमसुग वोन केसोन क्षेत्र में और जेनरल चाए बीयुंग डुक चुनचोंग क्षेत्र में पड़ाव डाले हैं।

जेनरल रौबर्ट ने ताईहान सेना के कमाण्ड को कोरिया में अमरीकी सेनाओं के आगमन के कार्यक्रम से सूचित कर दिया है। चौबीसवाँ डिवीजन जापान में मौजूद है और आदेश मिलते ही तुरत रवाना हो जायगा। आठवीं सेना और पाँचवाँ हवाई बेड़ा भी एकदम तैयार है। पहला समुद्री डिवीजन और दूसरा पैदल डिवीजन अमरीका से आयगा। सातवें फ्लीट का कमाण्डर वाइस एडमिरल स्ट्रूब अपने बेड़े का एक हिस्सा कोरिया के लिए रवाना कर चुका है।

× × ×

भयानक खबर मिली है। एक सुन्दर कोरियन युवती कर्नल बीयर्ड की सेक्रेटरी थी। उसे कल गिरफ्तार कर लिया गया। उसके अलावा अन्य सभी घरेलू नौकरों को भी,—कुल मिला कर जिनकी संख्या उन्नीस थी,—गिरफ़्तार कर लिया गया है। इन सब को सेक्रेटरी ने ही नियुक्त किया था।

वह कार चलाना जानती थी। फोटो लेने में भी वह माहर थी। कर्नल को कार में बैठा कर वह कई बार अड़तीसवीं आक्षांश रेखा के निकटवर्ती वर्जित क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी थी। कर्नल ने उसके लिए एक विशेष पास जारी कर रखा था। हर जगह, प्रेजीडैंण्ट री के बंगले तक में, वह जा सकती थी। प्रेजीडैंण्ट की पत्नी से, जो कि एलिस नामक एक अमरीकी स्त्री थी, उसकी काफी मित्रता थी। और अपने पति से उसे जो कुछ मालूम होता था, वह सब उसे बता देती थी।

अगर यह सिद्ध हो गया कि यह युवती सेक्रेटरी उत्तरी कोरिया की जासूस थी तो मानना होगा कि दुश्मन ने ठीक सियोल के हृदय में, खुफिया विभाग के अमरीकी सलाहकार के घर के भीतर, अपना एजेण्ट बैठा रखा था।

जो भी हो, उत्तरी कोरियनों के संभलने से पहले ही हमें अपना काम शुरू कर देना चाहिए।

लिम हो, कर्नल सुजूकी और हिदाका, और मेजर इरीये सुवोन में आ गये हैं।

यामाओका, ली तथा अन्य सियोल में हैं। पूसान में तीन जापानी यूनिटें और पहुंच गई हैं।

डाक्टर को अभी-अभी सियोल से टेलीफोन द्वारा सूचना मिली है कि बीयर्ड की युवती सेक्रेटरी और अन्य सब नौकरों को मार डाला गया। भेद उगलवाने के तमाम तरीके काम में लाये गए, लेकिन एक का भी उन पर असर नहीं हुआ।

कल जौन फौस्टर डलेस ने अड़तीसवीं अक्षांश रेखा के निकटवर्ती क्षेत्र का दौरा और ताईहान सेनाओं की स्थितियों का निरीक्षण किया था। दौरे के बाद दो दक्षिण कोरियाई यूनिटों के अफसरों के सामने भाषण देते हुए उसने घोषणा की : "जितनी मैं आशा करता था, उससे भी अधिक मैंने यहां देखा। बड़े-से-बड़ा दुश्मन भी तुमसे लोहा नहीं ले सकता। वह दिन दूर नहीं है जब तुम अपनी शक्ति का जौहर दिखा सकोगे।"

[६]

एक घंटा हुआ जब मुझे हश-हश ने बुलाया। उत्साह से विचलित स्वर में उसने घोषणा की : "कल, सवेरे !"

"किस समय ?" मैंने पूछा।

"चार बजे। सियोल टाइम।"

"शुरूआत किस प्रकार होगी ?"

"टाइम से अपने-अपने फटने वाली सुरंगें बिछा दी गई हैं। समानान्तर रेखा के निकट उनका विस्फोट होगा। कुछ गोलियाँ भी चलेंगी। वे इसका जवाब देंगे। संयुक्त राष्ट्रों के कोरियाई कमीशन के सदस्य ऐलान करेंगे कि उत्तरी कोरियनों ने पहल की। गोला बारी के बीच पश्छिम और पूर्व की ओर से किम सुगवोन और चाए बीयुंग दुंक बढ़ेंगे।"

हश-हश ने अपने थैले में से फ्रैंच कागनक की एक बोतल निकाली और दो गिलासों में उंडेल कर एक को अपने हाथ में ऊँचा उठा लिया।

"इस ठोस और सक्रिय कार्रवाई के उपलक्ष्य में !"

"ठंडे से गर्म युद्ध की ओर सन्तरण की खुशी में !" मैंने कहा।

गिलास खनके और गले के नीचे उतर गए।

हश ने बोतल का काग बन्द किया और उसे थैले में रख लिया।

"यह बहुत पुरानी और बहुत मूल्यवान कागनक है। अब इसे यालू के तट पर ही खाली किया जायगा।"

मैंने बोतल का लेबिल देखने की कोशिश की, लेकिन हश-हश ने इसका मौका न दिया और बोतल को तेजी से अपने थैले में पहुंचा दिया।

जो हो, कल से मेरी डायरी का नया पन्ना शुरू होगा। मेरी डायरी का ही क्यों, एशिया के इतिहास का नया पन्ना शुरू होगा !

गर्म युद्ध की ठण्डी मार

[१]

पिछले दो महीने, किसी भयानक दुस्वप्न की भांति, मेरी स्मृति में अंकित रहेंगे। एक ऐसा दुस्वप्न जो बराबर साठ दिनों तक चलता रहा, और जिसने डायरी का खयाल तक मेरे मस्तिष्क में नहीं आने दिया।

सच तो यह है कि इस डायरी का सुरक्षित रहना भी किसी चमत्कार से कम नहीं है। जेनरल चर्च (रौबर्ट के उत्तराधिकारी) के स्टाफ के मेजर डौड ने गलती से मेरे बैग को मुझ से छीन एक गुजरती हुई जीप में डाल दिया था। डौड कभी ताएजोन नहीं पहुँच सका। बांसों के एक झुरमुट में से चली गोली का वह शिकार हो गया। लेकिन मेरा बैग सही-सलामत आ गया। ताएजोन रेल्वे स्टेशन के सामने वाली सड़क पर बैगों और बक्सों के ढेर में मुझे अपना बैग मिल गया। मैं खुद भी सूवोनमें छूट गया था। भगदड़ की शुरूआत ठीक आधी रात के समय हुई थी। नगर के दक्खिनी छोर पर गोलियों की आवाज सुनते ही एक हलचल मच गई। जेनरल चर्च और उसके स्टाफ अफसर सब से पहले भागे। मैं हश-हश की जीप की ओर लपका। लेकिन उसे लोगों ने घेर रखा था। किसी ने मुझे धक्का दिया और अमरीकी अफसरों से लदी रौल्स रायस के नीचे आने से बाल-बाल बचा। बाद में मालूम हुआ कि यह रौल्स रायस ताईहान रक्षा-मंत्री सिनसेन मो की थी। अमरीकी अफसरों ने रौल्स रायस को उससे छीन कर खुद उस पर कब्जा कर लिया था। रक्षा-मंत्री को हवाई यूनिट के हमारे सेनिकों ने अपने ट्रक पर चढ़ा लिया।

लेकिन जब उन्हें मालूम हुआ कि वह जापानी है तो उसे फिर उतार दिया। लेकिन रक्षा-मंत्री, न जाने कैसे, ताएजोन पहुंच गया। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मुझे हवाई यूनिट के कैप्टेन हारूयामा ने बचाया। उसने मुझे अपनी कार में खींच लिया। कार में एक अन्य अफसर ने धक्का देकर मुझे बाहर फेंकना चाहा। रिवाल्वर खींच कर मैंने तुरत उसका काम तमाम कर दिया। हारूयामा की मृत्यु भी बड़े बेहूदा ढंग से हुई। एक गहरे मोड़ पर लचका खाकर वह नीचे गिर पड़ा और पीछे से आती हुई स्टूडीबेकर कार से कुचल गया।

उस रात सूवोन, छोटे पैमाने पर, अच्छा-खासा नरक बना हुआ था।

[२]

सिलसिले सब बातें लिखना असम्भव है। अगर कभी समय मिला तो बाद में ऐसा करूंगा। अभी तो जो कुछ दिमाग में आता है वही, लिख रहा हूँ।

हमारे दल का सब से पहला काम नये एजेण्टों और जासूसों को छांटना और उन्हें ट्रेन करना था। इसके लिए पर्याप्त मात्रा में, हमें कच्चा माल मिल गया था,—गिरफ्तार हुए दक्षिण कोरिया के बहुत से पुरुष और स्त्रियां जिनके सम्बन्धी दक्खिनी कोरिया में मौजूद थे। इनमें से छाँटे हुए लोगों के परिवारों को,—उनके माता-पिता, भाई-बहन और पतियों को,—हमने गिरफ्तार कर लिया था। यह इसलिए कि उत्तरी कोरिया में भेजने के बाद छांटे हुए लोगों में से अगर किसी ने धोखा दिया तो उसके बदले में उनके समूचे परिवार को मौत के घाट उतार दिया जाएगा। इस प्रकार दो हमने हजार से भी ज्यादा लोगों को बन्दी बना रखा था।

लेकिन मोर्चे का नक्शा पलटते ही हश-हश ने आदेश दिया कि 'कच्चे माल' और गिरफ्तार परिवारों के एक हिस्से को ठिकाने लगा दिया जाए। इतने बड़े बोझ को लेकर भागा नहीं जा सकता था। सियोल क्षेत्र में युद्ध का मोर्चा खुलते ही हमने उन्हें खत्म करने का निश्चय किया। पास की पहाड़ियों में बड़ी-बड़ी गुफाएं थीं। उन्हीं में यह काम सम्पन्न किया गया।

भागती हुई अमरीकी सेनाएं नगरों और गांवों की समूची आबादियों को भी पीछे हटने के लिए बाध्य करती थीं। लेकिन इससे एक खतरा पैदा हो गया था। उत्तरी कोरिया के एजेण्ट आसानी के साथ इस भीड़ में शामिल होकर हमारे क्षेत्र में घुस आते थे, और यह तय करना मुश्किल था कि कौन उत्तरी कोरियाई है और कौन दक्षिणी कोरियाई। इसकी रोक-थाम के लिए सभी सड़कों, नगरों और गांवों के बाहरी क्षेत्रों में हमने अपने दल नियुक्त कर दिए। जिस पर जरा-सा भी शक होता था, बिना किसी पूछ-ताछ के उसे वहाँ-का-वहीं ठिकाने लगा दिया जाता था।

लेकिन इस प्रकार संदिग्ध लोगों की सामूहिक हत्या से हमारे पल्ले कुछ नहीं पड़ता था,—मरने वाले लोग अपने भेदों को भी अपने साथ ही ले जाते थे और दुश्मन की गति-विधि के बारे में हमें कुछ नहीं मालूम होता था। सो अधिक संदिग्ध लोगों को जिरह के लिए भेजने के आदेश जारी कर दिये गए।

संदिग्ध बन्दियों का अन्तहीन ताँता लग गया। उनसे भेद उगलवाने का काम चौबीसों घंटे चलता। अमीताल और पैन्तोताल के इन्जैक्शनों से लेकर सभी तरह की यंत्रणाओं का हम सहारा लेते। डाक्टर इस मामले में बहुत तेज था। तीन अमरीकी सार्जेण्टों के साथ वह बन्दियों से जिरह करता था। और जिरह के बाद एक भी बन्दी अपने होश-हवास के साथ बाहर नहीं निकलता था। यह काम इतना थका देने वाला था कि हिरोपोन की टिकियों और हेरोइन में डूबी सिगरेटों के बिना हम जीवित नहीं रह सकते थे। एक दिन, समूची रात, तेगू की मौजा बनियान फैक्टरी के मजदूरों से हम जिरह करते रहे। उन पर शक था कि वे छापामारों की मदद करते हैं। लाख कोशिश करने पर भी हम उनसे एक भी भेद नहीं उगलवा सके। अन्त में उन्हें मौत के घाट उतारना पड़ा।

"दो मोर्चों पर हम युद्ध कर रहे हैं," फैक्टरी मजदूरों को ठिकाने लगाने के बाद हश-हश ने कहा,—"एक युद्ध का मोर्चा, दूसरा हमारा मोर्चा। युद्ध के मोर्चे पर चाहे जो गड़बड़ हो, लेकिन हमारा मोर्चा तेजी से काम कर

रहा है ।"

"एक तीसरा मोर्चा और है," मैंने कहा,—"हवाई मोर्चा। वह भी अच्छा काम कर रहा है ।"

"हवाई मोर्चा भी हमारी ही श्रेणी में आता है," हश-हश ने कहा,—"हमारी तरह वह भी नगरों, गांवों और उनमें रहने वाले नागरिकों को ठिकाने लगाता है !"

[३]

युद्ध को शुरू हुए दो महीने बीत चुके हैं। लेकिन हम, यालू नदी के उस पार पहुंचना तो दूर, अभी कोरिया में ही फंसे हैं।

ऐतिहासिक खोज सोसायटी की सारी मेहनत बेकार सिद्ध हुई। रौबर्ट ने भी धोखा दिया। उसके ट्रेन किये हुए ताईहान (दक्षिणी कोरिया) डिवीजन पहले जवाबी आघातों में ही ढेर हो गये।

मोर्चे के पाँव इतनी जल्दी कैसे उखड़ गये ?

किम सुगवोन और चाए बीयुंग दुक की सेनाओं की अग्रिम पंक्ति काफी मजबूत थीं, लेकिन उनमें गहराई नहीं थी। पच्चीस जून को पौ फटते ही हमला शुरू करनेवाले दक्षिणी कोरिया के दसों डिवीजन रक्षात्मक युद्ध के लिए नहीं, बल्कि आकस्मिक और तेज आघात द्वारा युद्ध के लिए ट्रेन किए गये थे। मैकार्थर से लेकर दक्षिणी कोरिया के मामूली लैफ्टीनैन्ट तक, हम सब का विश्वास था कि हमारा आकस्मिक आघात दुश्मन को होश न लेने देगा, और वह सहज ही चित्त हो जायगा।

लेकिन ऐसा हुआ नहीं। तीन घंटे तक आगे बढ़ने के बाद हमारी सेनाओं को प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, और अनेक हिस्सों में उनकी प्रगति रुक गई। लड़खड़ाने के बजाय उत्तरी कोरियनों ने जम कर लड़ना शुरू किया, और उनके प्रतिरोध ने शीघ्र ही जवाबी हमले का रूप धारण कर लिया। रक्षात्मक युद्ध से सर्वथा अपरिचित दक्षिणी कोरिया के डिवीजनों के पैर उखड़ गये। उत्तरी कोरियनों ने उनका पीछा किया,—पश्चिम में सियोल की

और, मध्य में चुंगच्योंग और पूर्व तटीय क्षेत्र में कान्नूल की ओर।

एक सप्ताह के भीतर रौबर्ट द्वारा तैयार किये गये दस डिवीजनों में से केवल तीन बच रहे थे। युद्ध करीब-करीब खत्म हो गया था, उसके और अधिक चलने की सूरत नजर नहीं आती थी। लेकिन युद्ध का अन्त नहीं हुआ और एक नया युद्ध शुरू हो गया,—अमरीका और कोरिया के बीच !

[४]

यह युद्ध भी, प्रारम्भ से ही अनेक आश्चर्यों से पूर्ण निकला।

मैकार्थर ने अपने श्रेष्ठतम डिवीजन, अमरीकी सेना के गर्व और गौरव, कोरिया में भेजे थे। प्रथम बख्तरबन्द डिवीजन, जिसे फरवरी १९४५ में जलते हुए मनीला में सब से पहले दाखिल होने का गौरव प्राप्त था। और इस गौरव के कारण ही इस डिवीजन को मैकार्थर ने आत्मसमर्पण के बाद जापान की राजधानी में सबसे पहले प्रवेश करने का सम्मान प्रदान किया था। पचीसवें डिवीजन को लुजोन पर कब्जा करने तथा हमारे श्रेष्ठतम रणनीतिज्ञ यामाशीता की सेनाओं को चकनाचूर करने का श्रेय प्राप्त था। द्वितीय डिवीजन ने, जिसके बारे में यह गर्वोक्ति प्रसिद्ध थी कि 'नाम में द्वितीय पर काम में प्रथम', नार्मेण्डी के तट पर सबसे पहले पाँव रखा था, सबसे पहले ब्रैस्ट में प्रवेश किया था, और जो सबसे पहले बोहेमिया पहुँचा था। सातवाँ डिवीजन जिसे आत्तू, कवादजेलिन, एनीवेतोक और लेइते पर कब्जा करने का गौरव प्राप्त था। और पचीसवाँ डिवीजन जिसका, फिलीपीन युद्ध में एक के बाद एक अनेक जीतें हासिल करने के कारण, विजयी डिवीजन नाम पड़ गया था। अन्त में नौ सेना का प्रथम डिवीजन जिसने गुआडाकैनाल और ओकीनावा में ख्याति प्राप्त की थी। प्रशान्त युद्ध के दौरान में इस डिवीजन ने कुल मिला कर १८,२३७ पदक प्राप्त किये थे, और पदक जीतने में सारे रिकार्ड तोड़ दिये थे।

मैकार्थर ने और अमरीकी सेना के सबसे अच्छे जेनरलों को छाँट कर कोरिया भेजा था। उनमें बीसवीं कोर का सुप्रसिद्ध जेनरल वाल्टन वाकर भी

जो नारमेण्डी से आस्ट्रिया तक बढ़ता गया था। यहाँ तक कि पैट्टन भी उससे ईर्ष्या करने लगा। पैट्टन का चीफ आफ स्टाफ होबर्ट गे प्रथम सेना का भूत-पूर्व चीफ आफ स्टाफ विलियम कीन, उत्तरी अफ्रीका में ख्याति प्राप्त लारेन्स केसर और, सबसे अन्त में, एफ डीन जिसकी वजह से चौबीसवें डिवीजन को विजयी डिवीजन कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ था।

और अब इन तमाम चुने हुए अमरीकी डिवीजनों और जेनरलों के सामने अगर कोई सवाल था तो यह कि वे पूसान के पेंटे से खदेड़े जाने और समुद्र में समाधि लेने से अपनी कैसे रक्षा करें।

उन्होंने अफ्रीका और अमरीका में जर्मनों का नातका बन्द कर दिया था, और उन्होंने प्रशान्तद्वीपों में हमारी अच्छी मरम्मत की थी,—लेकिन कोरिया प्रायःद्वीप में वे कुछ नहीं कर सके।

—आखिर क्यों?

मैकार्थर से इस 'क्यों' का जवाब माँगने के लिए स्थल-सेनाओं के चीफ आफ स्टाफ कौलिन्स और हवाई सेनाओं के चीफ आफ स्टाफ वाण्डेन वर्ग को वाशिंगटन से वायुयान द्वारा जापान भेजा गया।

इस 'क्यों' के लिए जिम्मेदार लोगों की खोज होने लगी। रौबर्ट का बिस्तर गोल कर दिया गया। यह इसलिये कि उसने दक्षिणी कोरिया के डिवीजनों को केवल आकस्मिक हमला करने की ट्रेनिंग दी थी और यह नहीं बताया था कि आक्रमणात्मक युद्ध से रक्षात्मक युद्ध में कैसे सन्तरण किया जाता है।

केन्द्रीय खुफिया विभाग के चीफ को भी हटा दिया गया। यह इस लिए कि उसने मैकार्थर को उत्तरी कोरियनों की लड़ने की क्षमता के बारे में गलत सूचना दी थी,—कहा था कि उनके पाँव उखड़ जायँगे और पहला आघात लगते ही वे भाग खड़े होंगे।

ताएजोन में विजयी डिवीजन की हार के लिए युद्ध-सेक्रेटरी जौन्सन को भी सख्त-सुस्त कहा गया।

केवल मैकार्थर की ओर किसी ने उंगली नहीं उठाई। वातान से

उसकी 'भगान' को पहले भी एक बार दर गुजर कर दिया गया था और अब फिर, ताएजोन में दक्षिणी सेनाओं ता बंटाढार करने के लिए, किसी ने उसे जिम्मेदार नहीं ठहराया।

सियोल से हमें इतनी आपाधापी में भागना पड़ा कि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों तक को नष्ट नहीं किया जा सका। तमाम फाइलें और कागज उत्तरी कोरियनों के हाथ लग गये और उन्होंने अपने पत्रों में उन्हें छापना शुरू कर दिया। हमारा एक भी भेद अब उनसे छिपा न रहा।

[५]

अमरीकी सेनाओं में शुरू से ही कुछ खामियाँ नजर आने लगी थीं। लेकिन यहाँ न तो मैं उनकी इन खामियों का जिक्र करना चाहता हूँ, और न ही जल्दी में कुछ नतीजे निकालना चाहता हूँ। केवल कुछ आँखों देखी बातों का ही यहाँ मैं जिक्र करूँगा।

ताएजोन से चेनोंग की सड़क बाजूका और मशीनगनों से छितरी पड़ी थीं। चौबीसवें डिवीजन के भागते हुए सैनिकों ने अपने ट्रकों का बोझ हल्का करने के लिए इन्हें सड़क पर फेंक दिया था।

मैं जानता हूँ कि अमरीकी गुआडाकनाल में, फिलीपीन में और खास तौर से ओकीनावा में खूब जम कर लड़े थे। लेकिन अब क्या हुआ? कोरिया में आने के बाद उनकी खामियाँ ही क्यों इतनी जल्दी उभर आईं? मुंह-दर मुंह युद्ध से वे डरते हैं। रात्रि-युद्धों से उनकी रूह काँपती है। अगल-बगल या पिछवाड़े में गोलियों की आवाज सुन कर वे काँप उठते हैं। और निग्रो या ताईह्वान सैनिकों को आग में धकेल कर खुद भाग खड़े होते हैं।

बाजूका एक कारगर अस्त्र है। अच्छे-से-अच्छे टैंकों को वह बेकार कर सकता है। लेकिन अमरीकी सैनिक टैंकों को देखते ही बाजूका को फेंक देते हैं, और अपने हाथों को ऊँचा उठा लेते हैं।

उत्तरी कोरियनों के हाथों में पहुँचकर यही बाजूका अब हमारे खिलाफ आग उगल रहे हैं।

पता नहीं अमरीकी सैनिकों को क्या हो गया है। प्रशान्त युद्ध के दिनों में एक अजीब रोग उनमें फैल गया था। 'अन्नानास-ज्वर' उसे कहते थे। सैनिक एकाएक आपे से बाहर हो जाते थे, रोते थे, चीखते-चिल्लाते और कपड़े फाड़ते थे और अन्त में आत्महत्या पर उतर आते थे।

कोरिया में 'भात ज्वर' ने उन्हें दबोचना शुरू किया। उत्तरी कोरियनों और छापामारों की भनक मिलते ही उनका बुरा हाल हो जाता है। पाक चा-ओंग ने मुझे बताया कि एक अमरीकी कर्नल ने किसी सम्वाददाता से कहा था : "अजब हालत है। पहाड़ियों से गोलियाँ चलती हैं, चट्टानें आग उगलती हैं, चावलों के खेत और घाटियों के जंगली पेड़-पौधे तक गोलियों की वर्षा करते हैं!"

अमरीकी सैनिक लड़ना नहीं चाहते। वे ऐटम और हाईड्रोजन बमों पर आस लगाये बैठे हैं। चर्चा गर्म है कि ड्यूपौं कम्पनी उनके लिए कैलीफोर्निया में हाइड्रोजन बम बना रही है। नीलोन से बनी गोली-प्रूफ टोपियों और प्लास्टिक की जाकेटों की भी इन्तजार है। सैनिक खोज इन्स्टीच्यूट ने हाल ही में इनका आविष्कार किया है। अपने मनोबल, लड़ने की क्षमता और दक्षता के सहारे नहीं, बल्कि इन अद्भुत आविष्कारों और अस्त्रों के सहारे वे युद्ध जीतना चाहते हैं।

[६]

तेगू में ली से भेंट हुई और हमने करीब-करीब सारी रात बातें करने में बिता दी। उससे पता चला कि दो सप्ताह हुए जब एक नयी सेना के साथ कात्सूमाता और मीने भी कोरिया में आये थे, और फोहान के निकट युद्ध में वे मारे गये।

ली ने यह भी बताया कि मैकार्थर ने अब ऐतिहासिक खोज सोसायटी को समुद्र से सेनाएँ उतारने की एक बड़ी योजना तैयार करने का काम सौंपा है। सेनाएँ उतारने में अमरीका का सबसे बड़ा विशेषज्ञ एडमिरल थोमस स्प्राग इस समय जापान में है। मैकार्थर ने अपने चीफ आफ स्टाफ आलमण्ड को

कोरिया के लिए रवाना कर दिया है। अमरीकी सेनाओं को, भारी संख्या में, क्यूशू द्वीप में केन्द्रित किया जा रहा है। और सातवें बेड़े के जहाज भी काफी मात्रा में आ गये हैं। मतलब यह कि अब सचमुच में कोई बहुत बड़ी कार्रवाई होने जा रही है।

[७]

सफल,—इनचोन-आपरेशन सफल हुआ। मैकार्थर ने इस आपरेशन की प्रेरणा १७५६ में कबेक पर जेनरल वोल्फ के हमले से ली थी। सन्त लारेन्स नदी के रास्ते आकस्मिक हमला कर फ्रान्सीसियों के उस सुदृढ़ दुर्ग पर जेनरल वोल्फ ने कब्जा कर लिया था। इनचोन-आपरेशन में दसवीं अमरीकी कोर, एक ब्रिटिश ब्रिगेड, एक जापानी बटालियन, पाँच सौ वायुयानों और तीन सौ जंगी जहाजों ने हिस्सा लिया था।

लेकिन आपरेशन को पूर्णतया सफल भी नहीं कहा जा सकता। मूल इरादा यह था कि दूसरे या तीसरे दिन सियोल पर कब्जा कर लिया जायगा ताकि उत्तरी कोरिया की सेनाओं को घेर लिया जाय और एक ही आघात में उन्हें नष्ट कर दिया जाय। इससे कोरिया का युद्ध, बड़े आपरेशन का पहला दौर, पूरा हो जायगा।

लेकिन बाधाओं ने इनचोन में ही सिर उठाना शुरू कर दिया, और सियोल तक पहुँचने में एक सप्ताह तथा उस पर आधिपत्य करने में दो सप्ताह लग गये। उत्तरी कोरियन सेना का काफी बड़ा हिस्सा वोनजू और चुनचोन के रास्ते बच कर निकल गया। विजय हाथ में आते-आते रह गई।

सियोल पर कब्जा करने के युद्ध में सम्पूर्ण जापानी बटालियन मारी गई। मुसोलिनी भी मारा गया,—एक दस्ती बम का वह शिकार हो गया। जिनतान बुरी तरह घायल हो गया। लगातार कई दिनों तक सियोल के बाजारों में लड़ाई हुई। रौबर्ट हान से पता चला कि शिकार करने की पुरानी राइफलों के सहारे किस प्रकार कोरियन युवतियों के एक दल ने सिनचोन जिले में अन्तिम क्षण तक युद्ध करते हुए अपनी जान दी। उनमें से आत्म-समर्पण एक ने भी नहीं किया।

[८]

उत्तरी कोरिया की राजधानी फियोंगयांग, लड़ाई शुरू होने के तीसरे दिन नहीं, बल्कि चार महीने बाद हमारा उस पर अधिकार हुआ। समूचा नगर जल रहा है। उत्तरी कोरिया की सरकार को गिरफ्तार करने के लिए मैकार्थर ने सुकचोन और सुनचोंग के बीच १८७वीं हवाई सेना उतारी थी, लेकिन सफलता नहीं मिली।

पिछले तीन दिनों से नगर में छिपे दुश्मनों का सफाया किया जा रहा है। निवासियों को खदेड़ कर ताध्दो-गांग नदी के तट पर ले जाया जाता है, और वायुयान से मशीनगनों की बौछार द्वारा उनका काम तमाम कर दिया जाता है। अलग-अलग गुच्छों में बंधी हुई युवतियाँ बाजारों में से गुजारी जाती हैं,—उन्हें अमरीकी अफसरों के क्लब में ले जाया जायगा।

× × ×

हश-हश की जान बाल-बाल बची। फियोगयांग के केन्द्रीय डिपार्टमेण्ट स्टोर की छत पर एक रेस्तोराँ में अमरीकी अफसर जश्न मना रहे थे। जापानी या कोरियनों में से किसी को भी इस जश्न में आमन्त्रित नहीं किया गया था। ठीक उस समय जबकि जश्न अपने पूरे जोर पर था, करीब बीस वर्ष की एक जवान और बहुत ही सुन्दर कोरियन लड़की ने बाहों में ढेर सारे फूल लिए हाल में प्रवेश किया। अमरीकियों की ओर मुसकराते और सिर हिलाकर संकेत करते हुए वह आर्केस्ट्रा के मंच के पास पहुँच गई। सबने समझा कि वह कोई गीत गाएगी। उछल कर वह मंच पर चढ़ गई, और सहसा चिल्ला कर बोली: "कोरियाई जनता जिन्दाबाद! दखलन्दाजी मुर्दाबाद!" फिर फूलों के भीतर से एक दस्ती-बम निकाल कर हाल के बीचों-बीच उसने फेंक दिया। बीस से ज्यादा अफसर मारे गये, चालीस से ज्यादा घायल हुए। हश-हश की गरदन में, कान के पीछे, बम का एक टुकड़ा छिटककर लगा और घाव करता हुआ निकल गया!

लड़की को पकड़ कर अमरीका के जवाबी खुफिया विभाग में भेज

दिया गया। यंत्रणाओं के बावजूद एक शब्द भी उसके मुँह से नहीं निकला। अन्त में उसे मार डाला गया।

× × ×

आखिर हमारी सेनाएँ यालू के निकट हेसान्दिन जिले में पहुँच गईं। पच्छिमी क्षेत्र में वे यालू से केवल चालीस किलोमीटर रह गई थीं, लेकिन उत्तरी कोरियनों के जवाबी हमले ने उन्हें अस्सी किलोमीटर पीछे धकेल दिया। चीनी स्वयंसेवक भी कोरियनों की मदद के लिए आगये हैं। मैकार्थर का अन्दाजा गलत निकला कि चीनी युद्ध में अपनी टाँग नहीं फंसायेंगे। हश-हश ने बताया कि मैकार्थर सार्वजनिक रूप से ऐलान करनेवाले हैं कि करीब आठ लाख चीनी कोरिया में आ चुके हैं। आँकड़े देने में जहाँ मैकार्थर काफी खुले दिल से काम लेता है। जापान के खिलाफ युद्ध सम्बन्धी अपनी विज्ञप्तियों में भी वह इसी प्रकार लम्बे-चौड़े आँकड़ों से काम लेता था।

मेरा विश्वास है कि चीनी स्वयं सेवकों के आगमन से युद्ध की दिशा पर कोई असर नहीं पड़ेगा। हमारी जल-थल और हवाई सेनाएं उन्हें चकनाचूर कर देंगी, और हमारे लिए मंचूरिया का रास्ता खुल जायगा।

× × ×

सुनचोंग में अब हम आ गये हैं। प्रथम अमरीकी कोर के हैडक्वार्टर के साथ हमें लगाया गया है। तैयारियों से मालूम होता है कि शीघ्र ही नया हमला किया जायगा। कोरिया-अभियान पूरा हो चला है और प्रथम कोर के हैडक्वार्टर की दीवारों पर मंचूरिया के नक्शे टाँग दिये गये हैं।

मैकार्थर के हैडक्वार्टर ने एक गुप्त आर्डर जारी किया है। जो डिवीजन सबसे पहले यालू को पार करेगा उसे अपने निशान में चाँदी की बत्तख जोड़ने का गौरव प्राप्त होगा। चाँदी की बत्तख का महत्व बताते हुए आर्डर के साथ एक नोट में बताया गया है कि यालू दो शब्दों से बना है: एक "बत्तख" और दूसरा "हरियाली"।

[६]

हश-हश ने अभी मुझे अपने आफिस में बुलाया था। करीब चौबीस या पचीस साल की एक बन्दी कोरियाई युवती आफिस में बैठी थी। उसके हाथ बँधे हुए थे जिन्हें वह अपने घुटनों पर रखे थी। उसकी शक्ल एकदम हमारी सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री हनाई रान्को से मिलती थी,—वैसा ही अण्डे जैसा चेहरा और कमान-जैसी तिर्छी आँखें।

हश-हश मुझे एक ओर ले गया, और फुसफुसा कर बोला,—"कल सबेरे जिरह शुरू करेंगे।"

इसके मुँह से हेरोइन की गंध आ रही थी।

"अच्छी बात है। मैं भी उस समय आ जाऊँगा", मैंने कहा और कोरियाई लड़की को पैनी नज़र से देखता रहा।

वह मेरे सामने कुर्सी पर बैठी थी। यह भाँपना कठिन नहीं था कि अपने को निस्संग प्रकट करने के लिए उसे भारी प्रयास करना पड़ रहा है। उसकी उंगलियाँ बल खा रही थीं। वह खाकी रंग के किसी ऊनी कपड़े की युरोपीय पोशाक पहने थी। पोशाक साफ-सुथरी और चुस्त थी। गोट-लगा एक छोटा-सा रूमाल उसकी जेब से झाँक रहा था।

"यह बंदी के समान तो जरा भी नहीं मालूम होती," मैंने कहा,— "लगता है, जैसे किसी काम से भेंट करने आई हो। जापानी बोलना जानती है?" मैंने उससे पूछा।

हश-हश ने उसकी ओर से जवाब दिया :

"हमारी सूचना के मुताबिक इसे जापानी भाषा से परिचित होना चाहिए। दस वर्ष की आयु से ही यह एक जापानी बिनता मिल में काम करने लगी थी। अब यह फियोंगयांग के संगीत-विद्यालय की छात्रा है,—या कहना चाहिए कि उस समय तक थी जब हमने इसे गिरफ्तार किया। इसका कण्ठ बहुत ही सुरीला है। हम यह भी जानते हैं कि यह मजदूरों की पार्टी की सदस्या है, और इस साल की गर्मियों में फियोंगयाँग आर्ट-थियेटर की

मण्डली के साथ मास्को गई थी। इस तथा अन्य कई चीजों के कारण इसे शीघ्र ही मौत के घाट उतरना पड़ेगा। यह सब बातें हमें अपने एजेण्टों से मालूम हुई हैं। खुद इसका जहाँ तक सम्बन्ध है, गिरफ्तारी के बाद एक बार भी इसने अपना मुँह नहीं खोला। और इस बदतमीजी के लिए इसे तिल-तिल करके और बहुत ही दुःखद मौत का सामना करना पड़ेगा।"

"तो यह कम्युनिस्ट है!" मैंने सिर से पाँव तक उसे देखा,—"और इसके कपड़े तो देखो, मालूम होता है मानो किसी प्रेमी से मिलने जा रही हो। इसने अभी तक कुछ नहीं उगला,—क्यों?"

हश-हश डैस्क पर बैठ गया। उसने एक सिगरेट सुलगाई और कश खींच कर धुँआ उसके मुँह पर छोड़ दिया। सकपका कर वह कुछ पीछे खिसक गई।

"यह कोरियाई कुतिया गूंगी-बहरी बन गई है।" उसने शांत स्वर में कहा,—"एक सप्ताह से मैं इसके पीछे पड़ा हूँ। एक शब्द भी इसने नहीं उगला। लेकिन इसे रंगे हाथ पकड़ा गया है,—मेजर जेनरल मिलबर्न के घर में यह बारूद का पलीता लगा रही थी।"

"इसके बाद पूछ-ताछ की क्या जरूरत है," मैंने कहा,—"अच्छा हो कि इसका तिया-पाँचा कर दो,—या इसे बैरक में भेज दो, हमारे सैनिक इससे दिल बहलाएँगे और अन्त में घूरे के ढेर पर इसे फेंक देंगे!"

एक क्षण सोचने के बाद हश-हश ने कहा: "ऐसा करो कि इसे तुम ले जाओ, और अपना पेटेण्ट हाथ दिखा कर इसके दो टुकड़े कर डालो। कोरियाई कलेजे का स्वाद लेने का इससे अच्छा मौका नहीं मिलेगा!"

"स्त्री का कलेजा,—थू!" घृणा से जमीन पर थूकते हुए मैंने कहा।

हश-हश ने मेज की दराज खोलकर अपना प्रिय सिगरेट लाइटर निकाल लिया।

लड़की ने कनखियों से सिगरेट लाइटर की ओर देखा और उसकी बंधी हुई बाहें कुछ हिल उठीं।

"डरती है!" मैं हँसा।

हश-हश ने अपने सिगरेट-लाइटर को मेज पर खटखटाते हुए जोर से

कहा,—"हाँ डरती है,—लेकिन अपनी जुबान फिर भी नहीं खोलती। यह पीली कुतिया, एक हफ्ते से मुझे बेवकूफ बना रही है। लेकिन मरने से पहले इसे अपने साथियों के नाम उगलने पड़ेंगे। हम जानते हैं कि नौनवोल में इसने एक भूमिगत दल का संगठन किया था। हमें इसका खुफिया नाम तक मालूम है। किसी ने सारा भेद खोल दिया है। इसे वे 'जोया-४' कहते हैं।"

"चार ही क्यों ?" मैंने पूछा,—"और यह जोया क्या बला है ?"

हश-हश ने अपने कंधों को बिचका लिया।

"यह भूमिगत दलों के मुखिया का या किसी अन्य कार्याधिकारी का गुप्त नाम हो सकता है। आनजू के निकट एक स्त्री की लाश की तलाशी लेने पर एक रिपोर्ट मिली थी, जिस पर 'जोया-१६' के हस्ताक्षर थे। इसी प्रकार सोकचेन में हमारे एजेण्टों ने पता लगाया था कि नगर में दो कम्युनिस्ट स्त्रियाँ हैं जिनके नाम 'जोया-२१' और 'जोया-९६' हैं।"

हश-हश ने अपना सिगरेट-लाइटर जला लिया और कोरियन लड़की से कहा,—"मिस बहरी-गूँगी, अब जरा इधर को मुड़ जाओ !"

वह कुर्सी पर घूम गई। उसकी पोशाक जो सामने से इतनी साफ-सुथरी मालूम होती थी, पीठ पर अनेक जगहों से फटी और जली हुई थी, और छेदों के बीच से उसकी कमर में जलने के दाग तथा घाव दिखाई देते थे। ये भेद उगलवाने की गर्म-गोदना पद्धति के निशान थे जिसे कि हश-हश एक सप्ताह से काम में ला रहा था।

गलियारे के दूसरे छोर पर किसी की वेदनापूर्ण चीख सुनाई दी। रौबर्ट हान किसी और के साथ भेद उगलवाने में जुटा हुआ था। जिरह के दौरान में बहुधा छत और दीवारों की दिशा में गोलियाँ दागना उसकी आदत में शामिल था। एक मिनट बाद चीख की आवाज दोबारा सुनाई दी।

मैं लड़की को ध्यान से देख रहा था। अपने होठों को उसने दाँतों से काटा लेकिन निश्चल बैठी रही और हश-हश के क्षत कान की ओर देखती रही। अमानवीय चीखों ने उसे भयभीत नहीं किया, न ही उसने एक भी सुबकी ली। लेकिन उसकी उंगलियाँ बल खा रही थीं।

"इसके साथ परेशान होने की जरूरत नहीं," मैंने अपनी जलती हुई सिगरेट का टुकड़ा उसकी गर्दन पर रगड़ कर बुझा दिया। वह जोरों से चौंक उठी। "इसे बाहर ले चलो, और मैं तुम्हें बहुत ही बढ़िया हाथ दिखाऊँगा,—कंधे से कूल्हे तक, एक ही आघात में!"

मैं दरवाजे की ओर बढ़ गया।

"अब यही करना होगा," हश-हश ने कहा और सिगरेट-लाइटर को नीचे फेंक दिया,—"इससे कुछ नहीं उगलवाया जा सकता। तुम तमाम पीले कुत्तों के साथ यही करना होगा........."

हश-हश की ओर मैंने तेज नजर से देखा।

"मेरी ओर क्या देख रहे हो,—मेरा मतलब तुमसे नहीं है," उसने कहा और लड़की के पास जाकर बोला,—"चलो हमारे साथ। तुम्हारा काम तमाम कर दिया जाय!"

वह उठ खड़ी हुई। उसने अपने कपड़ों को, बंधे हुए हाथों से जितना भी हो सकता था, खिसका कर नीचे किया और दरवाजे की ओर बढ़ चली। वह पीली पड़ गई थी। होठों को दांतों से दाबे, सिर को ऊंचा उठाए, वह हश-हश के पीछे चल रही थी। वह रुक गया और उसकी बाँह पकड़ डैस्क की ओर उसे धकेल दिया।

"अपने को बहुत साहसी समझती है,—कमीनी कहीं की! सभी गुक्स (कोरियन) जानवर होते हैं,—माननीय भावनाओं से सर्वथा शून्य!"

वह उसके निकट गया और सट कर खड़ा हो गया। अपने मोटे होठों को बाहर निकाले वह उसकी ओर देखता रहा। उसने भी, अडिग दृष्टि से उसकी आँखों में देखा और फिर उसकी नजर उसके क्षत कान पर जा कर टिक गई। उसने उसकी छाती पर आघात किया और वह कुर्सी पर जा गिरी। कम्बख्त को अभी खत्म भी तो नहीं किया जा सकता। नोनवोल से खुफिया केन्द्र के दो अफसर उसे अपने साथ ले जाने के लिए खास तौर से भेजे गये हैं। वहाँ पर वे खुद उससे पूछ-ताछ करेंगे।

"सो राजकुमारी की भाँति इसे सही-सलामत रखना होगा," भोंडी

नजर से उसकी ओर देखते हुए हश-हश ने कहा,—"अच्छी बात है, हिरो-पोन, तुम अब जा सकते हो। राजकुमारी को थोड़ी देर और भूनने के बाद मैं भी आज जल्दी ही सोना चाहता हूँ। कुछ नींद लेना जरूरी है......इससे पहले कि 'वह' यहाँ आए......!" मैकार्थर के चेहरे की नकल में अपनी एक आँख को सिकोड़ हुए बोला,—"सवेरे ही वह आने वाला है। खुद अपने मुँह से आर्डर देने के लिए वह आ रहा है : 'यालू की ओर बढ़ो! बड़ा दिन घर पहुँचकर मनाना है!' लेकिन यह तो निरा वायदा ही है। कारण कि इसके बाद ही युद्ध का अगला दौर शुरू हो जायगा। हमारी सेनाएँ सीधे हारबिन में जाकर दम लेंगी, और फिर युद्ध की तीसरी तथा आखिरी मंजिल के लिए अभियान किया जाएगा।"

मैंने लड़की की ओर संकेत करते हुए कहा—"यह जापानी समझती है।"

हश-हश ने हाथ हिलाया :

"इसे तो मुर्दा ही समझो। यहाँ नहीं तो नोनवोल में इसका काम तमाम हो जायगा।"

दो सार्जेण्ट, हश-हश के सहायक, गलियारे में से भीतर आ गये। उन्होंने अपनी जाकटें उतार लीं, और उन्हें सफाई के साथ तह करके एक कोने में मेज पर रख दिया।

हश-हश ने अपना सिगरेट-लाइटर जला लिया और लड़की से अपनी ओर पीठ करने के लिए कहा।

"अच्छी बात है। मैं अब जाता हूँ," जमुहाई लेते हुए मैंने कहा,—"कल साँझ हमें यालू के तट पर होना चाहिए। तुम्हारी प्रिय बोतल का काग वहाँ फिर खुलेगा।"

हश-हश ने गरदन हिलाई। दोनों सार्जेण्टों ने लड़की की बाहें पकड़ लीं।

"यालू के तट पर निश्चय ही हमारे गिलास खनकेंगे, और यालू के बाद फिर हारबिन में......अच्छा, तो अब यहाँ से दफा हो जाओ!"

कोरियाई लड़की की ओर देखते हुए मैं कमरे से बाहर हो गया। वह हश-हश की ओर पीठ किए बैठी थी। उसकी आंखें मुंदी हुई थीं।

× × ×

कल, सूर्योदय के साथ-साथ, पूरे कल-बल से हमला शुरू हो रहा है। इस बार विजय निश्चित है। खुद मैकार्थर ने अपने मुँह से कमान देने का निश्चय किया है। उसकी इच्छा है कि वह एक ऐसा दृश्य हो जो आने वाली पीढ़ियों के लिए सदा अंकित रहे। मतलब यह कि सफलता पूर्णतया निश्चित है।

यूमिया हाचीमान्, हमारे देवता, उसे अपना आशीर्वाद दो!

× × ×

सुनचोंग में प्रथम अमरीकी कोर के हैडक्वार्टर्स में मिली डायरी, बस, यहीं तक लिखी हुई थी।

प्योंग हाक ने उसे पढ़ा, संक्षेप में उसकी एक रूप-रेखा तैयार की, चीफ आफ स्टाफ के पास रिपोर्ट देने के लिए पहुंचा, लेकिन उस समय वह दूसरे कामों में व्यस्त थे। यूनिट को नगर खाली करना था। कारण कि मेजर जेनरल गे के प्रथम घोड़सवार डिवीजन के टैंकों और ट्रकों के संरक्षण में सिंगमन री की सेनाएँ पीछे हटती हुई इसी दिशा में आ रही थीं।

जन-सेना के आने तक दुश्मन को यहाँ रोका जा सकता था। लेकिन इसके लिए यूनिट के पास काफी ताकत नहीं थी। फलतः सर्वोच्च कमाण्ड ने यूनिट को, पूरी तेजी के साथ, कोकसान जिले में पहुंचने का आदेश दिया ताकि दक्षिण पूर्व में, दुश्मन के खूब पिछवाड़े में जाकर, उसका रास्ता रोका जाय!

इस बार छापामारों ने,—भला हो मैकार्थर का,—नयी जीपों, डॉज और स्टूडीबेकर ट्रकों में यात्रा की, जब कि कमाण्डर ७९ मिलीमीटर राकेट-गन से युक्त एक जीप में सवार थे।

प्योंग हाक एक ट्रक के कोने में उकड़ूँ बैठा था और डायरी में पढ़ी हुई बातें उसके दिमाग में चक्कर लगा रही थीं। सुनचोंग में अमरीकियों के

चंगुल से मुक्त किये गए सभी साथियों को वह रेलवे स्टेशन पर देख चुका था। उनमें दो स्त्रियाँ भी थीं,—एक सत्तर वर्ष की, और दूसरी तीस वर्ष की जिसके साथ दो बच्चे भी थे। जोया नम्बर चार उनमें नहीं थी। सम्भव है कि उसे नोनवोल भेज दिया गया हो। लेकिन दुश्मन को नोनवोल से खदेड़ने की भी तो खबर मिल चुकी थी। पता नहीं, जोया—४ का क्या हुआ?

और हुश-हुश तथा डायरी के लेखक का क्या हुआ? सुनचोंग में बन्दी बनाए गए लोगों में भी वे नहीं थे। क्या वे नगर से भागने में सफल हो गए? लेकिन हो सकता है कि वे रास्ते में पकड़ लिये गए हों?

दुश्मन की चकनाचूर हुई तीन कारों और उनके पास पड़ी हुई कुछ लाशों को देख कर प्योंग हाक ट्रक से नीचे कूद गया, और लाशों को ध्यान से देखने लगा।

"क्या मैकार्थर की खोज कर रहे हो?" किसी ने चिल्ला कर कहा,—"वह मूर्ख नहीं है। वह टोकियो में आराम से बैठा हुआ है!"

तेदोनगांग के उस पार, रेल के पुल से थोड़ी ही दूर, छापामारों को बम-विस्फोट से बना एक काफी बड़ा गढ़ा दिखाई दिया। गढ़े के भीतर कटीले तारों से हाथ-पाँव बंधी कई दरजन पुरुषों और स्त्रियों की लाशें पड़ी थीं। छापामारों ने कंटीले तार हटाकर लाशों को दफना दिया।

पुल की गारद के कमाण्डर ने बताया कि पास ही एक पहाड़ी के पीछे सिंगमनरी के दो सैनिकों और एक अमरीकी अफसर की लाश पड़ी है। कल उन्हें उस गढ़े को भरते हुए देखा गया था जिसमें लाशें पड़ी थीं। गारद को देखते हुए वे भाग खड़े हुए, और गोलियों से मारे गए।

प्योंग हाक कूद कर ट्रक से नीचे उतर गया और उसने तेजी से पूछा,—"क्या तुमने लाशों की तलाशी ली थी?"

"हाँ," कमाण्डर ने जवाब दिया,—"अमरीकी अफसर के पास कुछ नहीं मिला। सम्भवतः वह अपने कागज कोट की जेब में उस कार में ही छोड़ आया जिसे हमने दस्ती-बम फेंक कर नष्ट कर दिया था। सिंगमन री के सैनिकों के पास छोटे-छोटे बटुवों में तावीज मिले जिन पर तीन अक्षर जला

कर दागे हुए थे : सेन दैन साल......"

"लेकिन कोरियाई भाषा के इन अक्षरों का अर्थ," प्यों'ग हाक ने जोरों से कहा,—"जापनी में 'नारितयामा' होता है। जापान में इस नाम का एक मन्दिर है। इसका मतलब यह कि ये दक्षिणी कोरियन नहीं, बल्कि जापानी सैनिक थे। और अमरीकी अफसर की वर्दी पर क्या चिन्ह बना था ?"

"एक पत्ता जिस पर विद्युत रेखा खिंची हुई थी।"

"पचीसवें डिवीजन का चिन्ह ! जल्दी चलो, ये वही होंगे......"

अपने दल के कई छापामारों के साथ प्योंग हाक वहाँ पहुंचा। दो लाशें, ताजा खोदी हुई मिट्टी से कोई बीस कदम दूर, औंधे मुँह पड़ी थीं। तीसरी लाश अमरीकी वर्दी में, एक जीप के ढाँचे के पास, पड़ो थीं। प्योंग हाक ने एक लाश का सिर उठा कर उसके कान के पीछे देखा। फिर दूसरी लाश का सिर उठाया। घाव का कोई चिन्ह उसे नजर नहीं आया। फिर वह अमरीकी अफसर की लाश की ओर मुड़ा जो कमर के बल पड़ी थी। लेकिन उसका कद लम्बा, झाड़ीनुमा तिकोने आकार की भौंहें और उसकी छंटी हुई मोछें कांटो की भाँति सीधी खड़ी थीं।

लौट कर ट्रक पर सवार होते समय प्योंग हाक अपने-आप पर मुसकराए बिना न रह सका। उसने कैसे यह यकीन कर लिया कि वे मिल ही जाएँगे ? इस तरह की चीजें केवल फिल्मों या उपन्यासों में ही दिखाई देती हैं। ऐसी अद्भुत घटनाएँ सचमुच के जीवन में कभी नहीं घटतीं !

× × ×

उस समय हम कैम्पफायर के चारों ओर जमा थे जब प्योंग हाक ने, गई रात, सुनचोंग में मिली डायरी के बारे में यूनिट कमाण्डर और चीफ आफ स्टाफ को बताया।

वे दोनों, यूनिट-कमाण्डर और चीफ आफ स्टाफ, कैम्पफायर के निकट बैठे थे। वे अपने कंधों को कम्बल से ढके थे जिसके एक कोने पर बैज टंका हुआ था। बैज ढाल के आकार का था। उसके बीचों बीच एक घंटाघर बना था। बैज के नीचे एक फीते पर यह मोटो अंकित था : "जो चूका सो

गया !" यह द्वितीय अमरीकी डिवीजन की सैंतीसवीं आर्टीलरी बटालियन का बैज था।

जिस समय प्योंग हाक रिपोर्ट कर रहा था, दो अन्य व्यक्ति कैम्पफायर में आकर शामिल हो गए,—स्काउट चीफ और हमारी सेना के डाक्टर।

प्योंग हाक की रिपोर्ट खत्म हो जाने के बाद यूनिट कमाण्डर ने, जो पहले नगर-जन समिति के अध्यक्ष थे, कहा,—"सियोल में पकड़ी गई दस्तावेजों से भी डायरी की बातों की पुष्टि होती है। सत्रहवीं सिंगमन री रेजीमैण्ट के स्टाफ अफसर हानसू हान का बयान भी, जिसे हमने पकड़ लिया था, इसकी पुष्टि करता है। उसने अमरीकियों की ए.बी.सी. योजना के बारे में विस्तार से बताया था जिस पर कि सिंगमन री कमाण्ड अमल कर रहा है......"

स्काउट चीफ हंसा।

"वे मुँह से 'ए' का उच्चारण कर तीन दिनों के भीतर हमें निगल जाना चाहते थे, और फिर 'बी' का उच्चारण कर........"

"लेकिन 'बी' उनके गले में फन्दा बन कर अटक गई," हंसी के बीच यूनिट-कमाण्डर ने कहा,—"इस बार उनकी दाल नहीं गली। अमरीकी हमारे जनतंत्र पर आनन-फानन में कब्जा करना चाहते थे और पेकिंग को निगलने के लिए उनकी जीभ लपलपा रही थी। लेकिन वे भूल गए कि कोरिया अब वह पहले वाला कोरिया नहीं है जब राजा-महाराजाओं और याम्बानों की कायरता तथा विश्वासघात के कारण वे हमें दासता के चंगुल में फँसा लेते थे। अब अमरीकियों को जनता से वास्ता पड़ा है,–उस जनता से जो आजादी का मूल्य जानती है, और किसी हालत में अपनी इस आजादी से हाथ धोने के लिए तैयार नहीं है।"

वह उठा और उत्तर-पूर्व की पहाड़ियों पर खड़े फर-वृक्षों की नुकीली चोटियों की ओर देखने लगा। सूर्य का उदय हो रहा था।

ओकटांग कैम्पफायर के निकट आई और आग के पास टहनियों का एक बण्डल रख कर बैठ गई।

ओकटांग की ओर एक नजर देखते हुए प्योंग हाक ने कहा : "पता नहीं, जोया-४ को बचाया जा सका या नहीं। मैं समझता हूँ, नोनचोंल भी अब हमारे ही हाथों में है।"

"हाँ," चीफ आफ स्टाफ ने कहा,—"सुनचोंग की भांति उस पर भी हमने तुरत अधिकार कर लिया था। निस्सन्देह, तमाम बन्दियों को भी छुड़ा लिया गया होगा।"

"कामरेड युंग, क्या तुम नामफो के भूमिगत दल में थीं?" डाक्टर ने पूछा।

"नहीं, मैं हेदयू में थी," ओक टांग ने कहा।

"तुम्हारा गुप्त नाम क्या था?—या तुम्हारा कोई नम्बर था?"

"नहीं, हम लड़कियाँ," ओक टाँग ने लजा कर मुसकराते हुए कहा,—"पेड़-पौधों के नामों पर अपने नाम रखती थीं।"

"मैं समझता हूँ कि तुमने अपना नाम नरगिस रखा होगा?"

"नहीं," उसने मुलामियत से उत्तर दिया,—"मैं विलो (बेंत) कहलाती थी,—जोया-विलो।"

"हमारी लड़कियों को यह बहुत ही अच्छी बात सूझी," स्काउट चीफ ने कहा,—"अपने नाम या गुप्त नम्बर के साथ वे 'जोया' जोड़ लेती हैं और इस प्रकार रूस की छापामार हीरोइन का अनुकरण करती हैं।"

डाक्टर ने कहा,—"और फियोंगयांग, आनजू और रेनमी में छिप कर लड़ने वाले हमारे छापामार युवक अपने को 'यंगगार्ड' कहते हैं।"

"हाएजू के हमारे युवक छापामार भी अपने को 'यंगगार्ड' कहते हैं," ओक टाँग ने कहा।

"इन्हें यह भी तो बताओ कि तुम्हारे दल में भर्ती के समय नये सदस्य किस प्रकार शपथ लेते हैं?" प्योंग हाक ने कहा।

ओक टांग फूँक मार कर आग जलाने में व्यस्त थी, और धुएँ की वजह से उसने अपनी आँखें बन्द कर ली थीं।

"वे किस प्रकार शपथ लेते हैं? यह तो बड़ी दिलचस्प बात है।

मैं भी इसके बारे में कुछ नहीं जानता," यूनिट कमाण्डर ने कहा।

ओकटांग कैम्पफायर के पास टाँगों को सिकोड़ कर बैठ गई, और उसने कहना शुरू किया :

"हमारे युवकों के पास एक किताब थी जिसे वे, जहाँ भी जाते थे, सदा अपने साथ रखते थे। यह एक सच्चा उपन्यास था जिसमें रूसी छापा-मार युवक और युवतियों की,—यंग गार्डों की,—कहानी दी हुई थी जो अपने देश के लिए लड़े और न्योछावर हो गए। इस पुस्तक को हम असंख्य बार पढ़ चुके थे, और बाद में हमने इसका एक फिल्म भी देखा था। किताब फट न जाए, इस लिए हमने उस पर पेड़ की छाल की जिल्द चढ़ा ली थी। जब अमरीकी आए तो हमने इस किताब को छिपा दिया। और हमने एक अपना भूमिगत दल बनाने का फैसला किया। इस पुस्तक पर हाथ रख कर हम शपथ लेते थे और......"

पाइपों को अपने मुँह से निकाल कर, गम्भीर खामोशी में, सब ने ओकटांग के मुँह से निकले शपथ के शब्दों को सुना जो अन्तिम सांस रहने तक अपने पूर्वजों के देश की रक्षा करने तथा सम्पन्न भविष्य के लिए लड़ने की गम्भीर प्रतिज्ञा से पूर्ण थे।

कमाण्डर ने सिर हिलाया और धीमे स्वर में कहा,—"नहीं, हमें हराना असम्भव है।"

एक घाटी में जिसकी पहाड़ियों में गहरी खोहें बनी हुई थीं, छापा-मारों ने अपनी कारों को छिपा दिया और पहाड़ी पगडंडियों के सहारे पैदल चलने लगे। कोकसान पहुँचने से पहले-जन-सेना के सैनिकों से उनकी भेंट हुई और उन्होंने बन्दियों तथा दुश्मन से छीनी रसद के एक हिस्से को उन्हें सौंप दिया, और फिर वे पश्चिम की ओर मुड़ गये। चुनछुआ के पूर्वी क्षेत्र में दुश्मन के खिलाफ अनेक सफल कार्रवाइयाँ करने के बाद, ग्यारह दिसम्बर को, उन्होंने फियोंगयांग में प्रवेश किया।

यूनिट ने पश्चिमी रेलवे टर्मीनल की इमारत में अपना हेडक्वार्टर कायम किया। यूनिट-कमाण्डर से छुट्टी लेकर प्योंग हाक अपनी माँ और छोटी बहन

से मिलने के लिए चल दिया जिनसे युद्ध शुरू होने के बाद से अब तक उसकी भेंट नहीं हुई थी। सीधे स्तालिन स्ट्रीट को पार करते हुए, मोरान-बोन पहाड़ियों के बराबर से गुजरते और आग की लपटों तथा बमों से नष्ट इमारतों, ज्वालामुखी के मुँह के समान दिखाई पड़ने वाले बमों के गिरने से बने गढ़ों और खण्डहरों के बीच मे वह जा रहा था। रास्ता पहचानने के दो ही चिन्ह उसका आधार थे,—पैदल चलने वालों के लिए बाईं ओर बना वह पुल और स्टेशन के निकट दाहिनी ओर खड़ी अस्पताल की इमारत। ये दोनों चिन्ह भी खण्डहर बने हुए थे। फिर भी, इनके सहारे, वह रियोनवारी बस्ती में,—या इस बस्ती का जो कुछ भी बच रहा था उसमें,—पहुंच गया।

कुछ घन्टे बाद जब प्योंग हाक अपनी यूनिट की ओर लौट रहा था तो घाटों के पास एक वृद्ध महिला से उसकी भेंट हो गई जो उसके घरके पास ही एक गली में रहती थी। उससे उसे सारा हाल मालूम हुआ। खण्डहरों के जंगल के बीचसे जब वह नगर के मध्य में पहुँचा तो दीवार के एक टूटे-फूटे हिस्से पर उसकी नजर पड़ी। बड़े-बड़े अक्षरों में किसी ने उस पर लिख रहा था—"अमरीकियो, होश में आओ! थू है तुम पर!"

प्योंग हाक काफी देर तक दीवार के इस खण्ड के पास खड़ा रहा—"नहीं, इन हत्यारों को हम कभी नहीं भूल सकते!"

उसी दिन यूनिट को 'न' डिवीजन में मिला दिया गया, और फिर अभियान शुरू हो गया। तेज गरज के साथ लड़ाकू वायुयानों का एक दल आसमान से गुजरा। ये हमारे ही वायुयान थे।

सड़क के एक किनारे, राख के उस ढेर के पास जो पहले किसी किसान का घर था, दुश्मन का एक लड़ाकू वायुयान चुर-मुर हुआ पड़ा था। उसका एक पंख हवा में ऊपर की ओर उठा हुआ था जिसके निचले हिस्से में तीन काले अक्षर 'यू-एस-ए' दूर से दिखाई देते थे। वायुयान के अग्रभाग में एक नंगी स्त्री का चित्र बना था जिसने अपनी जीभ बाहर निकाल रखी थी।

पीछे से टैन्कों और लारियों का एक दस्ता आ रहा था। लारियों में नीले रंग के रूई के लम्बे कोट और पीले रंग की फर की टोपियां पहने हुए

लोग,—चीनी स्वयं सेवक,—सवार थे। सड़क के किनारों से आवाज आई "वान्सू!" और चीनी साथियों ने तीन बार मुट्ठियाँ बंधे अपने हाथ उठाकर इसका जवाब दिया। चीनी स्वयं सेवकों की लारियों के बाद लाउड स्पीकर लगी दो कारें थीं। इनमें से पहली पर प्योंग हाक ने दो बन्दियों के साथ ओकटाँग को देखा। सम्भवतः उन्हें मोर्चे पर ले जाया जा रहा था ताकि हमलावरों को उनके द्वारा कुछ सबक सिखाया जा सके। प्योंग हाक ने ओकटांग को पुकारा। सैनिक सलाम करने के बाद, मुँह के आगे अपने दोनों हाथों का भोंपू-सा बनाते हुए, उसने चिल्लाकर कहा: "जोया का मैंने पता लगा लिया है......वह जीवित है!"

दूसरी कार में लगे भोंपू से आवाज आ रही थी: "...उन दिनों में जब हमलावरों की सेना उत्तरी कोरिया में खूब गहरे घुस आई थी और हमारी स्थिति अत्यन्त नाजुक थी, हमारे कमाण्डर इन-चीफ के एक अभिनन्दन-संदेश का जवाब देते हुए जेनरलस्सिमो स्तालिन ने ऐलान किया था: मैं कामना करता हूँ कि वीरता के साथ अपने देश की आजादी की रक्षा करने वाली कोरिया की जनता को अपने संघर्ष में सफलता प्राप्त हो जिसे कि वह संयुक्त, स्वतंत्र और जनवादी कोरिया का निर्माण करने के लिए इतने सालों से कर रही है......"

छापेमारों का प्रिय गीत, जनता के प्रतिरोध का गीत, वातावरण में गूंज उठा। गीत की ध्वनि के साथ वे आगे बढ़ चले।

वे जानते थे कि उनका संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ है, अनेक कठिनाइयों और अग्नि-परीक्षाओं में से उन्हें गुजरना है। लेकिन वे यह भी जानते थे कि विजय,—मानवता के दुश्मनों पर विजय,—उनकी प्रतिक्षा कर रही है। मानसे कोरिया,—स्वतंत्र, स्वाधीन कोरिया! मानसे, शान्ति,—समूची दुनियाँ की शान्ति!